।। श्रीनाथजी ।।

पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका

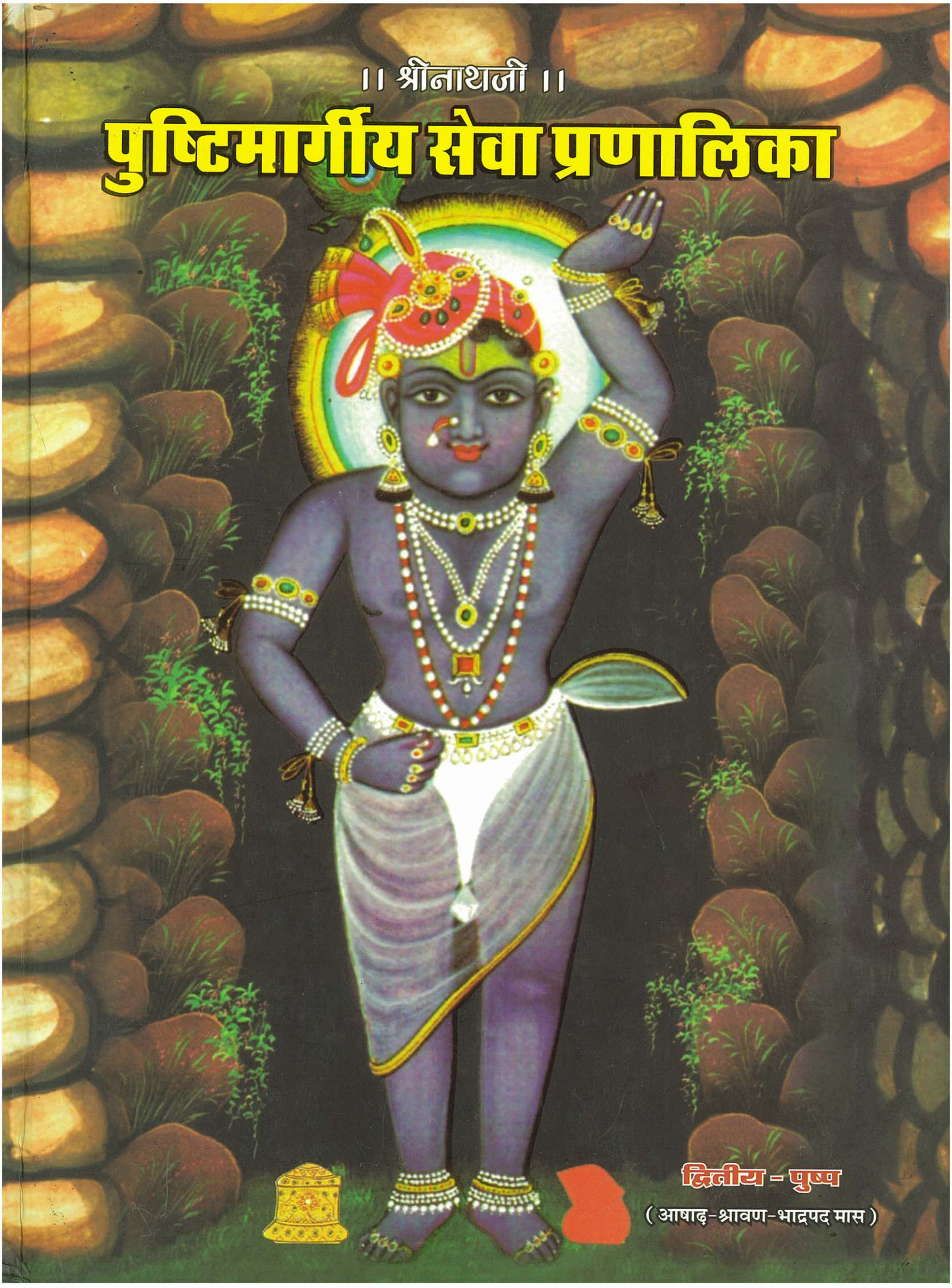

द्वितीय - पुष्प

(आषाढ़-श्रावण-भाद्रपद मास)

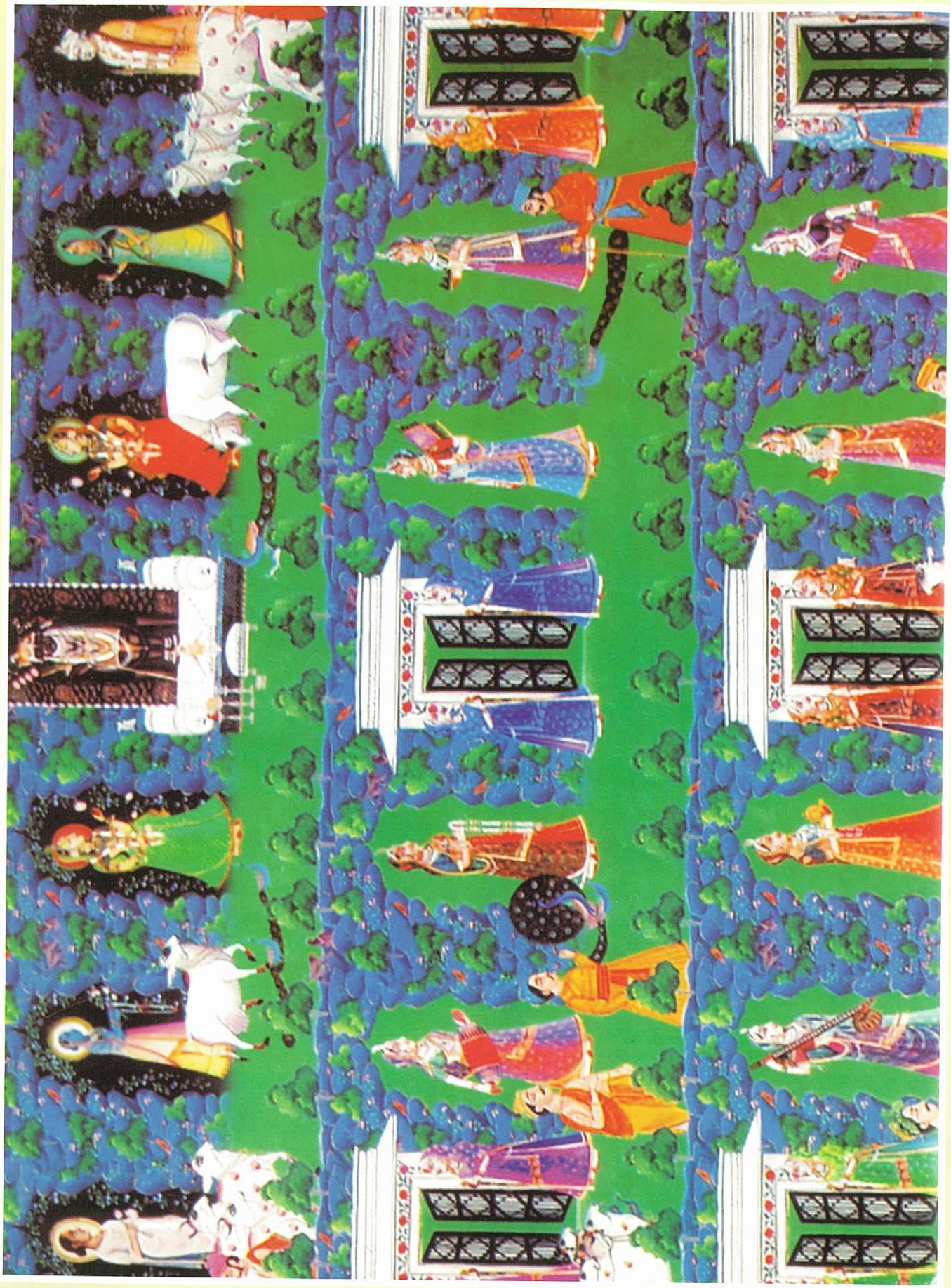

सौजन्य : गीता डिजिटल स्टूडियों, नई सड़क, नाथद्वारा

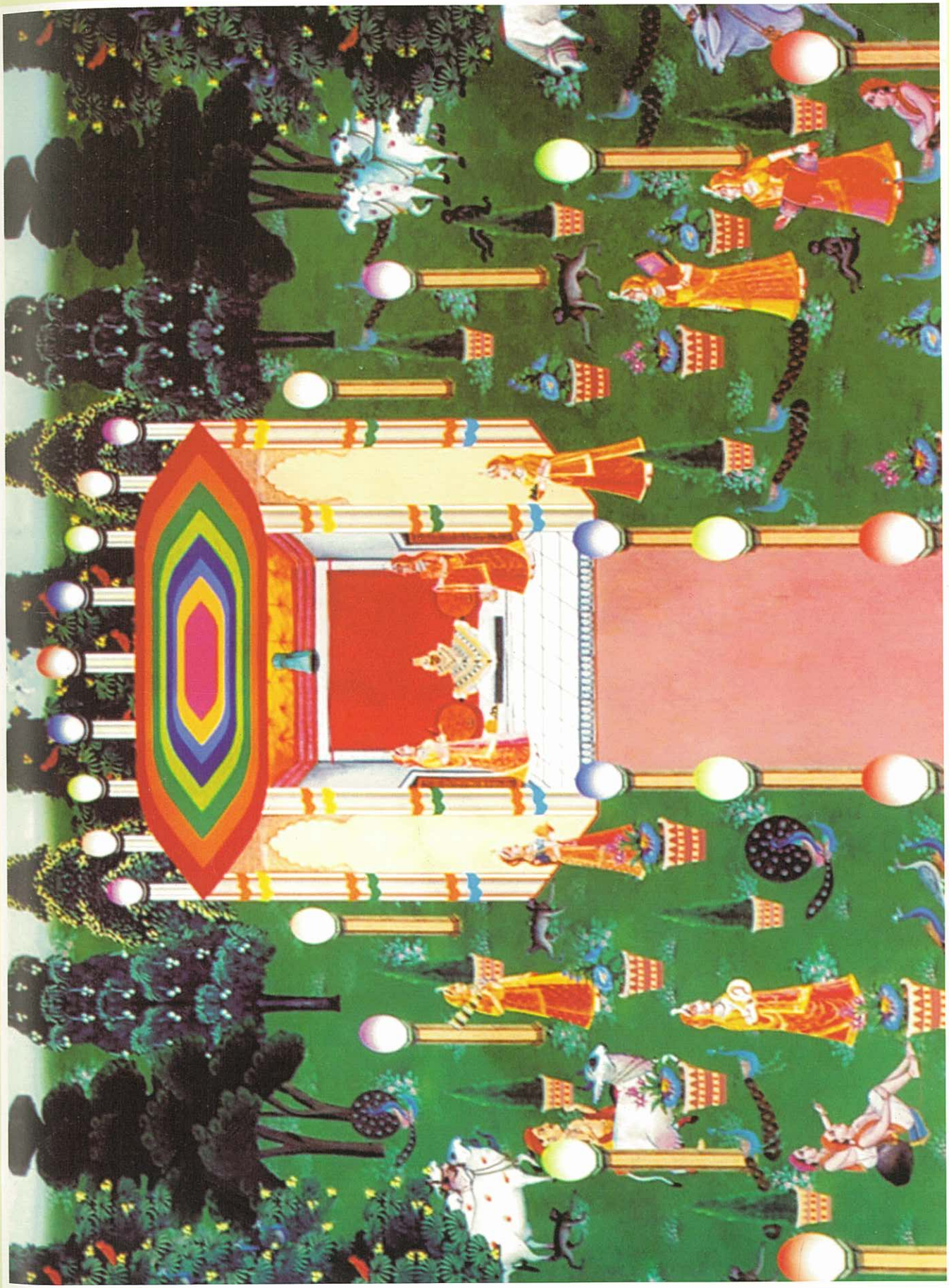

सौजन्य : गीता डिजिटल स्टूडियों, नई सड़क, नाथद्वारा

प्राचीन कलाकृति
सौजन्य - नरेन्द्र आर्टस, भट्टियानी चौहट्टा, उदयपुर (राज.)

।। श्रीनाथजी ।।

पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका

द्वितीय – पुष्प

(आषाढ़-श्रावण-भाद्रपद मास)

संकलन :

मदनलाल शर्मा

26, रामद्वारा चौक, उदयपुर (राज.) 313001

फोन : 0294-2417209

संकलनकर्ता एवं प्रकाशक
श्री मदनलाल शर्मा, 26, रामद्वारा चौक
उदयपुर (राज.) 313001
फोन नं. 0294-2417209 (निवास)

संषोधन एवं संयोजन
श्री रमणलाल पारीख
19-ए, मोगरावाड़ी, उदयपुर (राज.) 313001
फोन नं. 0294-2484929, (निवास)
मोबाईल नं. 09829307969

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक
श्री मदनलाल शर्मा
26, रामद्वारा चौक, उदयपुर (राज.) 313001

प्रथम संस्करण - 2010, आवृत्ति 1000

न्यौछावरः
रू. 351.00 (द्वितीय खण्ड के)

प्राप्ति स्थान :-

- श्री मदनलाल शर्मा, 26, रामद्वारा चौक, उदयपुर, 0294-2417209
- श्री रमणलाल पारीख, 19-ए, मोगरावाड़ी, उदयपुर, 0294-2484929, 09829307969
- श्री बजरंग पुस्तकालय, दाऊजी घाट, मथुरा , 281001
- श्री जगमोहनदास अरोड़ा, श्रीविठ्ठलनाथजी मंदिर, नाथद्वारा, 0921495115

मुद्रकः
चौधरी ऑफसेट प्रा.लि., उदयपुर
फोन: 0294-2584071, 2485784

॥ श्रीनाथजी ॥

जन्माष्ठमी के अवसर पर परम पूज्य 108 श्री गोस्वामी तिलकायत श्री इन्द्रदमन जी (राकेश जी) महाराज श्री के कर कमलों द्वारा मोतीमहल नाथद्वारा में विमोचन हुआ।
दिनांक 2 सितम्बर 2010 गुरूवार

परम भगवदीय
श्री मदनलाल शर्मा जी
को आशीर्वाद व
शुभकामनाओं सहित
गो. ति. राकेश
2.10.2010

श्री भरत-रमेश चन्द्र भाटिया का
श्री जी के चरणों में दण्डवत व जय श्रीकृष्ण

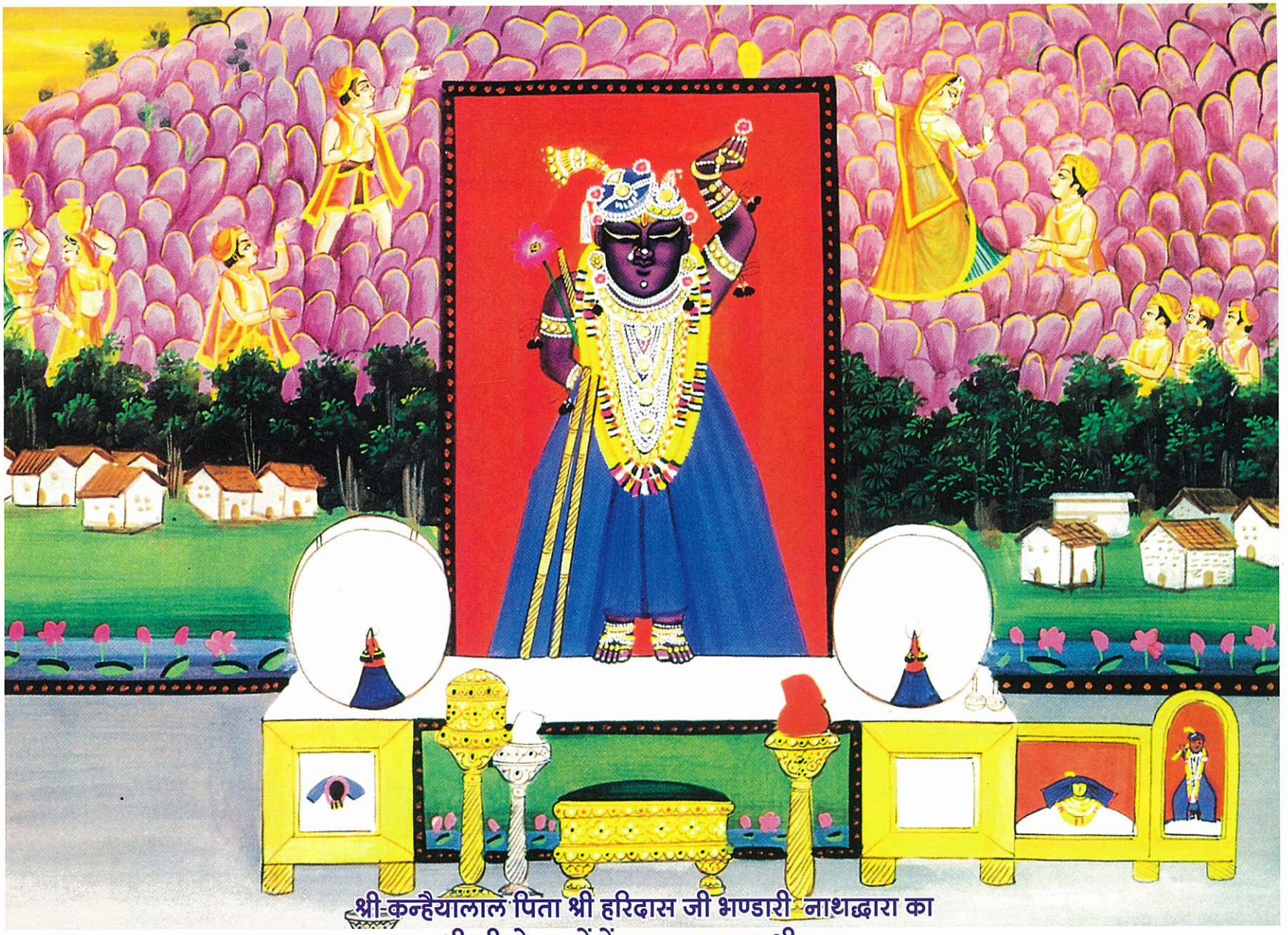

श्री कन्हैयालाल पिता श्री हरिदास जी भण्डारी नाथद्वारा का
श्री जी के चरणों में दण्डवत व जय श्रीकृष्ण

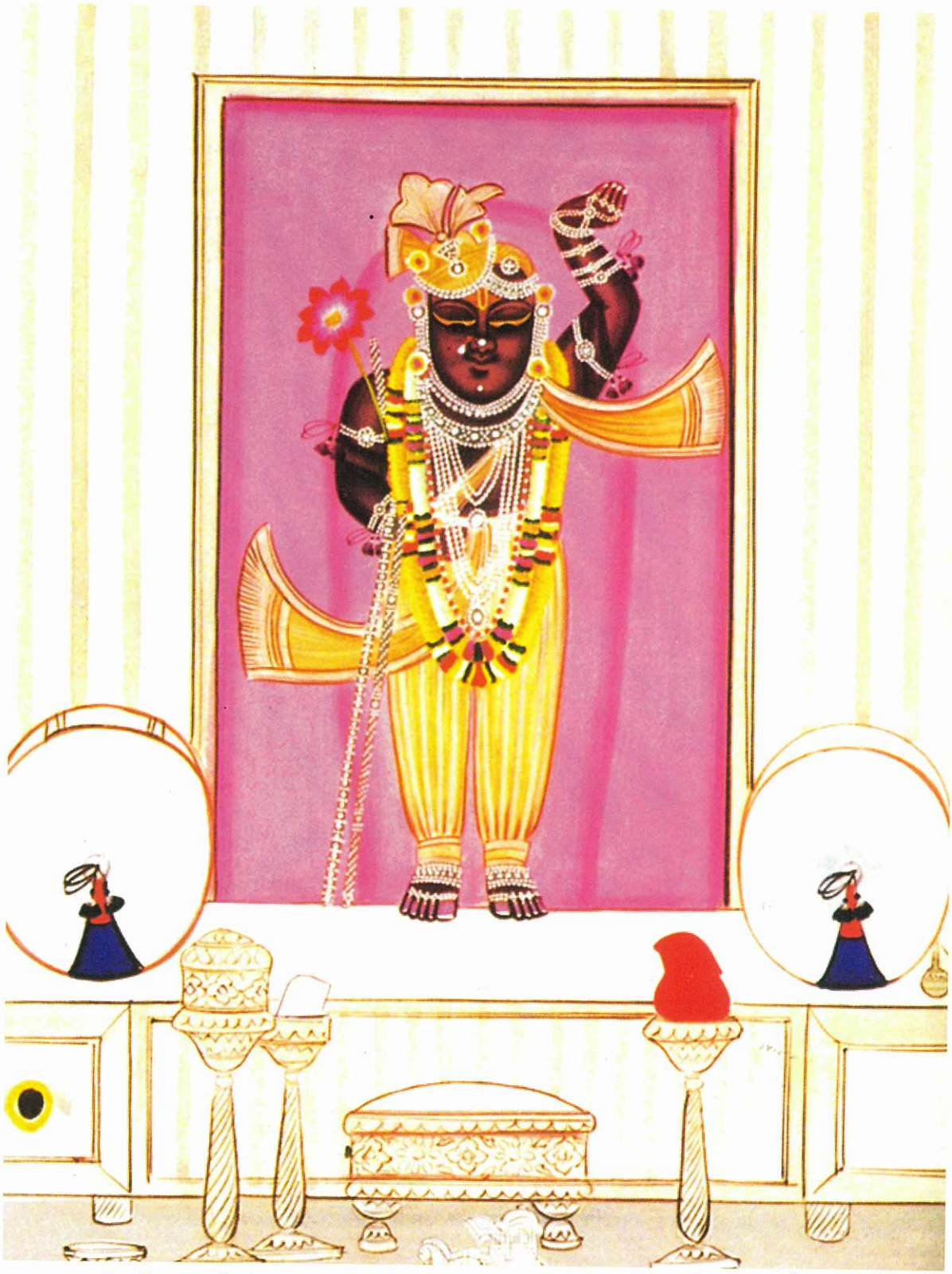

- श्रीमती शान्तादेवी धर्मपत्नि स्व. श्री रामचन्द्र जी चौहान, कालाजी गौराजी, उदयपुर
- श्रीमती श्वेता-हितेश, श्रीमती तृप्ति-नितेश, राधिका, ललिता त्रिपाठी, उदयपुर
- श्री प्रभुलाल जी साहू, तेल बाजार, उदयपुर का

श्री जी के चरणों में दण्डवत व जय श्रीकृष्ण

।। श्रीनाथजी ।।

श्री मद्वल्लभाचार्य जी

श्री विठ्ठलनाथ जी (गुसांई जी)

श्री गोवर्धनलाल जी महाराजश्री

श्री दामोदरलाल जी महाराजश्री

श्री गोविन्दलाल जी महाराजश्री

श्री दाऊजी (राजीव जी) महाराजश्री

श्री राकेश जी महाराजश्री

श्री विशाल बाबासा.श्री

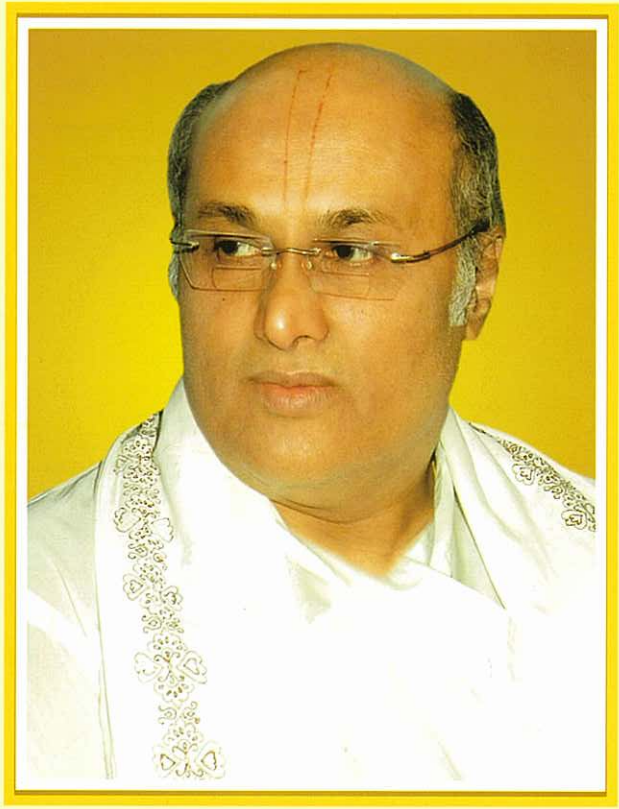

॥श्रीनाथजी॥

सचिव,
पूज्यपाद गोस्वामी तिलकायत श्री १०८
श्री राकेशजी (श्री इन्द्रदमनजी महाराज)

खास दफ्तर मोती-महल,
नाथद्वारा (जिला-राजसमन्द) राजस्थान
फोन-कार्यालय 234480
श्रीवल्लभ दर्शन, पोद्दार पथ,
सान्ताक्रुज (पश्चिम) बम्बई-400054
कार्यालय फोन-2649648

पत्र क्रमांक :- 5210

दिनांक 11-7-2009

श्री मदनलालजी शर्मा
२६, रामद्वारा चौक,
भोपालवाड़ी-उदयपुर,

श्रीमानों ने जानकार अती प्रसन्नता हुई कि आप ''पुष्टि मार्गीय सेवा प्रणालिका'' का द्वितीय तृतिय एवं चतुर्थ पुष्प का प्रकाशन करा रहे है इस कार्य की सफलता के लिये श्रीमानों को शुभ आशिर्वाद प्रदान किया है।

भवदीय

सचिव
खास दफतर, मोतीमहल
नाथद्वारा (राज.)

।।श्री हरिः ।।

।।श्री द्वारकेशो जयति।।

दिनांक 12.07.2010

गो . श्री व्रजेशकुमारजी महाराज

(शु. तृ. गृहाधिपति) कांकरोली

वडोदरा

स्थान :

दिनांक .....

पत्र नं.....

श्री मदनलालजी शर्मा

उदयपुर, राज.

मेवाड़जन मेदपाट उदयपुर द्वारा प्रकाशित पुष्टि मार्गीय सेवा प्रणालिका पुस्तक के प्रथम खण्ड को देखकर अत्यंत हर्ष है। श्री गोवर्धनधर के सेवा-श्रृंगार और कीर्तनों का त्रिवेणी संगम, इस प्रकाशन के द्वारा भक्तजनों के हृदय को असीम शांति और लाभ प्रदान करता है।

इस श्रृंखला में इसके अगले प्रकाशन में आप कृत प्रयत्न है, यह भक्तजनों के सौभाग्य का प्रतिफलन है। संपूर्ण सेवा श्रृंगार के प्रकाशन द्वारा आप सेवा का अद्भुत् कार्य संपादित करेंगे।

प्रभु श्री गोवर्धनधर आपको इस कार्य में श्रेय और प्रेय प्रदान करे यही हमारी शुभकामना है।

शुभकांशी

गो. व्रजेश कुमार

तृ.पी.गो श्री व्रजेशकुमार जी महाराज

(कांकरोली)

पैलेस श्री द्वारकाधीश मंदिर
कांकरोली-313 324
फोन : 02952 230001श 230256
फेक्स: 02952-231100

श्री राजधिराज मंदिर
राजाधिराज मार्ग
मथुरा - 281 001
फोन: 0565.2460372

श्री बैठक मंदिर
द्वारकेशबाग,
बड़ौदा -390 001
फोन: 0265-2431461

श्री द्वारकाधीश मंदिर
बउआकी पोल, रायपुर चकला,
अहमदाबाद - 3850 001
फोन: 079- 2141537

II Shri Hari II
II Shri Dwarkesho Jayati II

Goswami Vagishkumar

दिनांक 23.06.02009

Founder-President
Shree Vakpati Foundation

Vice Chancellor
Shri Vallabh Vidyapith

President
Shree Vallabhiya Global Awareness Movement

Chairman
Shri Vallabh Vaishnav Elite Forum

President
Jan Kalyan Sahay Yojana

President
Shri Dwakesh Vidhyapith

Vice President
Shri Dwarkesh Sanskrit Maha Vidyalay

President
Shri Vishwa Parabhakti Sansthan

President
Shri Shri Rajiv Lochan Memorial Trust

President
Shri Vraj Vrajesh Foundation

Chief Editor
Encyclopedia of Pushimarg

परम भगवदीय श्री मदनलालजी शर्मा

आप द्वारा संकलित एवं मेवाडजन मेदपाट उदयपुर द्वारा प्रकाशित '' पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणाली'' का प्रकाशन का प्रथम खंड प्राप्तकर बडी ही प्रसन्नता हुई।

वैष्णव समुदाय श्रीनाथजी सेवा प्रणाली से अवगत हो यह इस पुस्तक का उद्देश्य वास्तव में सफल रहा है। यह ग्रंथ बहुत ही सुंदर एवं आकर्षित है। राग और श्रृंगार का समन्वय वास्तव में बहोत ही सराहनीय है लेकिन पृष्टि त्रिवेणी के अनुसार राग, भोग और श्रृंगार का क्रम पूर्ण रूपेण दृष्टिगत हो तभी सेवा का वास्तविक आनंद वैष्णवजनो को प्राप्त हो सकेगा।

आपका यह प्रयत्न आप स्वयं की इच्छा से नहीं किन्तु प्रभु श्रीनाथजी तथा श्री यमुनाजी की विशेष कृपा से ही पूर्ण हो सकेगा। इस कार्य के लिए आपको बहोत-बहोत बधाई देते हुए मंगल कामना करता हूं। इस कार्य के लिए आपको बहोत-बहोत बधाई देते हुए मंगल कामना करता हूं। यह ग्रथ अनेक वैष्णजनों को अपने जीवन की सफलता प्रदान कर सके और सुन्दर एवं कृपा प्रसाद बने यही मंगल कामना ।

भवदीय,
गोस्वामी वागीश कुमार
(कांकरोली)

Shri Bethak Mandir	:	Kevdabaug, Madanzampa Road, VADODARA-390 001 Phone : +91-0265-2345543
Shri Dwarkadhish Mandir	:	Trutiya Pith Pranyas, Place Mandir Marg, KANKROLI-313 324(Raj.) Phone : +91-02952-230001, 230256
Shri Rajadhiraj Mandir	:	Rajadhiraj Marg, Mathura-281 001, Phone : +91-0565-2406372

हमारे सेव्य स्वरुप

पाटोत्सव

आषाढ़ शुक्ला 10 दिनांक 9 जुलाई 1992

श्रीमती नर्बदा देवी एवं मदनलाल शर्मा

का श्रीजी चरणों में साष्टांग दण्डवत एवं वैष्णवों को

जय श्री कृष्ण

श्री बेटीजी महाराज के विवाह के शुभ अवसर पर :-

- श्री नाथद्धाराधीश श्रीमद् गोस्वामिकुलतिकम् श्रीमद् इन्द्रमनजी महाराज की ओर से भेंट।
- श्री मद्धल्लभवंश भूषण मणि शुद्धाद्वैत प्रधानपीठ स्थित श्रीनाथद्धाराधीश्वर गोस्वामिकुल तिलकायित श्री गोवर्धनधरण श्री नवनीतप्रिय सेवारसाक्त आचार्यवर्य श्री इन्द्रदमनजी महाराज:।
- श्री मन्मथुराधीश प्रभु प्रीतिकर्ता अत्युदार प्रथमपीठाधीश्वर: श्रीलालमणि जी महाराज: ।
- अतिप्रसन्न मुखारविन्द स्वसेव्य श्री विट्ठलनाथ चरणासक्तसदा द्वितीय पीठाधीश्वर: श्री कल्याणरायजी महाराज:।
- श्री द्धाराकाधीश सेवारत मानस श्री मन्ममहाकारूणिक तृतीय पीठाधीश्वर: श्री बृजेशकुमारजी महाराज:।
- ब्रजमण्डलदायक निजजन हृदयानन्दाविर्भावकर्त श्री गोकुलनाथ सेवनन्दैकमग्न श्री देवकीनंदनजी महाराज:।
- श्री गोकुलेन्दु प्रभु चरणाब्जरज प्राप्त भव्यमूर्ति हृष्टमनस पंचपीठाधीश्वर: श्रीवल्लभरायजी महाराज:।
- श्री मदनमोहन पादपद्मपद्प समर्पित चिन्तशान्त मूर्ति ब्रजप्रिय श्री धनश्यामजी महाराज:।
- गोस्वामि तिलकात्मज श्री 105 गोस्वामि चिरंजीव श्री भूपेशकुमारजी के शुभप्रस्ताव निमित्त 12 मई 2009।
- परमपूज्य गोस्वामी 105 श्री विशालबाबा श्री कि आज्ञानुसार चित्र प्रकाशन।

आभार

परम कृपालु निकुंज नायक श्री गोवर्धनधर के चरणकमलों में सविनय यह "पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका" का द्वितीय पुष्प समर्पित करते हुए अत्यंत हर्ष है। यह ग्रंथ श्रीगोवर्धननाथजी की कृपा एवं आचार्यवर्य गोस्वामी तिलकायत श्री १०८ श्री राकेशजी (श्री इन्द्रदमनजी) महाराजश्री के शुभ आर्शीवाद के फलस्वरूप ही प्रकाशित किया जा रहा है। इस द्वितीय पुष्प में श्रीनाथजी के घर की प्रणालिका अनुसार श्रृंगार एवं प्रतिदिन के किर्तनों का संकलन (माह आषाढ़, श्रावण एवं भाद्रपद) प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस ग्रंथ के पदों का संकलन एवं चयन नाथद्वारा मंदिर के किर्तनकार श्री तोलारामजी, श्री पन्नालालजी कुमावत तथा श्री लालन मंदिर के किर्तनकार श्री दामोदरजी कुमावत तथा श्री विट्ठलनाथजी मंदिर के किर्तनकार श्री भंवरलालजी कुमावत एवं अन्य किर्तनकारों का प्रमुख सहयोग रहा। जो अलभ्य पद थे उन्हें प्राप्त कराने में उक्त किर्तनकार महोदयों का बहुत सहयोग रहा।

इस ग्रंथ में प्रकाशित चित्रजी को उपलब्ध कराने में श्री भरतजी पालीवाल, गीता स्टूडियों नाथद्वारा, श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत भट्टियानी चोहट्टा उदयपुर तथा श्री भगवान दास जी चित्रकार नाथद्वारा का पूर्ण सहयोग रहा। इस ग्रंथ के सम्पादन एवं संशोधन का महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण रूचि एवं लगन से श्री रमणलाल जी पारीख, मोगरावाड़ी, उदयपुर ने किया है एवं ग्रंथ प्रकाशन में पूरा समय देकर महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इस ग्रंथ के कम्प्यूटराईजेशन में "सन् कम्प्यूटर, उदयपुर" के श्री लोकेश अग्रवाल एवं श्री चौधरी ऑफसेट, उदयपुर जिन्होने बाजार भाव से न्यूनतम लागत पर इस ग्रंथ का मुद्रण कर सहयोग दिया।

मैं उपरोक्त सभी महानुभावों का हृदय से अत्यंत आभारी हूँ कि इनके सहयोग से ही यह ग्रंथ प्रकाशित होकर आप सभी वैष्णवों के पास पहुँच सका है, विश्वास है कि वैष्णवजनों को नित्य सेवा में यह बहुत उपयोगी होगा। इस ग्रंथ में संशोधन कार्य बहुत ही लगन से किया गया है फिर भी भूल होना मानव का स्वभाव है अतः उसके लिये क्षमा करावें। किसी प्रकार की त्रुटि हो तो विद्वान वैष्णवजन कृपया उसकी जानकारी कराऐगें ऐसी आशा है। कष्ट हेतू क्षमा प्रार्थी है।

दासानुदास
मदनलाल शर्मा

जन्माष्टमी
भाद्रपद कृष्ण ८ गुरूवार
दिनांक २ सितम्बर २०१०

आभार के दो शब्द

परम कृपालू श्रीजी बाबा तथा भगवदीयों की कृपा का फल है कि श्रीमदनलाल जी शर्मा जिन्हे मास्टर साहब के नाम से भी संबोधित किया जाता रहा है, द्वारा इस पुष्टिमार्गिय सेवा प्रणालिका भाग-२ के संशोधन एवं संयोजन का कार्य मुझे सोंपा। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझ अकिंचन को उन्होने इस महत्वपूर्ण कार्य के योग्य माना, मैं उनका बहुत आभारी हूँ। संशोधन के दौरान सभी पदों का बार-बार पठन होने से उनका अवगाहन एवं आत्मसंगत करने का अनायास विशेष लाभ मुझे मिला। इस कार्य में रूचि उत्पन्न करने का श्रेय प. भ. श्री हरिदासजी आगरा का रहा है। पुज्य तिलकायतों के जन्मोत्सव तथा विशेष उत्सवों पर होने वाले श्रृंगार की जानकारी पूरी तरह मिले इसे ध्यान में रखते हुए श्रीकमलजी मुखिया जी श्रीनाथजी मंदिर उदयपुर के सुझाव अनुसार उस दिन के श्रृंगार सहित के श्रीनाथजी के चित्र भी यथा स्थान देने का पूरा प्रयास किया गया है।

वैसे तो इस ग्रंथ के संशोधन में पूरा ध्यान रखा गया है फिर भी, जैसा कि मानव स्वभाव वश भूल होना संभव है अतः कोई त्रुटि रह गई हो तो आशा है आप वैष्णव जन उदार हृदय से क्षमा करेगें। मैं आभारी रहूँगा कि उस कमी को बतलाने की कृपा करेगें ताकि अगल अंक में और विषेश सावधानी रखी जा सके।

सभी वैष्णवों का कृपाभिलाषी।

दासानुदास

रमणलाल पारीख

–: अनुक्रमणिका :–

	अ	
1	अपुने री बाल गोपाले रानीजू	१७७
2	अब दुध लाई हो यशोदा	२
3	अति उदार मोहन मेरे	६१
4	अद्भूत कौतुक देख सखिरी	७२
5	अधर रंग राख्यो अरूण अति	xii
6	अरी इन मोरन की भांत देख	६३
7	अरी हों या मग निकसी	७
8	अरी जिन तूं पठई (मान)	३१
9	अरी माई नई नई धरती	६१
10	अरे तु कबते भयो दधि दानी	२३३
11	अरी छक हारी चार पांच आवत	२२९
12	अहो वे निकसी देत अशीष	१८१
13	अहो मेरी प्राण प्यारी	२१९
14	अहो बलि द्वारे ठाडे वामन	२३०
15	अहो कान्ह घेरो रे घेरो	२३५
	आ	
16	आई जू श्यामघटा घनघोर	५८
17	आई जू श्याम जलद घटा	४९
18	आई पावस ऋतु सुखदाई (मान)	६९
19	आई सकल ब्रज युवति मिलि	१०२
20	आई आई सकल ब्रजनारी	१३०
21	आई छाक बुलाऐ श्याम	२२९
23	आंगन नंद के दधि कादो	१५०
24	आंगन में हरि सोय गयेरी	१८६
25	आंगन खेलिये झनक मनक	१८८
26	आगम गेहरी गरज सुन	६८
27	आगम आषाढ़ी मेघ वरषे	७५
28	आगे आओरी छकहारी	२२९
29	आछि नीकी सोहत हंसत	१८३
30	आज गोपाल पाहूने आये	१९५
31	आज धरे गिरिधर पिय धोती	६
32	आज बने गिरिधर दुल्है	१९
33	आज दधि मीठो मदन गोपाल	१५०
34	आज माई रथ बैठे गिरधारी	४०
35	आज बर विपिन में छाक	६४
36	आज में देखे कुंवर कन्हाई	७९
36	आज नंदराय के आनंद भयो	९६
37	आज लाल झूलत रंग भरे हो	९९
38	आज तो हिन्डोरे झूले छैया कंदबकी	११९
39	आज बड़ो दरबार देख्यो	१३२
40	आज नंद के आनंद भयो	९६
41	आज झूमि झूमि आई हो घनघटा	११४
42	आज बन उमग रही ब्रजनारी	९७
43	आज महा मंगल महराने	१३८
44	आज दधि मीठो मदन गोपाल	२४
45	आज नंद जु के द्वारे भीर	१५८
46	आज छट्टी यशुमति के सुत की	१६३
47	आज बन कोऊ वह जिन जाय	१६७
48	आज अति बाढ्यो हे अनुराग	१६७
49	आज बधाई को दिन नीको	१६९
50	आज कहूँ ते या गोकुल में	१७१
51	आज बधावो नंदराय के	१८०
52	आज हरि पकर न पाये चोरी	१८९
53	आज हमारे भोजन कीजे	१९१
54	आज बधाई है बरसाने	१९६
55	आज रावल में जयजयकार	२००
56	आज बधाई माई वृषभानराय के	२०३

57	आज बधाई बाजत रावल	२०४
58	आज सखि सुखमा कन्या जाई	२०७
59	आज सुद सावन तीज सुहाई	११७
60	आज बरसाने बजत बधाई	२०९
61	आज बृषभान के घर फूल	२१३
62	आज बृषभान के आंनद	२१४
63	आज बनी कुंजेश्वर रानी	२१५
64	आज मेरी वृंदावन में दधि लूटी	२२६
65	आजु मानिनी मनावत	६९
66	आजु गृह नंद महेर के बधाई	९२
67	आठें भादों की उजीयारी	२०६
68	आँधी अधिक उठी आवत हे	६४
69	आनंद आज नंदजू के द्वार	१३३
70	आनंद बधावनों नंद महरजू के धाम	१२९
71	आपुन मंगल गावे रानी जू	१७६
72	आये माई बरखा के अगवानी	४०
73	आयो आगम नरेश	४१
74	आयो पावस दल साज गाज	५४
75	आरोगत नागर नंद किशोर	६६
76	आरोगत मोहन मंडल जोरे	६३
77	आलीरी सावन तीज सुहाई	११६
78	आवत काल की सांझ देख्यो	८
79	आवरी बावरी उजरी पाग में	३६
80	आवो मेरे गोविन्द गोकुल के	१९३
	उ	
81	उसीर महल में दम्पति राजत	३८
	ए	
82	ए तुम चले जाओ ढ़ोटा	२३५
83	एरी यह नागर नंदलाल कुंवर	१०३
84	एरी हिंडोरे विंहस विंहस	९७
85	एसो को है जो छुवे मेरी मटुकी	२३२
	ऐ	
86	ऐ कौन प्रकृत तिहारी ललना	२३३
87	ऐरी चटकीलो पट लपटानो	२४
88	ऐसो पूत देवकी जायौ	१५६
	ओ	
89	ओढ़े लाल उपरीणी झीणी	४७
90	ओल्हर आई हो घनघटा	१२१
	अ	
91	अंखिया मेरी लाल संग अटकी	५८
92	अंग अंग घन क्रांती मोती	४२
93	अंग अंग रंग रह्यो	२९
	क	
94	कदम तर भली भांती	४५
95	कदम्ब वन विथिन करत विहार	११
96	कदम्ब तर ठाडे हैं पिय प्यारी	१०३
97	कबकी कहेती प्यारी	५९
98	कब दान दियो हो व्रजराई	२२७
99	कमल नैन प्यारे झूलो	१०१
100	कमल मुख देखत कौन अघाय	२८
101	करत ब्यारू हंसि हंसि मोहन	xii
102	कहोजू कैसे दान मांगीये	२३२
103	कन्हैया टेर टेर हों हारी	६६
104	कापर ढोटा नयन न चावत	२२७
105	कारे कारे बादर देश देश ते	८८
106	कारे बादर ओल्हर आये	८९
107	काम केली कनक बेली	१९९
108	कीजे पान लला हों लाई	xiv
109	किरती कुल मंडन गाईये	२३६
110	कुंज मेहेल में मंगल हेरी	३

111	कुसुम सेज पिय प्यारी पौढ़े	५
112	कुंज भवन में पौढ़े दोऊ	२०
113	कुंज में पौढे रसिक पिय प्यारी	२३३
114	कुंज महल के मधि आंगन मध्य	५०
115	कुंज में पोढे रसिक पिय	१६
116	कुंवर चलो जू आगे गहवर	३६
117	कुंवरी राधिका तु सकल सौभाग्य सीमा	२२०
118	केली कला कमनीय	२७
119	कैसे कैसे आये मेरे गेह	२६
120	कोऊ मेरे आंगन व्हे जु गयो	१२
121	कौन की उपरीनी ओढ़ि आये	६
122	कौन सुकृत ईन व्रजवासिन को	१८५
123	कृपा रस नैन कमल दल फूले	३
	ग	
124	गरज गरज रिमझिम	६४
125	गहेर गहेर गाजे बदरा	६६
126	गहेरी सघन अति श्याम	५३
127	गाय सब गोवर्धन ते आई	४१
128	गायन सों रति गोकुल सों रति	२
129	गांऊ श्री वल्लभ	ii
130	गावत गोपी मधु मृदुबानी	१३१
131	गावत रसिक राय व्रजनृपति	४७
132	गावौ गावौ मंगल चार बधावों	१११
134	ग्वालिन मिठी तेरी छाछ	२३५
135	ग्वालिन प्रेम प्रीत रंगभीनी	७६
136	गिरधर पीवत दुध सिराय	xiv
137	गिरीपर चढ़ गिरिवर टेरे	२३३
138	गुजरिया तु बावरी भई	२३३
139	गोकुल की पनिहारी	३३
140	गोकुल घर घर होत बधाई	१६८
141	गोपी प्रेम की ध्वजा	२०
142	गोपाल लाल गोकुल चले हो	१७१
143	गोद बैठाय जिमावत मैया	१६२
144	गोवर्धन पर्वत के उपर	४१
145	गोवर्धन गिरी सघन कंदरा	२
146	गोधन धुरी में कैसे लागत	२४
147	गोपाललाल झूलत सुरंग हिंडोरे	१३१
148	गोकुलचन्द हिंडोरे झूलत	१२६
149	गोविन्द तिहारो स्वरूप निगम	२२८
150	गौर श्याम धारण को लहेरिया	६७
151	गौर श्याम लहेरिया धारण की	११२
152	गृह गृह तें आई व्रज सुन्दरी	८२
153	गृह सब गोपन मिलके	१८३
	घ	
154	घन में छिप रही ज्यों दामिनी	१२
155	घनघटा वनघटा अलिघटा	११४
156	घर घर ग्वाल देत हे हेरी	१६३
157	घर ही एक ग्वार बुलाई	२३२
158	घुमड़ घटा छटा दामिनी	३६
	च	
159	चकई री चल चरण सरोवर	३२
160	चरण कमल बंदो जगदीश	१७४
161	चल मन होनी होय सो होय	४४
162	चल वर कुंजन बरखत मेह	७३
163	चलन न देत हो यह बटियां	२२४
164	चल तू मानिनी मानी निहोर	३
165	चलो क्यों न देखेरी खरे दोऊ	३१
166	चलो लाल बियारू किजे	x
167	चलो वृषभान गोप के द्वारे	२०२
168	चलो मेरे लाडिले हो पायन	१६३

169	चंहू दिश टपकन लागी बूंदे	६६
170	चांपत चरण मोहन लाल	९
171	चंदन चर्चित नील कलेवर	२३
172	चंद्रभान के नवनिधी आई	२०७
	छ	
173	छगन मगन प्यारे लाल	१६६
174	छबिलो गोपाल झूले	१०६
175	छबिले लाल के संग ललना	१३६
176	छाक लिये सिर श्याम बुलावत	१६
177	छाक ले आई ग्वालिन गौरी	३३
178	छिन छिन बानिक और ही और	३७
	ज	
179	जईये वाके धाम जाके जागे	२८
180	जन्म लियो शुभ लग्न विचार	१७४
181	जन्म लियो जादो कुल राय	१७४
182	जन्म लियो वृषभान गोपके	१९७
183	जब में देखरी गोपाल लाल	३८
184	जब मेरो मोहन चलेगो	१८५
185	जब ते राधिका भूतल प्रकटी	२००
186	जमुना घाट रोकी है रसिक चंद्रावली	२२४
187	जमुना तट नव सघन कुंज में हिन्डोरना	१५१
188	जय जय श्री वल्लभ प्रभु	ii
189	जल क्यो न पियो	३७
190	जसुमति लटकत पाय धरे	१६२
191	जसुमति लटकत पांय परे	१६३
192	जसुमति तिहारो धर सुबस बसो	१७४
193	जसुमति लाल को बदन देखिये	v
194	जसोंदा रानी जायो हे सुत नीको	१३०
195	जागीये वृजराज कुंवर	iv
196	जागो जागो जागो मेरे गिरधर	१६६
197	जा दिन कन्हैया मोसो मैया	१८५
198	जेंवत नंद कान्ह ईक ठौरे	१९२
199	जेंवत कान्ह नंद जू की कनिया	१९५
200	जेंवत नंद कान्ह बल भैया	२२०
201	जेवन बैठे हरि कुजन मांह	४०
202	जेंवत ग्वाल मंडली मांह	४६
203	जेश्री जगन्नाथ हरि देवा	४१
204	जोरत छाक प्रेम सुं मैय्या	२३४
205	जोसुख होत गोपाले गाऐ	६५
	झ	
206	झगरिन ते हो बोहोत खिजाई	१६२
207	झुलन आई ब्रजनार	७७
208	झुलत सुंरग हिंडोरे राधा मोहन	७७
209	झुलत है राधा सुन्दरवर	८२
210	झूलत लाल गोवर्धन धारी	८२
211	झुलत श्याम प्रिया संग	८२
212	झुलत तेरे नयन हिंडोरे	८५
213	झुलत दुल्हे दुल्हनी सुंरग हिन्डोरे	८६
214	झुलत लाल गिरवर धरण	८९
215	झुलत श्याम पिया संग रंग	८२
216	झुले माई नटवर सुरंग हिन्डोरे	९०
217	झुलेरी झुलेरी झुले प्यारो लाल	१२६
218	झूले माई युगल किशोर	८०
219	झुलो हो तो सुरंग हिडोरे	८०
220	झुलो पालने गोविंद	१७७
221	झूम रहे बादर सगरी निशाके	v
222	झूमक सारी हो तन गोरे	८
223	झूलत दोऊ कुंज कुटिर	१२६
224	झूली झूली हो पिय संग	९१
225	झूलन आई ब्रजनारी	९५

226	झूलेरी झूलेरी माई झूले	१००
227	झूलत दोऊ लालन गिरिवरधारी	१००
228	झूलो झूलो हो मन भावन	११२
229	झूलत नवरंग संग राधिका	१२२
230	झूलत सांवरे संग गौरी	१३८
231	झुलत राधा मोहन कालिन्दी के कूल	१३९
232	झुलत नागरी नागर लाल	१३९
233	झुलत अरूझी वनमाल	१४४
234	झुलत सुभग हिन्डोरे गिरीधर	८१
235	झूलत गोकुलचन्द हिन्डोरे	१०८
236	झूलत लाल प्रिया वृंदावन	१०९
	ठ	
237	ठाड़ी लिये खिलावत कनिया	१९२
238	ठाडे हें कदंब तर कुंवर	४५
	ड	
239	डगर चल गोवर्धन की बाट	९
	ढ़	
240	ढ़ाढ़ी भानुद्वार व्हे आये	२०५
241	ढ़ाढ़ीन नंदी सुर तें आई	२०३
	त	
242	तनक प्याय पानी यह मिस	३५
243	तुमको टेर टेर में हारी	८
244	तुम घन से घनश्याम	३०
245	तुम पोढ़ो हों सेज बनाऊ	२५
246	तुम नंद महर के लाल मोहन जान दे	२२२
247	तुम ब्रजरानी के लाला	१४०
248	तु चल नंद नंदन बन बोली	३९
249	तु मोही रथ ले बैठारी मैया	४०
250	तु मनायो न माने (मान)	६५
251	तू नेक बरजरी जसोदा मैया	१९५
252	तू देखि सुता वृषभान की	२०५
253	तेरो मन गिरिधर बिन न रहेगो	७३
254	तेरे सिर कुसुम बिथुर रहे	५
255	तेरे सुहाग की महिमा	१७
256	तेसोई वृंदावन तैसिये हरित भूमि	७७
257	तेरे री लाल मेरो माखन खायो	१९४
258	तें कहूँ देख्यो री आली	१९४
259	तेरी लाल लागो मोय बलाय	१८६
260	तेरे पैयां लागु गिरिधर	x
	थ	
261	थेई थेई नृत्य करे	१०८
	द	
262	दधि के मथत मन मथत मोहन को	२६
263	दधि न बेंचिये हमारे कुल	२३३
264	दम्पति पौढ़ेई पौढे रस बतियां	२२
265	दान घाटी छाक आई	२२४
266	दुध दहयो लूटत बन बांटन पीजे	२२७
267	दूध पियो हों कुवर कन्हाई	xiii
268	दूध पिवावत जसोदा मैय्या	xiv
269	दूध पियो मन मोहन प्यारे	xiii
270	दूध पियो मेरे श्यामजू प्यारे	xiii
271	दूध पिवत भर कनक कटोरन	xiv
272	दूध पिवत मानों घूंट प्रेम की	xiv
273	दुपहरी झनक भई	१४
274	दुल्हे दुल्हनी सुरंग हिन्डोरे	८६
275	दुहुं कर फोंदना मुख मेलत	१९०
276	देखो माई सुन्दरता को बाग	८४
277	देखो माई सुन्दरता को रूप	८४
278	देखो माई श्याम हिन्डोरे झूले	८९
279	देखो माई सुन्दता के नैन	१०३

280	देख सखि ठाडे नंद किशोर	५२
281	देत गज दान आज व्रजराज	११३
282	देखरी देख राधा रवन	१९
283	देख सखि पवन पुरवैया	१३
284	देखो भैय्या चहूदिश छाये बादर	५३
285	देख गगन में घटा	५४
286	देखों माई सावन दुल्हे आयो	६०
287	देखो माई मानों कसोटी	६१
289	देखो कैसी नीकी रितु आई	६९
290	देखो माई ईत घन उत नंदलाल	७२
291	देखो माई शोभा श्याम तन की	७२
292	देखो अदभूत अविगत की गति	१२०
293	दोऊ मिल पौढ़े उँची अटा	४५
294	दोऊ मिल जेंवत कंचन थारी	२२०
	ध	
295	धन्य गोकुल जहाँ गोविन्द आये	१५२
296	धन्य धन्य लाड़िली के चरण	२२१
297	धन्य यशोदा भाग्य तिहारो	९४
298	धन्य रानी यशोमति गृह आवत	९५
299	धन्य धन्य हरिदास राई	३
300	धनि धनि प्रभावति जिन जाई	२००
301	धरे शिरप्यारो पियरी पाग	७९
	न	
302	नवल किशोर नवल नागरिया	२७
303	नवल किशोर नवल मृगनयनी	२२७
304	नये पवन नये बादर	४८
305	नवल लाल के संग झूलन आई	१००
306	नई ऋतु सावन तीज	११६
307	नयो नेह नयो मेह नई भूमि	४२
308	निज सुखपुंज वितान कुंज	१२५
309	नीके लाल लागत आज सुहाये	१३०
310	नीके वन फूले फूल सुभग	५७
311	नींद तोये बेचुंगी आली	१५
312	न्हेनी न्हेनी बूंदन हो पिय	४२
313	नैन छबिले अरूण मदमाते	२९
314	नैन नचावत गुजरी उजरे गात	३१
315	नैन उंनीदे भये रंग राते	३२
316	नैन भर देखों नंद कुमार	१५२
317	नंदराय के नवनिधि आई	९८
318	नंदनंदन वृंदावन चन्द	१५८
319	नंद महोत्छव हो बढ़ कीजे	१६८
320	नंद जु मेरे मन आनंद भयो	१६९
321	नंद जु तिहारे सुख दुखजु गयो	१६९
322	नंद को लाल व्रज पालने झूले	१७८
323	नंद बधाई दीजें ग्वालन	१८०
324	नंद जू तुम्हारे आयो पूत	१८०
325	नंद बुलावत है गोपाल	१८३
326	नंदीसुर तें बरसाने में दुनी बटत	२०९
327	नंद नंदन दान निवेरत री	२३१
328	नंद गृह बाजत कहाँ बधाई	१७०
	प	
329	पद्म धर्यो जन ताप निवारण	१७३
330	पय पीवत करत बात सकुचत	xiv
331	परोसत गोपी घूंघट मारे	१८७
332	पनिया न जाऊं री आली	४
333	पवित्रा पहरत राजकुमार	१३३
334	पहेरे सुभग अंग कुसुभी	५०
335	प्रथमही भादो मास अष्टमी	१४७
336	प्रलय पयोधिजले धृत वानसी	१७१
337	प्रकट्यो ब्रज को श्रृंगार	१९९

338	प्रकटी नागरी रूप निधान	२००
339	प्रकट भई शोभा त्रिभुवन की	२०८
340	प्रकटे वामन अवतार	२२९
341	पान खवावत कर कर बीरी	१८०
342	पावस नट नट्यो अखारो	५५
343	पावस ऋतु कुंज सदन	१३७
344	प्यारी तोही गिरिधर लाल बुलावत	६२
345	प्यारो प्यारी झूले कदम्ब की	९७
346	प्रातः समय उठ करिये	१६५
347	प्रात समय नव निकुंज द्वारे	२
348	प्यारे हरि को विमल यश	१७३
349	प्रितम प्रीत ही तें बस कीनो	६
350	प्रित ता नंदनंदन सों कीजे	७
351	प्रीत करी काहू सुख न लयो	७
352	प्रीती तो एक ही ठौर भली	२१
353	प्रीय चार शीलें	३५
354	पुतभयो री नंद महर के	१६०
355	प्रेंख पर्यक शयनं	१३५
356	पौढे माई मदन मोहन श्याम	८३
357	पौढ़े श्याम जु सुख सेज	७
358	पौढे प्रेम के पर्यंक	१३
359	पौढ़े हरि झीनो पट दे ओट	१५
360	पौढे रहो पिय कुंवर कन्हाई	३८
361	पौढ़े माई ललन सेज सुखदाई	२११
362	पौढ़े प्यारी राधिका के गेह	२१०
363	पौढे श्रीराधिका के गेह	७०
364	प्यारी के गावत कोकीला	५३
365	पौढियेलाल लाडली संगले	३४
	फ	
366	फूल के भवन गिरिधर	१०
367	फूल हिंडोरना झूले	१२४
	ब	
368	बजत बधाई वृषभान राय घर	२०१
369	बधाई री बाजत आज सुहाई	१६३
370	बधाई माई आज बधाई	१७९
371	बधाईयां जसोदे! नंदरानीदे लाल	१६१
372	बनतें आवत है गोपाल	५९
373	बरस उधर गयो मेह	१२
374	बरखा उदित भई ऋतु मान	xii
375	बरसाने तें दौरी नारी	१९७
376	बरसाने वर सरोवर प्रकट्यो	२०२
377	बलबल चरित्र गोकुल राय	१८४
378	बरसाने वृषभान गोपके	१९८
379	बलमोहन दोऊ करत बियारू	xii
380	बल बल जाऊं छबिलेलालकी	१८८
381	बलिहारी श्री विट्ठलेश की	iii
382	बलि वामन हो जग पावन	२२८
383	बहन सुभद्रा राखी बांधत	१४३
384	बृज की रीत अनोखीरी माई	१८९
385	बृज पर निकी आज धटा	५०
386	बहू विधि कुंजन की छबि	४६
387	बहुत बेर के भुखे हो	xi
388	बादर झूम रहे चाहुँ और	६१
389	बालदशा गोपाल की	१९१
390	बांट बांट सबहिन को देत	६
391	ब्यारू करत कर कोर धरत मुख	xi
392	ब्यारू करत बलराम श्याम	xi
393	ब्यारू करत है घनश्याम	१७२
394	ब्यारू श्याम अरोगन लागे	xii
395	ब्यारू करत जननी पे मोहन	२३७

396	ब्यारू कीजे मोहन राय	xi
397	बिहारीलाल आवहु आई छाक	२३४
398	बिहारी लाल आई छाक सलोनी	४
399	बिहरत बन बन में बनवारी	२१
400	बिराजत सघन कुंज की ओट	५२
401	बिराजत वनमाला जू गरे	७२
402	बैठे लाल फूलन की चोखंडी	२१
403	बैठे फूल महल में दोऊ	५६
404	बौले माई गोवर्धन पर मुरवा	४२
405	बौले माई मोर मदन के माते	६५
	भ	
406	भई मेरे मन की बात जो माई	१७४
407	भई वृषभान के सुता	२०४
408	भादों की रैनी अंधियारी	१५५
409	भादों सूदी पंचमी प्रकट भई	२०७
410	भींजत कब देखोंगी ईन नैना	७४
411	भैय्या हो घेरो घेरो व्रजनारी	२२७
412	भोजन कर उठे दोऊ भैया	१८०
413	भोजन को बोलत महतारी	१८५
414	भोजन कीजे मोहनलाल	१९४
415	भोजन बेगी करोरे भैय्या	४४
416	भोजन करत नंदलाल	४६
417	भोजन भयो लाल नीकी विधिसों	४७
	म	
418	मचकी मचकी झूले	९७
419	मदन मोहन बन देखत	५६
420	मधुर ब्रज देश बस मधुर कीनो	९
421	मनमोहन रंग बोरे झूलन आई	९९
422	मन मोहन वृषभान लली	१०२
423	महर पुत तेरो केसो हू बरज्यो	१९५
424	महारस पूरण प्रकटयो आनी	२१५
425	महल आये लाल	५८
426	माई आजतो हिंडोर झूले	११९
427	माई झूलत नवल लाल	११८
428	माई री कमल नैन श्यामसुन्दर	१३५
429	माई री श्याम घन तन	६४
430	माई आजतो गोकुलगाम कैसो	१५८
431	माई आजतो बधाई बाजे मंदिर	१५९
432	माई मेरे गोपाल लड़ाईयो	१७७
433	माई री बांके लोचन नीके	५
434	माई फूल को हिन्डोरो बन्यो	११९
435	मान न किजे मानिनी	८५
436	मान री मान मेरो कह्यो	७
437	मान तज गौरी नंदलाल सो	५
438	मानत नहीं मनावे हठिलीतु	४८
439	मान न कर री बावरी	५१
440	मुदित झुलावत अपने	१०५
441	मुदित निशान बजावहि	२०१
442	में देखी सुता वृषभान की	२०५
443	मेरे छगन मगन खेलो	१८८
444	मेरे मन आनंद भयो होंतो	१९९
445	मेरे कर मेंहदी लगी है	१३
446	मेरेरी बगर में आवत श्याम	१७
447	मेरो मन गिरिधर छबी पर अटक्यो	५९
448	मुरली कौन तप तें कियो	१७
449	मुरली अंधर धरे आवत	४३
450	मुकुट भी छांह मनोहर किये	२४
451	मुरली तूं जो गोपाल ही गावत	६८
452	मैय्या मेरी कामर कौन लई	१५
453	मैय्या मेरी ऐसी बहुरीया भावे	१८

454	मैय्या अपने सुत ही जीमावत	१८२
455	मैय्या तु मोहे बड़ो कर लेरी	१९४
456	मोर मुकुट की लटकन	१०४
457	मोहन घूमत रतनारे नैन	४
458	मोहन माखन चोरी करत फिरत	१५
459	मोहन लाल बियारू किजे	xiii
460	मोहन जेवत छाक ग्वाल मंडलीमाह	६६
461	मोहन जेंवत छाक सलोनी	२८
462	मोहन नंदराय कुंवार	१७३
463	मोहन तुम हूं भोजन किजे	५५
464	मोहि सो निठुराई ठानी	५५
465	मोहे दुध मथन दे बलजई	१९१
466	मोहे दधिमथन दे गोविन्द	१९१
467	मंगल द्योंस छठि को आयो	१६४
468	मंगलं मंगलं व्रज भुवि मंगलं	१६६
469	मंड़ल जोर हरि जेवन बैठे	५६
	य	
470	यदुवंशी जिजमान तिहारो	२१०
471	यमुनाघाट रोकी हे रसिक	२३६
472	यशोदा रानी सोवन फूले फूली	१७६
473	यशोदा रानी जायो है सुत नीको	१६७
474	यशुमति तिहारो घर सुबस	१७९
475	यह धन धर्म ही तें पायो	९४
476	यशोदा नाल न छेदन देहों	१६२
477	यशुमति मुदित मुदित सब गोकुल	१६०
478	यह सुख सावन में बनी आवे	८७
479	यह सुख देखोरी तुम माई	९८
480	यह सुनी वचन पिया पे आई	५१
481	यह नितनेम जसोदाजु मेरो	१३८
482	यह छब मोपे जातन बरनी	२
483	यह कोऊ जानेरी वाकी चितवन	३७
484	यह रितु रूसवे की नांही	५७
485	ये दोऊ झुलत बांह जोरे	१५१
	र	
486	रति संग्राम वीर रसमाते	१६
487	रथ चढ़ आवत गिरधर लाल	४०
488	रमक झमक झूलन में ठमक	८५
489	रमक झमक झूले झूलावें	११०
490	रहरी ग्वालन जोबन मदमाती	१८९
491	रही फबी श्याम छबिली पाग	८१
492	राजा एक पंडित पौरी तिहारी	२३०
493	राजा एक पंडित पौरी तिहारी	२३०
494	राधा मोहन झूलत सुरंग हिन्डोरे	१५५
495	राधा मोहन करत बियारू	xii
496	राधा रावल प्रकट भई	२१३
497	राधिका रवन की मुरलिका	३१
498	राधिका आज आनंद में डोले	२१८
499	राधे जू शोभा प्रकट भई	२०२
500	राधे जू झूलत रमक रमक	९९
501	राधे के संग सुभग गिरीवधर	१०६
502	राधेजु देखिये बन शोभा	११६
503	राधे रूप की घटा	१२४
504	रानी जू जायो है मोहन पूत	१६१
505	रानी तेरो भाग्य सबन से न्यारो	१२३
506	रानी तेरो चिरंजीवो गोपाल	१६८
507	रानी जसुमति गृह आवत	१७२
508	रानी जू अपने सुत ही जिमावत	xiii
509	राय गिरिधरन संग राधिका रानी	२१५
510	रावल आज कुलाहल माई	२०५
511	रावल गावते दौर आनंद भर	२०३

512	रावल राधा जू प्रकट भई	२१३
513	रंग बधावनो गोकुलरायके धाम	१५३
514	रंग मच्यो सिंह द्वार	७८
515	रंग हिन्डोरना झूलत राधा	११७
516	रूखरी मधुवन मोहन	१०
	ल	
517	ललित कदम्ब तरे हो	१०४
518	ललित व्रज देश गिरिराजराजे	२
519	लहेरिया मेरो भींजेगो	९६
520	लाल और ललना जू	५२
521	लाल की शोभा केहेत न आवे	५०
522	लाल तो हों झूलो जो तुम	११०
523	लाल नेक गैया मेरी घेरो	४७
524	लाल प्यारो झूलत है संकेत	८६
525	लाल बाल निरख हरख	७४
526	लाल माई भींजत आये गेह	५९
527	लाल माई बांधे कुसुंभी पाग	४९
528	लाल मोरी सुरंग चूनरी देहो	११५
529	लाल मुनिन के झूण्डन	९९
530	लाल सिर पाग लहरिया	११३
531	लाडिले बोलत हे तोही	x
532	लाडिलो लड्याय बुलावत धेनु	४३
533	लीजे लालन अपनी छाक	१४
534	लाडिली सुरंग पालने झुले	२११
535	लाल को मीठी खीर जो भावे	१८२
536	ले चली री गोरस बेचन	२३४
	व	
537	वन्दे धरणं गिरिवर भूप	१७३
538	वर्षा उदित भई ऋतु मान	xii
539	वर्षगांठ वृषभान कुंवरी की	२१३
540	बांट बांट सबहिन को देत	६
541	वारी मेरे लटकन पगधरो	१४०
542	विहरत सातों रूप धरे	१२८
543	विट्ठलराय राय गिरिधरन	१४१
544	वे देखियत हमारे गोकुल के	९
545	वृजभयो महरी के पूत	९३
546	वृज के आंगन मच्यो हे हिन्डोरो	९९
547	वृज पर नीकी आज घटा	५०
548	वृंदावन कनक भूमि निर्तत	५६
549	वृंदावन कुंजन में मध्य	४
550	वृंदावन झूलत गिरवरधारी	८०
551	विमल यश वृंदावन के चंद को	१९०
	स	
552	सखिरी तेरे तन की सुन्दरता	२२१
553	सखिरी सावन दुल्हे आयो	७७
554	सखिरी हरियारो सावन आयो	८४
555	सखिरी वृजको बसवो नीको	५३
556	सखिरी बूंद अचानक लागी	४४
557	सखि मोहे करो उनकी छकहारी	५६
558	सघन घटा घन घोरे	५७
559	सब ग्वाल नाचे गोपीगावे	१३६
560	सबन सो कहत यशोदा माय	१६४
561	सबै मिल मंगल गावो माई	१७६
562	सावन की पून्यो मन भावन	१४४
563	सांवरो सुत पलना झूले	१७८
564	सारंग नयनीरी काहे को	२६
565	सांवन की तीज हिन्डोरे झूले	११७
566	सारी मेरी भींजत हेजू नई	११५
567	सिखवन चलन जसोदा मैया	१७२
568	सिंघपौर ब्रजराज को ढ़ाढ़ी	२१४

569	सुआ तेरी सोने चोंच मढ़ाऊं	१४
570	सुखद वृंदावन सुखद यमुनातट	८८
571	सुखद वृंदावन सुखद कालिन्दी	११४
572	सुघर रावरे की गोप कुमारी	१४४
573	सुत ही जिमावत यशोदा मैय्या	२३७
574	सुनरी सयानी त्रिया	४५
575	सुनी बडभागिन हो नंदरानी	१७३
576	सुनी सुनी सुतकी बात	xi
577	सुनो मोहन आई छाक तिहारी	५६
578	सुन्दर बदन री सुखसदन	४२
579	सुबल गिरिधर चढ़ टेरत	३०
580	सुधर रंग राख्यो ही मुरली में	१५
581	सुरंग हिन्डोरना हो माई	१०५
582	सेन काम की लायो	७८
583	सेवक की सुख राशी सदा	३३
584	सैन भोग लाई थर थारी	xi
585	सोंधे नहाय बैठी पहिरी	३१
586	सोहत आयो सावन हरियारो	११०
587	सोहत गिरिधर मुख मृदुहास	२२
588	सोहत लाल के परदनी अति झीनी	३०
589	सोहत वन आयोरी हरियारो	८४
590	सो तु राख लेरी झोटा तरण भये	१००
591	सो गोविन्द तिहारे वृज बालक	१५४
592	सोहिलरा नंदमहर गृह बाजे	१४३
593	सोहत श्याम तन पीत झगुलिया	१९२
594	सोवन फूलन फूली री यशोदा रानी	१६७
595	सोवत नींद आय गई	१८८
	श	
596	शुभ दिन मंगल आज	१७४
597	श्याम चल कुंजन में आये	५२
598	श्याम देख नाचत मुदित वन मोर	८८
599	श्याम सुन नियरे आये मेह	११५
600	श्याम सुन हरित भूमी सुखकारी	३९
601	श्याम श्यामा सुखद फूल के	४७
602	शोभा माई अब देखन की बहार	४६
603	शोभित कर नवनीत लिये	१८७
	ह	
604	हम हूँ सों निठुराई ठानी	१०१
605	हमारे माई श्यामाजू को राज	६१
606	हमारो देव गोवर्धन रानो	३
607	हमारो दान देहों गुजरेटी	२२२
608	हरि को टेरत फिरत गुवारी	२
609	हरि को ग्वालीन भोजन लाई	१२
610	हरि रभिसरति बहति मधुपवने	१३
611	हरि को जिमावत विट्ठलनाथ	२८
612	हरि भोजन कीजें आई छाक	४४
613	हरि पोढ़ो चकड़ोर झुलाऊँ	४८
614	हरि सघन की अति श्यामढाक	७१
615	हरि भोजन करत विनोद सो	१८२
616	हरि जनमत ही आनंद भयो	१५१
617	हालरो हुलरावे माता	१७८
618	हिन्डोरे माई झुले गिरिधर लाल	१५०
619	हिन्डोरना रोप्योनंद आवास	७७
620	हिन्डोरे माई झूलन के दिन	७९
621	हिन्डोरे माई झूलत गिरिवरधारी	९०
622	हिन्डोरे झूलत गिरिवरधारी	१०७
623	हिन्डोरे झूलत है भामिनी	१०२
624	हिन्डोरे माई झूलत गिरिधरलाल	१०४
625	हिन्डोरो री व्रज के आंगन माच्यो	१०८
626	हेरीहे आज नंदराय के आनंद भयो	१७०

627	हेरी बाजे मंदिलरा महावन	१३९
628	हेरी हेरी रे भैय्या हेरी हेरी रे	१४२
629	हों तो झूलीरी हिन्डोरे अपने	१५३
630	हों वृजराज की ढ़ाढीन वृज में आई	१६०
631	हों वृजवासिन को मगा	२०८
632	हों तो एक नई बात सुनी आई	१७०
633	हों कैसे जाऊं मरम न पाऊं	३४
634	हों तो इन मोरन की बलिहारी	६९
635	हँस हँस दूध पीवत नाथ	xiii
	श्री	
636	श्रवण सुनी सजनी बाजे मंदिरला	१४४
637	श्री गोपाल लाल गोकुल चले हों	१५६
638	श्री गोवर्धन गिरी कंदरा में	१०
639	श्री विट्ठनाथ जू के चरण शरण	iii
640	श्री राधा जू शोभा प्रकट भई	२०७
641	श्री राधे हरि तेरों वदन सिरायो	२२१
642	श्री रोधजु के वदन की बल जैहों	२२१
643	श्री नवनागरी प्यारी तू वृंदावन की रानी	२१६
644	श्री वल्लभनंदन रूप अनूप	५०
645	श्री वृंदावन नव निंकुज भ्रमर	३५
646	श्री वृंदावन भुवि कुन्दादिक	७५
647	श्री वृषभान रायजू के आंगन	२०४
648	श्री वृषभान लड़ेती गाईये	२२५
649	श्री वृषभान सदन भोजन को	१८

।।श्रीनाथजी।।

भाद्रपद मास के विशेष निर्णय

श्रीएकादशी को निर्णय दशमी जो ५५ घड़ी होय तो उस एकादशी का त्याग करना चाहिये। साथ ही पलमात्र ही पचपन घड़ी में ओछी होय तो उस एकादशी को नहीं छोड़ना चाहिये। यदि वेध का सन्देह हो तो द्वादशी के दिन व्रत करना चाहिये। यदि दो एकादशी होय तो दूसरी एकादशी के दिन व्रत करनों।

श्री जन्माष्टमी निर्णय भाद्रपद वदी अष्टमी जन्माष्टमी। सो वह अष्ठमी सप्तमी विद्धा न लेनी, सप्तमी का वेध सूर्योदय से लेना चाहिये एकादशी की तरह ५५ घड़ी का वेध नहीं लेना चाहिये। यदि अष्टमी सप्तमी विद्धा होय तो औदयिक अष्टमी को उत्सव मानना चाहिये। यदि अष्टमी का क्षय होतों शुद्ध नवमी के दिन उत्सव मानना चाहिये। यदि दो अष्टमी हो तो प्रथम अष्टमी को उत्सव मानना चाहिये।

श्रीराधा अष्टमी निर्णय राधाअष्टमी उदयात लेनी चाहिये। दो अष्टमी हो तो प्रथम अष्टमी को उत्सव मानना चाहिये। यदि अष्टमी का क्षय हो तो बिद्धा अष्टमी को उत्सव मानना चाहिये।

श्रीदान एकादशी को निर्णय एकादशी के निर्णय के अनुसार व्रत के दिन ही उत्सव करना चाहिये।

श्रीवामन द्वादशी निर्णय द्वादशी मध्यान व्यापीनी लेनी चाहिये। यदि एकादशी के दिन विष्णु श्रृंखला योग हो तो एकादशी के दिन उत्सव माना जाता है। यदि एकादशी में श्रवण नक्षत्र बैठे और द्वादशी श्रवण नक्षत्र के उपरान्त आवे तो उस योग का नाम विष्णु श्रृंखला योग है।

॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥

॥ श्रीमदाचार्य चरणकमलेभ्यो नमः ॥

॥ श्री गुसाँईजी परमदयालवे नमः ॥

॥ नित्य पद ॥

मंगलाचरण राग-भैरव चिंतान् संतान् हन्तारो यद्पादाम्बुज रेणवः। स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहः।। यदनुग्रहतो जंतु सर्वदुःखातिगोभवेत्। त्वमहं सर्वदा वन्देश्रीमद्वल्लभनन्दनम्।। अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानांजन शलाकया। चक्षुरून्मीलितं येन तस्मैश्रीगुरूवे नमः।। नमामी हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धि शायिनन चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च त्रिभिष्टिता षड़भिर्विराजते यौसौ पंचधा हृदयेममः

॥ श्री गुरू वंदना ॥

राग-भैरव जय-जय-जय श्रीवल्लभ प्रभु विठ्ठलेश साथे, निज जन पर करत कृपा धरत हाथ माथे।। दोष सबें दूर करत भक्ति भाव हिये धरत, काज सबे सरत सदा गावत गुण गाथें।।१।। काहेको देह दमत, साधन कर मूरख जन, विद्यमान आनंद त्यज, चलत क्यूँ अपाथें।। "रसिक" चरण शरण सदा, रहत हैं बडभागीजन, अपनौं कर श्रीगोकुलपति, भरत ताहि बाथे।।२।।

राग-भैरव गाऊँ श्रीवल्लभ ध्याऊँ श्रीवल्लभ, श्रीवल्लभ चरण रज लपटाऊँ।। वल्लभसंतति नित्य प्रति निरखूँ, वल्लभ दासन दास कहाऊँ।।१।। कृष्णलीला सेवा नित्य करों, जगत सबै तृण तुल्य धराऊँ। "व्यासदास" की यही प्रतिज्ञा श्रीगोविंद कृपातें पाऊँ।।२।।

राग-धुरिया मल्हार उठत प्रातः रसना रस पीजे लीजे श्री वल्लभ प्रभु को नाम।। आनंद में बीतत सब निशदिन, मन वांछित सुधरे सब काम।।१।। सुजस गान, मन ध्यान आन उर, जे राखे दृढ़ आठों याम।। "परमानंद दास" को ठाकुर जेहि वल्लभ तेहि सुन्दर श्याम।।२।।

राग–सोरठ मल्हार भोर ही श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ कहिये।। आनंद, परमानंद, श्रीकृष्ण मुख, सुमर अष्ट सिद्धि पैये।।१।। और सुमरो श्री विट्ठल, श्रीगिरिधर, गोविन्द द्विजवर भूप।। श्रीबालकृष्ण, गोकुलपति, रघुपति, यदुपति नव घनश्याम स्वरूप।।२।। पढौ सुसार श्रीवल्लभ वचनामृत, जपौ अष्टाक्षर मंत्र करिनेम।। अन्य श्रवण कीर्तन तजि निश दिन सुनौ सुबोधिनी धरि जिय प्रेम।।३।। सेवा सदा नंद–यशोमति सुत, प्रेमभक्ति सहित जिय जान।। अन्याश्रय, असमर्पित लैनो, असद् अलाप असद् संग हानि।।४।। नयनन निरखौं श्रीयमुनाजी, और निरखों सुखद व्रजधाम।। यह संपत्ति श्रीवल्लभहितें पैये, "हरिजन" को नांहि और सों काम।।५।।

राग–भैरव श्री विट्ठलनाथ जू के चरण शरणम्। श्री वल्लभ नंदनं, कलिदुख खंडनं, पूरण पुरूषोतमं त्रयतापहरणं।। सकल दुःखदारणं, भवसिंधु तारणं जनहित लीला देहधरणं।। "कान्हरदास" प्रभु सब सुख सागरं, भूतल दृढ भक्ति प्रकट करणंम्।।

राग–सोरठ मल्हार बलिहारी श्री विट्ठलेश की जिन जगत उधार्‌यो। माया सिन्धु ते तारकें पार उतार्‌यो।।१।। पाप–पुन्य जीव दुष्ट कौ हृदे नाँय विचार्‌यो। "कृष्णदासं" की बाँह पकर मारग में डार्‌यो।।२।।

राग–सोरठ मल्हार श्री विट्ठलेश विट्ठलेश कहि रे। इनके सम्बध बिना दृश्यमान वस्तुमात्र ताको तूँ जियमें कलेश कहि चहिरे।।१।। रसना गुण रूप कों निसवासर कर, यह सुख निरंतर आहार जैसे लहिरे।। श्री विट्ठलेश के श्री वल्लभ के पद को पराग पावे जहाँ, तिनके तू दासन कौ "दास" व्है रहि रे।।२।।

।। श्री यमुनाजी के पद ।।

राग–विभास तिहारौ दरस मोहि भावै श्रीयमुनाजी। श्री गोकुल के निकट बहत है, लहरन की छबि आवै।।१।। सुखदैनी, दुखहरनी, श्रीयमुनाजी, जो जन प्रात उठ न्हावै। मदनमोहन जु की खरी प्यारी, पटरानी जु कहावै।।२।। वृन्दावन में रास रच्यो है, मोहनमुरली बजावैं।। "सूरदास" प्रभु तिहारे मिलन कों, बेद विमल जस गावें।।३।।

राग-सोरठ मल्हार निरखत ही मन अति आनंद भयौ, देख प्रभात प्रभाकर कन्या।। जल परसत ही सकल अघभाजे, ज्योंहरि देख हिरण की सन्या।।१।। गति ओर जीवन की औरनकी, मेरी गति तो तुमहिं अनन्या। "ब्रजपति" की तुम अतिहि पियारी, तुम संगमतें जान्हवी धन्या।।२।।

राग-सोरठ मल्हार यह विनती चित्त धरिये श्रीयमुनाजी, यह विनती चित धरिये।। गिरिधरलाल मुखारविंद रति, जन्म जन्म नित करिये।।१।। विष सागर संसार विषम, संगते मोहि उद्धरिये।। काम-क्रोध-अज्ञान-तिमिर अति, उर अंतर तें हरिये।।२।। तुम्हारे संग बसौं निज जन संग, रूप देख मन ठरिये।। गाऊँ गुण गोपाल लाल के, अष्ट व्याधि ते ड़रिये।।३।। त्रिविध दोष हर के कालिंदी, एक कृपा कर ढ़रिये।। "गोविन्द दास" यह वर मांगै, तुम्हारे चरण अनुसरिये।।४।।

राग-सोरठ मल्हार दोऊ कूल खंभ, तरंग सीढ़ी, श्री यमुना वैकुंठ निश्रेण्नी।। अति अनुकूल कलोलन के भर लिये जात, हरि के चरनन सुख दैनी।।१।। जन्म-जन्म के पाप दूर कर, काटत कर्म-धर्म धार पैनी।। "छीतस्वामी" गिरिधर जू की प्यारी, साँवरे अंग कमलदल नयनी।।२।।

।। जगायवे के पद ।।

राग-भैरव जागिये ब्रजराज कुँवर, कमलकोश फूले। कमुदिनी जिय सकूच रही, भृंगलता झूले।।१।। तमचर खग करत रोर, बोलत बनराई। रांभत गौ मधुरनाद, बच्छ चपलताई।।२।। रवि प्रकाश, विधु मलिन, गावत ब्रजनारी। "सूर" श्रीगोपाल उठे, परम मंगलकारी।।३।।

राग-भैरव ललित लाल श्री गोपाल सोइये न प्रातकाल, यशोदा मैया लेत बलैया, भोर भयो बारे।। उठौ देव करू सेव, जागिये देवाधिदेव, नंदराय दुहत गाय पीजिये पय प्यारे।।१।। रविकी किरन प्रकट भई, उठौ लाल निशा गई, दधिमथत जहाँ तहाँ गावत गुण तिहारे।। नंद कुमार उठे बिहँस, कृपा दृष्टि सबपै बरस, युगल चरण कमलन पर "परमानंद" वारे।।२।।

राग–विभास प्रातः समे जागी अनुरागी, सोवत हुती री श्याम जू के संगिया।। चीर संभार उठीरी दक्षिन कर, वाम भुजा फरकी भर अंगिया।।१।। भाल में सुहाग भरी छबि उपजत न्यारी, पहेरे कुसुंभी सारी सोधे रगमगिया।। "अग्रस्वामी" लाड़ लड़ाई, बहुत कीनी बड़ाई, फूली फिरत अति ही सगमगिया।।२।।

राग–मल्हार जसूमति लालकौ बदन दिखैये।। भोर उठत आय देखत मुख, निरखत ही सचुपैये।।१।। उमड़ रही घटा चहुँदिशतें, बेगतुरत उठ धैये।। "परमानंद" प्रभु उठे तुरतही, निरख मुखारविंद बलजैये।।२।।

राग–पावस मल्हार लाल और ललनू बांह जोटी उठे प्रात पवन लगत कमल लपटात।। यह अचरज मोपें कहेत न बनि आवै, दोउनको प्रतिबिंब देख दृग न समात।।१।। बागे बीर बनठन सौंधेही अरगजे ऐसे, भीजे मधुकर तिनपें उड्यौ न जात।। "सूरदास मदनमोहन" पिय प्यारी पर वारत तनमन देखत नांहि अघात।।

राग–सोरठ मल्हार झूम रहे बादर सगरी निशाके, वर्षन को रहे हैं छाय।। जागे सब ग्वाल बाल, आये दौर ठाडेद्वार, लीने है लाल जगाय।।१।। दोहनी धोय दीनी हाथ, हलधर दिये हैं साथ, बछरा जोवत मग रांभत हैं गाय।। "परमानंद" नंदरानी, फूली अंग न समानी, बार बार लेत हैं बलाय।।२।।

राग–सोरठ मल्हार बादर झूम झूम बरसन लागे।। दामिनी दमकते चोंक चमक श्याम घनकी गरज सुन जागे।।१।। गोपीजन द्वार ठाड़े नारीजन भीजे, मुख देखन कारन अनुरागे।। "छीतस्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल ओतप्रोत रस पागे।।२।।

।। कलेऊ के पद ।।

राग-भैरव छगन मगन प्यारे लाल किजिये कलेवा।। छींके ते सगरी दधि, ऊखल चढ़ काढ़ लेहौं, पहिर लैहौं झगुली फेंटा, बाँध लेहौ मेवा।।१।। यमुना तट खेलन जावौ, खेलन के मिस भूख न लागे, कौन परी प्यारे लाल निश दिना की टेवा।। "सूरदास मदनमोहन" घरही क्यों न खेलौ लाल, देहोंगी चकड़ोर-बंगी-हंस-मोर-परेवा।।२।।

राग-भैरव आछो नीकौ लोंनों मुख भौर ही दिखाईये। निश के उनीदे नयना, तोतरात मीठे बैना, भांवते हो जियके मेरे, सुख ही बढ़ाईये।।१।। सकल सुखकरण, त्रिविध तापहरण, उर कौ तिमिर बाढ्यो, तुरत नसाईये।। द्वारे ठाडे ग्वाल बाल, करो हों कलेऊ लाल, मीसी रोटी छोटी-मोटी माखन सों खाइये।।२।। तनकसौं मेरो कन्हैया, वार फेर डारी मैय्या, बेंनी तो गुहों बनाइ, गहरू न लगाइये।। "परमानंद" प्रभु जननी मुदित मन, फूली फूली अति उर अंग न समाइये।।३।।

राग-सोरठ मल्हार करत कलेऊ किलकत दोऊ भैया।। सथ माखन मिश्री लै जसोदा, सान सान देत श्रीमुख मैया।।१।। बरसत, गरजत, परत पनारे, देखत हुलसत दोऊ भैय्या।। "कृष्णदास" प्रभु की छबि निरखत, ग्वाल बाल सबही हुलसैया।।२।।

राग-सोरठ मल्हार आंगन उजारे बैठ करो हों कलेऊ लाल, भवन अंधेरो है कहे मैया।। घुमड़ी घन घटा आई, चंहुदिशतें छाई, हँसत खरे दोऊ भैया।।१।। माखन मिश्री और ओट्यो पय, व्यावत मथ मथ दूध की घैया।। ऐसो सुख देख "नंददास" प्रभु की पुन पुन लेत बलैया।।२।।

राग-सोरठ मल्हार करत कलेऊ मदन गोपाल।। बहुविध पाक थार मध्य राखे, लेहु मनोहर लाल।।१।। जो भावे सो लेहु मेरे मोहन, माधुरी मधुर रसाल।। "परमानंद" प्रभु बेग ले हौ किन, चहुँदिश घटा उमड़ रही लाल।।२।।

॥ मंगला दर्शन ॥

राग–भैरव मंगलं मंगलं व्रजभुवी मंगल।। मंगलमिह श्री नन्द–यशोदा नाम स्वकीर्तन में तद्रूचिरोत्संग सुलालित पलित रूपम।।१।। श्री श्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नामस्वार्तजनाशय तापापहमिति मंगलरावम्।। ब्रजसुन्दरी वयस्य सुरभीवृन्द मृगीगण निरूपम् भावाः मंगल सिंधु चयाय।।२।। मंगल मीषत्स्मित युतमीक्षण भाषण मुन्नत नासापुट गत मुक्ताफल चलनम्।। कोमल चलदंगुलिदल संगत वेणुनिनाद विमोहित वृन्दावन भुवि जाताः।।३।। मंगलऽखिलं गोपी शितुरिति मंथर गति विभ्रम् मोहित रासस्थित गानम्।। त्वं "जय" सततं गोवर्धनधर पालय निज दासान्।।४।।

॥ श्रृंगार के पद ॥

राग–घुरिया मल्हार हमारे माई श्यामाजू को राज।। जाके आधीन सदाही सांवरो या व्रजकौ शिरताज।।१।। यह जोरी अविचल श्रीवृंदावन, नही औरनसों काज।। "श्रीविट्ठल" विपिन विहारिन के संग, ज्यों जलधर संग गाज।।२।।

राग–रामदासी मल्हार सखी अब मोपै रह्यो न जाय।। चलिरी मिल उनहीयें जैसे, जहां चरावत गाय।।१।। अंग अंग की सब सुधि भुली, देखत नंदकिशोर।। मेरो मन हरिलियो तबहीको, जब चितये यह ओर।।२।।

राग–सोरठ मल्हार आयौ आगम नेरश, देश देश में आनंद भयौ, मन्मथ अपनी सहायकूं बुलायौ।। मोरनकी टेर, सुन कोकिल कुलाहल, तेसोई दादुर हिलमिल सुरगायौ।।१।। चढ्यौ घन मतहाथी, पवन महावत साथी, अंकुश बंकुश देदै चपला चलायौ।। दामिनी ध्वजा पताका फरहात शोभा बाढ़ी, गरज गरज धों धों दमामा बजायौ।।२।। आगें आगें धाय, बादर वर्षत जाय, ब्यारनकी बहुकन ठौर ठौर छिरकायो।। हरी हरी भुमि–पर बूढ़नकी शोभा बाढी, बरन बरन रंग बिछौना बिछायौ।।३।। बांधेहें विरही चोर, कीनेहैं जतन रोर, संजोगी साधनसों मिल अति सचुपायौ।। "नंददास" प्रभु नंदनंदन कौ आज्ञाकारी, अति सुखकारी व्रजवासिन मनभायौ।।४।।

राग-धुरिया मल्हार लाल माई बाधें कसूँ भी पाग।। कसुंभी छड़ी हाथ में लीयें, भीज रहे अनुराग।।१।। कसूँभोई कटि बन्योहै पिछौरा, कसुंभी उपरैना।। कसुंभी बात कहत राधासों, कसूंभे बने दोउ नयना।।२।। हरित भूमि यमुना तट ठाडे, गावत राग मल्हार।। "श्रीविट्ठल गिरीधन" छबीलो, श्याम घटा अनुहार।।३।।

राग-सोरठ मल्हार पहेरे सुभग अंग कसुंभी सारी, सुभग हरियारी, तामें इन्द्र बधू सोहै।। हरि के संग ठाडी, कंचुकी उतंग गाढी, बाल मृगलोचनी देखत मन मोहै।।१।। तैसी यें पावस ऋतु, तैसे यें उनये घन, तेसीये बनिक बनी उपमाकों कोहै।। "कुंभनदास" स्वामिनी, विचित्र राधे भामिनी, गिरधर पिय मुख इकटक जोहै।।२।।

राग-सोरठ मल्हार बिराजत बनमाला जू गरें।। बहुत भांत कुसुमनसों गूँथी गुंजत भ्रमर अरें।।१।। इन्द्रधनुष की उपमा राजत ठाड़े कुंज तरे।। "रामदास" प्रभु नटवर काछें मुरली अधर धरें।।२।।

।। अचवन-बीरी के पद ।।

राग-वृन्दावनी सारंग लीजै बीरी परम उदार।। लाई स्वच्छ सम्हार मनोहर, अति सुगंध सीतलता ड़ार।।१।। निरख निरख छवि मन आनन्दे, लीनी सुहस्त पसार।। "सुर" निरख आनंद तन-मन-धन, वारत मुक्ता हार।।२।।

राग-सोरठ मल्हार बीरी सुबल श्याम कों देत।। श्याम सखा ग्वालन कों बांटत, उपजावत अति हेत।।१।। बरखा बरखत तें सब बिडरी, गायन की सुध काहे न लेत।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधरन बजाई मुरली करन सुचेत।।२।।

राग-पावस मल्हार भोजन भयौ लाल नीकीं विधसों, सघन कुंज की माँहि।। गरज गरज घन बरस्यौ प्रबल अति, कछु हम जान्यौ नाँहि।।१।। कर अचवन अब देखौ व्रज शोभा, कंदबखंड वन माँहि।। "नंददास" प्रभु तुम चिरजीयौ, हम नित्य जूँठन खाँहि।।२।।

राग–इमन मथुरा नगर की डगर में चल्यौ जात, पायौ है हरि हीरा।। सुनरी भटू, लटू भयो डोलत, गोकुल गाम कौ अहीरा।।१।। बनते जु आवत बेनु बजावत, बंशीवट जमुना के तीरा।। "परमानन्द दास" कौ ठाकूर, हँस दीनौ मुख बीरा।।२।।

।। भोग–संध्या आरती ।।

राग–छायानट प्रीतम प्रीतही तें पैये।। यद्यपि रूप गुन सील सुघरता, इन बातन न रिझैये।।१।। सतकुल जन्म, कर्म शुभ लक्षन, वेद–पुराण पढ़ैये।। "गोविन्द" प्रभु बिना स्नेह सु आलो रसना कहा नचैये।।२।।

राग–गौरी आवो मेरे गोविन्द गोकुल के चंदा।। भई बड़ी वार खेलत यमुनातट, वदन दिखाय देउ आनंदा।।१।। गाय आवन भई है विरियां, दिनमणि किरण होत अतिमंदा।। आवो मेरे तात मात छतियां लाग, "गोविन्द" प्रभु ब्रजजन सुखकंदा।।२।।

राग–हमीर गिरिधर सबही अंग कौ बांकौ।। बांकी चाल चलत गोकुल में, छैल छबीलौ काकौ।।१।। बांकी भ्रोंह चरण गति बांकी, बांकौ हृदय है ताकौ।। "परमानंदास" कौ ठाकुर कियौ खोर ब्रज सांको।।२।।

राग–हमीर मेरे तो गिरधर ही गुणगान।। यह मूरत खेलत नयनन में, यहीं हृदय में ध्यान।।१।। चरण रेणु चाहत मन मेरौ, यही दीजिए दान।। "कृष्णदास" कौ जीवन गिरधर, मंगल रूप निधान।।२।।

।। मान के पद ।।

राग–नायकी रूसनों न कर प्यारी रूसवो निवार।। कबकी हौं ठाड़ी, तोय अरज करत हौं, रैन रही घड़ी चार।।१।। मेरो कह्यौ तू मान सुहागिन अतिसुदंर सुकुमार।। "गोविन्द" प्रभुसों हिलमिल भामिन, तनमन जोबन वार।।

राग-मल्हार मान न कर री अब तू पियसों रिम झिम बरखत मेह।। नये-नये लाड़ लड़ाय लाडली न करो मान नयेह।। "रसिक प्रीतम" सों हिलमिल भामिनी करो सुफल निज देह।।१।।

राग-सोरठ मल्हार यह ऋतु रूसवेकी नांही।। बरसत मेह नेहधरणी के बोलत कुंवर कन्हाई।।१।। जे वेली ग्रीष्म ऋतु दाधी ते तरूवर लपटाई।। देखौ नदी प्रेम रसमाती मिलन समुद्रै धाँई।।२।। यह समयो है दिवस चारकौ समझ चतुर मनमांही।। "सुरदास" उठ चली श्रीराधा दै प्रीतम गलबांही।।३।।

राग-अड़ाना दौरी-दौरी आवत, मोहि मनावत, दाम खरच कछु मोल लई री।। अँचरा पसार के मोहि खिजावत, हौं तेरे बाबा की चेरी भई री।।१।। जा री जा सखी भवन आपने, सौ बातन की एक कही री।। "नंददास" प्रभु वे क्यों नहीं आवत, उनके पाँयन कछु मेंहदी दई री।।२।।

।। ब्यारू के पद ।।

राग-ईमन तोरे पैयाँ लागुँ गिरधर भोजन कीजै।। उलटत-पलटत झगुलिया भीजै, खीजत खिजावै सुंदर तन छीजै।।१।। फेनी, बाबर, खाजा, गुंजा, मिश्री, लडुवा लीजै।। बाँट देत सब ग्वालबाल कों, "परमानंद" जननी पैं लीजै।।२।।

राग-ईमन लाडिले बोलत है तोही मैया।। संझा समय गोधन संग आवत चुंबत लेकर गोद बैठया।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई दूध भात अरू दार बनाई।। "परमानंद" प्रभु करत बियारू यशुमति देख बहुत सुखपाई।।२।।

राग-ईमन चलो लाल बियारू कीजे दोऊ भैया एक थारी।। दूध भात अरू दार बनाई बोलत है रोहिणी महतारी।।१।। इतनो सुनत मन हरखत संग उठ चले देत किलकारी।। "परमानंदप्रभुकी" बतियन पर यशोमति बलबल हारी।।२।।

राग–कान्हरो ब्यारू कीजे मोहनराय।। मधुमेवा पकवान मिठाई बिंजन सरस बनाई।।१।। दार भात ओर कढ़ी बड़ीकी मिश्री पनो छनाय।। "परमानंद" दास को ठाकुर बलदाउ संग लाय।।२।।

राग–कान्हरो सेनभोग लाई भर थारी।। दूध भात ओर कढ़ी बड़ीकी परोसत है यशोमति महतारी।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई शीतल भरी यमुना जल झारी।। "आस–करन" प्रभु मोहन नागर दासन कुं जूठन भरी थारी।।२।।

राग–कान्हरो बहुत बेर के भूखे हो लाल जेंवो कछुइक लेहो बलैया।। जो तू कह्यों न माने, हों अपने हलधर–जू की मैया।।१।। दोरी जाय कंठ लपटाने, तू कह मैया मेरो कन्हैया।। गोद बैठ हरि जेंवन लागे "परमानंददास" बलिजैया।।२।।

ब्यारू करत बलराम श्याम जेसी घटा श्याम सुखश्याम देखत मन।। पलक ओट अकुलात आरत अत तज न सकत एको घड़ी पल छिन।।१।। ओट भये लख लख छक छक भूरि भाग्य धन्यधन्य गोपीजन।। "नन्ददास" एसे सुख ऊपर वार फेर दीये तन मन धन।।२।।

राग–मल्हार सुनी सुनी सुतकी बात।। जननी तात हँसी हँसी जात कोर ले ले खात त्यों त्यों अखियाँ सिरात।। संकरसन कहत केसी उमड़ी घूमड़ि घटा आई श्याम कहत दमकि दामिनी डरात।।१।। बातन ही बातन मिस ब्यारू करत रूचि बढ़ाई जानि री जसोदा मैया तेरे जीये की में बात।। दूध दीयो ऊंचे लीयो कह्यो सब ही कियो "कृष्णदास" गिरिधर जीयो बलि बलि गई मात।।२।।

राग–मल्हार ब्यारू करत कर कोर धरत मुख सुख उपजत कछु स्वाद अधिक अत।। गरज गरज बरखत बड़ी बूंदन दामिनी दमकत चाहे रहत जित।।१।। सुरन तान रंग तेसोई उपरना ओढे दूनीछबि पावत तेसीये पावस रित।। "परमानंद प्रभु" की वानिक निरखत गोपीजन भूली सुख उपज्यों अधिक अत।।२।।

राग–मल्हार अधर रंग राख्यो अरून अति प्रेम प्रीतके पान हरत मन विरा।। यह सुखरास ब्रजदास नंदलाल संग हित गौचारण हित वनक्रीड़ा।।१।। यह वरखाऋतु हरित भूमि जित तित वृन्दावन यमुना के तीरा।। गोपीजन व्रजवासिनके हित "नंददास" प्रभु झुक झुक दीयो बलवीरा।।२।।

राग–मल्हार बरषा उदित भई ऋतु मान।। संध्या समय ब्यारू की बीरियां कित डोलत है कान्ह।।१।। नंदबाबा बैठे मग जोवत प्रीत जो सुत की जान।। "परमानंद" तिहिं छिन आये ब्यारू किनो आन।।२।।

राग–कान्हरो बल मोहन दोउ करत बियारू यशोमति निरख जाय बलिहारी।। प्रेम सहित दोऊ सुतहि जिमावत रोहिणी अरू यशोमति महतारी।।१।। दोऊ भैया एक संग बैठे रतन जटित कंचनकी थारी।। आलससों कर कोर उठावत नेंनन नींद झमक रही भारी।।२।। दोऊ जननी आलस मुख निरखत तन मन छबिपर डारत वारी।। वारंबार जृंभात "सूर" प्रभु वह छबी कों कवि सके विचारी।।३।।

राग–कान्हरो ब्यारू श्याम अरोगन लागे।। मधु मेवा पकवान मिठाई बिंजन करे मधुर रस पागे।।१।। दार भात कढी संधानों रूचिकर मुखसों पापर मांगे।। "चतुर्भुज" प्रभु जूठन दे सबकों, जो जन पावत सो बड़भागे।।२।।

राग–कान्हरो राधा मोहन करत ब्यारू।। एक कर थार सवारें सुन्दरी एक वेश एक रूप उज्यारी।।१।। मधु मेवा पकवान मिठाई दम्पति अति रूचिकारी।। "सूरदास" को जूंठन दीनि अति प्रसन्न ललितारी।।२।।

राग–कान्हरो करत बियारू हँस हँस मोहन।। चितवन में चित चोर लेत है मां सुध भुली गोहन।।१।। ओट्यो दुध कनक बेला भरे ललिता आई जु अगोहन।। फूंक फूंक कर पीवत सांवरो अंचर देत यशोहन।।२।। देखत बने कहत नहीं आवे उपमा को यह कोहना।। "कृष्णदास" प्रभु गिरधर नागर चित चोर्यो मृदु मुसकोहन।।३।।

राग–कान्हरो मोहनलाल ब्यारू कीजे।। मधुमेवा पकवान मिठाई बिंजन सरस बनाय।।१।। दार भात और कढी सलौनी मिश्री पनो छनाय।। "परमानंद दासको" ठाकूर बलि दाउ संग लगाय।।२।।

रानी जू अपुने सुतही जिमावत।। बुझत बात कहो केसे खेले बनबन मैया यों कहि कहि रूचि उपजावत।।१।। करत बियार अपुने अंचलसों पोंछत बदन मन मोद बढ़ावत।। "रसिक" प्रीतम कों ले ले नंद रानीजू हंस हसि कंठ लगावत।।२।।

नोटः– श्रावण मास में ये पद मल्हार में गाये जाते है।

।। दूध के पद ।।

राग–कान्हरो दूध पियो मन मोहन प्यारे।। बल बल जाउं गहेरू जिन कीजे कमल नयन नेनन के तारे।।१।। कनक कटोरा भर पीजे सुख दीजे संग लीजें बलभद्र भैयारे।। "परमानंद" मोहि गोधनकी सों, उठत ही प्रात करूं घैयारे।।२।।

दूध पियो मेरे स्याम जु प्यारे।। ओट्यो सद्य बेला भर लाई कुंवर किशोर दृगन के तारे।।१।। तामें मधुर सुंगध मिलाई सुन पीवत ब्रजराज ललारे।। "कुंभनदास" प्रभु गोवर्धनधर छबि पर तन मन धन सब वारे।।२।।

राग–ईमन दूध पियो हो कुंवर कन्हाई।। ओट्यो अति ही स्वच्छ भरलाई तामें अधिक मिठाई।।१।। सुघर अरगजा अंग लेपन कियो लागत परम सुहाई।। "कृष्णदास" भरलाई जमुनोदक अचवन कीजिये आई।।२।।

राग–बिहाग हँस हँस दूध पीवत नाथ।। मधुर कोमल वचन कहि कहि प्राण प्यारी साथ।।१।। कनक कटोरा भर्‌यो अमृत दियो ललिता हाथ। लाडली अचवाय पहिले पाछें आप अघात।।२।। चिन्तामणी चित बस्यों सजनी नाहिन और सुहात।। श्यामा श्याम की नवल छबि पर "रसिक" बल बल जात।।३।।

राग-कान्हरो दूध पिवावत जसोदा मैया।। धोरी धेनुको काढ़ अपने कर तामें मधुर मिलाय मिठईयां।।१।। तातो कर्यो कटोरा सुंदर बहुत सुगंध मिलैया।। ले कर प्यावत स्याम मधुर सुख "जन गिरिधर" जननी बल जैया।।२।।

कीजे पान लला हो लाई दूध यशोदा मैया।। कनक कटोरा भर पीजे सुख दीजे जु कन्हैया।।१।। आछे मेवा ओट्यो सुढ नीको रूचिकर लेऊ नन्हैया।। बहुत यतन करके राख्यों ब्रजराज लडेते तुमकारन बल भैया।।२।। फूँक फूँक जननी पय प्यावत सुख पावत आनंद उर न समैया।। "सूरदास" प्रभु पय पीवत बलराम स्याम जननी दोऊ लेत बलैया।।३।।

दूध पीवत भर कनक कटोरन हरि हलधर बीच होडपरी।। अरस परस दोऊ पीवत पिपावत गोपीजन मनमोद भरी।।१।। न्हेनी न्हेनी बूँदन बरखन लाग्यों दामिनी चमकत होत खरी।। ऐसे सुख देखत "परमानंद" ज्यों ज्यों भावत सुफल करी।।२।।

गिरिधर पीवत दूध सीराय।। पिय बैठे अटा घटा देखनको छतना हाथ लगाये।।१।। हरित भूमि तट ठाडे गावत राग मल्हार।। तापर धरी सजल रस मंजरी "कृष्णदास" बलिहार।।२।।

नोटः- श्रावण मास में उक्त पद राग मल्हार में गाये जाते है।

राग-मल्हार पय पीवत करत बात सकुचत।। मुसिकात जात रस भरे पीय प्यारी जहां ऊँची चित्रसारी।। बरषत घन हरखत मन, बीजुरी की चमक देख उपजत आनंद सदा पावस सुखकारी।।१।। ललित वचन श्रवन सुनति उमग्यों अंग-अंग मदन निरखि बदन सदन-सेज बस भये गिरधारी।। "कृष्णदास" रति विलास, लुटत सुख निज आवास, तनमन धन प्रान तब ही सरवसु दीयो वारी।।२।।

दूध पीवत मानौ घुट प्रेमकी हरि हलधर बिच होड परी री।। परस्पर दोऊ पीवत पीवावत गोपीजन मानौं मोद भरी री।।१।। नेन्हीं नेन्हीं बूंदन वरषन लागी तेसेई चमकत बीज खरी री।। ऐसों सुख देखति ज्यों ज्यों, "परमानंद" मानत सुफल घरी री।।२।।

आषाढ कृष्णा १

(देहरी बन्दन माल)

गोस्वामी तिलकायित श्री गोवर्धन लाल जी महाराज श्री का गादी उत्सव

वि. १९३२ में आज के दिन आपश्री गादि बिराजे। इस कारण गादी उत्सव माना जाता है। आपश्री के पिताश्री वैसाखी पूर्णिमा को नाथद्वारा छोड़ के पधारे और आज से ही आप तिलकायत पदासीन हुवे। आपका राज्य स्वर्णयुग समान माना जाता है। आज से राग बदल जाते है। प्रातः सूहा बिलावल तथा सायं सोरठ राग गाई जाती है।

श्रृंगार – पाग परदनी का।

वस्त्र – गहरा गुलाबी रंग के रूपेरी कोर के कटि में परदनी, श्रीमस्तक पर छज्जेदार गोल पाग छोर वाली तथा उस पर जरिकाम का जमाव का कतरा धराया गया है।

आभरण – लुमक, ठाड़ीलर मोती की, शीरपेच, शीशफुल तथा कर्णफुल सभी हीरा मोती के दोनों तरफ श्याम अलक धराई गई है। श्री मुखारबिन्द पर तिलक माणक का, अलंकार, कमलाक्ष, नकवेसर माणक मोती के तथा चिबुक हीरा का धराया गया है।

श्री अंग में श्रृंगार मध्य का, हार तथा हमेल सभी हीरा मोती के। गुंजामाला तथा फुल की माला धराई गई है। श्रीहस्त में नखावली, मुद्रिका हीरा के, हस्तपान, पोंची, बाजुबन्द सभी हीरा मोती के धराये गये है। श्री चरण कमलों में नखावली, मुद्रिका हीरा की, पगपान, पायल, पेंजनी जेहर सभी हीरा मोती के, नुंपुर सोना के, वेणु वेत्र हीरा के तथा कमल के फुल की छड़ी धराई गई है। पिछवाई चित्राम की गिरीकन्दरा की धराई गई है।

विशेष – सामग्री में आम के रस तथा तवापुड़ी श्रीजी को आरोगाई गई है। आज से फुहारा के दोनों तरफ चोकी पर कुंज आता है। जो रथयात्रा तक आता है।

मंगला में राग-विभास प्रात समे नवनिकुंज द्वारे ललिता ललित बजाई बीना।। पोढ़े सुनत श्याम श्रीश्यामा दंपति चतुर नवीन-नवीना।।१।। अति अनुराग सुहाग लाडिली कोटिकला प्रवीन-प्रवीना।। "बिहारी-दास" बलबल जोरी पर तनमनधन न्योछावर कीना।।२।।

श्रृंगार राग-विभास गोवर्धन-गिरी सघन कन्दरा रैन निवास कियो पिय-प्यारी।। उठ चले भोर सुरत-रंगभीने नंदनंदन वृषभान-दुलारी।।१।। इत विगलित कचमाल मरगजी अटपटे भूषन रगमगी सारी। उतही अधर मसि पाग रही धँसी दुहु दिस छबि बाढ़ी अति भारी।।२।। घूमत आवत रतिरन जीते करिनी संग गज गिरिवरधारी।। "चतुर्भुजदास" निरख दंपतिसुख तन-मन-धन कीनों बलिहारी।।३।।

छाक के पद राग-सारंग हरिकों टेरत फिरत गुवारी।। आन लेहो तुम छाक आपनी बालक बल बनवारी।।१।। आज कलेऊ कियो प्रात ही बछरा लेवन धाये।। मेवा मोदक मैया यशोमति मेरे हाथ पठाये।।२।। जब यह बानी सुनी मनोहर चल आये तहां पास। कीनी भली भूख जब लागी बल "परमानंददास"।।३।।

राजभोग में राग-सारंग (बधाई) गायनसों रति गोकुलसों रति गोवर्धनसों प्रीति निबाही।। श्रीगोपाल चरन सेवारति गोपसखा सब अमित अथाही।।१।। गो-बानीजु बेदकी कहियत श्रीभागवत सबैं अवगाही।। "छितस्वामी" गिरिधरन श्री विट्ठल गोधनकी खुर-रेनु सराही।।२।।

भोग में राग-सारंग यह छब मोपे जात न बरनी।। गोवर्धन के आसपास फूल रही सब अरनी।।१।। मदन मोहन पिय खेलन निकसे संग राधा मन-हरनी।। "श्री विट्ठल गिरिधर" पद परसत धन धन व्रजकी धरनी।।२।।

संध्या आरती में राग-सोरठ ललित बृजदेस गिरिराज राजे।। घोष सिमंतिनी संग गिरिवरधरन करत नृत्यकेलि तहाँ काम लाजे।।१।। त्रिविध पवन संचरे सुखद झरना झरे, ललित सौरभ सरस मधुप गाजे।।

ललित तरू फूल फल फलित खटऋतु सदा "चत्रर्भूजदास" गिरिधर समाजे।।२।।

राग–सारंग हमारो देव गोवर्धन रानो।। जाकी छत्र छांह हम बैठे ताकों त्यज ओरे क्यों मानो।।१।। नीको तृण सुंदर जल नीको, नीको गोधन रहत अघानों।। नीको सब व्रजहोत सुखारो सुरपति कोप कहा पहेचानों।।२।। खीर खाण्ड घृत भोजन मेवा ओदन सकल अनुपम आनों।। "परमानंद" गोवर्धन उत्सव अन्नकूट अलौकिक जानों।।३।।

शयन में राग–अड़ानों कृपा रस नैन कमलदल फुले।। भ्रुवविलास देखत कोटिक मनमथ रहे भूले।।१।। वदनकमल पर कुटिल अलक छबि मोतिन हार अवतंस झूले।। "गोविंद" प्रभु प्यारी संग बैठे जहाँ कालिंदी कूले।।२।।

धन्य धन्य हरिदास राई।। सानिध्य सेवा करत सकल अंग ताते मोहन जीय भाई।।१।। कंद मूल फल फूल भेट धर शिला सिंहासन रूचिर बनाई।। कोमल तृण गायन चरवें को सीतल जल के झरना बहाई।।२।। विविध केलि क्रीडत सखा संग छिनु उतरत छिनु चढ़त है धाई।। रामकृष्ण के चरण स्पर्श करि पुलकित रहत सदाई।।३।। इनको भाग्य कहाँ लगी बरनें कोमल कर पै लियो है उठाई।। "छित–स्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल वल्लभ कुल–सिरताज कहाई।।४।।

मान में राग–बिहागरो चल तू माननी मानि निहोरो।। हों पठई तोही लेन सांवरे चलरी गर्व करि थोरो।।१।। कुंज मेहेल बैठे मनमोहन चितवत चंद चकोरो।। "सूरदास" प्रभु तिहारे मिलन को रेनि गये रस थोरो।।२।।

पोढ़वा में राग–केदारो कुंज महल में मंगल हेरी।। किसलय दल कुसुमन की शय्या रची तापर बिछई पीत पिछोरी।।१।। ओट्यो दूध कनककटोरा और पानन की भरभर झोरी।। सघन कुंज में श्रीगिरिधर विलसत ललितादिक चितवत दृगचोरी।।२।। होय मनोरथ मेरे जियके दंपति पोढे एक ठोरी।। कहे "श्रीभट्ट" ओट व्है निरखूं क्रीडा करत किशोर किशोरी।।३।।

आषाढ कृष्णा २

श्रृंगार – आड़बद पाग का।

वस्त्र – सफेद केसर की कोर की कटि में आडबन्द, श्रीमस्तक पर केसरिया छज्जेदार पाग उस पर गुलाबी वस्त्र कामका कतरा तथा पिछवाई सफेद मलमल की, केसर की कोरकी, कमल के छाप की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

मंगला में राग–विभास गोवर्धन–गिरी सघन कन्दरा रैन निवास कियो पिय–प्यारी।। (यह पूरा पद पेज २ पर पढ़े)

श्रृंगार में राग–बिलावल मोहन घुमत रतनारे नैन, सँकुचत कछु कहत न बैन, सैनही से उतर देत, नन्द के दुलारे।। भूषन–बसन अटपटे, सीस पाग लटपटी, रतिरन लई झटपटी, सुभग स्याम प्यारे।।१।। सुबस कियो कुँजसदन, भोर आये जीत मदन, पलट पहरे बसन अजहूँ न सँभारें।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिवर दर्पन ले देखियेजू, सेंदूर को तिलक भाल अधरन मसि कारे।।२।।

राजभोग आते समय छाक का पद–राग धनाश्री बिहारीलाल आई छाक सलोनी।। अति अद्भुत पठई चंद्रावलि एक गांठ द्वै दोहनी।।१।। टेरत श्याम भुजा ऊँची कर गई सुवास आग्योनी।। "कृष्णदास" गिरिधरजु को मनहर्‌यो विधिना रसिक रिझोनी।।२।।

राजभोग में राग–सारंग पनियां न जाऊं री आली नन्दनन्दन मेरी मटकी झटक के पटकी।। टीक दुपहरी में अटकी कुंजन लों कोऊ न जाने मेरे घटकी।।१।। कहा करों कछु बस नहीं मेरौ नागर नट सों अटकी।। "नंददास" प्रभु की छबि निरखत सुध न रही पनघट की।।२।।

भोग में राग–सारंग वृन्दावन कुंज्जन में मध्य खसखानें रच्चों सीतल वियार झुक गोखन बहत है।। सुगंधी गुलाब जल नाना बहुभांतिन के लैं लाय धाय सखी सब छिरकत हैं।।१।। धार धुरवा छूटत तहां नीके दादुर

मोर पिक शुक जु फिरत है।। "कृष्णदास" फुहारे छुटे मानो मनमथ लूटे झुक-झुक धारे हौदन भरत है।।२।।

संध्या में राग-कल्याण माईरी बांके लोचन निकें, चिते-चिते चित चोरत।। यह मूरत खेलत नैनन में लाल भांवते जियके।।१।। एक बार मुस्क्याय चले जब हिरदै गढ़ें गुन पियके।। "परमानंद" कोऊ आन मिलाओं प्रोढ़ बरस या तियके।।२।।

शयन में राग-बिहाग तेरे सीर कुसुम बिथुर रहे भामीन शोभा देत मानों नवधन तारें।। स्याम अलक छुट रही बदन पर, चन्द्र छिप्यो मानो बादर कारे।।१।। मोतिनमाल मानो मान सरोवर कुच चकवा दोऊ न्यारे-न्यारे।। "धोंधी" के प्रभु तिन बस कीने तें बसकीने आली नन्ददुलारे।।२।।

मान में राग-ईमन मान तज गौरी नन्दलालसों।। वे बहुनायक एतेपर राजकुमार, मेरो कह्यों मान प्यारी तु जिन लाओ ओरी।।१।। किसलय दल कुसुमन की शय्या रचि तुव मग चितवत दौर दौरी।। "गोविन्द" प्रभुसों तू यों राजेगी ज्यों दामिन घनसोंरी।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग कुसुम सेज पिय-प्यारी पोढे करत हैं रस बतियां।। हँसत परस्पर आनंद हुलसत लटक लटक लपटात छतियां।।१।। अतिरस रंगभीने रीझेरी रिझवार, एक तनमन भई एकमति गतियां।। "रसिक" सुजान निर्भय क्रीडत दोऊ, अंग अंग प्रतिबिंबित दोऊन के वसन भतियां।।२।।

आषाढ कृष्णा ३

श्रृंगार – धोती एवं पाग का।

वस्त्र – केसरिया बिना कोरके कटि में धोवती उस पर पटका, श्रीमस्तक पर पाग तथा उसपर मोती के कामका कतरा, पिछवाई केसरिया रंग की रूपेरी कोरकी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – आजकल एक दिन पहले भिजोई गई क्रम से एक दिन चणा की दाल तथा दूसरे दिन मुंग की अंकुरी आरोगाई जाती है।

मंगला में राग–सुहा बिलावल प्रीतम प्रीत ही तें बस किनों।। उर–अंतर तें स्याम मनोहर नेकहु जान न दीनों।।१।। सहि नहीं सकति बिछुरनों पलभर भलो नेमु यह लीनों।। "छितस्वामी" गिरिधरन श्री विट्ठल भक्ति कृपा रसभीनों।।२।।

श्रृंगार में राग–सुहा कौनकी उपरनी ओढ़ि आये, साँचि कहो पिय मोसों।। लटपटी पाग अटपटे पेचन, बिन गुनमाल हिये अधरन अंजन लाये।।१।। जानियत जो कौनके दुराये चाहत ही छिपत नहीं छिपाये।। ऐसी चतुराई जिन करो रे "मोहन", मोसों कहो अब कौन तिया बिरमाये।।२।।

छाक के पद राग–सारंग बांट बांट सबहिन कों देत।। ऐसे ग्वाल–हरि हैं जो भावत शेष रहत सोई आपन लेत।।१।। आछो दूध सद्य धोरी को ओट जमायो अपने हाथ।। हंडिया मूंद यशोदामैया तुमको दें पठई व्रजनाथ।।२।। आनंदमगन फिरत अपने रंग वृदावन कालिंदी तीर।। "परमानंददास" जूठोले बांह पसार दियो बलवीर।।३।।

राजभोग में राग–सारंग आज धरें गिरिधर पिय धोती।। अतिझीनी अरगजा भीनी पीतांबर घनदामिनी जोती।।१।। टेढ़ी पाग भृकुटी छबराजत श्याम अंग अद्‌भुत छबि छाई।। मुक्तामाल फूली बनजाई "परमानंद" प्रभु सब सुखदाई।।२।।

राग–सोरठ प्रीत तो श्रीनन्दनन्दन सों कीजें।। संपति विपति परे प्रतिपालें कृपा करे सो जीजें।।१।। परम उदार चतुर चिंतामणी, सेवा सुमरन माने।। हस्त कमल की छाया राखे अंतर घटकी जानें।।२।। वेदपुरान श्रीभागवत भाखत कियो भक्त मन भायो।। "परमानंद" इन्द्रसों वैभव विप्र सुदामा पायो।।३।।

संध्या में राग–सोरठ प्रीति करि काहु सुख न लह्यो।। प्रीति पतंग करी दीप दीपक सो आपै देह दह्यो।।१।। अलिसुत प्रीति करी जलसुतसों संपुट माँझ गह्यो।। सारंग प्रीति करीजु नादसों सनमुख बानसह्यों।।२।। हम जो प्रीति करी माधोसो चलत न कछू कह्यो।। "सूरदास" प्रभु बिन दुःख पावत नैनन नीर बह्यो।।३।।

शयन में राग–ईमन अरीहों या मग निकसी आय अचानक कान्हकुंवर ठाड़े अपनी पोर। दृष्टिसों दृष्टिमिली रोमरोम सीतल भई तनमें उठी हैं कींधो कामरोर।।१।। लाल पाग झुक रही भ्रोंहनपर स्याम गात किये चंदन की खोर।। "सूरदास" प्रभु सर्वस्व हरके चले, मनमें आवत कैंधों मिलोरी दौर।।२।।

मान में राग ईमन मानरीमान मेरो कहयों गोपीनाथ कुंवर तोहि बोले।। हौं जो लालनसों पेंजु कर आई सो तेंजु करी ऐरी नयननहीं नाहिन तातें मोमें कछु न रहयोरी।।१।। घोषनृपति सुतहै बहु–वल्लभकों कौन सुकृत फल तेजु लह्योरी।। "गोविंदप्रभु" ते सुहाग भाग वशकीने तुमतो परम विचित्र इस छिनछिन जात वह्योरी।।२।।

पोढ़वा में राग–बिहाग पोढ़े श्यामजु सुख सेज।। संग श्री वृषभान तनया रंग रसको हेज।।१।। तरणितनया विलुलित कनक, मालती को तेज।। शोभा की सीमा हैं दंपति "गोविन्द दास" गनेज।।२।।

आषाढ कृष्णा ४

श्रृंगार – आडबन्द-पाग का।

वस्त्र – हल्का गुलाबी रंग के रूपेरी कोरके कटि में आड़बन्द, श्रीमस्तक पर गुलाबी पाग पर सफेद रेशम कामका दोहरा कतरा तथा पिछवाई विषेश रूप से चित्राम की धराई गई है। श्री गिरिराजजी की कन्दरा में श्री महाप्रभुजी, श्री गुसांईजी तथा श्री गुंसाईजी के सातों लालजी खड़े है एक एक कन्दरा में आजु बाजु निकुंज है।

आभरण – नित्यानुसार।

मंगला में राग-सुहा आवत कालकी साँझ, देख्यों री गायन मांझ, कौनको ढोटा री माई, सीस मोर-पाँखियाँ।। अतसी कुसुम तन, चंचल दीरघ नयन, मानो रसभरी युग आँखियां।।१।। धातुको तिलक दियें, गुंजन के हार हियें, उपमा न बने दियें, जेती तेती नखियाँ।। राजत पीत पिछोरी, मुरली बजावे गोरी, देख भई बौरी, एकटक रही अँखियाँ।।२।। चलत न सूधे मग डगमगत परत पग, भामिनी भवन लाई, हाथ धरें कखियाँ।। "मानदास" प्रभु चितचोर देख जीऊँ, और ना उपाव दाव, सुनो मेरी सखियाँ।।३।।

श्रृंगार में राग-सुहा झूमक सारी हो तन गोरे।। जगमग रह्यो जरावको टीको, छबिकी उठत झकोरें।।१।। रतनजटित के तरल तरौंना, मानों हो जात रवि भोरें।। दुलरी कण्ठ निरख नकवेसर पिय दृग भये है चकोरे।।२।। मंदमंद पग धरत धरनी पर, हँसत लसत चित चोरे।। "स्यामदास" प्रभु रसबस कर लीने, चपल नयन की कोरें।।३।।

राजभोग आते समय छाक का पद-राग सारंग तुमको टेर टेर मैं हारी।। कहाँ जो रहे अबलों मनमोहन लेहोन छाक तुम्हारी।।१।। भूल परी आवत मारग में क्यों हू पेंडो पायो।। बुझत बुझत यहाँ लों आई तब तुम बेणु बजायो।।२।। देखो मेरे अंग के पसीना उर को अंचल भीनो।। "परमानंद" प्रभु प्रीति जान के धाय आलिंगन कीनो।।३।।

राजभोग में राग–सारंग वे देखियत हमारे गोकुल के रूख जू।। प्राची दिसितें नेकु ही दच्छिन मेरी अंगुरिके अग्रज करो नेंक मुख जू।।१।। गोवर्धन शृंग चढ़ि कहत हैं मोहन बलदाऊजू हमें देखिवे की भूख जू।। जनमभूमि चलि आए "गोविंद" तब पुलकित मन भयो अति सुख जू।।२।।

भोग में राग–सोरठ ललित बृजदेस गिरीराज राजे।। घोस सिमंतिनी संग गिरीवरधरन करत नित्य केली तहां काम लाजे।।१।। त्रिविध पवन संचरे सुखद झरना झरे, ललित सौरभ मधुप गाजे।। ललित तरू फल फूल फलित खटऋतु सदा "चतुर्भुज दास" गिरिधर समाजे।।२।।

संध्या में राग–सोरठ मधुर बृजदेश बस मधुर कीनों।। मधुर गोकुलगाम मधुर वल्लभनाम–मधुर बिट्ठल भजनदान दीनो।।१।। मधुर गिरिधरन आदि सप्त तनु वेणुनाद–सप्तरंध्रन मधुर रूप लीनो।। मधुर फल फलित अति ललित "पद्मनाभ" प्रभु मधुर अलि गावत सरस रंगभीनो।।३।।

शयन में राग–अडानों डगर चल गोवर्धन की बाट।। खेलत बीच मिलेगें मोहन जहां गोघन के ठाट।।१।। चलरी सखी तेहि जाय मिलाऊं सुन्दरवदन सरोज।। कमलनयन के एक रोम पर वारों कोटि मनोज।।२।। पाहुनी एक अनुपम आई आनगामकी ग्वार।। "परमानंद स्वामी" के ऊपर सर्वस्व डारो वार।।३।।

मान में राग–ईमन मान तज गौरी नंद लाल सों।। (पूरा पद पेज ५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–बिहाग चांपत चरण मोहनलाल।। पलका पोढी कुंवरीराधे सुन्दरी नव बाल।।१।। कबहुं करगहि नयन मिलावत कबहुं छुवावत भाल।। "नंददास" प्रभु छबि निहारत प्रीत के प्रतिपाल।।२।।

आषाढ कृष्णा ५

श्रृंगार – पाग-परदनी का।

वस्त्र – चन्दनी रंग के रूपेरीकोर के, कटि में परदनी श्रीमस्तक पर पाग तथा उस पर सफेद रेशम काम की गोल-चन्द्रिका तथा पिछवाई चन्दनी रंग की रूपेरी कोर की।

आभरण – नित्यानुसार तथा सायंकाल कली के श्रृंगार धराये गये है।

विशेष – फूल कली के श्रृंगार के कारण श्रीजी में मनोरथ भोग में अमरस-लुचई, मैसूर, खाजा गुंजा-कचोड़ी, खासा पुडी, दही बड़ा, साग, भुजिया आरोगाये गये।

मंगला में राग-सुहा बिलावल झूमक सारी हो तन गोरें।। जगमग रह्यो जराव को टीको छबि की उठत झकोरें।।१।। रतनजटित के तरल तरौंना मानों हो जात रवि भोरें।। दुलरी कंठ निरख नकबेसर पिय दृग भये हैं चकोरें।।२।। मंदमंद पग धरत धरनी पर हँसत लसत चित चोरें।। "स्यामदास" प्रभु रसबस कर लीने चपल नयनकी कोरें।।३।।

श्रृंगार में राग-सुहा प्रीतम प्रीत ही तें बस कीनों।। (पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-सारंग श्री गोवर्धनगिरी कंदरा में भोजन करत हैं पिय प्यारी।। आसपास जुवती सब राजत देत परस्पर कर मनुहारी।।१।। सखन के भाव की सामग्री लेत श्री ललिता निहार निहारी।। "कुंभनदास" प्रभु लाल गिरिधर को देत श्री राधा प्यारी।।२।।

राजभोग में राग-सारंग रूखरी मधुवन मोहन संग निस दिन रहत खरी।। जबतें परस भयो मोहन को तबतें रहत हरी।।१।। सीतल जल जमुना को सींचत प्रफुल्लित द्रुमलता सगरी।। "नंददास" प्रभु की सरनाई जीवनमुक्त भई सबरी।।२।।

भोग में राग-सोरठ फूल के भवन गिरधरन नव-नागरी फूल सिंगार कर अतही राजे।। फूलन की पाग सिर स्याम के राज ही फूल की माल

हियपें विराजे।।१।। फूल सारी बनी कंचुकी फूल की फूल लहेंगा निरख काम लाजे।। "छितस्वामी" फूल सदन प्यारी संग विलसि मिलवत अंग काम दाजे।।२।।

संध्या में राग–अड़ानों कृपारस नयन कमलदल फूलें।। (पूरा पद पेज ३ पर पढ़े।)

शयन में राग–केदारों कदंब वन वीथिन करत विहार।। अतिरस भरे मदन मोहनपिय तोर्‌यो प्रिया उर हार।।१।। कनक भूमि विथुरे गजमोती कुंजकुटी के द्वार।। "गोविंदप्रभु" श्रीहस्त कर पोवत सुन्दर राज कुमार।।२।।

मान में राग–बिहागरों चल तू माननी मानि निहोरो।। (पूरा पद पेज ३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–बिहाग कुसुम सोज पिय प्यारी पोढ़े करत हें रस बतियाँ।। (पूरा पद पेज ५ पर पढ़े।)

आषाढ कृष्णा ६

श्रृंगार – धोवती-पाग का।

वस्त्र – सफेद मलमलके, रूपेरी कोरके, कटि में धोवती तथा श्रीमस्तक पर सफेद पाग तथा उस पर सफेद मोर पिछका दोहरा कतरा तथा पिछवाई सफेद रूपेरी कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – अब वर्षा ऋतु के आगम की लीला चलती है। मंगल भोग में आम आरोगाये जाते है आम की बरफी नित्य आरोगाई जाती है।

मंगला में राग-सुहा बरस ऊधर गयो मेह टपकत पांत द्रुम बेली।। झमकत झार नीरभरे देखियत उपमा कहा कहूँ हेली।।१।। लाल मनावत तू नहीं मानत, तो सो प्रीत नवेली।। "तानसेन" के प्रभु तुम बहुनायक याहीतें गर्व गहेली।।२।।

श्रृंगार में राग-सुहा कोऊ मेरे आँगन व्हैं जु गयो।। झलकत ज्योति वदनकी माई सपनों सों जु भयो।।१।। हौं दधिमथन माट सुन सजनी लैन गई जु मथानी।। कमलनैन की नाई चितवत जाकी मुरति मैं जानी।।२।। कर नहीं चलत देह-गति थाकी बहुतें दुःख मैं पायो।। "परमानन्द" चरन गहि रहती कित मेरें हुई आयो।।३।।

राजभोग आवता राग-सारंग हरिको ग्वालिन भोजन लाई।। बैठे जहां गोवर्धन ऊपर कान्ह कुंवर सुखदाई।।१।। सखा मध्यतें निकसे मोहन ग्वालिन निकट बुलाई।। मिलि एकान्त जेंवत रसबस सों, "कुंभनदास" बलि जाई।।२।।

राजभोग में राग-सारंग आज धरें गिरधर पिय धोती।। (पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

राग-सौरठ/सारंग घन में छिप रही ज्यों दामिनी।। नंद कुंवर के पाछे ठाडी सोहत राधा भामिनी।।१।। बाल दिशा अपने रंग खेलत शरद सुहाई जामिनी।। "परमानंद" स्वामी रसभीजे प्रेम मुदित गजगामिनी।।२।।

संध्या आरती में राग–सौरठ (अष्टपदि) हरिरभिसरति वहति मधुपवने।। किमपरमथिक सुखं सखि भुवने।।१।। माधवे मा कुरू मानिनि मानमये।। ध्रु।। ताल फलादपि गुरूमतिसरसं।। किं विफली कुरूषे कुचकलशं।।२।। कति न कथित मिदमनु पदमचिरं।। मा परिहर हरिमतिशय रूचिरं।।३।। किमिति विषीदसि रोदिषिविकला।। विहसतियुवतसभा तव सकला।।४।। सजल नलिनीदल शीतल शयने।। हरिमवलोकय सफलय नयने।।५।। जनयसि मनयसि किमिति गुरूखेदं।। श्रणु मम वचन मनीहित भेदं।।६।। हरिरूपयातु वदतु बहुमधुरं।। किमिति करोषि हृदय मति विधुरं।।७।। "श्रीजयदेव" भणित मतिललितं।। सुखयतु रसिकजनं हरिचरितं।।८।।

शयन में राग–ईमन देख सखी पवन पुरवैया ठोर–ठौर रूखन को हलवों।। आछी नीकी कारी पीरी घटाघुमड़ आई– तामध्य कृष्ण स्यामजुको चलवो।।१।। कुंजलता द्रुमलता सखीरी मंदकुसुम नीके कर खिलवो।। मीन अचल व्है, जल जमुना को, "तानसेन" के प्रभु को कबहुक मिलवो।।२।।

मान में राग–बिहाग मेरे कर मेंहदी लगी है लट उरझी सुरजाय जा।। सिर की सारी सरक गई मोहन अपने हाथ उढ़ाय जा।।१।। भाल की बिंदी मोरी गिर जो परी है हा हा करत लगाय जा।। "निलाम्बर" प्रभु गुण ना भूलूंगी बीरी नेक खवाय जा।।२।।

पोढ़वा में राग–बिहाग पौंढे प्रेम के पर्यंक।। सुरत रसमें मगनदोऊ लेत भर भर अंक।।१।। कोककला प्रवीन विहरत उठत भावतरंग।। "कृष्णदास" प्रभु गोवर्धनधर जीत मुदित अनंग।।२।।

आषाढ कृष्णा ७

श्रृंगार – पिछोड़ा व फेंटा को

वस्त्र – सफेद मलमल के, रूपेरी कोरके, कटि में पिछोड़ा तथा श्रीमस्तक पर फेंटा तथा उस पर रेशम तथा जरी के काम का कतरा तथा पिछवाई सफेद रूपेरी कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – राजभोग के बाद फुहारे पूरे दिन चलते है तथा सायंकाल भोग में हाथ में ऊपर से झारा चलाया जाता है तथा दिन में चार बार चार समय छिड़काव किया जाता है।

मंगला में राग–सुहा सूवा तेरी सोने चोंच मढ़ाऊँ।। सगुन विचार प्रान–प्यारे को तब तोहि बहोत रिझाऊँ।।१।। फरकत भूजा नैन रतनारे किधों गाय सुनाऊँ।। "मुरारीदास" प्रभु भोर भये सपने सों जाग परे गुन गाऊँ।।२।।

श्रृंगार में राग–सुहा आवत कालकी साँझ देख्यों री गायन माँझ, कौनको ढोटा री माई सिस मोर–पँखियाँ।। **(यह पूरा पद पेज ८ पर पढ़े।)**

राजभोग आवताः राग–सारंग (छाक के पद) लीजे लालन अपनी छाक।। जबतें तुम वन आये तबतें चढ़्यों चितचाक।।१।। देख लेजु नीकेकर सगरे कीने बहुविध पाक।। भोजन को बैठे सीतल छाया में उनही की ढाक।।२।। होहूं ढिंग बैठों ज्योऊँ तो, मेरे चरण को उतरे थाक।। ज्यों भावे त्यों खेल करो तुम मेरे आगे निशांक।।३।। पूरो सकल मनोरथ मेरे हो आई रह ताक।। "रसिकप्रीतम" कबके बिछुरे ते हों आई हो नाक।।४।।

राजभोग में राग–सारंग दुपहरी झनक भई तामें आये पिय मेरे, मैं उठ कीनों आदर।। आंको भरी ले गई तनकी तपत सब ठौर–ठौर बुन्दन चमक।।१।। रोम रोम सुख सन्तोष भयो, गयो अनंग तन मैं न रह्यो तनक।। मोहि मिल अब चतुर "धोंधी" के प्रभु मिट गई अब बिरहकी खनक।।२।।

भोग में राग–वृन्दावनी सारंग सुघर रंग राख्यो हो मुरली में, कहाजु कहे इन लाले।। तानमान बंधान अरूझत गत बिचबिच मिलवत बिकट अवध रंग राख्यो।।१।। चोखि मोखि नीकी रेख तामें गायन टेर लेत लावे सुर।। बिच बिच लेत तिहारोई नाम सुनरी–सयानी "गोविन्द" प्रभु ब्रजरानी के कुँवर।।२।।

संध्या आरती में राग–सौरठ मैया मेरी कामर कौन लई।। गाय चरावन जात वृन्दावन खिरक में भाज गई।।१।। एक कहे हम कामर देखी सुरभी खाय गई।। एक कहे तेरी कामरिया यमुना में जात बही।।२।। एक कहे नाचो मेरे आगे कामर देहुँ नई।। "सूरदास" प्रभु यशुमति आगे अंसुवन धार बही।।३।।

शयन में राग–ईमन मोहन माखन चोरी करत फिरत–बरजों हों नन्दरानी।। माखन चोरी करो तो भले करो ओर चोरी करत ताको तुम हटको रानीजु देखत मनजु हरत।।१।। तनमन सुध–बुध सब बिसरीरी आये न कछु गेह काज करत।। निसदिन फिरत संग लागी–लागी "गोविंद" प्रभु की माता सुनि–सुनि मनहरत।।२।।

मान में राग–बिहाग नींद तोय बेचूंगी आली जो कोई गाहक होय।। आये मोहन फिर गये आंगना में बैरिन रही सोय।।१।। कहा करूं कछु बस नाय मेरौ आयो धन दियौ खोय।। "लछीराम" प्रभु अब कें मिलें तौ राखूंगी नयनन समोय।।२।।

पोढ़वा में बिहाग पोढे हरि झीनों पट दें ओट।। संग श्रीवृषभान तनया सरस रसकी पोट।।१।। मकर कुंडल अलक अरूझी हार गुंजा ताटंक।। नीलपीत दोऊ अदलबदलें लेत भरभर अंक।।२।। हृदय हृदयसों अधर अधर सों नयनसों नयन मिलाय।। भ्रोंह भ्रोंहसों तिलक तिलकसों भुजन भुजन लपटाय।।३।। मालती और जाई चंपा सुभग जाति बकूल।। "दास परमानंद" सजनी देत चुनचुन फूल।।४।।

आषाढ कृष्णा ८

श्रृंगार – आड़वन्द व पागका।

वस्त्र – हल्का गुलाबी रंग के रूपेरी कोरके कटि में आड़बन्द तथा श्रीमस्तक पर पाग तथा उसपर मोर पिछ व जरीके कामका कतरा तथा पिछवाई हल्का गुलाबी रंग की रूपेरी कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार

मंगला में राग–सुहा रति–संग्राम वीर रसमाते।। है हरि सूर सिरोमनि अजहुँ नहीं सँभारत ताते।।१।। आनही बरन भये दोऊ लोचन अपने सहज बिनाते।। मानहु भीर भई जोधनिकी, भये क्रोध अति राते।।२।। बैठि जात अलसात उनींदे, क्रम क्रम उठत तहाँ ते।। परिमल लुब्ध मधुप जहँ बेठत उड़ि न सकत तिहिं ठाँ ते।।३।। मन मूर्छा कटाच्छनाट सब कढ़ि न सकत हियरा ते।। मानो मदन के हैंसर पावे फोंक बाहिरी धाँते।।४।। डगमगात घूमत जनु घायल सोभा सुभट कला तें।। "सूरदास" प्रभु रतिरन जीते अब सकात धौं काते।।५।।

श्रृंगार में राग–सुहा कोउ मेरे आंगन व्है जु गयो।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग–सारंग छाक के पद छाक लिये सिर स्याम बुलावत।। ढूंढत फिरत ग्वालिनी हरिको कोऊ भेद नहीं पावत।।१।। टेर सुनत काहूकी श्रवणन नितही तुरत उठ धावत।। पावत नहीं स्याम बलरामहि व्याकुल व्है पछितावत।।२।। वृंदावन फिर फिर देखत है बोल उठे तहां ग्वाल।। "सूरस्याम" बलराम यहां हो छाक लेहो इन्हें मिलादे लाल।।३।।

राजभोग में राग–सारंग पनियां न जाऊं री आली नंदनंदन मेरी मटकी झटक के पटकी।। (यह पूरा पद पेज ४ पर पढ़े।)

भोग में राग–सौरठ मुरली कौन तपतें कियो।। रहत गिरिधर मुखही लागी अधर को रस पियो।।१।। नन्दनन्दन पाणि परसके तोही तन मन दियो।। "सूर" श्रीगोपाल वश किये जगत में यश लियो।।।२।।

संध्या आरती में राग–ईमन मेरे री बगर में आवत श्याम छबीसो कमल फिरावत।। औरन सों बतरावत, मोतन चितवत, चतुर परोसन देख देख मुसकावत।।१।। नयनन मनुहार करत, बेनन समुझावत, नेह जनावत भ्रोंह चढ़ावत।। "नंददास" प्रभुसों स्नेह, लोक–लाज बाढी–कैसे के धीरज आवत।।२।।

शयन में राग– ईमन तेरे सुहाग की महीमा मोपें वरणी न जाई।। मदनमोहन पिय वे बहु नायक जाको मन लियो है रिझाई।।१।। कबरी कुसुम गुहत अपने कर लिखत तिलक भाल रस भरे रसिक राई।। "गोविंद" प्रभु रीझ हृदे सो लगाई लई लाडिले कुंवर मन भाई।।२।।

मान में राग–बिहागरों चल तू माननो मानि निहोरो।। (यह पूरा पद पेज ३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–बिहाग पौढ़े प्रेम के पर्यंक।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े।)

आषाढ कृष्णा ९

श्रृंगार – सेहरा को।

वस्त्र – हल्का केसरी रंग के रूपेरी कोरके, कटि में पिछोरा उसपर अन्तर वास पटकों। श्रीमस्तक पर केसरी दुमालों तथा उसपर मोती के काम को सेहरा तथा पिछवाई चित्राम की लग्न मंडप की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

मंगला में राग–सुहा रति संग्राम विर रसमाते।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग–सुहा मैया मोहिं ऐसी बहुरिया भावे।। जैसे काहुकी दिठूरिया रूनक–झुनक करि आवे।।१।। करि करि पाक रसोई आछी मोकों परोसी जिमावे।। दे घूँघट ओट बबाकी टेढ़ी बाँह धरावें।।२।। लिये उठाय गोद नन्दरानी करि मनुहार मनावे।। अहो मेरे लाल कहो बाबासो तेरौं ब्याह करावें।।३।। नन्दराय नंदरानी जसोदा सुधा समुद्र बढ़ावे।। "चत्रर्भूज" प्रभु गिरिधर बतियाँ सुन उरआनंद आवें।।८।।

राजभोग आवता–राग सारंग श्रीव्रषभान सदन भोजनकों नंदादिक सबआये हो।। तिनके चरणकमल धरिवेकों पट पांवडे बिछाये हो।।१।। राम कृष्ण दोउ वीर बिराजत गौरश्याम दोउ चंदा हो।। तिनकेरूप कहत नहि आवे मुनिजन के मन फंदा हो।।२।। चंदन घस मृगमद मिलायकें भोजन भवन लिपाये।। विविध सुगंध कपूर आदिदे रचना चोक पुराये।।३।। मंडप छायो कमल कोमलदल शीतल छांय सुहाई।। आसपास परदा फूलनके मालाजाल गुहाई।।४।। शीतल जल कुम कुम के जलसों सबनके चरण पखारे।। कर वितनी करजोर सबनसों कनकपटा बैठारे।।५।। राजत राजगोप भूपति संग विमल वेष अहीरा।। मानों समाज राजहंसनको जुरे मानसरोवर तीरा हो।।६।। धरे अनेक कोटिक कटोरा और कंचनकी थारी।। ढिंग ढिंगधरी सबनके सुंदर शीतल जलभर झारी।।७।। गावन

लागी गीत व्याहके सुकुमारी व्रजनारी।। अतिहुलास परिहास परस्पर यह सुख शोभारी।।८।। परोसन लागे पुरोहित हित सों जीनकी वदन बडाई।। तिनके दरशपरस संभाषण मानों सुर सरिता आई।।९।। ओदन की उज्वलता मानों सहेज रूप धरआये यह हितप्रीति प्रीतम जन हितसों प्रकटहि आप जनाये।।१०।। बरी बरा अरू बरन बिजोरा पापर पित बनाए।। कनक वरण बेसन बहुतेरे प्रकार न जाते गिनाए।।११।। आंबल वेल आंब अदरख सरस नींबू मीले संघाने।। सदसीरा और सुरभी धृतसों सौरभ घ्राण बखाने।।१२।। बासोंदी शिखरण और खोवा अमृत (अंबरस) रसना तोषे।। आमरस कटुक तीक्ष्णरस लोंन मधुर रस पोषे।।१३।। कुंदमूल फल फूल पत्र जो व्यंजन सबे प्रकारा।। मानों भईप्रकट भूतल में अमृतकीसी धारा।।१४।। और बहुत विध षड्रस व्यंजन परोसन वारे हारे।। यद्यपि होय शारदाकी मति तदपि न जात संभारे।।१५।। शीतल सूगंध चाख सु कोमल विविधभांत पकवान।। केउप्रकारपरे नहीं कबहुं सूरपतिहुके कान।।१६।। कर अचवन उठेसब व्रजजन मनमें अति सूखपाये।। पटभूषण बीरा सोंधेसों पूजसदन पधराये।।१७।। यह सुख संपति यह रस शोभा कापें जातबखाने।। जूठन जाय उठाय "गदाधर" भाग्य आपनो माने।।१८।।

राजभोग में राग–सारंग आज बने गिरिधर दूल्हे चंदन के वागे।। टूटत तृण रोम–रोम मन्मथ रस पागे।।१।। भामिनी करत तहां मंडप अति शोभा।। फिर फिर झंकार करत मधुप वास लोभा।।२।। यह विध मिल मिथुन वपु विविध रंग बाढ़े।। नागरी निजभाव रवन ऊपर लख काढे।।३।। उपमाकों कौन कहे कटि मन्मथ मन लाजे।। "लघुगोपाल" नयनन लख सहचरी सुखकाजे।।३।।

भोग में राग–सौरठ देखरी देख राधा रवन।। मदनमूरत स्यामघन तन बढत शोभा भवन।।१।। कुसुम कुंचित केश विच–विच मंजुरी बंधूक।। नक्षत्र कहुंकहुं देखियत मानों उपमालायक मूक।।२।। श्रवण में नव झलक मानों लसत कुंडल किरण।। अंग अंग छबि चलत सुहाय

मानों बादर वरण।।३।। मुरलिका स्वर वरष चहुँदिश छुटी धरवा धार।। मानो बूड़ बिनोद विहरत बंधु निपुण बिहार।।४।। धनुष उर वनमाल राजत गिरा गरज गंभीर।। "सूरश्री गोपाल" बनव्रज सदां पावस धीर।।५।।

संध्या आरती में राग-सौरठ गोपी प्रेमकी ध्वजा।। जिन गोपाल कियो बस अपने उर धरि स्याम भुजा।।१।। सुक मुनि व्यास प्रशंसा कीनि उद्धव संत सराही। भूरि भाग्य गोकुलकी बनिता अतिपुनित भवमाँही।।२।। कहा भयो जो विप्र-कुल जनम्यों हरि सेवा विधि नाहीं।। सोई कुलिन दास "परमानंद" जो हरि सन्मुख जाहीं।।३।।

शयन में राग-विहाग कुंज महल में मंगल हेरी।। (यह पूरा पद पेज ३ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग मेरे कर मेंहदी लगी है लट उरझी सुरजाय जा।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग कुंज भवन में पोढे दोऊ।। नंदनंदन वृषभान नंदिनी उपमा को दूजो नहिं कोऊ।।१।। लाल कुसुमकी सेज बनाई कोककला जानत है सोऊ। रस में माते रसिक मुकुटमणि "परमानंद" सिंघद्वारे होऊ।।२।।

आषाढ कृष्णा १०

श्रृंगार – पाग परदनी का।

वस्त्र – सफेद गुलाबी बुंटी के, रूपेरी कोरके। कटि में परदनी तथा श्रीमस्तक पर पाग पर फिरोंजी रंग का दोहराकतरा तथा पिछवाई सफेद गुलाबी बुंटी की रूपेरी कोरकी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार मोती के।

विशेष – संध्यासमय यही श्रृंगार फूल की कली का धराया गया तथा अनेक प्रकार के मनोरथ भोग धराये गये है।

मंगला में राग–सुहा झुमक सारी हो तन गोरें।। (यह पूरा पद पेज ८ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग–सुहा प्रीतम प्रीत ही तें बस कीनों।। (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

राग–सारंग मोहन जेंवत छाक सलौनी।। सखन सहित हुलसे दोऊ भैया झपटत कर लै दोहनी।।१।। आछे बिंजन बने कौन के चाहत हरि की कोहनी।। "परमानंद" प्रभु जेंवत रूचिसों पहिले करि ले बोहनी।।२।।

राजभोग राग–सारंग बैठे लाल फूलनकी चौखंडी।। चंपक बकुल गुलाब निवारौ राई–बेलि श्रीखंडी।।१।। जूही जाई केवरा कूजौ करनि कनेर सुरंगी।। "चत्रभुज" प्रभु गिरधरलाल की बानिक–नव नवरंगी।।३।।

बिहरत बन–बन में बनवारी।। ललितादिक वनमाला लिये पहेरावत मनुहारी।।१।। अंब कदम्ब झुके चहुँ ओरे फूल–रही फूलवारी।। हंस मोर चकोर चातक पिक मधुप करत झंकारी।।२।। नानाविध के द्विजवर बोलत त्रिविध–पवन सुखकारी।। "सूरदास" प्रभु की यह लीला मान करत बलिहारी।।३।।

भोग में राग-सौरठ फूल के भवन गिरधर नवलनागरी फूल सिंगार कर अतही राजे।। (यह पूरा पद पेज १० पर पढ़े।)

संध्या आरती में राग-सौरठ प्रिति तो एक ही ठौर भली।। इह अब कहा मति चरन-कमल तजी फिरैजू चली चली।।१।। ते जाने जे सब बिधि नागर सार-सार ग्रही लोग।। पायो स्वाद मधुर रसलोभी स्याम-धाम-संजोग।।२।। "परमानंददास" गुनसुंदर नारदादि मुनि ज्ञानी।। सदा विचार-विषय-रसत्यागी जसु गावत मधुबानी।।३।।

शयन में राग-ईमन देख सखी पवन पुरवैया ठौर ठौर रूखन को हलवों।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े।)

मानमें सोहत गिरिधर मुख मृदुहास।। कोटि मदन करजोर उणसित विगलित भ्रूविलास।।१।। कुंडललोल कपोलन की छबि, नासा-मुक्ता प्रकाश।। शोभा सिंधु कहाँलों बरनों वारने "गोविंददास"।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग दम्पति पौढ़े रस बतिया करत नैना दोऊ लाग गये।। सेज उजरी चन्दाहूँ तें निर्मल तापर कमल छये।।१।। फूँकत द्दग वृषभाननन्दिनी झपत खुलत-मुरझात नये।। मानो कमल मध्य अलिसुत बैठे, सांझ समय मानो सकुच गये।।२।। आलस जान आप संग पोढ़ी पिय हिये उरलाय लये।। "नंददास" प्रभु मिली श्याम तमाल ढिंग-कनकलता उल्हये।।३।।

आषाढ कृष्णा ११

श्रृंगार – धोवती व छोटे मुकुट का।

वस्त्र – हल्का गुलाबी रंग रूपेरी कोरकी कटि में धोवती तथा उस पर पटका। श्रीमस्तक पर पाग पर छोटे मुकुट या किरीट धराया गया है। पिछवाई हल्का गुलाबी रंग की रूपेरी कोरकी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – संध्या में यही सारा श्रृंगार फूल-कलियों का धराया गया तथा विविध प्रकार के मनोरथ विविध प्रकार की सामग्री आरोगाये गये है।

मंगला में राग-खट

(चंदन की अष्टपदी)

चंदनचर्चितनीकलेवर पीतवसनवनमाली।
केलिचलन्मणिकुंडलमंडित गंडयुगस्मितशाली।।१।।
हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे।।ध्रु।।
पीनपयोधरभारभरेण हरिं परिरभ्य सरागं।
गोपवधूरनुगायति काचिदुदंचितपंचमरागं।।हरिरिह.।।२।।
कापि विलासविलोलविलोचनखेलनजनितमनोजं।
ध्यायति मुग्धवधूरधिकं मधुसूदनवदनसरोजं।।हरिरिह.।।३।।
कापि कपोलतले मिलिता लपितुं किमपि श्रुतिमूले।
चारू चुचुंब नितंबवती दयितं पुलकरनुकूले।। हरिरिह.।।४।।
केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजलकुले।
मंजुलवंजुलकुंजगतं विचकर्ष करेण दुकुले।। हरिरिह.।।५।।
करतलतालतरलवलयावलि-कलितकलस्वनवंश।
रासरसे सहनृत्यपरा हरिणा युवतिः प्रशशंसे।।हरिरिह.।।६।।
श्लिष्यति कामपि चुंबति कामपि कामपि रमयति रामां।
पश्चति सस्मित चारूतरामपरामनुगच्छति वामां।। हरिरिंह.।।७।।
'श्रीजयदेव' भणितमिदमद्भूतकेशवकेलिरहस्यं।
वृंदावनविपिने ललितं वितनोतु शुभानि यशस्यं।। हरिरिह.।।८।।

श्रृंगार में राग-सुहा दधिके मथत मन मथत मोहनको, मोहिनी री वृषभानदुलारी।। नेतीके खिंचत कटि लचकत, खिँच खिँच जात कुँवर मन निरखी रीझ दृष्टि वारी।।१।। मुरली लकूट गिर गई री पायन तेरे मुकुटकी छाँह सँवारी।। "जगन्नाथ कविराय" के प्रभुने, उदधि-मथनकी सुधि करि कमला बिसारी।।२।।

राजभोग आवता राग-नूर सारंग आज दधि मीठौ मदनगोपाल।। भावै मोहि तिहारो झूठो, सुन्दर नैन विसाल।।१।। आने पात लगाये दौना दीये सबन को बाँट।। जिन नहीं पायो सुन रे भैया, मेरी अंगुरिन चाट।।२।। बहुत दिनन हम रहे कुमुद-वन कृष्ण तिहारे साथ।। ऐसो स्वाद हम कबहुँ न चाख्यों सुन गोकुल के नाथ।।३।। आपुन हँसत हँसावत ग्वालन मानुष-लीला रूप।। "परमानंद" प्रभु हम सब जानत तुम त्रिभुवन के भूप।।४।।

राजभोग में राग-सारंग मुकुट की छाँह मनोहर किये।। सघन कुँजतें निकसी साँवरो संग राधिका लिये।।१।। फूल सिंगार हार गुंजाके खोर चंदनकी किये।। "परमानंददास" को ठाकुर ग्वालबाल संग लिये।।२।।

भोग में राग-गौरी गोधन धूरी में कैसे लागत नीके मोर-मुकुट की झलकनि।। मुरली बजावत कमल फिरावत आवत री बनबन में साँवरों मत्तगयंदकी-सी मलकनि।।१।। नैनकमल मकराकृति कुंडल मानों जल में मीन चढ़े फलकनि।। "नन्ददास" प्रभुकी छबि निरखत नेंकुन लागत पलकनि।।२।।

संख्या आरती में राग-कान्हरौ गोपी प्रेम की ध्वजा।। (यह पूरा पद पेज २० पर पढ़े।)

शयन में राग-अड़ानों ऐरी चटकीलों पट लपटानों कटि बंसीवट, जमनातट ठाड़ों नागर नट।। मुकुट लटक अरू भ्रकुटी विकट, तामें कुंडलकी मटकसों अटक्यों है, चित करन लपेटे आछी कनक लकुट।।१।। चटकीली बनमाल इकटक दृग डार, टेढ़े ठाढ़े नन्दलाल छबि छाई

घटघट।। "नंददास" गोपी ग्वाल टारे न टरत तातें निपट निकट आये सोंधे की-सी लपट।।२।।

मान में राग-पूर्वी सोहत गिरिधर मुख मृदुहास।। (यह पूरा पद पेज २२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-केदार तुम पौढें हों सेज बनाऊं।। चांपों चरन रहो पाटीतर मधुरे सुर केदारो गाऊँ।।१।। सहचरी चतुर सबे जुर आई, दंपती सुख नेनन दरसाऊँ।। "आसकरन" प्रभु मोहननागर, यह सुख स्याम-सदा हों पाऊँ।।२।।

आषाढ कृष्णा १२

श्रृंगार – आडंबन्द-पाग का

वस्त्र – चन्दनी रंगकी, बिना कोरकी कटि में आड़बन्द। श्रीमस्तक पर पाग पर रूपेरी जरीके काम की गोल चन्द्रिका। पिछवाई चन्दनी रंगकी रूपेरी कोरकी धराई गई।

आचरण – नित्यानुसार।

विशेष – आजकल मलमल के हल्के रंग के वस्त्र तथा बुटी की छापके वस्त्र भी आते हैं। सामग्री में सतुआ, दहीभात, श्रीखण्डभात आदि आरोगाये जाते है।

मंगला में राग-सुहा दधिके मथत मन मथत मोहन को, मोहिनी री वृषभान-दुलारी।। (यह पूरा पद पेज २४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-सुहा प्रीतम प्रीत ही तें बस कीनों।। (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-सारंग (छाक के पद) हरिकों टेरत फिरत गुवारी।। (यह पूरा पद पेज २ पर पढ़े।)

राजभोग में राग सारंग कैसे कैसे आये मेरे गेह टीक दुपहरी की झनक में।। चमर ढुराऊँ सेज बिछाऊँ श्रमकन झलकत देह।।१।। श्रम निवारियें अरगजा लेपन करौं काहेको करत संदेह।। रसिक प्रीतम याहीतें कहावत "सूर" सफल करो नेह।।२।।

भोग में राग माला सारंग नयनीरी काहे को कियो एतोमान।। गौरी गहेरू छांड मिल लालें मनक्रमवचन यातें होत कल्याण।।१।। जिन हठ कररी तू नटनागर सों भैरोंही देवगान।। मुरली तान कान्हरौ गावत सुन लेरी कान।।२।। रंग रंगीली सुघर नायकी तू जियमें अडान।। "नंददास" केदारो करिकें योंही बिहाग गयो मान।।३।।

संध्या आरती में राग-कल्याण माई री बांके लोचन निके चिते-चिते चित चोरत।। (यह पूरा पद पेज ५ पर पढ़े।)

शयन में राग–अड़ानों (नित्यपद) अरि हों तो या मग निकसी आयअचानक कान कुंवर ठाड़े अपनी पोर।। (यह पूरा पद पेज ७ पर पढ़े।)

मान में राग–पूर्वी केलिकला कमनीय किशोर उभय रसपुंजन कुंजके नेरे।। हास–विनोद कियो बल आली केतो सुखहोत है हेरे।।१।। बेली के फूल–प्रियाले पियपर डारेकी उपमा होत मन मेरे।। "नंददास" मानों सांझ समय बगमाल तमाल को जात बसेरे।।२।।

पोढ़वा में राग–बिहाग नवल किशोर नवल नागरिया।। अपनी भुजा स्याम भुज ऊपर स्याम भुजा अपने उरधरिया।।१।। करत बिहार तरणि तनया तट स्यामा स्याम उमग रसभरिया।। यों लपटाय रहें दोऊ जन मरकत मणि कंचन जैसे जरिया।।२।। या उपमा को रवि–शशि नाहीं कंदर्प कोटि वारने करिया।। "सूरदास" बल–बल जोरी पर नंदनंदन वृषभान दुलरिया।।३।।

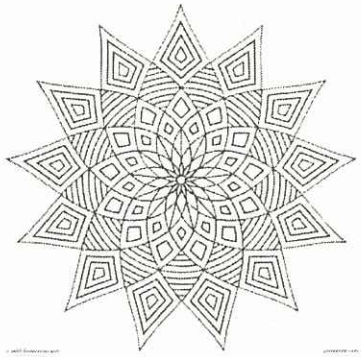

आषाढ कृष्णा १३

श्रृंगार – दुमाला को।

वस्त्र – मलियागिरी रंग के बीना कोरके, कटि में पिछोरा। श्रीमस्तक पर दुमाला तथा सफेद वस्त्र के काम की मोरशीखा तथा पिछवाई मलियागीरी रंग की बीना कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार मोती के धराये गये है।

विशेष – श्रीनाथजी आज गोपीवल्लभ में कुनवारो आरोगते है। राजभोग से संध्या तक कमल के फूल की फूल-मंड़ली में बीराजे है तथा मनोरथ भोग आरोगे है।

मंगला में राग सुहा जइये वाकेधाम जाके जागे चारों जाम लाल।। मोसों अवधि बदी वहीं रति मानी जानी उबटी है उरमाल।।१।। देखियत है नखक्षत अंग अंग में अधर अंजन पीक गाल।। "मदनमोहन" पिय क्यों अब दूरत हो लटक रही पाग अधर भाल।।२।।

श्रृंगार में राग-सुहा झुमक सारी हो तन गोरें।। (यह पूरा पद पेज ८ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-सारंग (छाक) हरिको जिमावत विट्ठलनाथ।। मध्य-बैठे मनमोहन राजत सखा मंडली साथ।।१।। खट रस विंजन आदि सलोने कोर देत है हाथ।। "रामदास" यह लीला निरखत नैनन किये सनाथ।।२।।

मोहन जेंवत छाक सलौनी।। सखन सहित हुलसे दोऊ भैया झपटत कर लै दोहनी।।१।। आछे बिंजन बने कौन के चाहत हरि की कोहनी।। "परमानंद" प्रभु जेंवत रूचिसों पहिले करि ले बोहनी।।२।।

राजभोग में राग-सारंग कमलमुख देखत कौन अघाय।। सुनरी सखी लोचन अलि मेरे मुदित रहे अरूझाय।।१।। मुक्तामाल लाल उर ऊपर जनफूली बनराय।। गोवर्धनधर अंग-अंग पर "कृष्णदास" बलजाय।।२।।

भोग में राग–सौरठ मैया मेरी कामर कौन लई।। (यह पूरा पद पेज १५ पर पढ़े।)

संध्या आरती में राग–सौरठ अंग अनंग रंग रस्यों।। नन्द गृहते नन्दसुत वृषभान भुवन बस्यों।। धेनु के संग मिसहीं मिसकर बिपिन पंथ घस्यों।।१।। निरख के सब ग्वालसेन नयन फेर हस्यो ।।२।। बहुर क्यों छुटत तहाँते बाहुबंध कस्यो।।३।। नेकु राधा बदन चित्तयो हुलस इत विलस्यो।।४।। साँझ सब एकत्र होंयके घोष पथ परस्यो।। "सूर" ऐसे दरस कारण मन रहत तरस्यो।।५।।

शयन में राग–कान्हरौं नैन छबिले अरूण मदमाते।। चंचल चपल भ्रकुटि छबि उपजत आनि आनि मुसकाते।।१।। भक्त कृपारस सदाई प्रफुलित मानहु कमलदल राते।। "गोविंद" प्रभु को श्रीमुख निरखत पान करत न अघाते।।२।।

आषाढ कृष्णा १४

श्रृंगार - परदनी- पाग

वस्त्र - सफेद रंग की मलमल के बीनाकोर की परदनी, श्रीमस्तक पर पाग पर कतरा तथा पिछवाई सफेद मलमल की बीनाकोर की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार मोती के धराये गये है।

विशेष - आज सायंकाल श्रीजी के श्रृंगार बड़ा किया गया तथा गर्मी में बरास के जलसे शितल स्थान कराया गया बाद में शयन के श्रृंगार धराकर शयन भोग के साथ में स्नान का भोग आया। इसमें अमरस-रोटी, बीलसारू तथा दहीभात, श्रीखण्डभात तथा सतुओ, बेंगन का भरता अधकी में आरोगाया गया।

मंगला में राग-सुआ बरस उघर गयो मेह पात द्रुम बेली।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-सुहा तुम घनसे हो घनस्याम।। गरज गरज आये, अनत जाय बरसे हो।।१।। उमड़ घुमड़के नेह जनावत कहूँ लावत सरसे हो।। झूठ-साँच हमही मिलावत औरन के जाय पग परसे हो।।२।। "धोंधी" के प्रभु तुम बहुनायक सब बातन सरसे हों।।३।।

राज भोग आवता राग-सारंग सुबल गिरिधारी चढ़ टेरत।। आवो बेगी चतुर छकहारी गिरिधर पेंडो हेरत।।१।। भई अवेर भूख जब लागी, तबही उपरैना फेरत।। "कुंभनदास" औसर पर पहुँची रसमें दान निवेरत।।२।।

राजभोग में राग-सारंग सोहत लाल के परदनी अति झीनी।। तापर एक अधिक छबि उपजत जलसुत पाँति बनी कटि छीनी।।१।। उज्जवल पाग स्याम सिर सोभित अलकावली मधुप मधु पीनी। "कुंभनदास" प्रभु गोवरधनधर चपल नयन युवतिन बस कीनी।।२।।

भोग में राग–सौरठ नैन नचावत गुजरी उजरे गात, भौंह खसित मानो डहे जात।। हरो लहेंगा केसरी अँगिया सूही सारी गोरे तनजु सुहात।।१।। कहा री कहौं वाके अंगकी सोभा चंदहु देख मलिन व्है जात।। हँस चितवत मोहे "धोंधी" प्रभु काहे लालन ललचात।।२।।

संध्या आरती में राग–केदारो राधिका रवन की मुरलीका श्रवन सुन, भवन सब काज तज गवन कियों भामीनी।। नादबस बिबस भई आन गति छूटि गई, बिपिन आतुर मिली रूप अभिरामिनी।।१।। निकट पियके गई रसिकवर गही लई, गिरिधरन स्यामघन जुवती सौदामिनी। करहि बासर केलि कंठ भूज कर मेली, चतुर संग "चतुर्भुज" की स्वामिनी।।२।।

शयन में स्नान राग–गौरी (ताल झूमरो) सौंधे नहाय बैठी पहिरि पटभूषण तहाँ फूलवारी सुकावत अलकें।। करनखसों ले केस सँवारत मानों नवघन में उडुगन झलके।।१।। विविध सिंगार लिये ठाडी पिय सखी मानो डर भयो दलजु मदन के।। "हरिदास" प्रभु वारी कह्यों निरखत, पल न लगे कहुँ नैनन पलकें।।२।।

शयन में राग–अडाना चलों क्यों न देखेरी खरे दोऊ कुंजन की परछांही।। एक भुजा गहि डार कदंब की दुजी भुजा गलबाँही।।१।। छबीसों छबीली लपट लटक रही कनक बेली तरूतमाल अरूझाई।। "हरीदास" के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी रंगेहें प्रेमरंग माही।।२।।

मान में राग–पूर्वी अरी जिन तू पठई जहीपें फिर जाउ उन मोसो अकथ कथा नादी।। तोहि पठावत वे क्यों नहिं आवत उनके पायन कछु मेंहदी बांधी।।१।। मो ढिंग आवत वचन सुनावत बात कहत आधी आधी।। "तानसेन" के प्रभु वे बहुनायक प्रीति फंदन करहों फांदी।।१२।।

आश्राढ कृष्ण अमावस्या

(देहरी बन्दनमाल)

आज घसीयार वाले गो. ति. श्री गिरधरजी महाराज श्री का उत्सव है। आपश्री ने श्रीनाथजी को आठ वर्ष तक घसीयार में पधरा कर सेवा की। एक दिन श्रीनाथजी ने इनकी सेवा से प्रसन्न होकर अपना श्रीहस्त कटि से हटाकर श्रीमहाराजश्री के मस्तक पर धर कर श्रीजी ने आर्शिवाद दिया तथा कहा कि मैं तेरी तरफ हूँ। इसी कारण आज भी घसीयार में श्रीजी का आर्शिवाद स्वरूप चित्रसेवा में विद्यमान है।

श्रृंगार - आडबन्द व पाग का।

वस्त्र - आज मलमल के अधरंग के वस्त्र बिना कोर के, कटि में आड़बन्द। श्रीमस्तक पर गोल छज्जेदार पाग पर जरी के कामका जमाव का कतरा व लुमक तथा पिछवाई अधरंग (लाल) बिना कोर की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार।

विशेष - आज की विशेष सामग्री जलेबी तथा बुन्दी तथा बुन्दी की मिठी कढ़ी तथा बड़ा लड्डु बुन्दीका जिसे गोद का लड्डू कहते हैं, धराया जाता है।

मंगला में राग-विलावल चकईरीं चल चरन सरोवर जहाँ नहीं प्रेमवियोग।। जहाँ भ्रमनिसा होत नहीं कबहूँ सोइ सायर सुखजोग।।१।। जहाँ सनक-सिव हंस मीन मुनि नख रवि प्रभा प्रकाश।। प्रफुलित कमल निमिष नहीं ससि डर गुंजत निगम सुबास।।२।। जिहिं सर-सुभग मुक्ति-मुक्ताफल सुकुत विमल रस पिजे।। सो सर छाँड़ी क्यों कुबुद्धि विहंगम इहाँ कहा रहि कीजे।।३।। लछमी सहित होति नित क्रीड़ा सोभित "सूरजदास"।। अब न सुहात विषयरस छील्लर वह समुद्रकी आस।।४।।

श्रृंगार में राग-सुहा नैंन ऊनींदे भये रंग राते।। मानों गुलाब कुसुम पर सजनी भ्रमर भ्रमत मदमाते।।१।। प्रेमपराग पाँखुरी फूलदल प्रफुलित

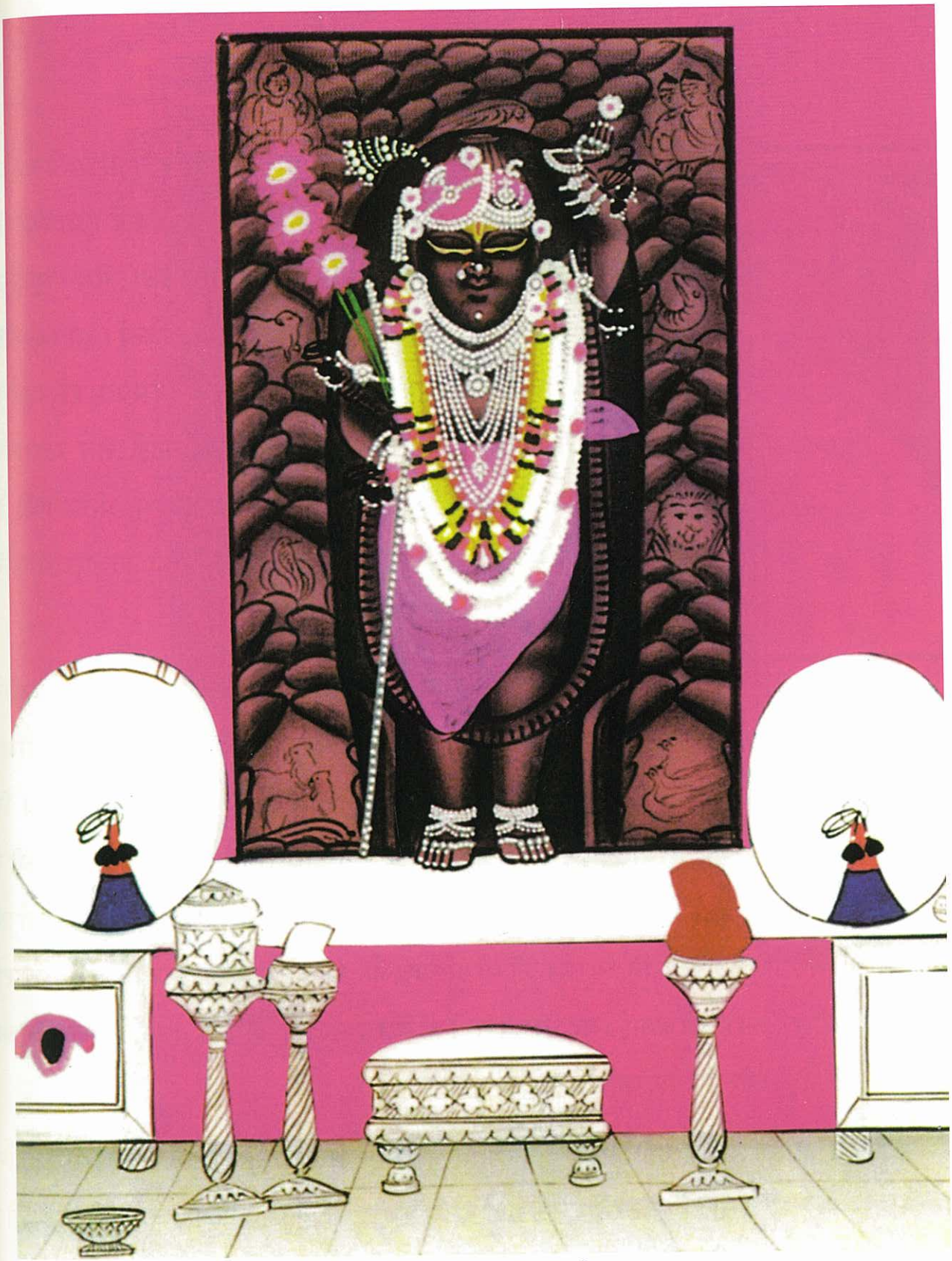

श्री दिनेश शर्मा श्री दाऊलालजी शर्मा, सुखाडिया नगर-नाथद्वारा का
श्री जी चरणों में दण्डवत व जय श्री कृष्ण।

गो. ति. श्री गिरधर जी महाराज घसियार वाले का संक्षिप्त परिचय

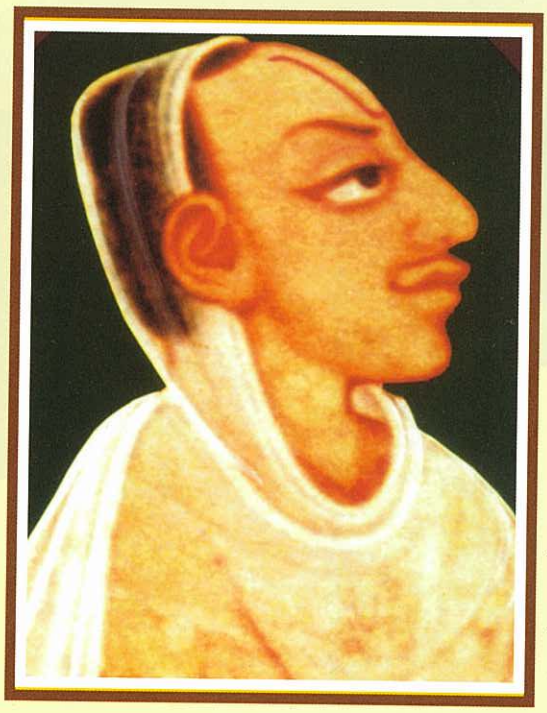

आप तिलकायत श्री गोविन्द जी बाललीला वाले के यहाँ वि. सं. 1825 आषाढ़ कृष्ण 30 के दिन प्रकटे। आपके दीर्घ सलोने नैत्र एवं श्याम सुन्दर वपु होतो तथा जीवन एक दम सादगी पूर्ण होतो । आपने तीन विवाह किये। आपके तीनों विवाह से छह पुत्र हुए। वि.सं. 1855 के आसपास होल्कर की सेना मेवाड़ में लूट पाट करतह हुई आई, तब महाराणा भीमसिंह के आग्रह एवं व्यवस्था सो प्रभु श्रीनाथजी श्री नवनीतप्रियाजी एवं श्री विट्ठलनाथजी को उदयपुर में मंदिर सिद्ध करीके पधराये।

वहाँ शीतकाल सूं उष्णकाल तक साल भर बिराजे परन्तु महाराणा वसन्त, डोल, श्रावण, जन्माष्टमी इत्यादि उत्सव बहुत हुए सो वे या वैभव को निभाय न सके। तब गो. श्री गिरधरजी ने घसियार में नवीन मंदिर सिद्ध करवाय श्री ठाकुरजी को पधराये। वि. सं. 1859 माघ कृष्ण 10 श्री जी पाट बिराजे। परन्तु वहाँ की जलवायु उचित न पड़ी और आप श्री के दो लाल जी लीला प्रवेश कर गये। वहाँ सं. 1861 में श्री दाऊजी (दामोदरजी) को विवाह भयो उस समय नाथद्वारा में शांति भई। तब ति. गिरधर जी सों श्रीनाथजी, श्री हरिराय जी की वाणी सिद्ध कर वे को नाथद्वारा पधारने की इच्छा बताई। यह प्रेरणा सुनी के विरह भावना में वि.सं. 1863 वैशाख शुक्ल 11 को घसियार में ही लीला प्रवेश करि गये।

वहाँ श्री दामोदर जी (दाऊजी) तिलकायत पदासीन भये। वहाँ श्री गोवर्धनधर ने अपनो जेमनो (दक्षिण) श्री हस्त श्री दाऊजी के मस्तक पर धर्यो एवं आशीर्वाद दियो। बाद श्री दाऊजी ने श्रीनाथजी को वि.सं. 1864 फाल्गुन कृष्णा सप्रेमी को पुनः पाट बिराजमान किये।

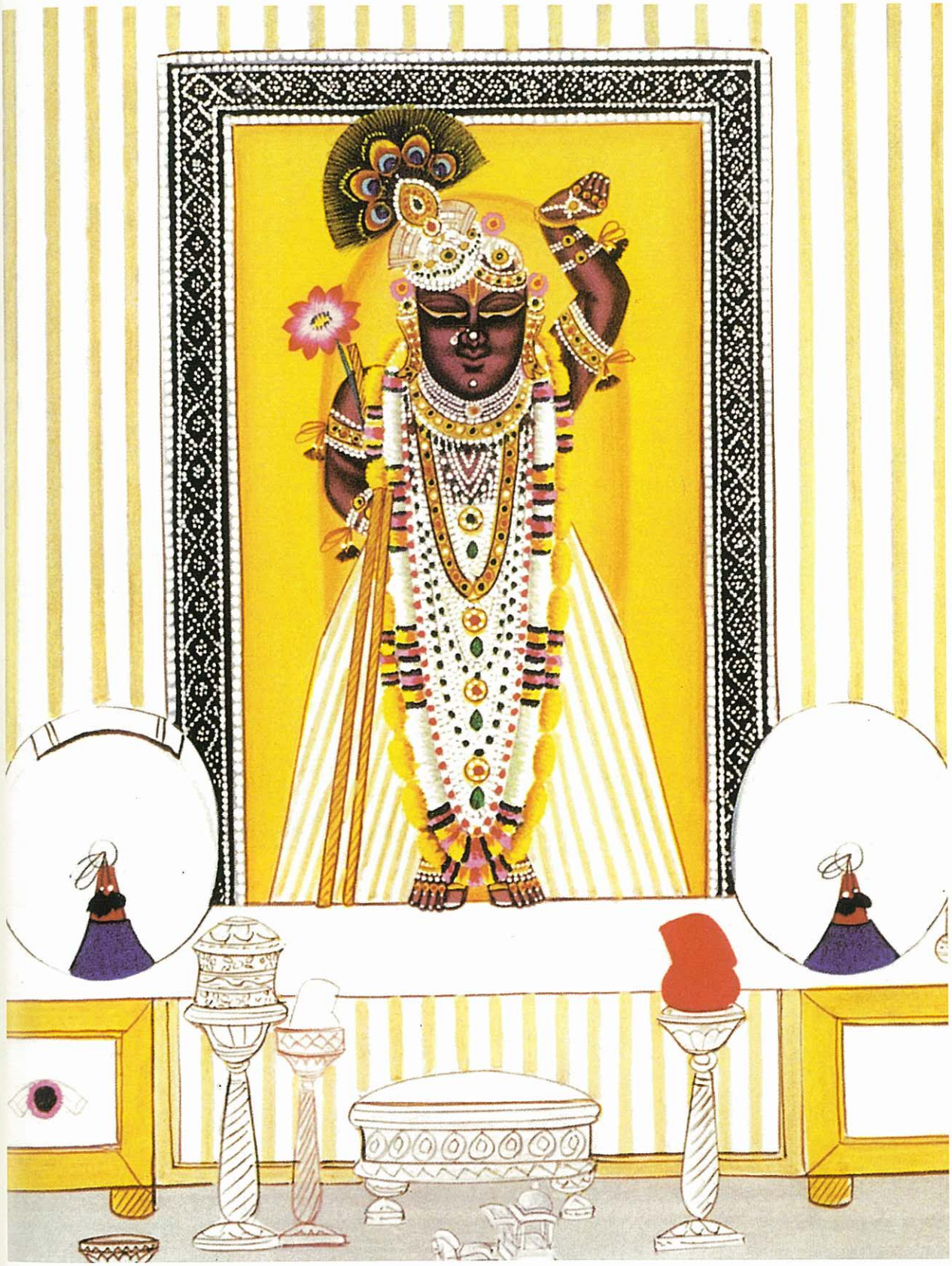

रथ-यात्रा

श्रीमती आशा श्री मदन मोहनजी त्रिपाठी एवं समस्त त्रिपाठी परिवार का जय श्री कृष्ण

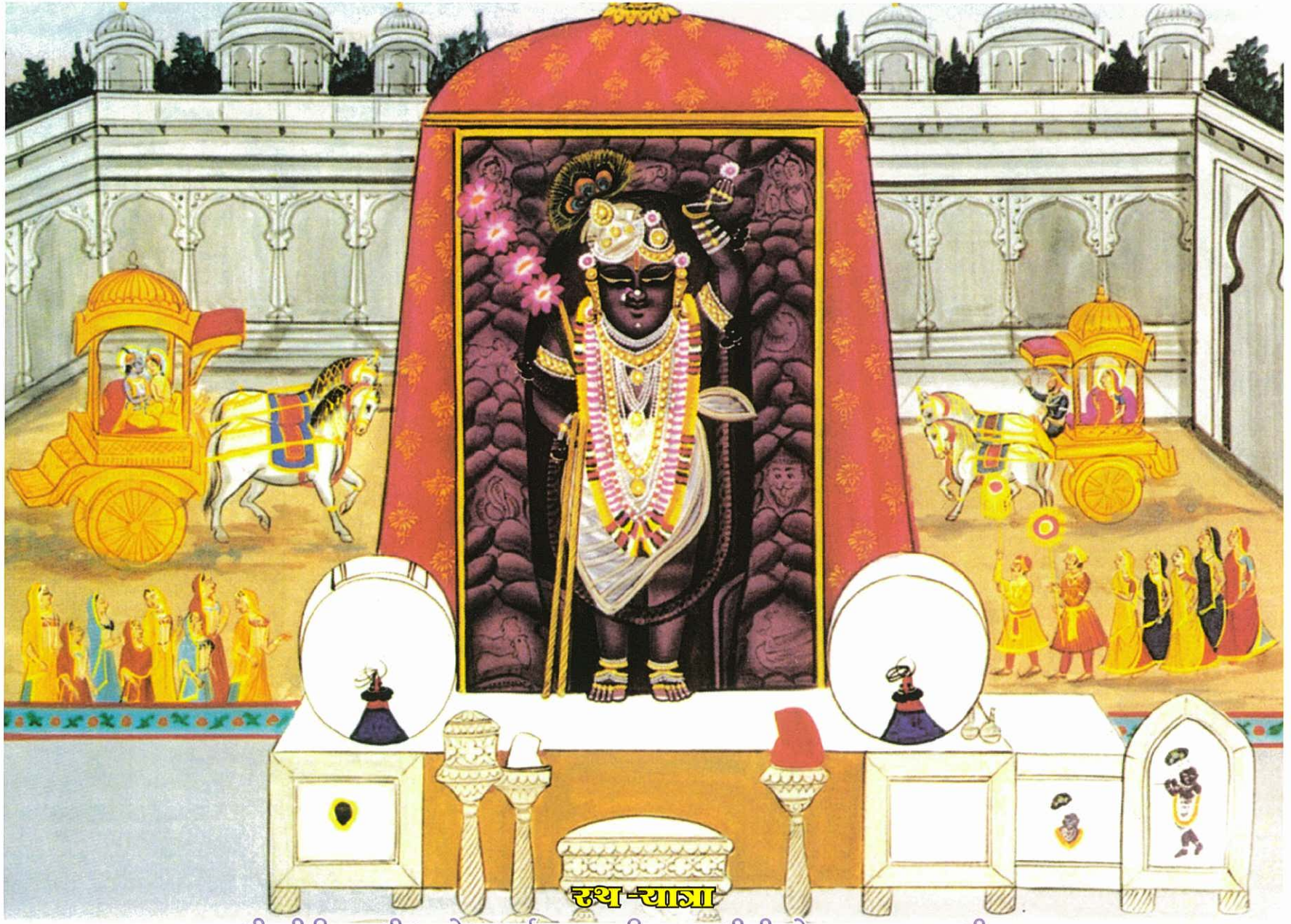

श्रीमती स्मिता श्री भुवनेश भाई शाह सपरिवार का श्रीजी को दण्डवत व जय श्री कृष्ण

श्रीमती रिमता श्री भुवनेश भाई शाह सपरिवार का श्राजा का दण्डवत व जय श्री कृष्ण

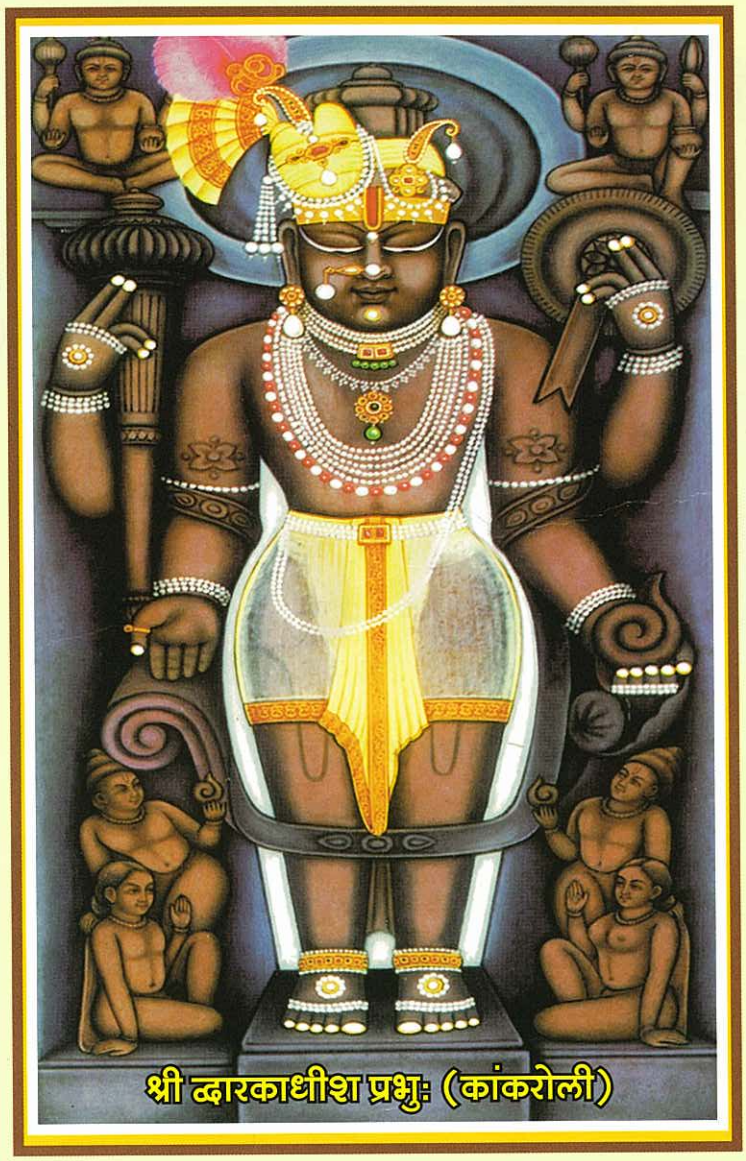

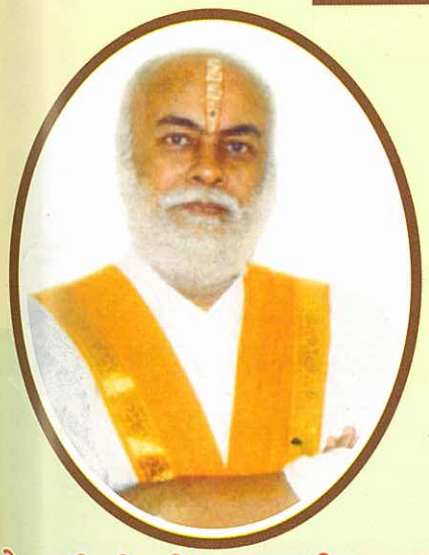

गोस्वामी श्री बृजेश कुमारजी महाराज श्री

गोस्वामी श्री वागीस कुमार जी

प.भ. वैष्णव श्री नगीनदास जी पारीख, श्री मोती चंद नारायण दास कोठावाले
बड़ा बाजार का दण्डवत व वैष्णवों को जय श्री कृष्ण

श्री द्वारकाधीश जी (कांकरोली) पाटोत्सव

आषाढ़ शुक्ल 5

श्री द्वारकाधीश का स्वरूप बहुत प्राचीन है। इन स्वरूप की ब्रह्माजी से लेकर सत युग, त्रेता युग, द्वापर युग एवं कलियुग में सेवा हो रही है। कन्नौज के दिवान दामोदरदास संभलवारे ने श्रीनारायण दरजी के पास से यह स्वरूप पधराकर श्री महाप्रभुजी द्वारा पुष्ट कराके राज वैभव से सेवा करी थी।

स्वरूप भावना – यह ठाड़ा श्याम स्वरूप है एवं श्रृंगार रस के सूचक है, रसौ वै सः है। आपके चार हस्त है। नीचे के जीमने श्री हस्त पद्म का चिन्ह है जीमने उपर के श्रीहस्त में गदा है। दांई तरफ उपर के श्रीहस्त में सुदर्शन चक्र है एवं दांई तरफ के नीचे के श्रीहस्त में शंख है। पिठिका चौरस है।

लीला भावना – यह आंख मिचौनी लीला एवं हिंडोरा लीला का स्वरूप है।

नाम भावना – द्वार – दरवाजा, क – जल, अधीश – स्वामी याने द्वारकाधीश – जल स्वरूप श्री यमुनाजी की निंकुज द्वार के स्वामी वर्तमान में यह स्वरूप तृतीय घर में कांकरोली में श्री 108 श्री ब्रजेशकुमार जी महाराज श्री के माथे बिराजते हैं एवं तृतीय घर के आचार्य चरण द्वारा सेवा की जा रही है।

आषाढ शुक्ला ६

(कसुम्बी छट्ट)

गो. ति. श्री गोविन्दजी व गो. ति. राकेशजी महाराज श्री का गादी उत्सव देहरी बन्दन वार

श्रृंगार – पाग–पिछोड़ो को।

वस्त्र – लाल रंग (कुसुम्बी वस्त्र) रूपेरी कोर के वस्त्र, कटि में पिछोड़ा, श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोरकी चन्द्रिका, ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई रेशम के कामकी (भरत कामकी) वर्षा ऋतु के भाव की मोर वाली धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – आज से वस्त्रों में गहरे रंग प्रारंभ हो गये है। गुलाबदानी पर लाल वस्त्र लपेटा गया। गोपीवल्लभ में सामग्री जलेबी तथा राजभोग में सेव, बीलसारू आरोगाया। आज श्रीमद् गुंसाईजी का छह माह का विप्रयोग पूरा हुवा तथा श्री चन्द्रसरोवर से सेवामें पधारें।

मंगला में राग–मल्हार आईजू श्याम जलद घटा ओल्हर चहुंदिशतें घनघोर।। दंपति अति रसरंग भरे बांह जोटी फिरत कुसुम बीनत कालिंदीतटा।।१।। नेन्ही नेन्ही बुंदन वरखन लाग्यों तेसीय चमकत बीजछटा।। "गोविंद" प्रभु पिय प्यारी उठि चली ओढे लाल पट दौरलियों जाय बंसीबटा।।२।।

श्रृंगार में राग–मल्हार लाल माई बांधे कुसूंभी पाग।। कसूंभी छड़ी हाथ में लीये भीज रहे अनुराग।१।। कसूंभोई कटि बन्योंहे पिछोरा कसूंभी उपरेना।। कसूंभी बात कहत राधासों कसूंभे बने दोऊ नयना।।२।। हरित भूमि यमुना तट ठाड़े गावत राग मल्हार।। "श्रीविट्ठल" गिरिधरन छबीलों श्याम घटा अनुहार।।३।।

(रथयात्रा के अनुसार राजभोग आते समय छाक के चार पद नित्य गाये जाते है।)

राजभोग में (बधाई) राग-सारंग श्रीवल्लभनन्दन रूप अनुप सरूप कह्यो नहिं जाईं। प्रगट परमानंद गोकुल बसत हैं सब जगत के सुखदाई।।१।। भक्ति-मुक्ति देत सबको निजजनको कृपाप्रेम बरखत अधिकाई।। सुखद एक रसना कहँ लौं बरनौं "गोविंद" बलि बलि जाई।।२।।

राग-मल्हार बृज पर निकी आज घटा।। नेन्हीनेन्ही बुंद सुहावनी लागत चमकत बीजछटा।।१।। गरजत गगन मृदंग बजावत नाचत मोरनटा।। तेसोई सुरगावत चातक पिक प्रगट्यों मदन भटा।।२।। सबमिलि भेटदेत नंदलालहि बैठे ऊंची अटा।। "कुंभनदास" गिरिधरन शिर कसूंभी पीत पटा।।३।।

भोग में राग-मल्हार पेहेरे सुभग अंग कसूंभी सारी, सुभग भूमि हरियारी तामें इन्द्र वधू सोहे।। हरिके संग ठाड़ी, कंचुकी उतंक गाढ़ी बाल मृगलोचनी देखत मन मोहे।।१।। तेसीये पावस ऋतु तेसेई उनये मेघ तेसीये बानिक बनी उपमाकों कोहे।। "कुंभनदास" स्वामिनी विचित्र राधिका भामिनी गिरिधर पिय मुख इकटक जोहे।।२।।

संध्या आरती में राग-मल्हार लाल की शोभा केहेत न आवें।। संध्यासमें खिरकमें ठाड़े अपनी गाय दुहावे।।१।। लालपाग शिर उपर सोहे मोरचंद छबिपावे।। मोसों कह्यों सुन जा तू बातें छतना बूंद चुचावें।।२।। लटकत चलत जबही घर अपने युवतिन बोल सुनावे। "श्री विट्ठलगिरिधरन" लालकी छबि यशोमतिके जिय भावे।।३।।

शयन में राग-अड़ानों कुंज महल के आंगन मध्य डोले दोउ बांह जोटी।। कबहुँ चन्द कबहुँ प्यारी न चितें रहत पुन डग धरत छोटी मोटी।।१।। कबहुक कुसुमकर बिनतहैं कलियां मोटी-मोटी।। "हरिदास" के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी गुही-गुही बांधत चोटी।।२।।

मान में राग-मल्हार तुं चल नन्द नन्दन बनबोली।। (यह पूरा पद पेज ३९ पर पढ़े।)

कसूंमी छठ

श्री ओमप्रकाश – भैरूलालजी महाराजाधिराज – नाथद्वारा का
श्री जी के चरणों में दण्डवत व जय श्रीकृष्ण

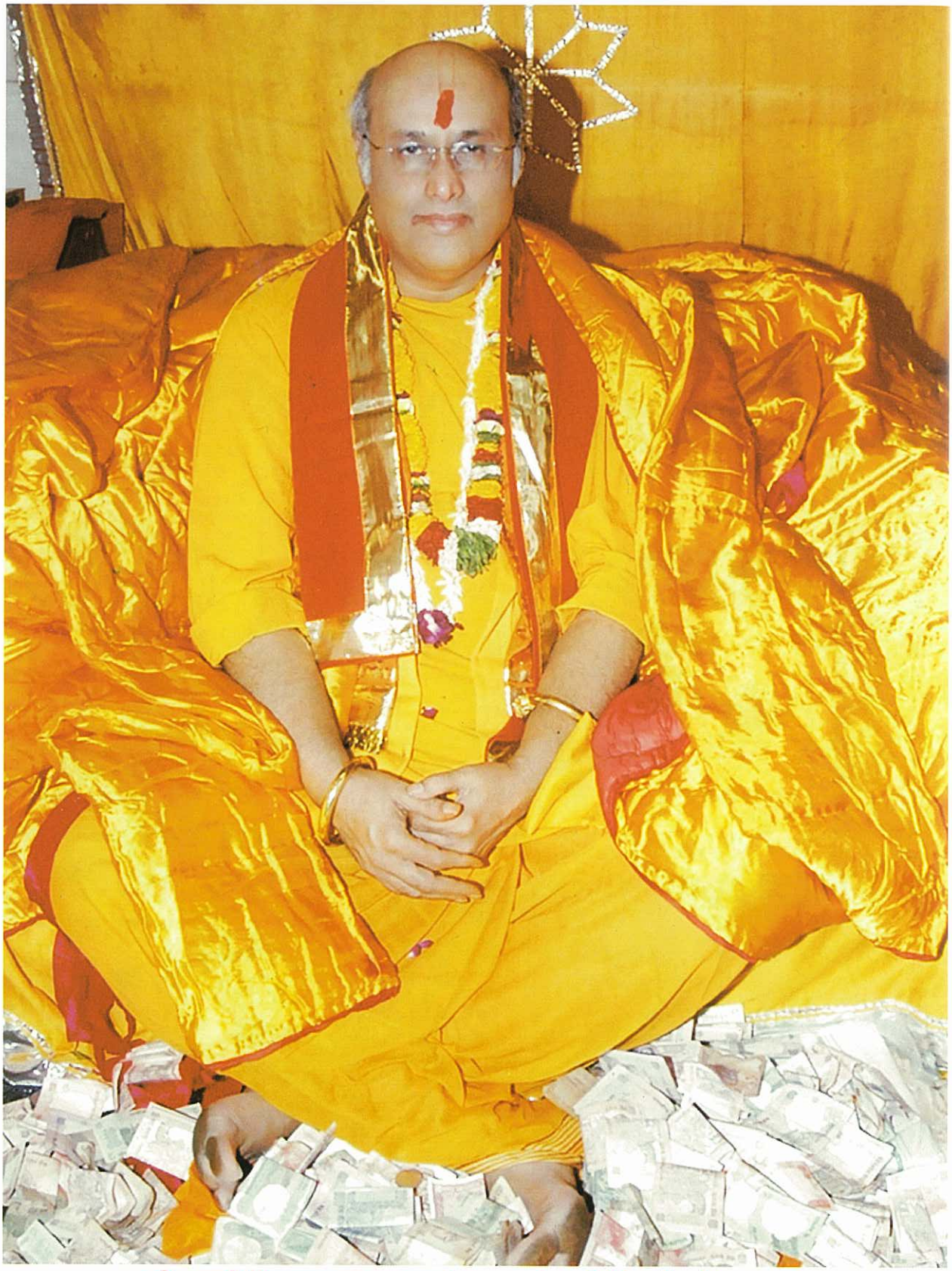

गोस्वामी तिलकायत का कसूंभा छठ (गादी बिराजे सो उत्सव)

आदरणीय गुरूदेव के चरणों में दण्डवत मदनलाल शर्मा-नर्बदा देवी शर्मा

मान न कररी बावरी तेरे तो कारन आयो मेह।। नई नई भूमि पर बरख्यो चाहत नवल नागरि नयो नेह।।१।। तोबिन वाय कल न परतहे तो बिन वाय सुहात न गेह।। उठ चल हिलमिल "जगनायक" सों दिन दिन बढ़त सनेह।।२।।

पोढ़वा में राग–मल्हार/बिहाग यह सुनि वचन पिया पें आई।। उठि धाई अकुलाय अंक भरी मानौं रंक निधि पाई।।१।। मिलि पौढ़े संकेत कुंज में नव कुसुमन सेज बनाई।। "परमानंद" दास को ठाकुर विविध केलि कीनि मन भाई।।२।।

आषाढ शुक्ला ७

श्रृंगार – पाग-परदनी को।

वस्त्र – लाल रूपेरी कोरके, कटि में परदनी कसुमल तथा श्रीमस्तक पर लालपाग छोरवाली उसपर सफेद मोर की चन्द्रिका धराई गई है। आज ठाड़े वस्त्र नहीं धराये गये है। पिछवाई चित्रामण की श्रीगिरीराजजी तथा निकुंज की है। लीला वर्षा ऋतु की चल रही है।

आभरण – नित्यानुसार।

मंगला में राग-मल्हार लाल और ललनाजूं बांह जोटी उठे प्रात पवनलगत कमल लपटात।। यह अचरज मोपें कहेत न बनि आवे दोउनकों प्रतिबिंब देख दृग न समात।।१।। बागे बीर बनठन सोंधेही अरगजे एसे भीजे मधुकर तिनपें उड्यो न जात।। "सूरदास" मदनमोहन पियप्यारी पर वारत तनमन देखत नांहि अघात।।२।।

श्रृंगार में राग-मल्हार देख सखी ठाडे नंदकिशोर।। श्री गोवरधन परवत के उपर तेसेई नाचत मोर।।१।। लाल पाग सिर सुभग लालके लाल लकुटिया हाथ।। लाल रतन सिरपेंच बिराजत मोतिनकी लर माथ।।२।। लालनके आभूषण अंग अंग पीत बसन फहरात।। "श्री विट्ठल गिरिधरन" छबिलों श्याम सलोने गात।।३।।

राजभोग आवता राग-मल्हार श्याम चल कुंजनमें आये दौर।। ऊँचे चढ़ि टेरत ग्वालनकों आवो सब मेरी ओर।।१।। गायन टेर दई बलदाउ चोंकी चमकी आई इक ठोर।। "नंददास" प्रभु भोजन करवेकों बैठों सखा मंडली जोर।।२।।

बिराजत सघन कुंज की ओट।। इत जेंवत मंडल मध्य माधों उठे मेघके कोट।।१।। न्हेंनी न्हेंनी बुंदन वरखन लाग्यों रूचि उपजावन काज। वरखा रितु विलसत नंदनंदन संग लिये सकल समाज।।२।।

देखो भैया चहुंदिश छाये बादर।। समज विचार लेहो जिन मनमें फेरि फिरोगे निरादर।।१।। वरखा रितु बन छांहन लीये भोजन संग बिरादर।। निर्मल ताल तलैया के जल बोलत निके दादुर।।२।। हरी हरी भूमि छांड कित जईए ओर कदम तर कादर।। खिसलपरे "परमानंद" तब हरि जुर मिल बैठे आदर।।३।।

गहेरी सघन अति श्याम ढांककी छांह आई छाक काहेको करत अवार।। उमड़ घुमड़ रूमझुम चहुंदिशतें घटाआई निधरक भये डोलत निहार।।१।। हां हां कहि भली बात टेरी ग्वाल कीनी पांत अर्जुन तुम लेहो भैया पनवारों देहो डार।। "कुंभनदास" प्रभु गोवर्धनधरनलाल छाक वांट आज्ञा दीजे जेवन लागें तिहिं वार।।२।।

राजभोग में राग–मल्हार कुंवर चलोजुं आगे गहवर में बोलत मधुरे मोर।। (यह पूरा पद पेज ३९ पर पढ़े।)

भोग में राग–मल्हार सखीरी ब्रजको बसीवो निको।। वछरा गाय चरावत बनमें कान्ह सबन को टीको।।१।। वृन्दावन में होत कुलाहल गरजत सुर मुरलीको।। ठाढ़े लाल कदंब की छैया मांगत दान दही को।।२।। उपजतहे अति प्रीत उर अन्तर गावत जस हरिजी को।। "सूरदास" प्रभु मिले हैं गिरिधर यह जीवन सब हीको।।३।।

संध्या आरती में राग–मल्हार लाडिलों लड्याय बुलावतधेनु।। (यह पूरा पद पेज ४३ पर पढ़े।)

शयन में राग–मल्हार प्यारी के गावत कोकिला मुख मूँद रहे पीय के गावत खग नैना मूंद रहे सब।। नागरी के रस गिरिधरन रसिकवर मुरली मल्हार राग अलाप्यो मधुरे जब।।१।। दंपति तान सुनत ललितादिक वारत है तनमन फेरत है अंचल तब।। "चतुर्भुज" प्रभु को निरख दंपती सुख कहेत कहांधों कीजे रहिरी भवन अब।।२।।

मान में राग-मल्हार देख गगन में घटा ओल्हरि गोवर्धन पर लायो सोर मोरन।। कूजत पिककलाप मेटत विरहताप तेसीय मिली मृदु मुरली की घोरन।।१।। कहे व्रजसुन्दरी सुनहो राधिका प्यारी एसी ऋतु कित सहेत निहोरन।। "कृष्णदास" प्रभु गिरिधरपिय को हँस वशकर बुधिबल चितचोरन।।२।।

राग-मल्हार आयो पावस दल साजगाज मदन नरेश प्रबल जान प्रीतम अकेले नवकुंज सदन।। पवन वाजि गज बदरा मतवारे कारे भारे आवत डरपावत बगपांति रदन।।१।। धुरवा धुंकारे मोर पिक किलकारें बूंदन बानन एसे करें कदन।। "व्रजजन" प्रभु गिरिवरधरकी सहायकरि राधे जोवत पंथ पल न त्याग तेरोई वदन।।२।।

पोढ़वा में राग-मल्हार दोऊ मिल पौढ़े ऊँची अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

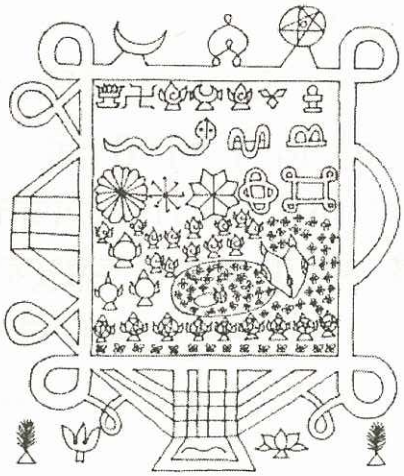

आषाढ शुक्ला ८

श्रृंगार – मल्लकाछ–टीपांरा को।

वस्त्र – पोपटी रंग के रूपेरी कोरके, कटिमें मल्लकाछ तथा दोनों तरफ पटका धराया गया है। श्रीमस्तक पर पचरंगी कामका टीपारा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र गुलाबी तथा पिछवाई पोपटी रंग की रूपेरीकोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – सांयकाल यही श्रृंगार फूलकली के धराये गये है तथा विविध प्रकार के मनोरथ भोग आरोगाये गये है। शयन में भी नित्य कली की माला का जोड़ धराया जाता है। शयन के दर्शन बाहर नहीं खुलते है।

मंगला में राग–मल्हार **मोहिं सो निठुराई ठानी रे मोहन प्यारे काहे को आवन कह्यों साँचे हो जू साँचे।। प्रीत के बचन वाचे बिहरानल आंचे अपनी गरज को तुम इक पाइ नाँचे।।१।। भले हो जू जानें लाल अरगजा भींनी माल, केसरि तिलक भाल, मेंन मंत्र काचें।। निसि के चिन्ह चिन्हें, "सूरस्याम" रति भींने, ताही के सिधारौं पीय जाके रंग राचे।।२।।**

श्रृंगार में राग–मल्हार **पावस नट नट्यों अखारों श्रीवृन्दावन अवनी रंग।। नृत्यत गुणरास बरूहा पपैया शब्द उघटत ओर कोकिला कल गावत तानतरंग।।१।। जलधर तहां मंदमंद सुलप संचगति भेद उरप तिरप मानलेत सरस मृदंग।। "गोविन्द" प्रभु गोवर्धन सिंहासन पर बैठे सुरभी सखा सभा मध्य रीझे वह ललित त्रिभंग।।२।।**

राजभोग आवता राग–मल्हार **मोहन तुम हू भोजन कीजे।। बरखा रितु जुर बादर नये कह्यो मान कर लीजे।।१।। तब बलदाऊ खीज कहत स्याम सौं बांट बांट तुम दिजे।। "परमानंद" प्रभु जैवन लागे प्रेम प्रीति रस भींजे।।२।।**

मंडल जोर हरि जेंवन बैठे ऋतु अषाड के बादर छाये।। अर्जुन भोज सुबल सीदामा आपुन हँस हलधर ही बुलाये।।१।। आपुन खात खवावत ग्वालन विंजन दे दे सब ही मन मोये।। "नंददास" प्रभु की छबि निरखत ब्रह्मा सिव सुरपति पछिताये।।२।।

सखी मोहे करो उनकी छकहारी।। कर भोजन बहु भाँति भाँति के मोहे देहो तुम सिर पर धारी।।१।। हों छकहारी चल मन मिली दोऊन को टेरोरी।। आवो हो व्रजराज लडेतें तुम जेवो हों रहु वदन निहारी।।२।। वदन निहारी सम्हारी अपनी बलि बलिहारी हों वारी।। "श्रीविट्ठल गिरिधरन" सुरभी को रहे हुंक करूं कहारी।।३।।

सुनोमोहन आई छाक तिहारी।। इत घन घटा उठी सुनो भैया चितवो नेक बिहारी।।१।। बेगी पखार सिला सुनी दाऊ सब मिल भोजन कीजे। गैया बगदाओं श्रीदामा, मेरो कहयो अब कीजे।।२।। भोजन करे प्रसाद सबे लीनों आरोगत बीरी पान।। "नंददास" प्रभु घन बरखत चहुं ओर करत विविध रसदान।।३।।

राजभोग में राग-मल्हार मदनमोहन बन देखत अखारों रंग।। सुलप सचगति वरूहा नृत्य करे कोकिला कुहुकुहु तान तरंग।।१।। उघटत शब्द पपैया पीऊ पीऊ करे मधुव्रत गुंज मानो सरस उपंग।। "गोविंद" प्रभु रीझे सकल सभा सहित जलधर सुघर बजावत मृदंग।।२।।

भोग में राग-मल्हार बैठे फूल महलमें दोऊ राधा और गिरिधारी।। फूलनके हार सिंगार फूलनके फूल टिपारो धारी।।१।। फूलनकी सेज गेंदुआ तकिया फूलनकी, फूलनकी पिछवारी।। फूले गावत वेणु बजावत राग रंग भयो भारी।।२।। फूले मधुप कोकिला कूजत बहेत पवन सुखकारी।। "श्रीविट्ठलगिरिधरन" लाल पर तन मन धन सब वारी।।३।।

संध्या आरती में राग-मल्हार वृंदावन कनक भूमि नृत्यत व्रज नृपतिकुंवर।। उघरत शब्द सुमुखी रसिक अग्र ततत ता थेई थेई गति

लेत सुघर।।१।। लाल काछ कटि किंकिणी पग नूपुर रूनझुनत बीच बीच मुरलीधरत अधर।। "गोविन्द" प्रभु के जु मुदित संगी सखा करत प्रशंसा प्रेमभर।।२।।

शयन में राग–मल्हार नीकें वन फूले फूल, सुभग कालिंदी कूल, इन्द्रधनुष राजे स्याम घटन में।। नीकी गति मंद मंद, बिहारी आनंद कंद, नीको भेष बन्यों ऊर पीत पटन में।।१।। नीके ग्रह लता कुंज, नीकी है अली गुंज, नीको राग रह्यो पिक की रटन में।। "श्री विट्ठल" बिपुन रंग, ललिता के फूले अंग, मिलि देखोंगी नैंनन की छटन में।।२।।

मान में राग–मल्हार यह ऋतु रूसवे की नाही।। बरसत मेह नेहधरणी के बोलत कुंवर कन्हाई।।१।। जे वेली ग्रीष्मऋतु दाधी ते तरूपर लपटाई।। देखो नदी प्रेम रसमाती मिलन समुद्रे धाई।।२।। यह समयो है दिवस चारको समझ चतुर मनमांही।। "सूरदास" उठ चली श्रीराधा दे प्रितम गलबाहीं।।३।।

पोढ़वा में राग–मल्हार सघन घटा घनघोरें न्हेनी न्हेनी बुंदन हो पिय वर्षे।। चहुदिशतें गरजत मंद–मंद तेसीय कनक चित्रसारी तामें पोढ़ी पिय–प्यारी तेसीय दामीनी अली दर्षे।।१।। तेसेई बोलत मोर कोकीला करत रोर उठत मन कलोल दंपति हिय हुलसे।। "गोविंद" प्रभु सुधर दोउ गावत केदारो राग तान अबही सरसें।।२।।

आषाढ शुक्ला ९

श्रृंगार – आड़बंद पाग का।

वस्त्र – हरा-लाल हांसियां के रूपहरी कोर के, कटि में आड़बन्द। श्रीमस्तक पर पाग पर जरीके कामका कतरा धराया गया है। आज ठाड़ा वस्त्र नहीं घराये गये हैं। पिछवाई लाल, हरा रंग की हांसियां वाली धराई गई है। वर्षा ऋतु की लीला चल रही है।

आभरण – नित्यानुसार।

मंगला में राग-मल्हार सखिरी मोहें बुंद अचानक लागी।। (यह पूरा पद पेज ४४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-मल्हार अंखियाँ मेरी लालन संग अटकी।। वह मुरती मों चित्त में चुभ रही छुटत नहीं मो उरकी।।१।। भोंहे मरोर डारत पिकवानी पीय हीयें ओघटकी।। "नंददास" प्रभुकी प्यारी लाज तज डगरी चली नेंक अटकी।।२।।

राजभोग आवता राग-मल्हार बिराजत सघन कुंजकी ओट।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

देखो भैय्या चहुंदिश छाये बादर।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

आई जु श्याम घटा घनघोर चहुं दिशते बरखत आवत बड़ी बड़ी बूंदन।। बोहोत प्रकार बींजन पठये नानाविध संवार बेठेहो फेलाय कैसे लागेहो अब दोना पातर गुंदन।।१।। प्रबल प्रकाश आकाश भये आय मील्यो चमचमात बीज लगत डरपावत उन्दन।। "नंददास" प्रभु संकेत पत वडवान दीये लाय डला भाजनभर आतुर के लागे मुन्दन।।२।।

जेंवन बैठे हरि कुंजन मांह।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े।)

राजभोग में राग-मल्हार मेहेल आये लाल तनकी तपत गई।। नयनन मगझारूं पलकन पल न-डारूं कर राखों उरमाल।।१।। मुख देखें सुखहोत सखीरी प्रेमप्रीति प्रतिपाल। "सूरश्याम" प्रभु वेग दरस दियो निरख भई हों निहाल।।२।।

राग–मल्हार मेरों मन गिरधर छब पर अटक्यों।। ललित त्रिभंगी आनन पर चलगयो तहांही ठठक्यों।।१।। सजल स्याम घन बरन नील व्है चित ईत उत नहीं भटक्यों।। "कृष्णदास" किये प्रान नौंछावर यह तन जग सिर पटक्यों।।२।।

संध्या आरती में राग–मल्हार बनतें आवत है गोपाल।। नेंक समझ चल वनही दिखाऊँ अति प्यारो नंदलाल।।१।। भीजतही अपनी गायन सब आज सवेरी लायो।। तेरे वचन को मोहि अचरज कोने जाय सुनायो।।२।। अब तो घटा नीकी लागत हे देखत नंदकिशोर।। "श्री विट्ठल गिरिधर" को मिलवो और बोलेंगे मोर।।३।।

शयन में राग–मल्हार लाल माई भींजत आये गेह।। हाथ लकुटिया कामर खोई खूंदत कीच सनेह।।१।। निश अंधियारी हाथ नहीं सूझत पवन झकोरत मेह।। "सूरदास" दामिनीके दमकें लखी सांवरी देह।।२।।

मान में राग–मल्हार कबकि केहेति प्यारी अजहुं न रीस गई मोहनी मौंनधर केहेत कछुन री।। कान न कछू करत सन्मुख ही लरत ज्यों–ज्यों बरजी त्यों–त्यों भई अति दुन री।।१।। बावरी भई री प्यारी मेरे जाने पिय कह्यों काहुकों कह्यों माने तुव हृदों सुन री।। "गोविन्द" प्रभु पिय चरण परस आंकों भर मिल रंग रह्यों जैसे हरद चून री।।२।।

पोढ़वा में राग–मल्हार यह सुनि वचन पिया पे आई।। (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े।)

आषाढ शुक्ला १०

श्रृंगार – सेहरा को।

वस्त्र – पतंगी रंग के रूपहरी कोर की कटि में धोवती तथा उस पर अन्तरवास का पटका, श्रीमस्तक पर दुमाला पर मोतीके कामका सेहरा धराया गया है। पिछवाई चित्राम की लग्न मंडप की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – आज यही श्रृंगार फूल-कलीका सांयकाल धराया गया है। विधि प्रकार के मनोरथ भोग आरोगायें गये है। आज बेंगन-भात, भजीया व बेंगन का भरता आरोगया गया है और सातों घरों में आज के पश्चात चातुर्मास में बैंगन नहीं अरोगे है। श्री काकावल्लभजी के वचनामृत में वर्णित यहां चातुर्माष्य में भी भगवद आज्ञा की मर्यादा रखी है।

मंगला में राग मल्हार प्यारी के गावत कोकिला मुख मूंद रहे, पिय के गावत खग नैना मुंदि रहे सब।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-मल्हार नयो नेह नये मेह नई भूमि हरियारी नवल दुल्हें प्यारों नवल दुल्हैया।। नवल चातक मोर, कोकिला करत रोर, नवल युगल भोर नवल उलैया।।१।। नवल कसुंभी सारी, पेहेरें श्रीराधा प्यारी, ओढ़नी के अंग संग सरस सुभैया।। "नन्ददास" बलिहारी छबिपर वार डारी नवलही पाग बनी नवल कुल्हैया।।२।।

सेहरा के पद राग-मल्हार देखो माई सांवन दुल्हे आयो।। शीश सेहरों सरस गजमुक्ता हीरा बहुत जरायो।।१।। लाल पिछौरा सोहे सुन्दर सोवत मदन जगायो।। तेसीये श्रीवृषभान नंदिनी ललिता मंगल गायो।।२।। दादुर मोर पपैया बोलत बदरा बराती आयो।। "सूरदास" प्रभु तिहारे दरसकों दामिनी दरस दिखायों।।३।।

आई जु श्यामघटा घनघोर चहुंदिशतें बरखत आवत बड़ी बड़ी बुंदन।। (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े।)

जेंवन हरि बैठे कुंजन मांह।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े।)

राग–मल्हार (छाक) श्याम सुन हरि भूमि सुखकारी।। (यह पूरा पद पेज ३९ पर पढ़े।)

राग–मल्हार (छाक) बादर झुम रहे चहुं ओर।। सजल श्याम घन बरखत उनये उमड घुमड़ घनघोर।।१।। छाक संवारत जसौदा मैया भोजन राखे जोर।। "सुरस्याम" हित जिहिं तिहिं विधकरी चली मन आतुर दोर।।२।।

राजभोग में राग–मल्हार हमारे माई श्यामाजू को राज।। जाके आधीन सदाही सांवरो या व्रज को सिरताज।।१।। यह जोरी अविचल श्रीवृन्दावन नहीं औरनसों काज।। "श्रीविट्ठल" विपिन विहारिनके संग ज्यों जलधर संग गाज।।२।।

भोग में राग–मल्हार अति ऊदार मोहन मेरे निरख नैन फूलैरी।। बिच बिच बरूहाचंद फूलन को सेहरा बन्यो, कनक कुंडल सोभा देत निगम नेत भुलेरी।।१।। चंदन को लेप किये, गुलाबकी बनमाल हियें, पिताम्बर कट बाधें अंगन पर दुकुले।। "छितस्वामी" गिरवरधर गायन को नाम धोरी टेरत सब ठाडी भई तरू कदम्ब मुलें।।२।।

संध्या आरती में राग–मल्हार अरी माई नई नई धरती दुलहनि होय रही मेघ मल्हार आये ब्याहन।। इन्द्र के नगारे बाजें, बूंदन को शहेरो, बादर बराती आये वरन वरन।।१।। दादुर पपैया बोले, कोयल करत रोर, मोर कुहु कुहु लागे करन।। "रसिक" प्रीतमकी बानिक निरखत रतिपति काम लाग्यो डरन।।२।।

शयन में राग–मल्हार देखों माई मानों कसोटी कसी हों।। कनक बरन वृषभाननंदनी गिरधर उर सलसी।।१।। मानहु तरूनतमाल मल्लिका

अंगही अंग ग्रसी।। चंचलता तजि वर सौदांमिन जलधर कंठबसी।।२।। अद्भुत दसन पांत कहाबरनों कौन भांत हँसी।। सुन "कृष्णदास" सुमेरू श्रृंगतें सूरसरी धरनी धसी।।३।।

मान में राग-मल्हार प्यारी तोहिं गिरिधर लाल बुलावत। राधे राधे रटत निश वासर और नहीं कछु भावत।।१।। काम कटक मिली हरि घेरे हैं, नेंक चेन नहीं पावत।। "सूरदास" प्रभुसों मिल भामिनी अंग अंग तिमिर नसावत।।२।।

पोढ़वा में राग-मल्हार दोऊ मिल पौंढ़े ऊँची अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

आषाढ शुक्ला ११

(आज से मुकुट का श्रृंगार प्रारम्भ)

श्रृंगार – मुकुट काछनी का।

वस्त्र – अंगुरी रंग के लाल हांसियां वाली रूपहरीकोरकी, सुथन अंगुरी रंग की, कांछनी अंगुरी रंग की लाल हांसिया वाली, इसी प्रकार का बड़ा पटका धराया गया है। श्रीमस्तक पर पाग पर मोती के कामका मोर मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद, पिछवाई अंगुरी रंग की लाल हांसीयाँ वाली रूपहरी कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – सांयकाल यही श्रृंगार फूलकली के धराये गये। आज ये श्रृंगार अन्तिम इस वर्ष में धराये गये। विविध प्रकार की सामग्री तथा माड़ा (रोटी) वासोंदि आदि आरोगाई गई।

मंगला में राग–मल्हार **बोलें माई गोवर्धन पर मुरवा।। (यह पूरा पद पेज ४२ पर पढ़े।)**

श्रृंगार में राग–मल्हार **अरि ईन मोरनकी भांत देख नाचें गोपाला।। मिलवत गति भेदनी के मोहन नटशाला।।१।। गरजत घन मंद मंद दामिनी दरशावें।। रमक झमक बूंदपरें राग मल्हार गावें।।२।। चातक पिक सघन कुंज वारबार कूजें।। वृन्दावन कुसुम लता चरण कमल पूंजे।।३।। सुरनर मुनि कामधेनु कौतुक सब आवें।। वारफेर भक्ति उचित "परमानंद" पावें।।४।।**

छाक के पद राग मल्हार

आरोगत मोहन मंडल जोरे।। व्यंजन स्वाद खरेही लागत ज्यों गरजत घनघोरें।।१।। न्हेनी न्हेनी बुंद सुहावनी लागत पवन चलत झकझोरे।। बोछारनकी फुहीं परत अंग, आवत जबही सकोरें।।२।। देखो लाल गाय सब इत उत बछरागन इकठोरें।। श्री गिरिधर लालको देख महासुख "कुंभनदास" तृन तोरें।।३।।

आंधी अधिक उठी आवत है, घेर करो इकठोरी गैया।। हेर चहुंदिस बहोर निहारत, जेंवत ग्वाल मंडली महिया।।१।। ओर लेहु कछु कहत सबनसों तुमहु कहो बलदाउ भैया।। लेत परस्पर खात खवावत आंधी निहारत कुंवर कन्हैया।।२।। बादर बने घटा चहुं शोभित चल बैठो सुन्दर वर छैया।। बरखत बुंद परस मन आनंद "कुंभनदास" गिरीधर मन महिया।।३।।

आज बर विपिन में छाक लीला रची।। गोप बडडेनके कुंवर उडुगण लसत, बीच व्रजचंद मानो शरद शोभा सची।।१।। उर सबनके किधों चारू चमकत भये, इन्द्रमणि नीलमणी सुभग कंचन खची।। परस्पर करतहे मोद अति चपलता बदन लपटात दधिमार मोदक मची।।२।। लेत झूक झपक कोर हरि हाथतें, देख कंदूक इव नाहिन अनगन बची।। "सूरस्वामी" भये अतिही वीस्मित हरख, चित्रलों पांत सुर गगन मंडल खची।।३।।

गरज गरज रीम झीम लाग्यो वरसन घन बनमेंतें आई ओचक गई हों अटकी।। दुजे गई भुल बाट, निकल जाय ओघट घाट, कठिन पाई गेल फिरि भटकी।।१।। दीजे उर वींजन ढींग भोजनकी संकमान देखो ढांक सघन छांह डला धर्यो भूमि लटकी।। "कुंभनदास" गोवर्धनधरन कूक श्रवन सुनत, ढांकी पातनसों चली मटकी।।२।।

राजभोग में राग-मल्हार माई री श्याम घन तन दामिनि दमकत पिताम्बर फरहरें।। मुक्तामाल बग पाँति कही न परत छबि बिसात मानिनि की अरहरे।।१।। मोर मुकुट इन्द्रधनुष सो सुभग सोहत, मोहत मानिनी द्युति थरहरे।। "कृष्णजीवन" प्रभु पुरन्दर की सोभा निधान मुरलिका की घोर घरहरे।।२।।

भोग में राग-मल्हार श्याम श्यामा सुभग फूलके मेहेल में, फूल सिंगार कर अतही सोहें।। (यह पूरा पद पेज ४७ पर पढ़े।)

संध्या आरती में राग–मल्हार बोले माई मोर मदन के मातें।। गरजत गगन लीला रस उपजत सब्द सुनावत तातें।।१।। गिरिधर लाल बिदेश गमन कीयो कोऊ आवे न जातें।। "सूरदास" बिरहिनी अति व्याकुल प्रगट प्रेम के नाते।।२।।

शयन में राग–मल्हार जो सुख होत गोपालें गाये।। सो न होत जपतप व्रत संयम कोटिक तीरथ न्हायें।।१।। गदगद गिरा लोचन जलधारा प्रेमपुलक तनु छायें।। तीनलोक सुख तृणवत लेखत नंदनंदन उर आये।।२।। दिये नहीं लेत चार पदारथ श्री हरिचरण अरूझायें। "सूरदास" गोविंद भजनबिन चित नही चलत चलायें।।३।।

मान में राग–मल्हार तूं चल नंद नन्दन वनबोली।। (यह पूरा पद पेज ३९ पर पढ़े।)

तुं मनायो न माने, प्यारो लाल रीझि रहयों तो पर।। नवसत साज सिंगार सुभग तन पहिरे विविध पट अंबर।।१।। वे बहु नायक हे आलीरी तोसौं मन अटक्यों है नागर वर।। "केसोदास" प्रभु सौं मिलि भामिनि कोटि काम वारों छबि पर।।२।।

पोढ़वा में राग–मल्हार हरी पौढ़ों चकड़ोर झुलाऊं।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े।)

आषाढ शुक्ला १२

श्रृंगार – धोवती-पाग का

वस्त्र – गुलाबी रूपहरी कोरकी कटि में धोती। श्रीमस्तक पर पाग पर वस्त्र के कामका केशरी कतरा धराया गया है। ढाडा वस्त्र नहीं तथा पिछवाई गुलाबी रंग की रूपहरी कोर की घराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – वर्षा ऋतु की लीला चल रही है। श्रीजी नित्य आम की बरफी आरोगते है।

मंगला में राग-मल्हार आये माई बरखा के अगवानी।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-मल्हार जो सुख होत गोपाले गाये।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-मल्हार आरोगत नागर नंद किशोर।। उमड़ घुमड़ चहुंदिश छायो सघन घटा घनघोर।।१।। न्हेनी न्हेनी बूंदे बरखन लाग्यों पवन चलत झकझोर।। "चतुर्भुज" प्रभु पातल ले भाजे सघन कुंज की ओर।।२।।

चहुंदिश टपकन लागी बुंदे।। बौछारन बिंजन भीजेंगे द्वार पिछोरी मुन्दे।।१।। भोजन करत शीश धर छतना याही सुखहित गुन्दे।। वहे सुचेत "नंददास" प्रभु कौन कीच अब खुन्दे।।२।।

मोहन जेंमत छाक ग्वाल मंडली माहं।। लुम झूम रही देखी राधा सब कंदब की छांह ।।१।। व्यंजन देत निहोरे कर कर कोउ लेत कोउ करतजु नांह।। "नन्ददास" आस जूंठन की फुले अंग न समांह।।२।।

कनैयो टेर टेर हों हारी।। सुन सुन श्रवन रहत हो चुप कर, कौन जू टेव तिहारी।।१।। टेरत ग्वाल बाल बलभैया आवो आई छाक तिहारी।। भोजन करो बेगी किन भैया बरखा उदित भई हे भारी।।२।।

मंडल रचना करि बैठों हे, मधि नायक हलधारी।। पनवारो डारत "परमानंद" प्रभु भये आप प्रचारी।।३।।

राजभोग में राग–मल्हार आयो पावसदल साज गाज मदननरेश प्रबल जान प्रीतम अकेले नव कुंजसदन।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

भोग में राग–मल्हार मेहेल आये लाल तनकी तपत गई।। (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े।)

संध्या आरती में राग–मल्हार लाल नेंक गैया हमारी घेरों।। (यह पूरा पद पेज ४७ पर पढ़े।)

शयन में राग–मल्हार आयो आगम नेरश देश देश में आनंद भयों मानो मेंन आपुनी साह कों बुलायो।। (यह पूरा पद पेज ४१ पर पढ़े।)

मान में राग–मल्हार ठाडे हे कदंब तर कुंवर रसिक वर।। (यह पूरा पद पेज ४४ पर पढ़े।)

तुं मनायो न माने, प्यारो लाल रीझि रह्यों तो पर।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–मल्हार सघन घटा घन घोर न्हेनी न्हेनी बूदंन हो पिय वर्षे।। (यह पूरा पद पेज ५७ पर पढ़े।)

आषाढ शुक्ला १३

श्रृंगार – आड़बन्द-पाग का।

वस्त्र – सफेद मलमल के, बीना कोर के, कटि में आडबन्द तथा श्रीमस्तक पर सफेद पाग पर सफेद मोर पिछ है। ठाड़ा वस्त्र नहीं धराये गये तथा पिछवाई सफेद मलमल की, बीनाकोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – उष्णकाल के श्रृंगार आज व कल आते है तथा पूर्णिमा से वर्षा रीतु के रंग-बिरंगे वस्त्र तथा भारी श्रृंगार आते है। छेलो आड़बंद को श्रृंगार यदि हिण्डोरा बीज को हो तो आड़बंध या परदनी को श्रृंगार श्रावण वदि एकम को फीर होवें।

मंगला में राग-मल्हार आगम गेहेरी गरज सुन घनकी ओचकी बाल सलोनी।। प्यारी के अंक में दुर रही एसें जेसें केहरि कंदर मंदिर मैं ध्वनिसुन मृगी के अंक मृगछोंनी।।१।। नेंक न धीरज धरे हीयो थर थर करे सोचत मनहीमन जैसे मुखमोनी।। "नंददास" प्रभु बेग चलो क्यों न भई जो कहा आगें होनी।।२।।

श्रृंगार में राग-मल्हार मुरली तुं जो गोपाल ही भावत।। सुनिरी सखी यद्यपि नंदलाले नाना भांत नचावत।।१।। राखत एक पांव ठाडे कर अति अधिकार जनावत।। कोमल अंग श्याम सुंदरको कटि टेढ़ो व्हे आवत।।२।। जान अधिक आधीन कनोंड़े गिरिधर नार नवावत।। आपुन पोढी अधर शय्यापर कर पल्लव लपटावत।।३।। भ्रकुटी निकट नयन नासापुट अतिसे कोप कंपावत।। सूर प्रसन्न जान एकोछिन धर पर सीस डुलावत।।४।।

राजभोग आवता राग-मल्हार आरोगत नागर नंद किशोर।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

चहुंदिश टपकन लागी बुंदे।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

मोहन जेमत छाक ग्वालमंडली मांह।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

कनैया टेर टेर हों हारी।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग–मल्हार हों तो ईन मोरनकी बलिहारी।। जिनकी सुभग चन्द्रिका माथे धरत श्री गोवर्धनधारी।।१।। बलिहारी या वंश कुल सजनी बंसी सी सुकुमारी।। सुन्दर कर सोहे मोहने के नेंकहुं होत न न्यारी।।२।। बलिहारी गुंजा की जात पर, महाभाग्यकी सारी।। सदा हृदय रहत श्यामके छिन हू टरत न टारी।।३।। बलिहारी ब्रज भूमि मनोहर कुंजनकी अनुहारी।। "सूरदास" प्रभु नागे पायन अनुदित गैया चारी।।४।।

भोग में राग–मल्हार मेरो मन गिरधर छबि पर अटक्यो।। (यह पूरा पद पेज ५९ पर पढ़े।)

संध्या–आरती में राग–मल्हार लाडिलों लड्याय बुलावत धेनु।। (यह पूरा पद पेज ४३ पर पढ़े।)

शयन में राग–मल्हार देखो कैसी नीकी ऋतु आई, बदरा ओल्हर आये दामिनी कोंधत नीकी लिये पुरवाई।। ठोर ठोर हरियाली कूंजन सघनताई मोर सोर करे जैसे घन घहेराई।।१।। मन मोहन मन मोहिनी क्रीडा विनोद दंपति परस्पर अति सुखदाई।। "धोंधीं" के प्रभुकी यह लीला मोपें बरनी न जाई।।२।।

मान में राग–मल्हार आई पावस ऋतु सुखदाई, कैसे मिलें मेरी माई।। तेसिये गरज आली तेसीये दामिनी कोंधत मारे सोर डरपाई।।१।। तेसोई चात्रक बोले पिक पुकार करे, तेसीये सघन भूमि हरिताई।। "रसिक" प्रीतम तुम एसे समें जो न मीले तो केसें भवन सुहाई।।२।।

आजु मानिनी मनावत चतुराई करि करि, बहुत हठ कीयो सो तों नेंक ही में छूट्यों।। सोंह खाई खाई आभूषन दे छुवत पायन पर आली, झक झोरन में मेरो ऊर हार टूट्यों।।१।। अनेक जतन मनुहारि करि

करि, ईतो हठ हें त्रिया पें अब तो व्रत खूट्यों।। "चतुरभुज" प्रभु गिरिधर मिस कर छिपी कें, तब मंगल वचन कहि उठि हैं सुरति को, हँसी ग्रीवा लपटाय सुख लूट्यों।।२।।

पोढ़वा में राग-मल्हार पोढे श्रीराधिका के गेह।। नवल धाम नवल शैया नवल बाढ्यों नेह।।१। नवल सुंदर नवल जोबन नवल बरखत मेह।। "कृष्णदास" त्रौलोक नागर नवल श्याम सनेह।।२।।

पोढ़िये लाल लाड़िली संगले।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े।)

आषाढ शुक्ला १४

"आज वनमाला धराई जाती है"

श्रृंगार – परदनी फेटा को

वस्त्र – सफेद मलमल बिना कोर की कटि में परदनी। श्रीमस्तक पर फेंटा पर मोर पंख के काम का कतरा धराया गया है। पिछवाई सफेद मलमल की बिना कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – आज सायंकाल भोग तथा संध्या आरती में श्रीजी को वनमाला तथा गोवर्धन माला धराई गई है। इसमें वनमाला तो श्रीकंठ में धराई गई है तथा श्री गोवर्धनमाला मोटी जाड़ी श्रीजी की कन्दरा से लेकर श्री चरणारवृंद तक धराई गई है। इसमाला में चमेली, मोगरा, कदम्ब की डालियां पान के साथ ही पिरोकर सिद्ध की गई है। श्री गोवर्धन पर्वत के चारों दिशा १३२ वन तथा १६ उपवन की शोभा में जो पुष्प खिलते है उसी भावना से श्रीगोवर्धनमाला बारह महिनों में केवल आज के दिन धराई जाती है।

मंगला में राग–मल्हार **आये माई वरखा के अगवानी।। (यह पूरा पद पेज ४० पर पढ़े।)**

श्रृंगार में राग–मल्हार **गोवर्धन पर्वत के ऊपर परम मुदित बोलत है मोर।। (यह पूरा पद पेज ४१ पर पढ़े।)**

छाक के पद राग–मल्हार **सुनो मोहन आई छाक तिहारी।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े।)**

हरि सघन अति श्याम ढाक की छाई, आई छाक काहे कुं करत अवार।। उमड़ी घुमड़ि लुमि झुमि चहूँदिस तें घटा आई निधरक भए डोलत देखो निहार।।१।। अर्जुन तुम लेहु भैया पनवारे देउ डार।। "कुंभन दास" गोवर्धनधरन लाल छाक बांट आज्ञा दे जेंवन लागे तेही वार।।२।।

भोजन बेगी करो रे भैया इत गरजत उत बदरा घोर।। (यह पूरा पद पेज ४४ पर पढ़े।)

हरि भोजन किजे आय छाक एक वार।। (यह पूरा पद पेज ४४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-मल्हार अंग अंग घन कांति मोतीमाल बकपांत इन्द्रधनुष बनमाल शोभा छिन छिन हैं।। (यह पूरा पद पेज ४२ पर पढ़े।)

भोग में राग-मल्हार देखो माई इत घन उत नंदलाल।। उत बादर मरकत गरजत चहुँ दिशतें मुरली मधुर आल।।१।। उत राजत घन कईहुको इत राजत बनमाल।। उत दामिनी चमकत चहुँ दिसतें इत पीत वसन गोपाल।।२।। उत धुरवा ईत चित्र किये, हरि बरखत अमृत धार।। उत बगपांति उड़त बादरमें इत मुक्ताफल हार।।३।। इत कोकिला कोलाहल कुंजत बाजत किंकिणी जाल।। "गोविंद" प्रभु की बानिक निरखत मोही रही व्रजबाल।।४।।

संध्या आरती में राग-मल्हार अद्‌भुत कौतुक देख सखीरी वृंदावन नभ होड़ परीरी।। उत घन उदित सौहत सौदामिनी इतहि राधिका मुदित हरीरी।।१।। उत बगपांति सुहात सुसुन्दर बाम विशाल द्वे दिशा खरीरी।। उत घन गरजे इत मुरली धुनी वे जलधर ये अमृत भरीरी।।२।। उत इन्द्रधनुष इते वनमाला अतिविचित्र हरि कंठ धरीरी।। "सूरदास" प्रभु कुंवरी राधिका घनकी शोभा दूर करीरी।।३।।

शयन में राग-मल्हार बिराजत बनमाला जु गरे।। बहुत भांत कुसुमन सो गूंथी गुंजत भम्रर अरे।।१।। इन्द्रधनुष की उपमा राजत ठाडे कुंज तरे।। "रामदास" प्रभु नटवर काछे मुरली अधर धरें।।२।।

देखों माई शोभा श्याम तनकी।। मानो लई रसिक नंदनंदन सब गति नौतन घनकी।।१।। तड़ित वसन पुरंदर धनुष मानो माला वनकी।।

मुक्तामाल कंठ उर उपर पंगति हे बगगनकी।।२।। रूपवारी वरषत जु निरन्तर सींचत है वृति मनकी।। "कुंभनदास" प्रभु गोवर्धनधर जीवन सब व्रजजनकी।।३।।

मानमें राग–मल्हार चलवर कुंजन बरखत मेह।। पहरी चूनरी सज आभूषण नयनन अंजन देह।।१।। नेन्ही नेन्ही बूंदन बरस्योही चाहत तेसोई बढ़यो सनेह।। "श्री विट्ठल गिरिधरन" पियाकों दोउ भुजभर लेह।।२।।

तेरो मन गिरिधर बिन न रहेगो।। बोलेंगे मोर मुरलीकी ध्वनी सुन जब तन मदन दहेगो।।१।। जानेंगी तब मानेंगी आली प्रेम प्रवाह बहेगो।। "सूरदास" हठीली श्रीराधा नित्य उठ कोंन कहेगो।।२।।

पोढ़वा में राग–मल्हार दोऊ मिल पोढ़े ऊंचि अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

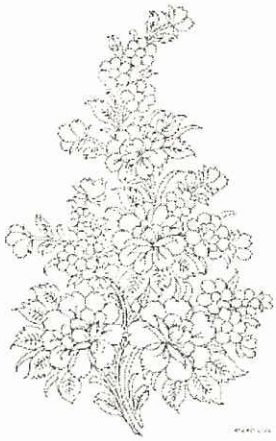

आसाढ शुक्ला १५ (आषाढ़ी पूनम)

(देहरी बन्दन-माल तथा अभ्यंग)

आज से मंगला में उपरणा धराया जाता है।

श्रृंगार – मुकुट कांछनी का

वस्त्र – लाल तथा श्याम रंग के एक दाली चुन्दड़ी के रूपहरी कोर की सुथन लाल कटि में, काछनी ऊपर लाल तथा निचे श्याम घेर है तथा मोटो पिताम्बर लाल सभी चुन्दड़ी के रूपेरी कोरके। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोती के काम का मोर मुकुट। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई चित्रामण की धराई गई है। वर्षा ऋतु की लीला की पिछवाई धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार।

विशेष – सामग्री में चारोली के लड्डु, कचोरी तथा दहीबड़ा। सेव-बिलसारू सखड़ी में धराये गये है।

मंगला में राग-मल्हार भींजत कब देखोगी इन नैना।। राधाजु की सुरंग चुनरी मोहन को ऊपरेना।।१।। स्यामा स्याम कुंजतर ठाड़े जतन कियो कछु मेना।। उमडी घटा चहूं दिस "श्रीभट्ट" जुर आई जल सेना।।२।।

श्रृंगार में राग-मल्हार अरी ईन मोरनकी भांत देख नाचे गोपाला।। (यह पूरा पद पेज ६३ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-मल्हार भोजन बेगी करो रे भैया इत गरजत उत बदरा घोर।। (यह पूरा पद पेज ४४ पर पढ़े।)

हरि भोजन किजे आय छाक एक बार।। (यह पूरा पद पेज ४४ पर पढ़े।)

लाल बाल निरख हरख रीझ रहे भीजें वसन देख कहत लेरी पलटी।। पीताम्बर पहेर लीजे छाक बांट सबन को दीजे बरखा ऋतु घर

सदोसी जाऊ उलटी।।१।। भूख ते अकुलाय रहे खीजत कहत दुःख गये भेटु तोकु तो भये सुलटी।। "कुंभनदास" गोवर्धनधर लाल अनत जात रहे तेरे भाग तोही पाये निकटी।।२।।

चल मन होनी होय सो होई।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग गौड मल्हार श्री वृन्दावन भुवी कुन्दादिक युत मंदानिल रूचयें।।ध्र.।। पुलिनोदित नव नलिनोदर मिल दलिनोदित रसगाने।। कर्णादिक पुट चरणांबुजध्वनी चाख हरिणाक्षि वलिते।। निज रसमयता प्रकटन परितः प्रकटित रासविहारे।। गिरिधारण रतिहारण कारण ममरतिरस्तु सदारें।।

भोग में राग–मल्हार माई श्याम घन तन दामीनी दमकत पीताम्बर फरहरे।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

संध्या आरती में राग–मल्हार लालकी शोभा कहेत न आवे।। (यह पूरा पद पेज ५० पर पढ़े।)

शयन में राग–मल्हार आगम आषाढ़ी मेह वरसे हरियारी भूमि चंद बधू सेन मुख हिमत बढ़ाई है।। दामिनी पलीता नाल गरज तुरंग पौन मोर हुन बानि चोंच कंचन मढाई है।।१।। कोकिला गावै कछु बग पांति के निसान माने दादुर भिखारी पाठक चात्रक पढ़ाई है।। "व्रजाधीस" रूप कोटि जोबन मेरो पास धीर न धरेगो वार पावस चढ़ाई है।।२।।

मान में राग–मल्हार आई पावस ऋतु सुखदाई कैसे मिलें मेरी माई।। (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

तूं मनायो न माने प्यारो लाल रीझी रहयों तो पर।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–मल्हार सघन घटा घनघोर न्हेनी बुंदन हो पिय वर्षे।। (यह पूरा पद पेज ५७ पर पढ़े।)

श्रावण कृष्णा १

(देहरी वन्दन-माल तथा अभ्यंग)

श्रृंगार – पाग चन्द्रिका को।

वस्त्र – लाल सोनेरी कोरको कटि में पिछोड़ा, श्रीमस्तक पर पाग हरि व लाल खिड़कीदार तथा मोर चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र पीला-रंग का तथा पिछवाई लाल रंग की सोनरी कोर की धराई गई है।

आभरण – श्रीमस्तक पर ठाड़ीलर मोती की, शिरपेच, शीशफूल, कर्णफूल सभी पन्ना-मोती के, लुम पन्ना की। श्रीमुखारविंद पर तिलक माणक का, अलंकार, कमलाक्ष नकवेसर माणक मोती की, चिबुक हीराको। श्रीअंग मे भारी श्रृंगार- चरणारविंद सुधीका। हांस, हार-हीरा मोती व पन्ना के, मोती के साथ, गुंजामाला तथा फूल की माला। श्रीहस्त में नखावली, मुद्रिका हीराकी, हस्तपान, पोंची, बाजुबन्द सभी हीरा-पन्ना तथा मोती के। श्रीचरणकमलों में नखावली, मुद्रिका हीरा की, अनवट बिछिया, पगपान, पायल, पेंजनी, जेहर सभी हीरा-पन्ना जड़े हुवे, नुंपुर सोना के तथा कमल के फूल की छड़ी धराई गई है।

विशेष – आज हिन्दोला प्रारंभ हो तो डोल तिबारी में चांदी का हिन्दोलना बंधवाया गया। उत्थापन के दर्शन के बाद अधिवासन किया गया। भोग अरोगने के बाद श्रीजी के वेणुजी को हिन्डोरा में झूलायी गयी। उसके बाद वेणुजी को श्रीजी के पास पधरायी गई तथा श्रीजी के पास बीराजते श्रीमदनमोहनलाल जी को हिन्डोला में गादीजी पर पधराये गये। हिन्डोरा के आस-पास पंखा, मोरछल तथा चंवर उडवाये गये।

मंगला में (राग – मल्हार) आई जु श्याम जलद घटा।। (यह पूरा पद पेज ४९ पर पढ़े।)

श्रृंगार में (राग-मल्हार) गरज-गरज रीमझीम-रीमझीम बूंदन लाग्यो बरसन घन।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

राजभोग में (राग–मल्हार) सखीरी सावन दुल्हे आयो। चार मास के लग्न लिखाये, बदरन अम्बर छायो।।१।। बिजुरी चमके बगुला बराती, कोयल शब्द सुनायो। दादुर मोर पपैया बोले इन्द्र निशान बजायों।।२।। हरी–हरी भूमि पर इन्द्र बधू सी रंग बिछोना बिछायों।। "सूरदास" प्रभु तिहारे मिलन कुं सखियन मंगल गायो।।३।।

श्री वेणुजी झुले तब गाया जाने वाला पद

राग–धनाश्री

हीड़ोरना रोप्यो नन्द आवास, मुहुरत शुभ धरी देख।।
विश्वकर्मा रचि पचि गढ़यों सुहाटक रत्न विशेख, हिंडोरना रोप्यों नन्द आवास।।
हिन्डोरना हो विश्वकर्मा सूत्रधार हिंडोरना कंचन खम्भ सुढ़ार।।
कहे "कृष्णदास" विलास निशदिन यह सुख गोकुल माहें।।
श्री यमुना तट संकेत पर निशदिन यह विलास।।
कुंज सदन गिरीवरधरन हृदय बसो "कृष्णदास"।।

हिंडोरना दर्शन में गाये जाने वाले पद (राग मल्हार)

झुलन आई बृजनार गिरधरन लाल जु के सुरंग हिण्डोरना।। सुभग कंचन तन पहिरे कुसुम्भ सारी, गावत परस्पर हँस मृदु बोलना।।१।। इत नन्दलाल रसिक वर सुन्दर, उत वृषभान सुता छबि सोहना।। रमकत रच्यों पिय प्यारी "गोविंद" बलि–बलि रतिमति मोहना।।२।।

तेसोई वृन्दावन तेसई हरीत भूमी तेसीई बीरवधु चलत सुहाई माई।। तेसेई कोकिला कुहु कुहु कूंजत तेसेई नाचत मोर निरखत नयना सुख सुखदाई।।१।। तेसेई नवरंग नवरंग बनी जोरी, तेसेई गावत राग मल्हार तान मन भाई।। "गोविंद" प्रभु सुरंग हिंडोरें झूलें, फूलें आछे रंग भरे, चहुँ दिशतें घटा जुरी आई।।२।।

झुलत सुरंग हिन्डोरे राधा मोहन।। वरण वरण तन चुनरी पेहेरे व्रजबधु चहूँ ओरे।।१।। राग मल्हार अलापत सप्तसुरन तीन ग्राम जोरे।। मदन मोहनजुकी या छबि उपर "गोविन्द" बल तृण तोरें।।२।।

रंग मच्यो सिंह द्वार हिन्डोरे झुलना।। गौरश्याम तन, नील पीत पट, घन दामिनी हेम विराजत निरख निरख व्रज जन मन फूलना।।१।। उर पर वनमाल सोहे इन्द्र धनुष मानों उदित भयो, मोतिन हार बगपंगति समतूलना।। बरषत नवरूप बारी, घोष अवनि रत्न संचित गोविंद प्रभु निरख, कोटी मदन झूलना।।२।।

शयन में (राग-ईमन) सेन काम की लायो सो सावन आयो।। चल सखी झुलिये सुरंग हिन्डोरे कीजे श्याम मन भायों।।१।। हाव भाव के खम्भ मनोहर कचघन गगन सुहायों।। काम नृपति वृषभाननंदिनी रसिक राय वरपायो।।२।।

मान में (राग-मल्हार) तूं चल नंद नंदन बन बोली। कर सिंगार चंचल मृगनयनी पहिर कसुंभी चोली।।१।। (यह पूरा पद पेज ३९ पर पढ़े।)

पोढ़वां में (राग-मल्हार) दोऊ मिल पोढे ऊँची अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

श्रावण वद २

श्रृंगार – पाग पिछोड़ाको।

वस्त्र – पीला रूपेरी कोरके, पिछोडों तथा श्रीमस्तक पर पाग (शोसनी और पिली) उसपर मोरकी चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र लाल रंग के तथा पिछवाई पिला रंग की रूपेरी कोरकी धराई गई।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये।

विशेष – नित्यानुसार शायं भोग संध्या समय हिन्डोरा में श्रीठाकुरजी को झूलाये गये तथा श्रीजी के पास पधराकर आरती की गई।

सभी पद राग-मल्हार में गाये जाते हैं

मंगला में आज में देखे कुंवर कन्हाई।। प्रात समैं निकसे गायन संग, श्याम घटा जुरी आई।।१।। पीत बसन पहिरे तन सुन्दर कसूंभी पाग सुहाई।। मुक्तामाल रूरत उर ऊपर, मुरली मधुर बजाई।।२।। कहा कहों अंग की शोभा, मोपें बरनी न जाई।। "श्री विट्ठलगिरिधर" देखें ते क्यों हू कल न पराई।।३।।

श्रृंगार में शोभा माई अब देखन की बहार।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

राजभोग आवे तब ग्वालिन प्रेम प्रीत रंगभीनी।। छाक ले चली नंदनंदन पें, चंचल चपल गति कीनी।।१।। कर कर पाक जतन सों राख्यों, उपर कांमर दीनी।। चार पांच जुर जूथ आय मिली, एक संग कर लीनी।।२।। उदित भई वर्षा उत बरखत बेग चलो उठ धाय।। वर्षा ऋतु के गीत गान सुन, "सूर श्याम" पें आय।।३।।

राजभोग में धरे शिर प्यारों पियरी पाग।। पीताम्बर पहेरे अति झीनों, निरखी सखी छबि बाग।।१।। तेसोई चीर बन्यों प्यारी के चोली रही उरलाग।। "श्री विट्ठल गिरिधर" प्यारी पिय निरखत चित्त अनुराग।।२।।

हिन्डोरा में हिन्डोरे माई झुलन के दिन आये।। गरजत गगन दामिनी कोंधत राग मल्हार जमायें।।१।। कंचन खम्भ सुढ़ार बनाये, बिच बिच हीरा

लाये।। डांडी चार सुदेस बिराजत, चोकी है मजराये।।२।। नाना विध के कुसुम मनोहर, नूतन झूमक छाये।। मधुर मधुर ध्वनि बेनु बजावत, दादुर मोर जिवायें।।३।। रमकन झमकन बनी पिय प्यारी, किंकनी शब्द सुहाये।। "चतुर्भुज प्रभु" गिरीधरन संग, मानिनि मंगल गाये।।४।।

झुले माई नटवर सुरंग हिन्डोरे।। रत्न खचित पटलीपर बैठे नागर नंद किशोरे।। पीतवसन घनश्याम सुन्दर, तन सारी सुरंग ही बोरें।। अंसन बाहू परस्पर जोरें मंद हसन पियओरें।। घोषनारी जूर गावे चहूँदिश, झुलवत थोरें थोरें।। "सूरप्रभु" गिरीधरनलाल छबि व्रजयुवतिन चितचोरें।।

झुलों होतो सुरंग हिन्डोरे झुलाऊँ।। मरूवे मयार करो हित चितके, तन मन खंभ बनाऊं।।१।। सुधी पटली बुद्धि डांडी बेलन, नेह बिछोना बिछाऊं।। अति ओसर धरों रूचि कलसा, प्रीति ध्वजा फहराऊं।।२।। गरजन कुहुक किलक मिलवे की प्रेम नीर बरखाऊं।। "श्री विट्ठल गिरीधरन" झुलाऊं, जो इकले कर पाऊँ।।३।।

झुलें माई युगल किशोर हिन्डोरें।। अति आनन्द भरे रस गावत, लेत प्रिया चित्त चोरें।। कंचन मनि के खम्भ बनाये मोतिन झुमक लोरें।। मंद मंद बूंदे अति बरखत श्याम घटा घनघोरें।। पीतवसन दामिनी छबि लज्जित, बोलन लागे मोरे।। "कुम्भनदास" प्रभु गोवर्धनधर, चितवत राधाजु की ओरे।।

शयन में वृन्दावन झुलत गिरवरधारी।। सावन मास सरस घन बरखत तेसिये भूमि हरियारी।।१।। फूले कुसुम सुभग यमुना तट, पवन बहत सुखकारी।। निरखी निरखी मुख देत है झोटा, श्री वृषभान दुलारी।।२।। दादुर मोर पपैया बोलत, शब्द करत मनुहारी।। गावत राग मल्हार भामिनी, पहरे कसुंभी सारी।।३।। बाजत ताल मृंदग बाँसुरी, नाचत दे करतारी।। "मदन मोहन" राधावर उपर, गोविंद तन मन वारी।।४।।

मान के पद तेरो मन गिरिधर बिन न रहेगो।। (यह पूरा पद पेज ७३ पर पढ़े।)

पोढ़ाने में दोऊ मिल पोढे ऊँची अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

श्रावण पद ३

श्रृंगार – कुल्हे पिछोड़ा का।

वस्त्र – बादली रंग के सोनेरी कोरके, कटि में पिछोड़ा श्रीमस्तक पर कुल्है पर सोनेरी बादला के कामका घेरा। ठाड़ा वस्त्र हरे रंग के तथा पिछवाई बादली रंग की धराई गई। आभरणः- नित्यानुसार धराया गया।

विशेष – नित्यानुसार चांदी के हिन्डोरना में झूलें। सायंकाल के अनोसर में हिंडोरे के पास से श्रीजी के पास तक पूरी रात्री बिछात होती है भावना से प्रभु झुलते है पास में अनवसर में भोग आता है तथा सजावट होती है। प्रातः जब प्रभु जागते है तो इसे हटा ली जाती है।

मंगला में (राग–मल्हार) बोले माई गोवर्धन पर मुरवा।। (यह पूरा पद पेज ४२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में (राग–मल्हार) रहि फबी श्याम छबिली पाग।। तापर कुल्हे श्याम शिर सोभित मोरचंद छबि लाग।।१।। श्याम अंग पर नीलबसन छबि, किंकनी शब्द सुहाय।। तेसीय बनी श्याम संग श्यामा, श्याम अंग संग लाग।।२।। श्याम ही रंग रंगी रंग श्यामा, श्याम रंग अनुराग।। ए जोरी अविचल श्रीश्यामा, श्याम रंग बड़ भाग।।३।। "सूर श्याम" श्याम छब निरखत प्रेमसींधु रस पाग।।

राजभोग आने पर (राग–मल्हार) श्याम सुन हरित भूमि हरीयारी।। (यह पूरा पद पेज ३९ पर पढ़े।)

राज भोग में (राग–मल्हार) गोवर्धन पर्वत के ऊपर परम मुदित बोलत है मोर।। (यह पूरा पद पेज ४१ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय

राग–मालव झुलत सुभग हिन्डोरे गिरीधर, सुन्दर गोवर्धन पर्वत ऊपर।। दुहुं ओर झुलवत गावत त्रिय, वरण वरण पेहेरें तन अंबर।।१।।

तेसीये दामिनी दमकत छिन छिन तेसेई घन बरसत हें धर।। तिहिं अवसर रमकत पियके संग, लाग रही वृषभान सुता गर।।२।। चटकीलो चीरा हीराको लटकन लटक रहयो भ्रुवऊपर।। "श्रीरघुवीरप्रभुकी" लीला, लखिमोहे ब्रह्मा सुरपति हर।।३।।

राग-मालव झुलत है राधा सुन्दर वर, सांवन सरस हिन्डोरे।। दुहुंओर रमकत बाढ्यो रंग, ब्रजयुवती तृणतोरें।।१।। वरणवरण पहरें तन अंबर प्रेमविवश दृगजोरें।। किलकत हंसत सबे रसलंपट कामत्रिया चितचोरें।।२।। तिहिं अवसर वर्षत रसबूदें चहुंदिशा घनघोरें। "कल्याणके" प्रभु गिरिधर रीझे अति, देत पीतपट छोरें।।३।।

राग-मालव झुलत लाल गोवर्धनधारी, शोभा बरनी न जाई।। वाम भाग वृषभानंदनी नवसत अंग बनाई।।१।। अति सुकुमार नारी ड़रपत हे, मोहन उरही लगाई।। गौर श्याम छबि मरकत मनि पर, कनक वेली लपटाई।।३।। सुरत सुधा विलसत दोउजन, सहचरी सब सुख पावे।। "चतुर्भुज" प्रभु लाल गिरीधर यश, सुरनर मुनि मिल गावे।।४।।

राग-मालव गृह गृह तें आई ब्रज सुन्दरि, झुलत सुरंग हिन्डोरे।। वरणवरण पहरें तनसारी, नवल नवल रंगबोरें।।१।। झूलत संग लाल गिरिधरके, अति छबि नवलकिशोरें।। नेन्ही नेन्ही फुहीं परत बादरतें श्यामघटा घनघोरें।।२।। कबहुंक रीझभीज उरलागत प्रीतमको चितचोरें।। "कल्याणके" प्रभु गिरिधर रसभीजे प्रेम उमंग झकझोरें।।३।।

शयन में (राग-कल्याण) झुलत श्याम प्रिया-संग रंग हिन्डोरना।। वरणवरण अब रतन पहरें ब्रजयुवती जन, गावत कल गीतन चित चोरना।।१।। तेसीये ऋतु सांवन मन भावन हरियारी, भूमिमंदमंद गरजत घन घोरना।। तेसेई पिक चातक बन बोलत अति आनंद भर केकी कीर कुलाहलको ओरना।।२।। सहचरी चहुंओरतें झूलवत अति आनंद भर पटतर द्युति दामिनी घनघोरना।। पिय "बिहारी" लाल ललित दंपत अति आनंद भर प्रेमविवश जानत न निश भोरना।।३।।

मान का पद (राग–मल्हार) चलवर कुंजन बरखतमेह।। (यह पूरा पद पेज ७३ पर पढ़े।)

पोढवा में (राग–बिहाग) पोढे माई मदन मोहन श्याम।। आनन्द होय चरणारविंद भज, सकलपूरनकाम।।१।। अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारे योग भोग विश्राम।। उमापति शुकदेव नारद रटत निशदिन नाम।।२।। सकल कला प्रविन गिरिधर राधिका भुज वाम। कहत "कृष्णा" सूवस वसिये श्रीनन्द गोकुल गाम।।३।।

श्रावण कृष्णा ४

श्री गोकुलनाथजी एवं श्री गोकुल चन्द्रमाजी का पाटोत्सव

श्रृंगार – पाग पिछोड़ा को।

वस्त्र – हरा रंग के सोनेरी कोरके, कटि में पिछोड़ा, श्रीमतक पर हरी पाग सोनेरी जरीकी खिड़कीदार उस पर सोनेरी जरी के कामका नागफणि कतरा। ठाड़ा वस्त्र लाल रंग के तथा पिछवाई हरे रंगकी सोनेरी कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष – श्रावण मास में प्रत्येक सोमवार को शयन भोग के साथ सखड़ी, अनसखड़ी तथा साकगर में दाल-बाटी-चूरमा आरोगाया जाता है।

मंगला में (राग-मल्हार) गरज गरज रिमझीम रिमझीम, बुन्दन लाग्यो बरसन घन, मेहेले आई अचक गई हो अटक।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में (राग-मल्हार) देखो माई सुन्दरता को बाग।। हरी ब्रज भूमी हरी द्रुम वेली हरी गिरधर शिर पाग।। हरे हरे मोर हरी शुक सेना भीज रहे अनुराग।। राजत हरी मन हरण राधिका निरखदास बड़ भाग।।

राग मल्हार सखिरी हरियारों सावन आयो।। हर्यो टिपारों सीस विराजत काछ हरी मन भायो।।१।। हरि मुरली है हरी संग राधे, हरी भूमि सुखदाई।। हरी हरी वन राजत द्रुमवेली नृत्यत कुंवर कन्हाई।।२।। हरी हरी सारी सखीजन पहरे चोली हरी रंग भीनी।। "रसिकप्रीतम" मन हरित भयों है, सर्वस्व न्योछावर कीनी।।३।।

राजभोग में (राग-मल्हार) देखो माई सुन्दरता को रूप।। मन बुद्धि देदे चिते रही हो कमल नयनको रूप।।१।। कुंचित केश सुदेश अलिगण वदनजो सहज सरोज।। मकर कुंडल किरणकी छबि दुरत फिरत मनोज।।२।। अरूण अधर कपोल नासिका सौभग ईषदहास।। दशननकी द्युति जलज नवशशि भ्रुकुटी मदन विलास।।३।। अंग अंग अनंग जीव्यों रूचिर उर वनमाल।। शोभा "सूर" हृदय परिपूरण सब सुख देत गोपाल।।४।।

श्री गोकुलनाथ जी

श्रावण-कृष्णा चतुर्थी - पाटोत्सव

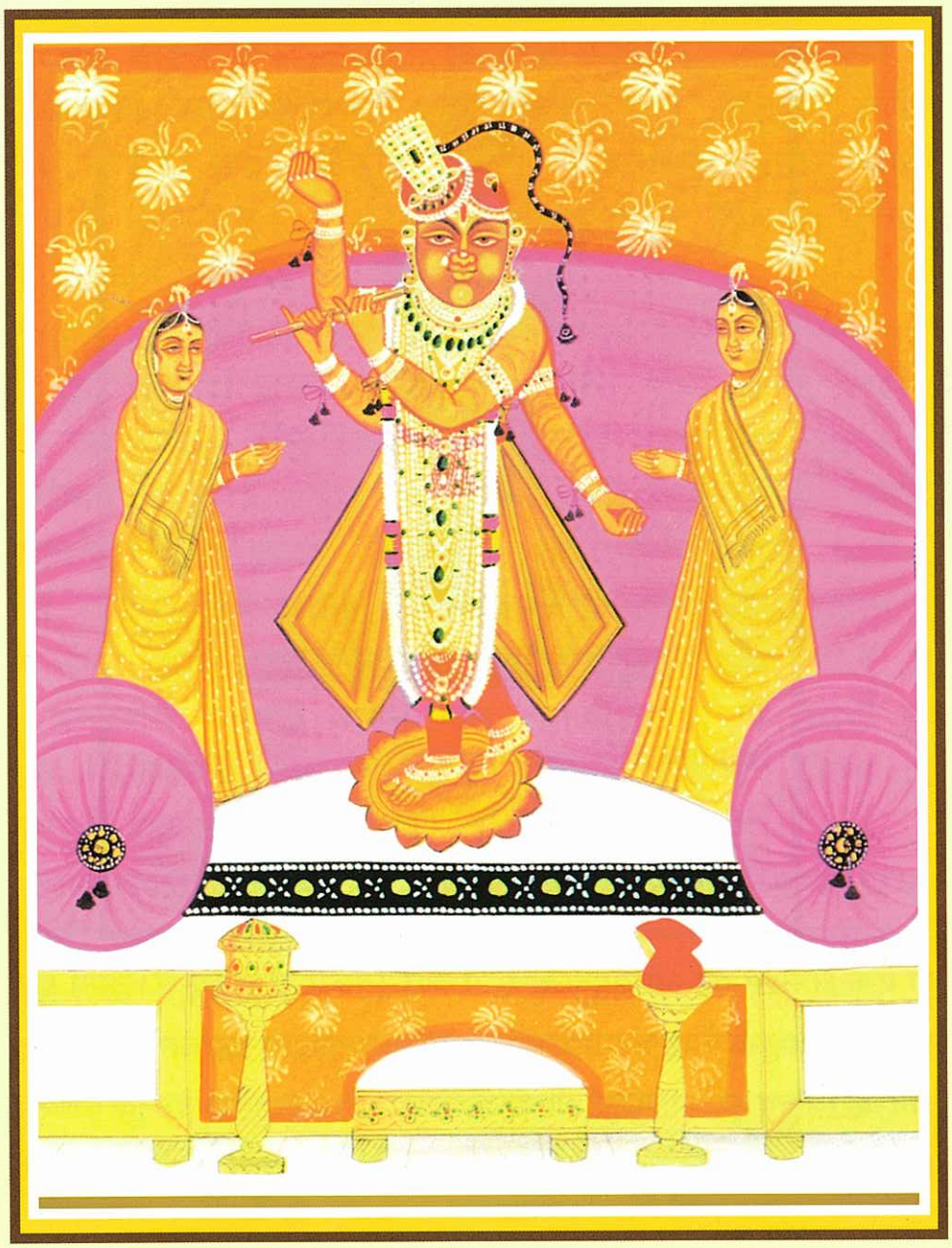

श्री गुसांईजी के चतुर्थ पुत्र माला तिलक के रक्षणहार श्री गोकुलेश प्रभु ने गोकुल में आपश्री ने भव्य मंदिर बनाकर वहाँ सेवा करते उस समय से आज तक यह स्वरूप गोकुल में बिराजते हैं। श्री महाप्रभुजी को यह स्वरूप अपने ससुराजी (श्री वेणुभट्टजी) द्वारा प्राप्त हुआ। तब से इस स्वरूप की सेवा श्री महाप्रभुजी के वंश में चतुर्थ ग्रह में पूज्य आचार्य चरणों द्वारा की जाती है।

'बेनु बजावत कर पर गिरिवर, बामभुजा लै शंख धरै।'

''द्वारकेश'' प्रभु गौर वर्ण वपु निगम प्रसंतित विपत हरै।।

श्रीमती कोकिलाबेन श्री रसिकलाल जी शाह का श्री जी चरणों में दण्डवत व वैष्णवों को जयश्री कृष्ण

श्री गोकुलचंद्रमा जी का पाटोत्सव

श्रावण कृष्णा 4

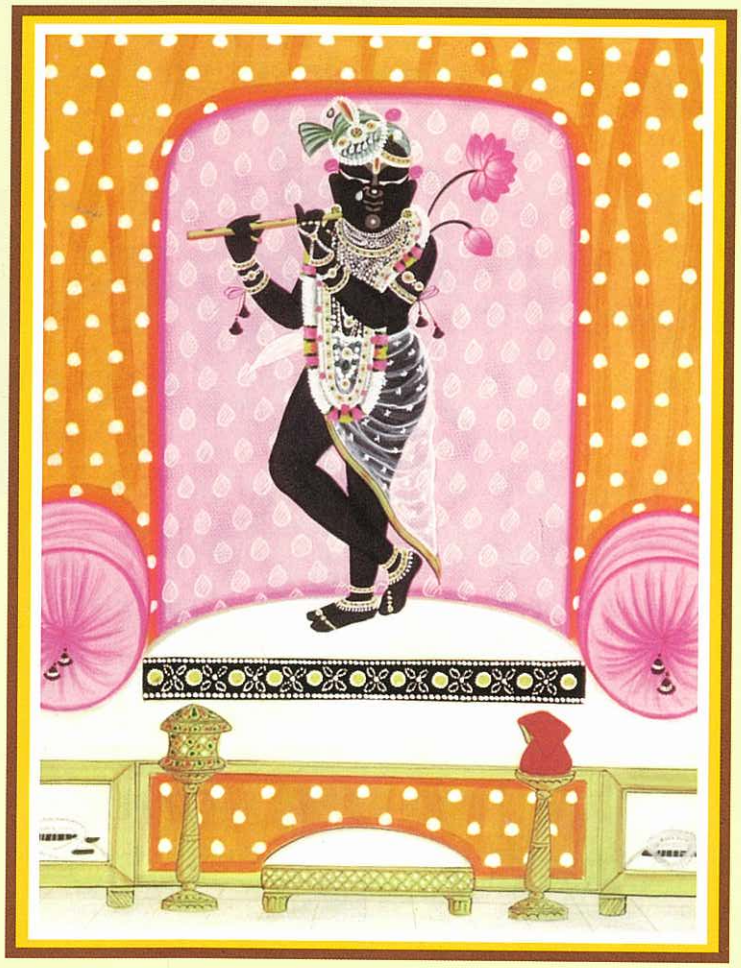

महावन की एक क्षत्राणी को श्री यमुनाजी में से चार स्वरूप प्राप्त हूए थे। उसमें एक स्वरूप यह श्री गोकुलचंद्रमाजी का है। महाप्रभुजी नेयह चंद्रमाजी का स्वरूप नारायणदास ब्रह्मचारी को पधराया था। जीवन भर सेवा करने के पश्चात् यह स्वरूप पुनः श्री गुंसाई जी के घर पधराया। श्री गुंसाईजी ने उनके पंचम पुत्र श्री रघुनाथ जी के माथे पधराया । तब से आज तक कामवन में पंचम गृह के आचार्य चरण द्वारा उनकी सेवा की जा रही है।

स्वरूप भावना : श्री गोकुल चंद्रमा जी का स्वरूप श्याम वर्ण का एवं अति कोमल है। ये अलौकिक श्रृंगार रस का वर्ण है एवं संयोग श्रृंगार रस का स्वरूप है।

लीला भावना : यह स्वरूप रासलीला का स्वरूप है एवं सदा रास करने के लिये तत्पर है।

श्री गोकुल चंद्रमा जी को संस्कृत में 'श्री गोकुलेन्दु' भी कहते है चन्द्रमा को संस्कृत में इन्दु कहते हैं। कई वैष्णव भक्ति भाव से आपको ''चंद बावा'' के नाम ले भी बुलाते हैं ऐसा ही कहा जाता है कि श्रीमद् गोकुल में श्रावक सुद 11 को मध्य रात्रि में श्री गोकुल चन्द्रमा जी ने ही प्रकट होकर श्री महाप्रभुजी को ब्रह्म संबंध की आज्ञा दी थी यह वही स्वरूप है।

हिन्डोरा झूलते समय

राग–ईमन सोहत बन आयोरी हरियारों सांवन।। हरित भूमि पर इन्द्र वधूसी, राधिका सब सखियत संग लींने, पहरे कसुंभी सारी कंचन तन।।१।। रंगभर सुरंग हिंडोरें झूलत, नवनागरी नागर मानों रंगवे चल्योहें एडी अंगुरिन।। "सूरदास" मदनमोहन पियके गुणगावत ये सुखअति आनन्द मगनमन।।२।।

राग–ईमन सेन क्रम की लायों सो सावन आयो।। (यह पूरा पद पेज ७८ पर पढ़े।)

राग–ईमन रमक झमक झुलन में ठमक मेह आयों, नहीं सुरझत वातनतें।। नव पल्लव संकुलित फूलफल वरण वरण द्रुम लतान तर ठाडे भयो हे बचाव पातन ते।।१।। मंद मंद झुलवत स्थम्भन लग ओढ़ै अम्बर निज गातनते।। "कृष्णदास" गिरिधारी दोउ भीज्यों वागो सारी भ्रमरकी भीर भारी टारीन टरत क्यौंहु, प्रकटी छबीली छटा निज गातन ते।।२।।

राग–ईमन लाल तो हों झूलों जो तुम होलें होलें झुलावो।। डरपतहों घनश्याम मनोहर अपने कंठ लगावो।।१।। हों उतरों तुम झूलों मेरे मोहन जैसे जैसे गांऊ तेसें तेसें गावो।। "रसिक" प्रीतम पिय यही विनती तनकी तपत बुझावो।।२।।

शयन में (राग्–कान्हरों) झुलत तेरे नैन हिन्डोरें।। श्रवण खंभ भ्रू मई मयार, द्रष्टी करण डांडी चहुओरे।।१।। पटली अधर कपोल सिंहासन बैठे, युगल रूप रति जोरे।। कचघन आड़ दामिनी दमकत, मानो इन्द्रधनुष अनुहोरे।।२।। दुर देखत अलकावली अलिकुल, लेत सुगंधन पवन झकोरें।। वरणी चमर ढुरत चहुंदिशतें, लरलटकन फुंदना चित्तचोरें।।३।। थकित भये मंडल युवतिन के, युग ताटंक लाज मुख मोरें।। "रसिक" प्रितक रसभाव झुलावत, रीझरीझ त्रियन तृणतोरे।।४।।

मान के पद (राग–मल्हार) मान न कीजे मानिनि बरषा ऋतु आंई।। हिलि मिलि के सब गावो राधिका राग मल्हार जमाई।।१।। बिनु अपराध रूसनो कैसो, छांडि देहो वृषभान दुहाई।। "व्यासस्वामिनी" कुंज महल में पैयां परति हों माई।।२।।

पोढवा में (राग–मल्हार) हरि पोढ़ो चकडोरे झुलावुं।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े।)

श्रावण कृष्ण ५

वस्त्र – केसरी अमरसी रंगके रूपेरी कोरके, कटि में पिछोरा, तथा अन्तरवास को पटको झालरको। श्रीमस्तक पर केसरी दुमाला पर पिरोंजा को जड़ाऊ सेहरों तथा वेणी श्याम रेशम पिरोंजाकी आज जमणी तरफ धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम रंग के तथा पिछवाई चित्रामण की लग्न मंडप की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष – आज प्रभु केशरिया साटन के हिन्डोरे में झूलें।

मंगला में (राग–मल्हार) देखो माई सुन्दरता को बाग।। (यह पूरा पद पेज ८४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में (राग–मल्हार) हमारे माई श्यामा जु को राज।। (यह पूरा पद पेज ६१ पर पढ़े।)

राजभोग में (राग–मल्हार) सखिरी सावन दुल्हे आयो। (यह पूरा पद पेज ७७ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय

राग–मल्हार झूलत दुल्हे दुलहनि सुरंग हिंडोरे।। गांठ जोरं रतन जटीत को शीश शेहरो अरू चंदन की खोर।।१।। मंगल गावत सब ब्रजवनिता करत परस्पर रोर।। "रसिकदास" प्रभुको मुख निरखत डारत हैं तृन तोर।।२।।

राग–मल्हार दुल्हे दुलहनि सुरंग हिन्डोरे झूले प्रथम समागम अहो गठजोरे।। चरण खंभ भुज करि मयार डांडीचार कमल कर रमक हुलसे दोऊ औरें।।१।। सुभग सेज पटुली सुख बाढ्यो मरूआ वेलन प्राची ओरें।। "नंददास" प्रभु रस बरखत जहां दामिनी की अनुहोरें।।२।।

राग–मल्हार लाल प्यारों झुलत है संकेत।। संग राजत वृषभान नंदिनी, ललिता झोटादेत।।१।। मुदित परस्पर गावत दोऊ अलापत राग

मल्हार।। खसिखसि परत नील पीतांबर नाहिन अंग संभार ।।२।। उनये मेघ सकल वनराजत अद्‌भुत शोभा देत।। "दामोदर" प्रभु रस झूलन में सखी बलैया लेत।।३।।

राग–मल्हार यह सुख सावन में बनि आवे, दुल्हे दुलहनि संग झुलावे।। नन्द भवन रोपयों सुरंग हिंडोरो गोपवधू मिल मंगल गावें।।१।। नन्दलालकों राधाजूपें, हरिजूपें राधाजी को नाम लिवावें।। जसुमति सुं "परमानन्द" तिहिं छिन, वारफेर न्योछावर पावें।।२।।

शयन में (राग–केदार) अेरी हिन्डोरे विहंस विहंस कामिनी झूले रमक रमक।। तेसीये कसुंभी सारी पहेरे, तेसिये कंठमाल, तेसीये लाल कंचुकी बनी खमक खमक।।१।। अलक तिलक मध्य बेंदी जरावकी, उठे हीरान की छबि दमक दमक।। "सुघरराय" प्रभु दंपती को सुख निरख गयो है मदन तहां तमक तमक।। २।।

मान का पद (राग–मल्हार) प्यारी तोहि गिरिधर लाल बुलावत।। (यह पूरा पद पेज ६२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में (राग–मल्हार) दोऊ मिल पोढ़े ऊंची अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

श्रावण कृष्णा ६

श्रृंगार – ग्वाल-पगाको।

वस्त्र – श्याम सुनहरी कोरके। कटि में पिछोड़ो। श्रीमस्तक पर ग्वालपगो उसपर पिरोंजी रेशम के कामकी मोरशिखा धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र गुलाबी रंग के तथा पिछवाई श्याम सुनहरी कोरकी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष – आज श्रीठाकुंरजी मदनमोहनलालजी नित्य की तरह श्यामसाटन पर सफेद फूल के कामके हिंडोरने पर झूलें तथा श्रीजी के पास वापस पधारने पर संध्या आरती हुई।

मंगला में (राग-मल्हार) श्याम देख नाचत मुदित वनमोर।। ताऊपर आनन्द उमग भर सुनत मुरली कलधोर।।१।। चहुंदिशतें कोकिला कल कूजत और दादुरकी रोर।। "गोविंद प्रभु" सखा संग लिये विहरत बल मोहन की जोर।।२।।

श्रृंगार में राग-मल्हार सखिरि वृज को बसवो नीको।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

कारे कारे बादर देस देशतें ऊलरें श्याम बरन सब रूख भये।। मानहुं मदन मिल्यो मदन मोहन सों करत ओट महा सघन तिमिर कें वसन नये।।१।। मोरनीको सोर अति पिकको पपीया पीउ-पीउ करत नुंपूर धुनि अलीसे धुन तिए।। "धोंधी" के प्रभु बोली चलि तहां जहाँ पातनि की सेज करि पातनि छये।।२।।

राजभोग में राग-मल्हार देखो माई मानों कसोटी कसी।। (यह पूरा पद पेज ६१ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय

राग-मल्हार सुखद वृंदावन सुखद जमना तट सुखद कूंज भवन रच्योहे हिंड़ोरो।। सुखद कल्प तरू सुखद फूल फल, सुखद बहत सीतल पवन

झकोरो।।१।। सुखद रंगीले संग सुखद रंगीली राधा सुखद करत केल रति प्रति जोरो।। सुखद सखी झूलावें सुखद गरज बरसत थोरो थोरो।।२।। सुखद हरित भूमी सुखद बुंदन रंग सुखद कोकिला करन सारस चकोरो।। सुखद बजावें बेन सुखद सुजस सुन सुख "गदाधर" चित्तकों चोरों।।३।।

राग–मल्हार कारे बादर ओल्हर आये, ता मध्य झुलत सुरंग हिन्डोरे।। तेसीये दामिनी दमकदमक धुरवापरें चहुंओरे।।१।। हरीहरी भूमि सुहावनी लागत तेसेई चातक पिक करत करोरें।। "मदनमोहन" बलबल गिरिधरपिय हंस उठजात मन्मथ मनमोरें।।२।।

राग–नट झुलत लाल गिरवर धरन।। परम रसिक सिरोमनि प्यारी, राधिका मनहरन।।१।। स्याम सिस श्रीखंडी श्यामा कनक के आभरन।। नील प्रीत दुकूल राजत गौर सांवरें बरन।।२।। जब ही झोटा देत प्यारी लागत मन अति डरन।। प्रभु "विचित्र" अति निपुन नागर चपल अंस भूज धरन।।३।।

चौथा पद (राग–कल्याण) झुलत श्याम पिया संग रंग ही हिन्डोरना।। (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

शयन–में, राग–कल्याण देखो माई श्याम हिन्डोरें झुले।। निरख निरख मनमोहन मुखछबि व्रजजन मन अति फूले।।१।। स्याम खंभ बहु भाँति बनाये डाड़ी स्याम मन भाई।। पटुली स्याम बिराजत तामें, हीरा लाल जराई।।२।। स्याम रंग व्रजराज लाडीलो अरू चन्द्रावली गोरी।। नव व्रज–बधु चहुँ दिसनि ठाडी मानो प्रेम रंग बोरी।।३।। तामें राग मलार मधुर सूर नवल जुवतिजन गावें।। "श्री विट्ठल गिरिधरन" लालसों नवल नेह उपजावें।।४।।

मान का पद (राग–मल्हार) चलवर कुंजन बरखतमेह।। (यह पूरा पद पेज ७३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में (राग–बिराग) पोढ़े माई मदन मोहन श्याम।। (यह पूरा पद पेज ८३ पर पढ़े।)

श्रावण वद ७

श्रृंगार – मल्लकाछ टिपारा

वस्त्र – फिरोजी तथा गुलाबी सुनहरी कोर के। कटि में मल्लकाछ दोनो तरफ दो दो पटका उपर फिरोजी, नीचे गुलाबी रंग के। ठाड़ा वस्त्र श्याम तथा पिछवाई चित्राम की मोरकुटी की जिसमें नाचते हुऐ मोर हैं।

आभरण – नित्यानुसार

मंगला में (राग–मल्हार) लाल और ललनाजूं बांह जोटी उठे प्रातः, पवन लगत कमल लपटात।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में (राग–मल्हार) श्याम देख नाचे मुदित बन मोर।। (यह पूरा पद पेज ८८ पर पढ़े।)

राजभोग में (राग–मल्हार) वृन्दावन कनक भौमि निर्तत वृज नृपति कुंवर।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय

राग–मल्हार हिन्डोरे माई झुलत गिरवर धारी।। सावन मास सरस घन वरखत पवन बहत सुखकारी।।१।। फूले सुभग कुसुम यमुना तट पवन बहत सुखकारी।। निरख निरख मुख देत झोटा श्रीवृषमान–दुलारी।।२।। दादुर मोर पपैया बोले कोयल शब्द उच्चारी।। राग मल्हार अलापत भामिनी पेहेरे कसूंभी सारी।।३।। बाजत ताल मृदंग बांसुरी नाचत दे करतारी।। मदनमोहन राधावर उपर "गोविंद" जनबलिहारी।।४।।

राग–मल्हार झुले माई नटवर सुरंग हिन्डोरें।। धरत चरण पटुली पर मोहन करजु परस्पर जोरें।।१।। पीत वसन बनमाल विराजत सारी सुरंगहि बोरें।। सजल स्यामघन कनकवरण तन मानिनी मानहि तोरें।।२।। जोरी अविचल सदा विराजत कुण्डल बीच झकोरें।। "कुंभनदास" प्रभु गिरिधर राधा, प्रीति निवाहत ओरें।।३।।

राग–मल्हार थेई थेई नृत्य करे, टिपारो हि सिर धरे, मल्लकांछ सोभा देत झूलत पिय प्यारी। वाम भाग राधे प्यारी, बाहें जोरें प्यारे संग, गावत हि ऊँचे सुर तान हि समारी।।१।। एक सखी झुलावत प्यारे, पान खवावत एक सखी, दरपन पे देखावत ठाड़ी।। "रसिक" प्रितम छबि निरखत निरखत तन मन धन सब डारत है वारी।।२।।

राग–मल्हार झुले माई गोकुलचंद हिन्डौरे, झुलवत सब व्रजनारी।। संग शोभित वृषभाननन्दीनी पेहेरे कुसुंभी सारी।।१।। पचरंगी डोरी गहिलीनी, डांडी सरस संवारी।। "आसकरन" प्रभु मोहन झूलत गिरी गोवर्धन धारी।।

शयन में (राग–ईमन) झुली झुली हो पिय संग पावस ऋतु आनंद भर।। चरण कमल दोऊ खंभ भये भुज–डांडी चारू, शिरजुरे मयार लटकन आभूषन बहुरंग।।१।। कचघन उनये वदन गगन पर दमकत दामिनी आड़मानों और तिलक इन्द्रधनुष भंग।। "रसिक" प्रितम संग सुरत हिण्डोरे यह विध झूली मोहे अनंग।।२।।

मान का पद (राग–मल्हार) कबही कहेति प्यारी अजहू न रिसगई मोहनी मौनधर कहत कछूनरी।। (यह पूरा पद पेज ५९ पर पढ़े।)

पोढ़वा में (राग–बिराग) कुंज में पोढ़े रसीक पिय प्यारी।। सखी मुदित अति चित्र विचित्र पहिरे विविध रंग सारी।।१।। हँसत परस्पर बात रस बरसत आनंद उमग्यों भारी। सुरति रंगके रसमें भींजे "नन्ददास" बलिहारी।।२।।

श्रावण कृष्णा ८

(आज जन्माष्टमी की बधाई बैठती है, देहरी बन्दनमाल)

श्रृंगार – जन्माष्टमी के आगम का। कुल्है जोड़ का।

वस्त्र – केसरिया रूपेरी कोरके, कटि में पिछोड़ो, श्रीमस्तक पर केसरिया कुल्हैं तथा मोर पिछ का जोड़, ठाड़ीलड़ मोती की, दोहेरा शीरपेच, शीशफूल तथा पान हीरा-पन्ना-माणक-मोतीके, कुण्डल हीरा के झडाऊं। वेणी श्याम हीरा-मोती की। श्रीमुखार वृन्द पर माणक का तिलक, अलंकार, कमलाक्ष, नकवेशर माणक-मोती के चिबुक हीरा को। श्री अंग में भारी श्रृंगार वनमालाको दो जोड़को, हांस हार सभी हीरा-पन्ना-माणक मोतीके। गुंजामाला तथा फूलकी माला श्रीहस्तमें नखावली, मुद्रिका हीराकी, हस्तपान, पोंची, बाजुबन्द सभी हीरा-पन्ना-माणक मोतीके। श्रीचरणकमल में नखावली हीराकीमुद्रिका, अनवट, बिछिया पायल, पेंजनी, जेहर सभी हीरा-पन्ना-माणक से जड़ें हुवे तथा नुंपुर सोनाके। वेणु वैत्र हीरा जड़ेहुवे फूल की छड़ी।

ठाड़ा वस्त्र वादली रंगके। श्रीजी की कन्दरा पर हीरा को जड़ाऊ चोखटो, पिछवाई लाल सोनेरी कोरकी (दरियाई) चोड़ा पट्टावाली।

विशेष – श्रीमदनमोहन लाल जी आज सांयकाल केसरी शाटन के झूलें में झूलें। बादमें झूलने के बाद अन्दर पधारें। आरती हुई। आज से नित्य कीर्तन में बधाई तथा मल्हार दोनों के पद गाये जाते है।

मंगला में (राग-देवगंधार) आजु गृह नन्द मेहर के बधाई।। प्रातसमें मोहन मुख निरखत कोटी चन्द छबि छाई।।१।। मिली व्रजनागरी मंगल गावत नंदभवनमें आई।। देत असीस जीयों सुत कोटिक बरस कन्हाई।।२।। नित आनन्द बढ़त वृन्दावन उपमा कहिय न जाई।। "सूरदास" धनि-धनि नन्दघरनी निरखत हियो सिराई।।३।।

।। जन्माष्टमी की बधाई ।।

राग–देवगंधार व्रज भयो महरिकैं पूत जब यह बात सुनी।। सुनि आनंदे सब लोग गोकुल गणित गुनी।। व्रज पूरब पूरे पुन्य रूपी कुल सुथिर थुनी।। ग्रह लग्न नक्षत्र बलि सोधि कीनी वेद धुनी।।१।। सुनि धाईं सब व्रजनारि सहज सिंगार कियें।। तन पहरें नौतन चीर काजर नैन दियें।। कसि कंचुकी तिलक लिलाट शोभित हार हियें।। कर कंकण कंचन थार मंगल साज लियें।।२।। वे अपने अपने मेल निकसीं भांति भलीं।। मानों लाल मुनिनकी पांति पिंजरन चूर चलीं।। वे गावें मंगलगीत मिलि दश पांच अलीं।। मानों भोर भयौ रवि देखि फूली कमल कलीं।।३।। उर अंचल उड़त न जान्यौ सारी सुरंग सुहीं।। मुख मांड्यो रोरी रंग सेंदुर मांग छुहीं।। श्रम श्रवनन तरल तरौना बेनी शिथिल गुहीं।। शिर बरषत कुसुम सुदेश मानो मेघ फुहीं।।४।। पीय पहलें पौहोंचीं जाय अति आनंद भरीं।। लई भीतर भवन बुलाय सब शिशु पाँय परीं।। एक बदन उघारि निहारत देत असीस खरी।। चिरजीयौ यशोदानंद पूरन काम करी।।५।। धन्य धन्य दिवस धन्य रात्र धन्य यह पहर घरी।। धन्य धन्य महरिजूकी कूँख भागि सुहाग भरी।। जिन जायो एसौ पूत सब सुख फलन फरी।। थिर थाप्यो सब परिवार मनकी शूल हरी।।६।। सुनि ग्वालन गाय बहोरि बालक बोलि लिये।। गुहि गुंजा घसि वनधातु अँग अँग चित्र ठये।। शिर दधि माखनके माँट गावत गीत नये।। संग झांझ मृदंग बजावत सब नंद भवन गये।।७।। एक नाचत करत कुलाहल छिकत हरद दही।। मानों बरखत भादोंमास नदी घृत दूध बही।। जाको जहीं जहीं चित्त जाय कौतक तहीं तहीं।। रस आनंद मगन गुवाल काहू बदत नहीं ।।७।। एक धाय नंदजूपै जाय पुनि पुनि पाँय परैं।। एक आप आपुहिं माँझ हँसि हँसि अंक भरैं।। एक अंबर सबही उतारि देत निशंक खरैं।। एक दधिरोचन ओर दूब सबनके शीश धरै।।९।। तब नंद न्हाय भये ठाड़े अरू कुश हाथ धरैं।। नांदीमुख पितर पुजाय अंतर सोच हरैं।। घसि चंदन चारू मँगाय विप्रन तिलक करैं।। वर गुरूजन द्विजन पहराय सबनके पाँय परैं।।१०।। गन गैया गिनी न जाय तरून सुबच्छ बढ़ी।।

नित चरैं यमुनाजूके काछ दूने दूध चढ़ी।। खुर रूपे तांबे पीठ सोने सींग मढ़ी।। ते दीनी द्विजन अनेक हरखि असीस पढ़ी।।११।। तब अपने मित्र सुबंधु हँसि हँसि बोलि लिये।। मथि मृगमद मलय कपूर माथें तिलक किये।। उर मणिमाला पहराय बसन विचित्र दिये।। मानों बरषत मास अषाढ दादुर मोर जिये।।१२।। वर बंदी मागध सूत आंगन भवन भरै।। ते बौलें लै लै नाम हित कोऊ ना बिसरै।। जिन जो जाँच्यौ सो दीनी रस नंदराय ढरै।। अति दान मान परधान पूरन काम करै।।१३।। तब रोहिनी अंबर मंगाय सारी सुरंग घनी।। ते दीनी बधून बुलाय जैसी जाय बनी।। वे अति आनंदित बहोरि निज गृह गोप धनी।। मिलि निकसीं देत असीस रूचि अपुनी अपुनी।।१४।। तब घरघर भेरि मृदंग पटह निसान बजे।। वर बांधती बंदनमाल अरू ध्वज कलश सजे।। तब ता दिनतें वे लोग सुख संपति न तजे।। सुनि सूर सबनकी यह गति जे हरि चरण भजे।।१४।।

राजभोग आवे व सरवे में बधाई के पद यह धन धर्म हीतें पायो। नीकें राखी जसोदा मैय्या, नारायण व्रज आयो।।१।। जा धन कों मुनी जप तप खोजत वेपहु पार न पायो।। सो धन धर्‌यौं क्षीरसागर में बह्मा जाय जगायो।।२।। जा धन तें गोकुल सुख लहियत सगरे काज सवारें।। सो धन बार बार उर अन्तर "परमानन्द" विचारे।।३।।

नोट- श्रावण कृष्णा 8 से राजभोग आने पर जन्माष्टमी के बधाई कीर्तन गाये जाते है तथा मान के पद नहीं गाये जाते है। जन्माष्टमी तक निम्नपद गाया जाता है।

राजभोग में राग-आशावरी धन्य यशोदा भाग्य तिहारों जिन ऐसो सुत जायो हो।। जाके दरस परस सुख उपजत कुलको तिमिर नसायो हो।।१।। विप्र स्वजन चारन बंदीजन सबे नंद घर आये हो।। नौतन हरद दूध दधि अक्षत हरषित सीस बंधाये हो।।२।। गर्ग निरूप कहे बोहो लक्षण अवगतहे अविनासी हो।। "सूरदास" प्रभुको जस सुनिके आनन्दे ब्रजवासी हो।।३।।

हिन्डोरा झूलते समय

राग–मल्हार (श्री गोविन्द स्वामी के पद ही गाये जाते है) राग–मल्हार तेसोई वृन्दावन तेसीये हरित भूमि तेसीये वीरवधू चलत सुहाई माई।। (यह पूरा पद पेज ७७ पर पढ़े।)

राग–मल्हार झूलन आई व्रजनारी गिरिधरन–लालंजू के सुरंग हिन्डोरना।। सुभग कंचन तन पहेरे कसुंभी सारी गावत परस्पर हँस मृदु बोलना।।१।। इत नन्दलाल रसिकवर सुन्दर उत वृषभान छबि सोहना।। रमकत रंगरह्यो पियप्यारी "गोविन्द" बलबल रतिपति जोहना।।२।।

राग–मल्हार झूलत सुरंग हिन्डोरें राधा मोहन।। (यह पूरा पद पेज ७७ पर पढ़े।)

राग–मल्हार रंग मच्यों सिंहद्वार, हिन्डोरे व झूलना।। (यह पूरा पद पेज ७८ पर पढ़े।)

बधाई

शयन में राग–कान्हरौ यह धन धर्महीतें पायो।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

राग–कान्हरौ धन्यरानी यशोमत ग्रह आवत गोपीजन।। वासर ताप निवारन कारन वारंवार कमलमुख निरखन।।१।। चाहत पकर देहरी उलंघन किलकी किलकी हुलसत मन।। राई लोन उतारी दुहु कर वारी फेरी डारत तन–मन–धन।।२।। लाले लेत उछंग चांपत हियों भरी प्रेम विवस लागे नैत्र ढ़रकन।। ले चली पलना पोढ़ावन को अरकसाय पोढ़े सुन्दर घन।।३।। देत असीस सकल गोपीजन चिंरजीवों लाल ज्यों गंग जमन।। "परमानंद दास" को ठाकुर भक्त वत्सल भक्तन मनरंजन।।४।।

पोढ़वा में (राग–बिहाग) पौढ़िये लाल लाडिली संग लै।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े।)

श्रावण कृष्ण ९

श्रृंगार – पाग-पिछोड़ा को।

वस्त्र – पंचरंगी लहेरिया के, रूपेरी कोरके, कटिमें पिछोड़ा तथा श्रीमस्तक पर पाग पर सोनेरी कलंगी व लूमक धराई गई हैं। ठाड़ा वस्त्र हरे रंगके तथा पिछवाई पंचरंगी लहरिया की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार तथा वेणुवेत्र पंचरंगी लहेरदार धराई गई है।

विशेष – आजसे लेहेरिया धराये जाते है। चांदी के हिन्डोरे में श्रीमदन मोहन प्रभु झूलें तथा श्रीजी के पास पधारें व आरती की गई। आजके दिन श्री विट्ठलनाथजी की तरफ से लेहरिया वस्त्र व सामग्री धराई जाती है।

मंगला में (राग-मल्हार) बोले माई गोवर्धन पर मुरवा।। (यह पूरा पद पेज ४२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में (राग-मल्हार) लेहेरिया मेरों भींजेगो वे देखो आवत मेह।। सुरंग रंग रंग्यों हे सांवरे अबही घटेगो नेह।।१।। सघन कुंज में चलो हो सांवरे ओढ़ पीत पट देह।। "गोविन्द" प्रभु पिय हंस के सखी सों बाढ़्यों अधिक सनेह।।२।।

राजभोग आते समय राग-सारंग आज नन्दराय के आनन्द भयो।। नाचत गोपी करत कुलाहल मंगल चार ठयों।।१।। राती पीली चोली पहने नौतन झुमक सारी।। चौवा चंदन अंग लगाये सेन्दुर मांग समारी।।२।। दूध दह्यो भरी भरी भाजन सकल ग्वाल ले आये।। बाजत बेन पखावज महुवर गावत गीत सुहाये।।३।। हरद दूब अक्षत दधि कुमकुम आंगनबाड़ी कीच।। हंसत परस्पर प्रेम मुदित मन लाग लाग भुज बिच।।४।। चहुं वेद धुनी करत महामुनी पंच शब्द ढ़मढोल।। "परमानन्द" बढ़्यों गोकुल में आनन्द हृदें कलोल।।५।।

राजभोग में राग-मल्हार गेहेर गेहेर गाजे बदरा समुह साजे छेहेर छेहेर मेह वरसे सुघरियां।। कहर कहर करें पवन अरू पानी अति, महर महर करे भूतल महरियां।।१।। "बाल कृष्ण" यह सुख देखवें कुं, गावत मलार गहे कदम्ब की डरियां।। फहर फहर करें पियकों पीताम्बर, लहर लहर करें प्यारी को लहरियां।।२।।

हिन्डोरा झूलते समय

राग–मल्हार मचकि मचकि झूले लचक लचक जात रचक रची चित्त सोहे पटुली पहेरियां। गरज गरज आवे दामिनी सुहाई लागे गहेर गहेर घटा आईहें गहेरियां।।१।। हरख हरख गावें परस रीझे भीजें "द्वारकेश" सोंधेमें हर हर हेरीयां। फहर फहर करे प्यारेको पीताम्बर लहेर लहेर करे प्यारीको लहेरियां।।२।।

राग–सोरठ गौर श्याम धारणको लहेरिया झूलत लहेरा लेत।। पहेर्यो सरस चोंपसे श्यामा उधरी पर्यो हिये हेत।।१।। आपन उढ्यों संग सुखसागर ने अंग देखाइ देत।। प्रिया मन मगन होत अभिलाखन बदत न धीरज रहेत।।२।। मधुरे सुर मलार धुनि गावत सुन रिझत भींजत चित चेत। छूटे चहुं ओर वरखत "आनंदघन" भरत मनोहर खेत।।३।।

राग–मल्हार प्यारो प्यारी झूले कदम्ब की डारियां।। घन जु गरजे दामिनी–दमके चहूं दिश गोप कुमारिया।।१।। गौर श्याम मुखचंद परस्पर रहत निहार निहारियां।। "पुरूषोत्तम" प्रभुकी छबि निरखत छबि पर बलहारियां।।२।।

राग मल्हार आज बन उमंगि रही वृजनारी।। फुली फिरत निःशंक गुण गावत झूलत प्राण प्यारी।।१।। एक कुसुम ले डारत ऊपर एक चितवत रही ठाड़ी।। एक जो धाय आय मोहन–पें अंक भरत है गाढ़ी ।।२।। नीलपीत अंगअंग विराजत और श्रृंगार सवारी।। "सूर" संग विलसत है भामीनी नेक न होत नियारी।।३।।

शयन में राग–केदार ऐरी हिंडोरे विहंस विहंस कामिनी झूले रमक रमक।। तेसीये कसुंभी सारी पहेरे तेसीये कंठमाल तेसीये लाल कंचुकी बनी खमक खमक।।१।। अलक तिलक मध्य बेंदी जराव की उठे हीरान छबि दमक दमक।। "सुघरराय" प्रभु दंपति को सुख निरख गयो है मदन तहां तमक तमक।।२।।

पोढ़वा में (राग–मल्हार) दोऊ मिल पोढ़ै ऊंची अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

श्रावण वद् १०

(हाण्डी उत्सव)

श्रृंगार – मुकुट काछनीकों

वस्त्र – लालरंगके तथा रूपेरी किनारी फूलों की है। कटि में सूतन तथा काछनी, श्रीकण्ठमें गातीका पटका, श्रीमस्तक पर लालपाग पर रूपेरी डांक का मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई चित्रामकी ग्वाल-गोपीयों की। सांय काल पिछवाई लाल रंग की रूपेरीकोरकी धराई गई हैं।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष – आज प्रभु सोनेरी कांच के हिन्डोरे में झूले बादमें आरती नित्यानुसार की गई। सामग्री श्री गोपीवल्लभ में जलेबी तथा हिन्डेरा में केसरीफीणी, बुरा ऊपरधराये हुवे बरफी, गुंजा-कचोरी व फीका आरोगे।

मंगला में राग-देवगंधार यह सुख तुम देखोरी माई।। बरसगांठि गिरिधरनलालकी बहोरी कुशलसों आई।।१।। आगमके दिन नीके लागत उर सुख लहरी उठाई।। ऐसी बात कहत व्रजसुंदरि अपु अपुने मन भाई।।२।। फिरि हँसि लेत बलाय कूंखिकी जिहिं जन्मे जू कन्हाई।। तुमारें पुत्र भयो नंदरानी सब तन तपत बुझाई।।३।। नंदकुमार सकल या ब्रजमें आनन्द बेली बढ़ाई।। "श्री विट्ठलगिरिधर" पूरननिधि सब हिन भूखें पाई।।४।।

श्रृंगार में राग-बिलावल नन्दराय के नवनिधि आई।। माथे मुकुट श्रवन मनि कुण्डल पीतवसन वनमाल सुहाई।।१।। बाजत ताल मृदंग शंख धूनि घसि अरगजा अंग चढ़ाई।। दधि पीयरे ओ चंदन छिरकत रपट परत ओर लेत उठाई।।२।। अक्षत दूब लीये ऋषी ठाड़े द्वारे बंदनवार बधाई।। "सूरदास" अब मिले परस्पर दान देत नही नन्द अघाई।।३।।

नोट : राजभोग आते समय "बधाई" के पद गाये जाते है।

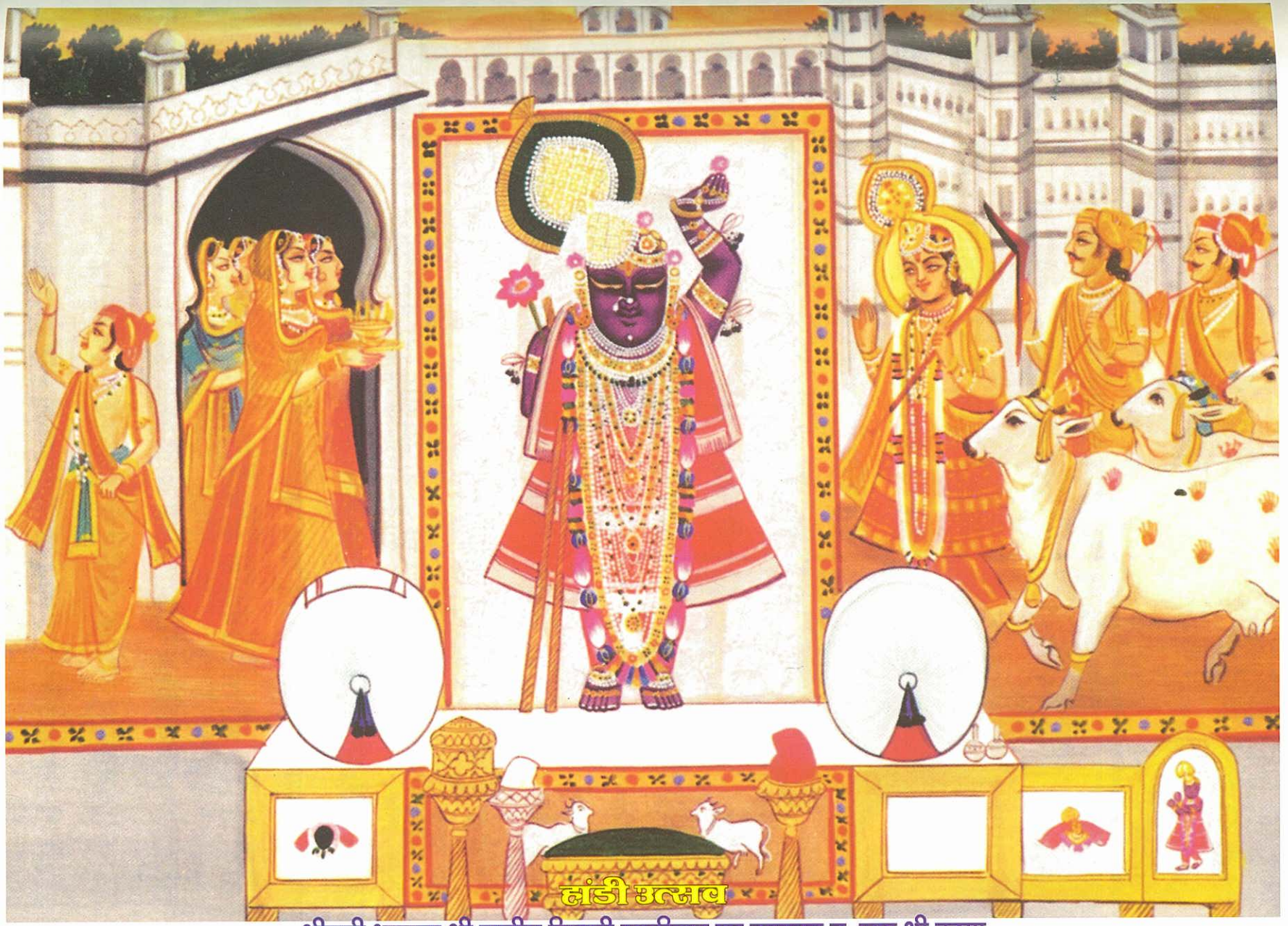

श्रीमती भावना श्री राजीव तिवारी सपरिवार का दण्डवत व जय श्री कृष्ण

गो. ति. श्री गोवर्धनेश जी महाराज का

संक्षिप्त परिचय

आप श्री गो.ति. विट्ठलेशरायजी के प्रथम पुत्र वि.सं. 1763 श्रावण कृष्ण 10 को नाथद्वारा में प्रकटे। आप सुन्दर सुडोल अच्छे साहित्यकार हते। अनेक भावना सुं श्री गोवर्धनधर के मनोरथ करते। प्रथम हांडी उत्सव रोशनी की चम में आपने श्रीप्रभु को रत्न जड़ित हिंडोला में झुलाए। आपने ही प्रथम बार अन्नकूट पर सात स्वरुपन को पधराय के दो महिना तक विविध मनोरथ किये। आपको कोई सन्तान न होवे सुं छोटे भाई श्री गोविन्दजी पर बहुत स्नेह राखते। निपट छोटी अवस्था में पिताश्री लीला में प्रवेश करि गये तासूं आपने ही इनको पुत्रवत पाले।

श्री गोविन्द जी को श्रीनाथजी के शय्या मंदिर में उष्णकाल में ठंडी हवा सुं नींद आय गई और श्री गोवर्धनेशजी तथा सभी सेवक ताला मंगल कर चले गये। भोजन अरोगवे के समय बावा कुं कहूँ पता नहीं चलवे पर बहुत चिन्ताभई पूरे नाथद्वारा में हल्ला भयो। ति. श्री गोवर्धनेशजी कूं तंन्द्रा में श्रीनाथजी ने जताई कि बावा मेरे पास खेल रह्यो हे। उत्थापन में मंदिर खुल्यों बावा कूं देखे, अहोभाग्य मान के सबने बहुत बड़ाई करी। याही सूं आपके प्राकट्य पोष कृष्ण 11 के पूरे दिन बाललीला के पद गवे। श्री गोवर्धनेशजी के पश्चात् श्री गोविन्दजी (छोटे भाई) तिलकायत भये।

राजभोग में राग–मल्हार माईरी श्याम घन तन दामिनी दमकत पिताम्बर फरहरे।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

हिण्डोरा झूलते समय (राग अडाना में)

आज लाल झुलत रंग भरे हो।। मनि कंचनको सुरंग हिन्डोरो लटकन मोती लरे हो।।१।। मोरमुकुट गुंजामणि भूषण पीतवसन वनमाल गरे हो।। "विचित्र बिहारी" जु के कुंडल कपोल लोल कामको गर्व हरे हो।।२।।

मनमोहन रंगबोरें झूलन आई हो।। सब मधि सुघर सुजान सुन्दरी अंग अंग झलक झकोरें।।१।। पान खात मुस्क्यात जात ओर बात करत प्रीतम प्यारी चित चोरें। रमकत झमकत मिलि दामिनी ज्यों गावत ध्रोह मरोरे।।२।। हरियारी में न्यारी न्यारी सादी खुली किनारी जोरें।। "प्रभुकल्याण" गिरिधर सुख सागर मानो मिली हैं हिलोरे।।३।।

राधेजू झूलत रमक–रमक।। मणि कंचन को सुरंग हिन्डोरो तामध्य दामिनि चमक–चमक।।१।। गावत गुण गिरिधरनलालके उठत दशनद्युति दमक–दमक।। बाढ्यों रंग "गदाधर" प्रभु जहां गयो हे मदन तहां तमक–तमक।।२।।

वृज के आंगन मच्यों, है हिन्डोरों री।। वृन्दावन की सघन कुंज में जहां तहां रंग रच्यों।। व्रजकी वनिता सुनत उठ धाई, मिलि गावत सुर संच्यों।। "रसिक प्रीतम" की बानिक निरखत शंकर, तांडव नच्यों।।

राग–बिहाग लाल मुनिन के झुन्डन आई एहो हिन्डोरे।। एक रंग सरस कसुंभी सारी पहेरें कंचुकी सोंधे बोरें।।१।। सबे एक वेष वे छुटी दामिनी ज्यों तनगोरें।। हँसत लसत झूलत ओर फूलत मन्मथको चित चोरें।।२।। मधुरे स्वर गावत केदारो छबिकी उठत झकोरें।। "कृष्णदास" गिरिधरन किये वश चपल नयनकी कोरें।।३।।

राग-बिहाग झुलेरी झुलेरी माई झुले प्यारों लाल झुले।। सुरंग हिंडोरो रोप्यो जमना के कूलें।।१।। तेसिये सुहाई लागे द्रुमलता फुलें।। "रसिक" प्रीतम देखें गई उर सूलें।।२।।

राग-बिहाग नवललाल के संग झूलन आई हो हिन्डोरे।। लट पटात पाट की चूनरी बदल परी कछु भोरें।।१।। सगबगात गिरिधर पिय के संग बतियां कहत थोरें थोरें।। "दासन" के प्रभु रमक झमक झूलें कछुक हँसत मुख मोरें।।२।।

राग-केदारों सोतु राखलेरी झोटा तरण भये।। इत नव कुंज द्वार कदम्ब परस जात उत यमुनालों गये।।१।। आवत जात लपटात लतनसों ताऊपर द्रुम फूलछये।। "कल्याण" प्रभु गिरधर रीझ वशभये झूलत नये नये।।२।।

शयन में राग-बिहाग झुलत दोऊ लालन गिरीवरधारी देखत ब्रजजन मनहारी।। संग राधिका प्यारी गावत ऊँचे सुरभारी।। बाजत किंकनी नुपूरन धून अहो राजत न्यारी।।१।। झोटा लेत ललितारी त्रवधि ब्रह्मलयारी।। यह छब कहतन आवे रमकत रंग रह्यो भारी।।२।। मंद मंद घन गरजेरी श्रवनन कों सुखकारी।। प्यारो जुगल रसिक छबि पर "गोविन्द" बलि बलिहारी।।३।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संग लै।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े।)

श्रावण कृष्ण ११

श्रृंगार - सुथन फेंटा को

वस्त्र - गुलाबी रंग के रूपेरी कोर के धोरा के कटि में सुथन तथा उसपर पटका। श्रीमस्तक पर गुलाबी रंगका फेंटा, उसपर सोनेरी जरीके कामका कतरा तथा कलंगी धराई गई है।

ठाडा वस्त्र श्याम रंगके तथा पिछवाई रूपहरी कोर धोराकी गुलाबी रंग की

आभरण - नित्यानुसार पिरोंजी रंग के मोती के धराये गये है।

विशेष - आज सोनेरी जरी के हिन्डोरामें झूले।

मंगला में राग–मल्हार हमहु सों निठुराई ठानी, हो मोहन प्यारे, काहे को आवन कह्यों, साँचे हो जू साँचे।। प्रीत के वचन वाचे, बिरहानल आंचे, अपनी गरज को तुम इक पाई नाँचे।।१।। भले हो जू जानें लाल, अरगजा भींनी माल, केसरी तिलक भाल, मेंन मंत्र कांचें।। निसि के चिन्ह चिन्हें, "सूर स्याम" रति भींने, ताही के सिधारौं पीय जाके रँग राचे।।२।।

श्रृंगार में राग–मल्हार शोभा माई अब देखन की बहार।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय में बधाई के पद गाये जाते है।

राजभोग में राग–मल्हार ओढ़े लाल ऊपरणी झीनी।। (यह पूरा पद पेज ४७ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय

राग–पूर्वि/मालव कमल नैन प्यारें, झुलों सुरंग हिन्डोरे झुलाऊं।। अलकन की पुर्वी डांडी गही, पलकन की पटुली मधि, प्राननाथ बढ़ो तुम भावतें हमारे।।१।। ललित लता झूम रही, हरीत भूमि जमुना तट चलिये नंद दुलारे।। भांति भांति अब लाखन चोप चाह चितवनतें ब्रज ग्वाल राखे कर लोचनके तारे।।२।।

राग-पूर्वि आई सकल युवती मिली श्यामा श्याम झुलावन।। निरखत छबि दुलहा दुलहिनकी मन आनन्द बढ़ावन।।१।। कुसुमदामले कंठ धरावत एकले दर्पन लगी दिखावन।। "रसिक दास" प्रभुकों पान खवावत, मधुर मधुर गावत, केलिकरि लगी रिझावन।।२।।

राग-पूर्वि हिन्डोरे झुलत है भामिनी।। स्यामा स्याम बराबर बैठें सरद सुहाई जामिनी।।१।। पांच वरस के स्याम मनोहर सात बरस की बाला।। कमल नेन हरि वे मृगनैनी चंचल नैन बिसाला।।२।। लरकाई में सब बनि आवें कोई न जाने सूत।। "परमानंद" दासकों ठाकुर नन्दराय को पूत।।३।।

चौथापद राग-कान्हरो मनमोहन वृषभान लली मिल झुलत सुरंग हिन्डोरे।। सोहत सीस ऐंठवा फेंटा सरस कसुम्भी रंग बोरे।।१।। कटि राजत पटपीत स्यामके सारी सुरंग बनी तन गोरे।। अंसन बाहू धरेजू परस्पर चिते चपल दृग कोरे।।२।। खंभन लागी झुलावत गावती तरूनी गोपी दुहु ओरें।। रतिनायक "ब्रजपति" की छबि पर रीझरीझ त्रणतोरे।।३।।

शयन में राग-कान्हरो झुलत तेरे नैन हिन्डौरे।। (यह पूरा पद पेज ८५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढे प्रेमके पर्यंक।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े।)

श्रावण वद १२

श्रृंगार – मुकुट कांछनी का

वस्त्र – भूपालशाही लहेरिया सुनहरी कोरके सुथन तथा कटि में गोल काछनी, बड़ा पटका। श्रीमस्तक पर सुनहरी जरी कामका मोर मुकुट, पाग पर धरावा गया है।

आभरण – नित्यानुसार भारी हीरा, मोती, माणक व सोना के धराये गये है।

विशेष – आजकें दिन प्रति वर्ष उदयपुर के महाराणी जी की तरफ से यह मनोरथ होता है तथा मनोरथ की सामग्री मोहनथाल, मगद, सतवा, खाजा, बुन्दी के लाडवा साकघर में जलेबी तथा बासुंदी एवं पुडी खासा, गुंझा, कचोरी, दहीबड़ा, भुजीया, चणा आदि अरोगकर बाद में झुलते है।

मंगला में राग–मल्हार देखो माई सुन्दरता के नेंन।। अति हि स्वच्छ चपल अनियारे सोहे जल जीवत मेंन।।१।। कमल मीन मृग खंजन वसुधा तजि अपने सुख चेंन।। निरखी सखी सब इक अंस पर सब सुख कीयों हे देन।।२।। जब अपने रस गूढ़ भाव करि कछुक जनावत सेंन।। "सूरदास" प्रभु गोवरधनधर जुवतिन मन हर लेन।।३।।

श्रृंगार में राग–मल्हार कंदमतर ठाडे हैं पिय प्यारी।। मोहन के शिर मुकुट बिराजत इत लहरिया सारी।।१।। मंदमंद बरखत चहुंदिशतें चमकत बीज छटारी।। मुरली बजावत श्रीनंदनंदन गावत राग मल्हारी।।२।। लेततान हरि के संग राधा रंग होत अति भारी।। "श्रीविट्ठल गिरिधर" को रिझवत श्री वृषमान दुलारी।।३।।

राजभोग आते समय में बधाई के पद गाये जाते है।

राजभोग में राग–मल्हार अेरी यह नागर नंदलाल कुंवर मोरन संग नाचे।। कटि तटपट किंकिणी कल नुपुर, रूनझुन करे नृत्य करन, चपल चरण पात घात सांचे।।१।। उदित मुदित सघन गगन, घोरत घन भेद, कोकिला कलगान करत पंचम स्वर वांचे।। "छीतस्वामी" गोवर्धननाथ साथ विहरत वर विलास वृंदावन प्रेमवास याचें।।२।।

राग-मल्हार हिन्डोरे माई झुलत गिरधर लाल।। संग राजत वृषभाननंदिनी अंग अंग रूप रसाल।।१।। मोर मुकुट मकराकृत कुंडल उर मुक्ता वनमाल।। रमक झमक झूलत पिय प्यारी सुख बरखत तिहिकाल।।२।। हंसत परस्पर इतउत चितवत चंचल नयन विशाल।। "नंददास" प्रभु की छबि निरखत विवशभई व्रजबाल।।३।।

राग-मल्हार ललित कदम्ब तरें हो झूलत।। पीय को पीतपट प्यारीको लहेरिया रमकत खरेखरे।।१।। एक भुजासों डांड़िगही लीनी एक भूजा अंस भरे।। लम्बे झोटा देत है प्यारी पुरूषोत्तम अंक भरे।।२।।

राग-अड़ानों आज लाल झुलत रंग भरे हो।। (यह पूरा पद पेज ९९ पर पढ़े।)

राग-बिहाग मोर मुकुट की लटकन मटकन झुलत।। जुगल श्याम श्यामा मिल उचक मचक जटकन हियें खटकत।।१।। चहुं दिस घन घिर जाने पिक बोलत कहुं करूं हों मनको टकन।। "रसिक" प्रीतम कटि पान गहो सीतल कदंब छांह के जटकन।।२।।

शयन में राग-कान्हरो झुलत तेरे नैंन हिन्डोरें।। (यह पूरा पद पेज ८५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े प्रेमके पर्यंक।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े।)

श्रावण कृष्ण १३

श्रृंगार – धोती पाग का।

वस्त्र – लाल रूपहरी कोरकी, कटि में धोती के ऊपर पटका, श्रीमस्तक पर लाल पाग मोर पंख के काम का कतरा, लुमक रूपहरी बादलाकी ठाड़ीलड़ आदि धराये गये है।

आभरण – नित्यानुसार-हीरा, सोने का, पन्ना के आभरण धराये गये है।

पिछवाई – चित्राम की हिन्डोरा झुलने की।

विशेष – गुलाबी साटन का झुला सजाया गया। झुलने के बाद, संध्या आरती की गई।

मंगला में राग-मल्हार आई जु श्याम जलद घटा।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-मल्हार देख सखी ठाड़े नन्द किशोर।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-मल्हार वृज पर निकी आज घटा।। (यह पूरा पद पेज ५० पर पढ़े।)

हिन्डोरा में राग-नट सुरंग हिन्डोरना हो माई झूलत रंग भरे।। तेसीये पियप्यारी पहेरें पियरों पट कसुंभी सारी ऋतु पावसघन चहुंदिशा घुमरे।।१।। तेसोई विश्वकर्मा सुघर अद्‌भुत मणिमाणिक खचित ठोरठोर रचित रूचिर भांतभांतन जरे।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधर उर हँस हँस लपटात जात सहचरी विचित्र देत झोटका खरे।।२।।

हिन्डोरा में राग-नट मुदित झुलावत अपने अपने ओसरें माई नवल हिंडोरोरी साज्यो नवल-किशोर।। नवलकसुंभी सारी ओढें नव वधूप्यारी नवभुमि हरियारी शोभित चहूं ओर।।१।। नवल गीत झूंडन गावें कंचन खंभके ढिंग तेसेई वनमें बोलत चातक मोर।। नवलघटा सुहाई वरखत थोरी थोरी बूंदे विचविच ये नवघन की घोर।।२।। राधे तन नवचूंनरि पट पीत सुंदरश्यामकें उर मणिगण खचित पटुली

बैठे एक जोर।। "कुंभनदास" प्रभु गिरिगोवर्धनधारी लाल नवरस भीजे देत मधुर-झकोर।।३।।

हिन्डोरा में राग-नट राधा के संग सुभग गिरीवरधर लाल ललित झूलत हैं ललित आनंदभर नवसुरंग हिन्डोरे।। दोऊ जन अभिराम स्यामा स्याम छबि निरख निरख सुदामिनी मानों जात हैं घनघोरे।।१।। उरपर वनमाल सोहे उपरना उडत ऊपर अरूण चारू चटकीली चूनरी रंगबोरें।। "छीत स्वामी" जलद मानों अंकुश लिये विलसत है वरखत सुख रहिजात हैं व्रजवनिता चित्त चोरें।।२।।

हिन्डोरा में राग-नट छबिलो गोपाल झूले छबिले हिन्डोरना।। छबिलेसे खंभ दोऊ डांडी चार छबिली, छबिले जराय हीरा हेम अमोलना।।१।। छबिली गोपी झूलावें छबीली हसन मुख छबिले-से बोलना।। छबिलोसो घन गाजे छबीली मुरली बाजे छबीली यमुनातट कंदब विलोलना।।२।। छबीली नवेलीकुंज छबीली मधुपगुंज छबीले प्रीतमप्यारी करें झकझोलना।। छबिलो "गोकुल पति" प्यारो गिरिधारीलाल छबीली राधासंग करत कलोलना।।३।।

शयन में राग-ईमन सेन काम की लायों सो सावन आयो।। (यह पूरा पद पेज ७८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े।)

श्रावण कृष्ण १४

श्रृंगार – मल्लकाछ–टिपाराकों

वस्त्र – लालपीला लेहरियाके रूपेरी कोरके कटि में मल्ल–काछ तथा ऊपर दोनों तरफ चार पटका। ऊपर लाल–पीला लहेरियाके तथा नीचे की तरफ हरा–सफेद लहेरिया के धराये गये है। श्रीमस्तक पर टिपारों लाल–पिला लहेरियाको तथा उसके ऊपर टिपारा को साज सफेद मोर पिछके कामको धरायो गयो है।

आभरण – नित्यानुसार हीरा–मोती के तथा नुंपुर सोने के धराये गये हैं। वेणुवेत्र हीरा जड़े हुवे धराई गई है। ठाडा वस्त्र वादली रंग के तथा पिछवाई चित्रामकी कला करते मोरों की मोरकुटी की धराई गई। शायंकाल प्रभु पिरोंजी साटन के हिन्डोरा झूले तथा बाद में आरती की गई।

मंगला में राग–मल्हार लहरिया मेरो भीजेगो वह देखो आवतहे मेह।। (यह पूरा पद पेज ९६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग–मल्हार पावस नट नट्यो अखारों श्री वृन्दावन अवनी रँग।। (यह पूरा पद पेज ५५ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय में बधाई का पद गाया जाता है।

राजभोग में राग–मल्हार मदन मोहन बन देखत अखारों रंग।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय

राग–मल्हार झूलें माई नटवर सुरंग हिन्डोरे।। (यह पूरा पद पेज ९० पर पढ़े।)

राग–मल्हार हिन्डोरे झूलत गिरीवरधारी।। लाल टिपारो सीस विराजत मल्लकाछ छबि भारी।।१।। वाम भाग सोहत राधा पेहेरे कसुंभी सारी।। झोटा देत सखी ललितादिक पवन वहत सुखकारी।।२।। बाजत ताल

मृदंग झालरी गावत सब सकुमारी।। "कुम्भनदास" प्रभु की छबी ऊपर सर्वस डारत वारी।।३।।

राग-मल्हार थेई थेई नृत्य करे, टिपारो हि सिरधरे, मल्लकाछ सोभा देत झूलत पियप्यारी।। वाम भाग राधे प्यारी, बाहें जोरे प्यारे संग, गावत हि ऊँचे सुर तान हि समारी।।१।। एक सखी झुलावत, प्यारे पान खवावत, एक सखी दरपन ले देखावत ठाड़ी।। "रसिक" प्रितम छबि निरखत तन मन धन सब डारत है वारी।।२।।

राग-मल्हार झूलत गोकुलचंद हिन्डौरे झुलावत सब व्रजनारी।। संग शोभित वृषभान नंदिनी पहेरें कसुंभी सारी।।१।। पचरंगी डोरी गुहिलीनी डांडी सरस संवारी।। "आसकरण" प्रभु मोहन झूलत गिरिगोवर्धनधारी।।२।।

शयन में राग-अड़ानों हिन्डोरोंरी व्रज के आंगन माच्यों। सुरब्रह्मदिक कौतक भूले शंकर तांडव नाच्यों।।१।। शुकसनकादिक नारद शारद मुनिजन हिन्डोरों देखन आये।। नन्द को लाल झुलावत देख्यों बहुत ढूंढ़ हम पाये।।२।। युवति युथ अटा चढ़ ठाडी अपनों तन मन वारें।। "परमानन्ददास" को ठाकुर चितचोर्यों यह कारें।।३।।

पोढ़वा में राग-मल्हार दोऊ मिल पोढ़े ऊँची अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

श्रावण वद ३०

(हरियाली अमावस्या)

श्रृंगार – पाग पिछोड़ा को

वस्त्र – सभी हरे रंग के सोनेरी कोरके। कटि में पिछोड़ा, श्री मस्तक पर हरी पाग पर सोनेरी बादला की चंद्रीका धराई है। ठाड़ा वस्त्र हरा रंग के तथा पिछवाई हरे रंग की।

आभरण – नित्यानुसार
आज तुलसी जी की माला धराई गई है।

विशेष – आज सांयकाल हरे पत्तो के सेलुघाट के हिन्डोरे में श्रीजी झुले मनोरथ सामग्री श्री गोपीवल्लभ भोग में पिस्ता के लड्डू तथा हरे रंग की सामग्री आरोगाई गई है। आज हरी-घटा का उत्सव होने से दिवालगीरी तथा चन्दवा भी हरे रंग की साटन के बांधे जाते है।

मंगला में राग-मल्हार गरज गरज रिमझीम रिमझीम बूंदन लाग्यों बरसन घन-प्रीतम प्यारी राजें रंगमहेल।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-मल्हार सखिरी हरियालों सावन आयों।। (यह पूरा पद पेज ८४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-मल्हार देखो माई सुन्दरता को बाग।। (यह पूरा पद पेज ८४ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय

राग कल्याण झुलत लाल प्रिया वृंदावन एरि हिन्डोरना।। भूषण अंग अंग पेहेर आई झूम झुन्डन गावत अनभांतन चितचोरना।।१।। तेसीये ऋतु सांवन मन भावन हरियारी भूमि रमकन पियप्यारी चोंपजोरना।। पिय "बिहारी" लाल रागरंग गावत अति आनन्द भर गरजन फूहीं वरसन घनघोरना।।२।।

राग-कल्याण झूलत स्याम प्रियासंग रंग हिन्डोरना।। (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

राग-कल्याण रमक झमक झूले झुलावें युवती राधा प्यारी को हिन्डोरें।। तेसीये कसुंभी सारी पहेरें तेसेही वरण वरण चहुंदिशा घनघोरे।।१।। याहीतें दुर दुर जात दामिनी होय संकेत तहां स्याम देखत द्युतिगात गोरें।। "कल्याणके" प्रभु गिरिधर रीझवस भये डारतहें तृणतोरें।।२।।

राग-ईमन सोहत आयोरी सांवन हरियारे।। हरित भूमि पर इन्द्रवधूसी राधिका सब सखियन संग लींने पहरें कसुंभी सारी कंचन तन।।१।। रंगभर सुरंग हिन्डोरें झूलत नवनागरी नागरमानों रंगवे चल्यो हे एड़ी अंगुरिन।। "सूरदास मदनमोहन" पियके गुणगावत ये सुखअति आनन्द मगनमन।।२।।

शयन में राग-ईमन लालन तो हों झूलों जो तुम होले होले झुलावो।। डरपत हों घन श्याम मनोहर अपने कंठलगावो।।१।। हों उतरों तुम झूलों मेरे मोहन जैसे जैसे गाऊं तेसें तेसें गावो।। "रसिक" प्रितम पिय यही विनती तनकी तपत बुझावो।।२।।

पोठवा में राग-मल्हार हरि पोढ़ो चकडोरें झुलावुं।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े।)

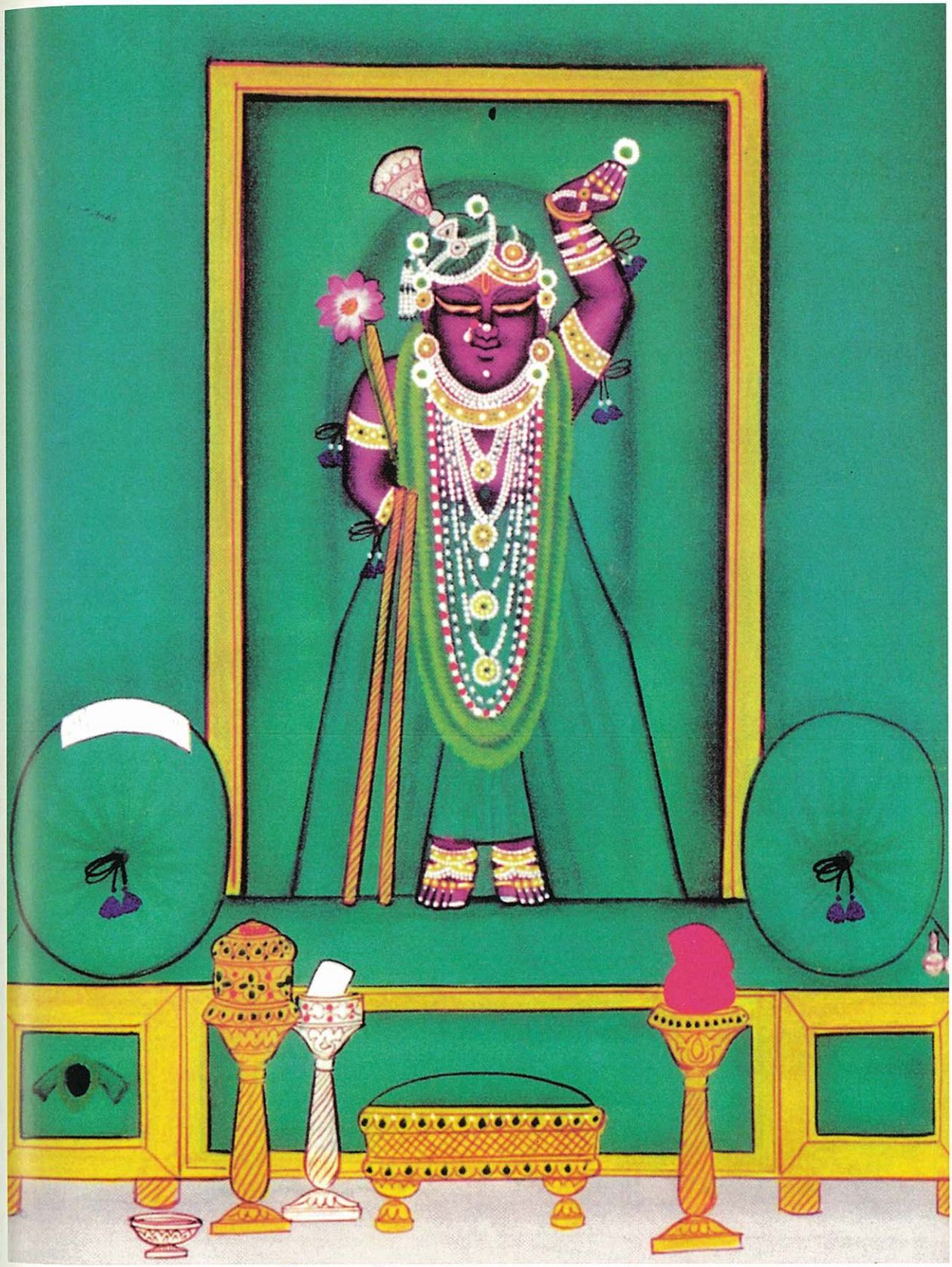

हरियाली अमावस का श्रृंगार

श्री भरत कुमार पुत्र श्री गणेशलाल जी चौहान, मुम्बई का सपरिवार का श्रीजी को दण्ड्वत जय श्री कृष्ण

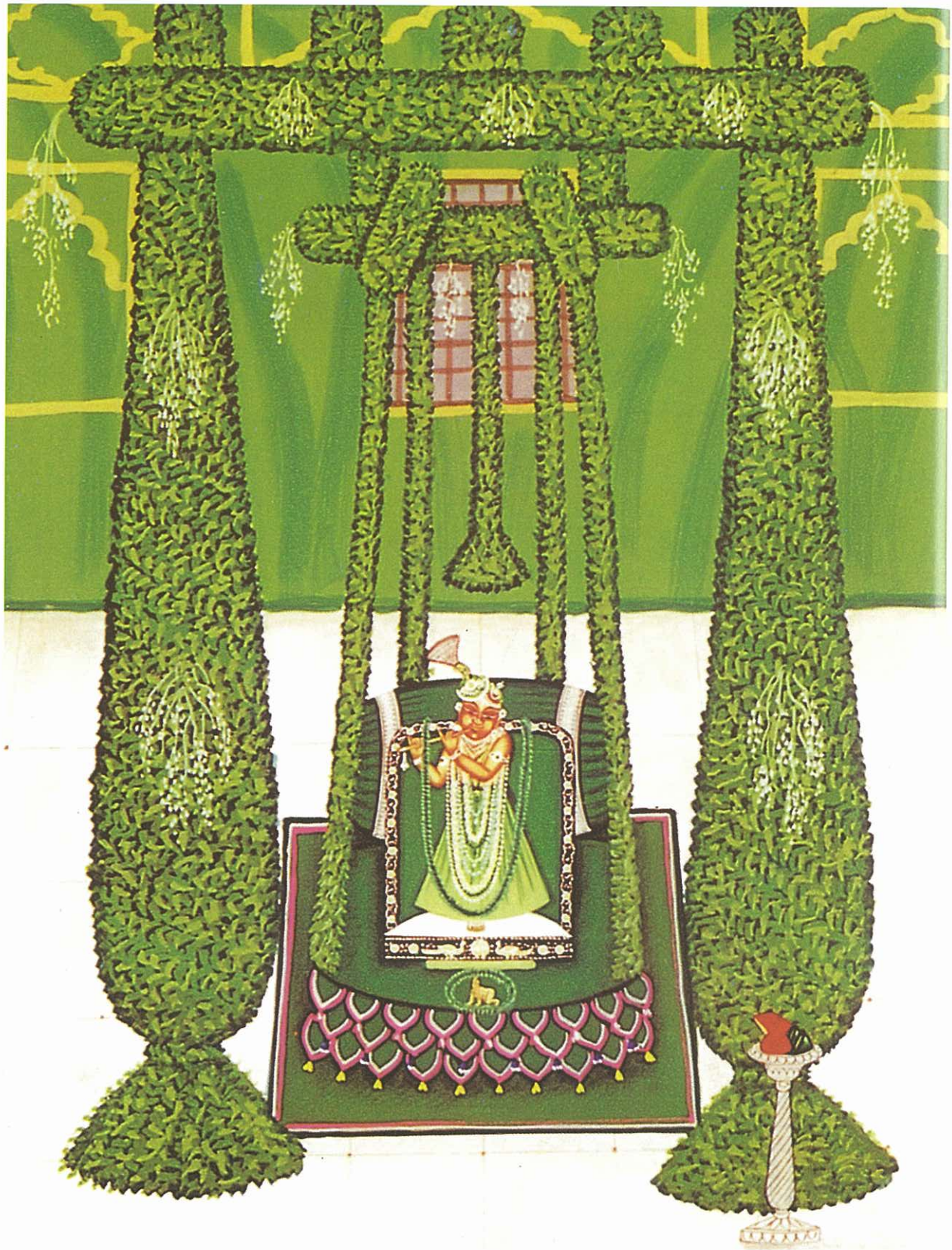

हिण्डोला दर्शन हरियाली अमावस्या

श्री प्रकाश चन्द्र परमानंदजी लोधा-नाथद्वारा का श्री जी के चरण में दण्डवत व जय श्री कृष्ण

श्रावण सुद १

श्रृंगार – पागपिछोड़ा के

वस्त्र – हरे-सफेद लहेरिया के रूपहरी कोरके, कटि में पिछोड़ा, श्रीमस्तक पर पाग तथा उस पर सफेद रेशम के काम का कतरा धराया गया है। लुमक रूपहरी बादला की धराई गई है। ठाडा वस्त्र लाल रंग के, पिछवाई हरा-सफेद लहरिया की धराई गई है। श्रीजी आज हरी मखमल के हिन्डोरना में झुले। बाद में संध्या आरती की गई।

विशेष – श्रीजी डोल तिबारी झुले की भावना से हिन्डोरा खुला रहता है तथा प्रभु अनोसर में झुले इस भावना से पास में अनोसर भोग झारी बीडा माला तबकडी में रखे जाते है।

मंगला में राग-मल्हार देखों माई सुन्दरता को बाग।। (यह पूरा पद पेज ८४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-मल्हार लहरिया मेरो भीजोगो वह देखो आवत हे मेह।। (यह पूरा पद पेज ९६ पर पढ़े।)

राजभोग में (बधाई) राग-आसावरी गावौ गावौ मंगलचार बधावौं नन्द के।। आवौ आंगन कलश साजिकें दधिफल नूतन डार।।१।। उरसों उर मिलि नन्दराय गोप सबै निहार।। मागधसूत बन्दीजन मिलिकें द्वार करत उच्चार।।२।। पायौं पूरन आस करि सब मिलि देत असीस। नन्दरायकौ कुँवर लाडिलौ जीवौ कोटि बरीस।।३।। तब ब्रजराज आनन्द मगन मन दीने वसन मंगाय।। ऐसी शोभा देखिकें जन "सूरदास" बलि जाय।।४।।

हिन्डोरा झूलते समय

राग-मल्हार ललित कदम्ब तरे हो झूलत।। (यह पूरा पद पेज १०४ पर पढ़े।)

राग-मल्हार गौर स्याम लहेरिया धारन की झूलत लहरें लेत।। पहिरे सरस हेत तेसोई श्याम उघर परो हित हेत।।१।। उफन पर्यो समसुख सागरलौं अंग दिखाई देत।। पीय मन मगन होत अभिलासन भरत मनोहर सेत।।२।। मधुर मधुर गावत मल्हार धुनि रीझत भींजत चेत।। छुटे चहुँ और बसन "आनंदघन" सरसत हैं पीय हेत।।३।।

राग-मल्हार मचकि मचकि झुले लचक लचक जात, रचक रची चित सोहे पटुली पहेरीयां। (यह पूरा पद पेज ९७ पर पढ़े।)

राग-ईमन सोहत वन आयोरी सांवन हरियारों।। (यह पूरा पद पेज ८४ पर पढ़े।)

शयन में राग-ईमन झूलों झूलों हो मन भावन तेसिये आई ऋतु सावन।। तेसेई बोलत बनमोर सुहाये तेसीये दामिनी कोंधत चहुं दिशतें तेसेई लागेरी पिक गावन।।१।। तेसेई श्याम अभिराम सजल बादर सागर लागेरी जुर आवन। तेसीये बूंदन छबि तेसीये हरित भूमि पिय अनुराग बढ़ावन।।२।। तेसोई बहेत शीतल सुगंध मंद पवन युवती अतिरस उपजावन।। तेसीये लहेलहात लता सघन वन पियढिंग ठोर बतावत।।३।। दादुर शब्द करत चहुंदिशतें सुरत सोर दुकावत।। गरजत घन स्वरघोर घुमड़कर पिय आगमन सुनावत।।४।। पहरें कसुंभी सारी नारीं जुरआई अब सब तुमही झुलावन।। कुंजमहल में सुरंग हिन्डोरों रोप्यों पियके ढिंग बैठावन।।।५।। "रसिक" प्रीतमकों यह विध भामिनी मधुरवचन कहि लागी झुलावन।। श्रीवल्लभ पदरज "वल्लभकों" दीजें पदरज पावन।।६।।

पोढ़वें में राग-मल्हार सघन घटा घन घोर न्हेनी न्हेनी बूंदन हो पिय वर्षे।। (यह पूरा पद पेज ५७ पर पढ़े।)

श्रावण सुद २

श्रृंगार – सुथन पटका, फेंटाको

वस्त्र – आज वस्त्र लाल सफेद लेहरिया रूपेरी कोरके धोराके, कटिमें सुथन तथा ऊपर पटको तथा श्रीमस्तक पर फेंटो, उसपर रूपेरी किनारी के कतरा कलंगी धराये गये है। ठाड़ा वस्त्र श्याम रंगके तथा पिछवाई लाल रूपेरी कोरकी धोराकी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष – आज प्रभु फल–फूल के हिन्डोरे में झूले तथा वापस श्रीजी के पास पधारकर आरती की गई।

मंगला में राग–मल्हार लालसिर पाग लहरिया सोहे।। तापर सुभग चन्द्रिका राजत निरख सखी मनमोहे।।१।। तेसोई चीर बन्यों लहरिया पहरें श्रीराधा प्यारी।। तेसेई घन उमड्यो चहुंदिशतें "नन्ददास" बलिहारी।।२।।

श्रृंगार में राग–मल्हार ओढ़े लाल उपरैणी झीणी।। तन सुख श्वेत सुदेश अंस पर बहुत अरगजा–भीनी।।१।। अति सुगंध शीतल उर चंदन आदि रचना कीनी।। रही धसि भ्रुव पर पाग दुपेची कोटि मदन–छबि छीनी।।२।। सूथन बनी हिरमिची शोभित गति गयंदकी लीनी। "परमानंद" प्रभु चतुर शिरोमणि व्रजवनिता रति दीनी।।३।।

राजभोग में (बधाई) राग–टोड़ी देत गज बाज आज वृजराज बिराजत गोपीन के सिरताज।। देस देस ते खटदरशन आवत मनवांछीत फल पावत किरत अपरंपार ऊंचे चढ़े दान जहाज।।१।। सुरभि तिल पर्वत अर्ब खर्ब कंचन मनि दीने, सो सुत हितके काज।। "हरिनारायण श्यामदास" के प्रभुको नाम कर्म करावन, मेहर मुदित मन बंधि है धर्म की पाज।।२।।

हिन्डोरा झूलते समय

राग-ईमन रमक झमक झूलन मे ठमक मेह आयो, नहि सुरझत वातनतें।। (यह पूरा पद पेज ८५ पर पढ़े।)

राग-मल्हार सुखद वृन्दावन सुखद कालिंदी कूल श्यामा स्याम हिन्डोरे झूलना।। तेसीय घनघटा कारी तेसीय भुमि हरियारी तेसेंई केकी कीर मीठे मृदु बोलना।।१।। तेसीय राधाप्यारी पहिरें कुसुम्बी सारी गिरधर कंठ सोहे कसुंभी चोलनां।। "कृष्णदास" बलिहारी छबि पर वार डारी गावत मल्हार तान सिंधु की झकोरना।।२।।

राग-जैजैवंति घनघटा वनघटा अलीघटा आलिघटा, झुलत है दोऊ रूप रंग की घटन में।। बंसीवट शुभघटा तहां नाचे मोर नटा, रोप्यो है हिन्डोरो घटा कदंब जपटन में।।१।। खंभ द्युति घटा ओर पास है दामिनी घटा, भूषण हे घटा कदंब झपटनमें। हाव घटा भर झोटा देत आगे पाछे घटा, ओर श्याम अंग घटा शोभाकी छटन में।।२।। स्वर हें संगीत छटा झील घेर मध्य घटा, गरजत संगीत गाजे रागकी रटनमे।। "कल्याण" के प्रभु गिरिधर हास सुख सुविलास घटा सजनी देखियत यमुना पुलिनमें।।३।।

राग-केवारों सोतु राखलेरी झोटा तरण भये।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

शयन में राग-बिहाग लाल मुनीन के झुन्डन झुलन आई एहों हिन्डोरे।। (यह पूरा पद पेज ९९ पर पढ़े।)

पोढ़वे में राग-मलार आज झुमि झुमि आई हो घनघटा।। नेक रहो सुन्दर वर सोई पोढ़ रहो वृषभान अटा।।१।। श्यामाजु की सुख सेज पोढ़िये निपट अंधेरी रेन महा बिकट।। "चतुर बिहारी" पिया गिरिधारी ने तब प्राण करी एकता।।२।।

श्रावण सुद ३
(श्रीठकुराणी तीज)
देहरी बन्दनमाल तथा अभ्यंगस्नान

श्रृंगार – पाग-चन्द्रिका को।

वस्त्र – लाल चौफूली चुन्दड़ी के सुनहरी कोरके, कटिमें पिछोड़ा श्रीमस्तक पर पाग पर सादा मोरकी चन्द्रिका, लुमक पन्ना की धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र पीला रंग के तथा पिछवाई चुन्दड़ी की सुनहरी कोरकी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार, हीरा पन्ना के भारी श्रृंगार धराया गया है।

विशेष – आज प्रभु कांचके हिन्डोरना में आज दिवालगीरी तथा चंदुआ रेशम भरत कामके कलात्मक धराये गये है। निकुंज लीला की भावना के तथा सामग्री में गोपीवल्लभ भोग में चारोली के लड्डू-मोटा गुंझा तथा सखड़ी में सेव बिलसारू। आज सांय अनोसर में बिछात सुन्दर की गई।

मंगला में राग-मल्हार लाल मोरी सुरंग चूनरी देहो।। मदन मोहन पिय झगरो कोने वधो, अपनों पीतपट लेहु।।१।। तुम व्रजराज कुमार कोन डर, हों कहा कहूंगी गेह।। "गोविंद" प्रभु पिय देहु बेगी, अब आवत चहुंदिशतें मेह।।२।।

श्रृंगार में राग-मल्हार श्याम सुन नियरे आये मेह।। भीजेगी मेरी सुरंग चूनरी, ओट पीताम्बर देह।।१।। दामिनी देख डरपत हों मोहन निकट आपुने लेह।। "चतुर्भुजदास" लाल गिरिधर सों बाढ्यों अधिक सनेह।।२।।

राजभोग में राग-मल्हार सारी मेरी भीजत हे जु नई।। अबही प्रथम पहेर हों आई पिता वृषभान दई ।।१।। अपनो पीताम्बर मोही उढ़ावो वरखा उदित भई।। सुंदर श्याम जायगो यह रंग बहुविध चित्र ठई।।२।। कहियों कहा जाय घर मोहन डरपत हों अतिई।। "कुंभनदास" प्रभु गोवर्धनधर मुदित उछंग लई।।३।।

श्रीजी के वेणुजी झुले तब राग धनाश्री राधेजु देखिये बन शोभा -जहां तहां प्रफूलित वनजुही।। मानो फूलन अलके गुही।। पीत अरून रंग फूले फूल।। मानों सोहत अंग दुकूल।। वरखा रितु अति कुन्ज सोहाय।। जहां तहां कोकिल कल गाय।। शब्द परस्पर बोलत मोर।। देखन कुं मेरे नेन चकोर।। पवन गवन अति चंचल पात।। हरित अरून अनुराग चुचात।। हिलत लता लतामें जात।। मानों मिली करत तिहारी बात।। फूली डारे मधुप उडावत।। लता माननी मधुप मनावत।। उतकंठासु तुमही बुलावत।। डोलत पवन निषेद उपावत।। श्री वृन्दावन भूमि हरि हरी।। इन्द्रवधु डोलत रंग भरी।। मानो बोये काम के बीज।। तुम झुलों सुख सावन तीज।। श्री राधा यों कहत गुपाल।। बसिये आज कुंज-व्रजबाल।। "सूरदास" मनमोहन स्याम।। मिली विलसो दोउ सुख अभिराम।।

हिन्डोरा झूलते समय (राग-मल्हार)

आलीरी सावन तीज सुहाग।। देखवन घन हरित बेली होत है अनुराग।।ध्रु.।। तहां लाडिली वृषभानतनया सजे सकल सिंगार।। सुभग तन पचरंग चुनरी केसर आड लिलार।। तेसीये षटदश बरसकी सखी बनीरें इकसार।। चलिये वर हिन्डोरें झुलन राय के दरबार।।१।। सुरंग नयनी चंदवदनी चलत मत्त गज चाल।। विहंस मधुरें बोल बोलत करत बहुविध ख्याल।। गावत सावन गीत प्रमुदित सुनत श्रवण रसाल।। चपल चतुर दृग चलनसों मोहिये नन्दलाल।।२।। झुलत नवल किशोर दोऊ बनि अद्भुत जोर।। देत झोटा प्रेम रस-भर सहचरी चहूंओर।। लालगिरिधर रस भरे रसकेलि सिंधु झकोर।। कमल लोचन विहस चितवत "दास" जन की ओर।।३।।

नई ऋतु सावन तीज सुहाई, हिन्डोरें झुलन आई।। कुंज कुंजतें निकसी, हरीभूमि अरून वरण, मानों इन्द्रवधूसी श्यामाजू रहसि बुलाई।।१।। अपने अपने मेल सबे मिल गावत राग मल्हार रूचिर मनभाई।। "हरिदासके" स्वामी श्यामा कुंजविहारी आपुन रीझ रिझाई।।२।।

स्व. श्रीमती शकुन्तला–जयन्तीलाल पारख का सपरिवार दण्डवत व जय श्री कृष्णा

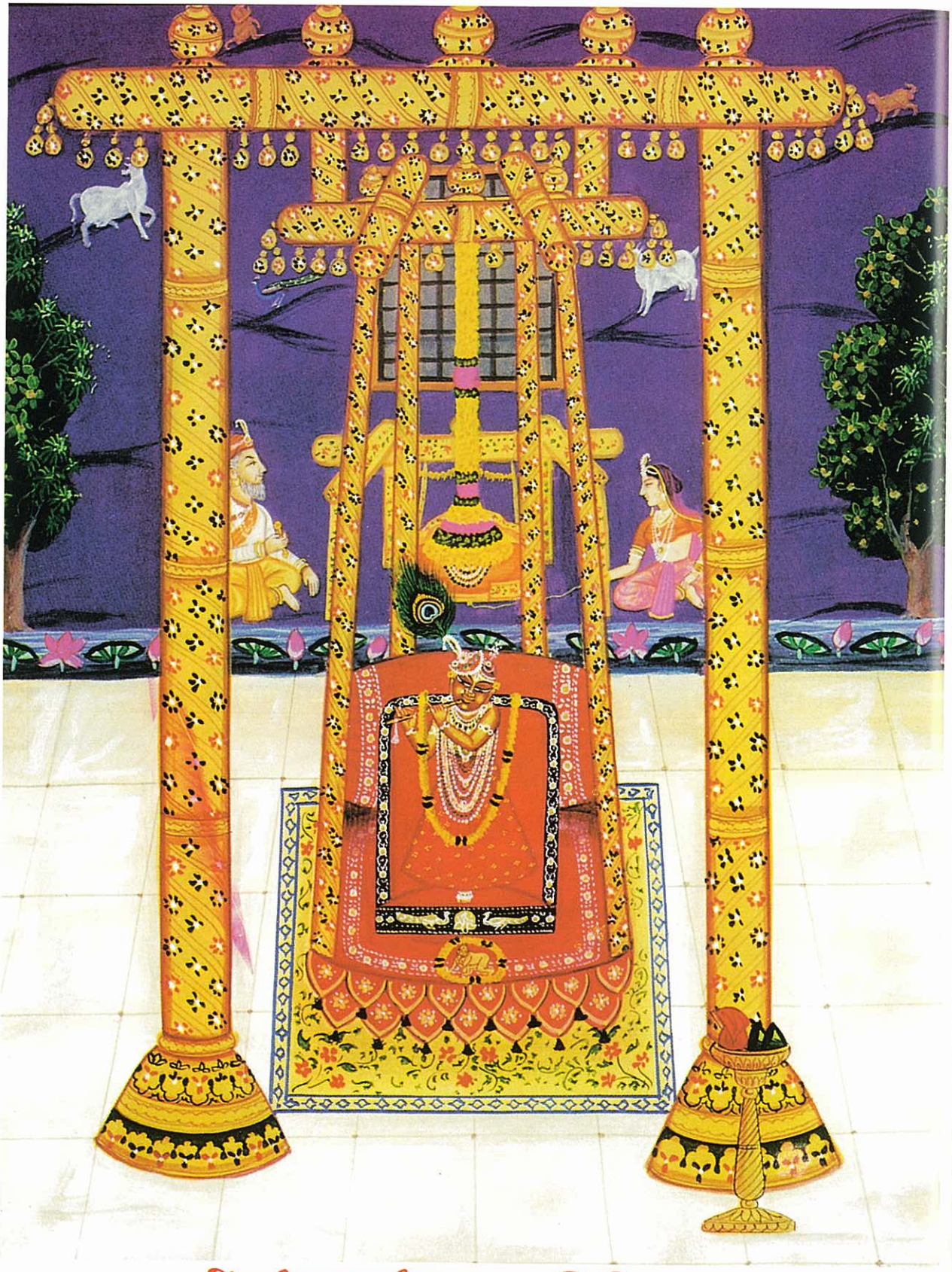

हिण्डोला दर्शन ठकुराणी तीज

श्रीमती जीतु भाई गांधी दादर मुम्बई का श्री जी के चरणों में दण्डवत व जय श्री कृष्ण

आज सुद सावन तीज सुहाई।। कर श्रृंगार अपने गृह गृहते नंद भवन जुरी आई।।१।। जुवति युथ मध्य राजत राधा अवलोकनी सुखदाई।। केसरी खोर विराजत भ्रूवपर मृगमद बेंदी लाई।।२।। आभूषण विधविध के शोभित अंग अंग झलकाई।। गोरे तन पेहेरे लाल चुंनरी यह छबि की अधिकाई।।३।। व्रजरानी आदर दे बोली खेलों झुलों माई।। मेरों कुंवर कन्हैया झूलें तुम संग झूलों जाई।।४।। बेठी जाय हिन्डोरे राधा गावत पिय मन भाई।। "रसिकराय" प्यारी संग झूलत पुलकी प्रेम लपटाई।।५।।

सावन की तीज हिन्डोरे झूलै राधा प्यारी, सुनिकै मनमोहन आये है झूलनी।। सखी भेष किये श्याम आये प्रान प्यारी पास अंग-अंग भूषन बैनी भरी फूलनी।।१।। नैननि काजर सोहे देखत त्रिभुवन मोहे तापर वैसर की मुक्ता की झूलनि।। "सूरदास" प्रभु नारी रूप किये प्यारी संग झूलत जमुना के कूलनि।।२।।

शयन में राग-अडानो रंग हिन्डोरना झूलत राधा सब सखिन संग, बनठन प्राण प्यारो देखवेकुं आयो।। जाके अंग संग कोटि कोटि सचु पईयत, ललिता अपनी प्यारीके संग झुलायो।।१।। सावनतीज सुहाई भई दुहुंन के मन भाई, प्रथम समागम आनन्द घुमड़ायो। घन दामिनीसी देह वरसन लग्यों मेह, दोऊ रूपरास सबहीको जिय जिवायो।। वे हरख हरखकें झुलावे जब नन्दलाल डरपन लागे, ओर अति सचुपायो।। कहिं "भगवान हित रामराय" प्रभु प्यारीं झुलि रतिमानी, सुख सिन्धु बढ़ायो।।३।।

पोढ़वा में राग-मल्हार हरि पोढ़ों चकडोरे झूलावुं।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े।)

श्रावण सुद ४

श्रृंगार – मल्लकाछ टीपारा का

वस्त्र – लाल तथा श्याम चूंदड़ी के रूपेरी कोर के, कटि में मल्लकाछ उपर दोनो तरफ दो दो पटका उपर लाल एवं नीचे श्याम चूंदड़ी के सुनहरी कोर के। श्री मस्तक पर टीपारा रेशम व जरी का तथा पिछवाई चित्राम की माखन चोरी करते हुऐ की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार

विशेष – सांयकाल आज प्रभु विविध प्रकार की सामग्री आरोग कर फूल के हिन्डोरे में झूले।

मंगला में राग–मल्हार लाल ओर ललनांजू बांह जोटी उठे प्रातः पवन लगत कमल लपटात।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग–मल्हार पावस नट नट्यों अखारो वृन्दावन अवनी रंग।। (यह पूरा पद पेज ५५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग–मल्हार मदन मोहन बन देखत अखारों रंग।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय (राग–जैजेवन्ती)

माई फूलकों हिन्डोरो बन्यों फूल रही यमुना।। फूलन के खंभ दोऊ, फूलनकी चौकी बनी हीरा जगमगना।।१।। फूले अति बंशीबट फूलेहें यमुनातट सब सखी मिलगावें मनभयो मगना।। फूलीं सखी चहुं ओर झुलवत थोरेंथोरें "नन्ददास" फूले जहां मन भयो ललना।।२।।

माई झूलत नवललाल झुलवत व्रजबाल, कालिंदीके तीर माई रच्यों हे हिन्डोरना।। तेसेईं बोलेरी मोर क्रीड़ा करें चहूं ओर, तेसोई मधुर ध्वनी लाग्यों घनघोरना।।१।। तेसेई फूलेरी फूल हरत मनके शूल, अलिगण गुजें माई मनके सलोलनां।। "नन्ददास" प्रभुप्यारी जोरी अद्भुत भारी देखवोई कीजे जेसें चन्द्रकों चकोरना।।२।।

माई फूलको हिंडोरो बन्यो फूल रही यमुना।। फूलन के खंभ दोऊ डांडी चार फूलनकी, फूलन बनी मयार फूल रहे वियना।।१।। तामें झूले नंदलाल सखी सब गावें ख्याल, बायें अंग राधा प्यारी फूल भई मगना।। फूले पशुपंछी सब देख ताप कटे तब, फूले सब ग्वालबाल, कटे दुःख द्वन्दना।।२।। फूली घन घटा घोर कोकिला करत रोर, छबि पर वार डारो कोटि अनंगना।। फूले सब देव मुनि ब्रह्मा करे वेद ध्वनी, "नंददास" फूले तहां करे बहुरंगना।।३।।

माई आज तो हिन्डोरे झूलें छैया कदम्बकी।। गोपी सब ठाड़ी मानों चित्र के सदनकी।।१।। देखत रंगीले नयन बोलत मधुर बेन मोहे सब कोटी काम छबीले वदनकी।। गावत मधुर ध्वनी मोहे सुरनर मुनि शंकर से महायोगी तारी छुटी तिनकी।।२।। त्रिविध समीर जहां बंसीवट झूले तहां, मंद मंद गावे सखी राधाके रवन की।। "नन्ददास" प्रभु जहां ललिता झुलावे तहां, भई है मगन शोभा देख श्याम घनकी।।३।।

शयन में राग–अडानों हिन्डोरोरी व्रज के आंगन में माच्यो।। वृन्दावनकी सघन कुंजमें जहां तहां रग राच्यों।।१।। व्रजकी नारि सबे जुरी आई गावतहें सुर सांच्यों।। "रसिक" प्रीतम की बानिक निरखत शंकर तांडव नाच्यों।।२।।

पोढ़वा में राग–मल्हार यह सुनि पिया पें आई।। (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े।)

श्रावण सुद ५
(नाग पंचमी)

श्रृंगार – पाग पिछोड़ा को।

वस्त्र – बादली रंग के रूपेरी कोरके, कटि में पिछोड़ो। श्रीमस्तक पर पाग पर नागफणी कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र लाल रंग के तथा पिछवाई चित्राम की जिसमें श्रीजी की भुजाका प्राकट्य हुवा है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष – आज प्रभु सायंकाल मोतीके कामके हिन्डोरे में झूलें, बादमें श्रीजी के पास पधारने पर आरती की गई। सामग्री में श्री गोपीवल्लभ भोग में मनोहर के लड्डु आरोगाये गये।

मंगला में राग–मल्हार बोले माई गोवर्धन पर मुरवा।। (यह पूरा पद पेज ४२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग–मल्हार गोवर्धन पर्वत के ऊपर परममुदित बोलत हैं मोर।। (यह पूरा पद पेज ४१ पर पढ़े।)

राजभोग में राग–आशावरी देखो अद्भुत अवगत की गति कैसो रूप धर्यो हे हो।। तीन लोक जाके उदर वसतहें सो सूपके कोने पर्यो हे हो।।१।। नारदादी ब्रह्मादिक जाको सकल विश्वसर सांधे।। ताको नार छेदत व्रजयुवती बांटी तगासों बाधें।।२।। जा मुखको सनकादिक लोचत सकल चातुरी ठाने।। सोई मुख निरखत महरी जसोदा दूध लार लपटाने।।३।। जिन श्रवनन सुनी गजकी आपदा गरूड़ासन विसराये।। तिन श्रवननि निकट जसोदा गाये और हुलराये।।४।। जिन भुजान प्रहलाद उबार्यो हिरनाकुस उर फारे।। तेइ भुज पकरी कहत व्रज गोपी नाचों नेक पियारे।।५।। अखिल लोक जाकी आस करत हैं सो माखन देखी अरे है। सोई अद्भुत गिरवहहूं ते भारे पलना मांझ परे है।।६।। सुरनर मुनि जाको ध्यान धरत है शंभु समाधि न टारी।। सोई प्रभु "सूरदास" को ठाकुर गोकुल गोपबिहारी।।७।।

हिन्डोरा झूलते समय (राग-मालव)

झूलत सुभग हिन्डोरें गिरिधर गोवर्धन पर्वत के ऊपर।। (यह पूरा पद पेज ८१ पर पढ़े।)

झूलत लाल गोवर्धनधारी, शोभा वरणी न आवे हो।। (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

झूलत हैं राधा सुन्दरवर सांवन सरस हिन्डोरें।। (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

गृह गृहते आई व्रज सुन्दरि झूलत सुरंग हिन्डोरे।। (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

शयन में राग-केदारो ओल्हर आई हो घन घटा हिन्डोरें झूलत हैं श्यामा श्याम।। कंचनखंभ जटित डांडी, पटुली लर मोतीवारी, पीतवसन फहरात भृकुटी, जीते कोटि काम।।१।। बनीहे अद्‌भुत जोरी, उपमाकों दीजें कोरी, झोटा देत मिल व्रजकी वाम।। आनन्द बाढ्यों ठोरठोर नाचत हें मोरी-मोर यह सुख निरख निरख, "सूर" पायोहे सुखधाम।।२।।

पोढवा में राग-मल्हार सघन घटा घनघोरे, न्हैनी न्हैनी बुंदन हो पिय बरसे।। (यह पूरा पद पेज ५७ पर पढ़े।)

श्रावण सुद ६

श्रृंगार – ग्वाल पगाको

वस्त्र – लाल चुन्दड़ी के रूपहरी कोरके कटि में पिछोड़ा। श्रीमस्तक पर ग्वालपगा पर रूपेहरी जरी के कामकी मोरशिखा धराई गई है। लुमक रूपहरी वादलाकी, ठाड़ा वस्त्र वादली रंग के तथा पिछवाई चुन्दड़ी की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार पन्ना व मोती के धराये गये है।

विशेष – आज सायंकाल प्रभु वादली रंगकी मखमल पर जरी के काम के हिन्डोरना में झूलें।

मंगला में राग–मल्हार भींजत कब देखों इन नयना।। (यह पूरा पद पेज ७४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग–मल्हार लाल मोरी सुरंग चूनरी देहूं।। (यह पूरा पद पेज ११५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग–मल्हार सखिरी वृज को वसिवो नीकों।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय

राग–केदारों झूलत नवरंग संग, राधिका गिरिधरनचन्द, सहचरी दुहुं ओर ठाडी, आनन्द भर गावें।। सप्तस्वरन रागरंग, झपताल मिली मृदंग, उघटत वर सुघर तान, भामिनी जीय भावें।।१।। वृन्दावन यमुनातीर, कूजत पिक मोर कीर, मंदमंद गरजत घन, मेघ फुंही आवें। ब्रह्मादिक शिव सुजान, मोहे सब सुर विमान, पोहोपन वृष्टि करत सबे, "गोविंद" जीव भावें।।२।।

राग–नट सुरंग हिन्डोरना हो माई, झूलत रंग भरे।। (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

राग–नट मुदित झूलावत अपने अपने ओसरें, माई नवल हिन्डोरेरी साज्यों नवलकिशोर।। (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

राग–नट राधेके संग सुभग गिरवरधर लाल ललित झूलतहें आनन्द भर नवसुरंग हिन्डोरे।। (यह पूरा पद पेज १०६ पर पढ़े।)

शयन में राग–कान्हरौ (बधाई) यह धन धर्महि तैं पायो।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

रानी तेरो भाग्य सबन से न्यारो।। जायो पूत सपूत सुलक्षन कुलदिपक उजियारो।।१।। गोद लिये हुलसत गावत उर लावत अति पयारो। "परमानंद" चिर जीयो लाडिलो गोकुल अंखियन तारो।।२।।

पोढ़वे में राग–मलार दोऊमील पौढ़े ऊँची अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

श्रावण सुद ७

(बगीचे का उत्सव)

श्रृंगार – मुकुट कांछनी का।

वस्त्र – लाल धनक के लहरिया के, सोनेरी कोर के शुथन कांछनी, श्रीकंठ में गाती का पटका तथा श्रीमस्तक पर पाग पर सोनेरी डांक का मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई चित्राम की जिसमें निकुंज में बड़े-बड़े मोर कला कर रहे है, धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार

विशेष – आज सायंकाल श्रीजी के नीज मंदिर में कुंज सिध्द की गई तथा फूल के हिन्डोरा में प्रभु झूलें। सामग्री पहले बगिचा में भोग आये गुंजा कचोरी, बासुंदी, दलिया की खीर तथा दूधघर व साकघर की सामग्री आरोगाई गई।

मंगला में राग-मल्हार राधे रूप की घटा पोषत चालक मदनगोपाले।। दामिनी वारों दशनन ऊपर छुटी अलकन पर धुरवा बारों वग पंगति मुक्तामालें।।१।। इन्द्रधनुष पचरंग सारीपर वारड़ारों ओर यावकपर बूढ़नलाल।। "जनभगवान" मदन मोहन पर तनमन पिक वारूं सुन सुन वचन रसाल।।२।।

श्रृंगार में राग-मल्हार अरी इन मोरनकी भांत देख नाचत गोपाला।। (यह पूरा पद पेज ६३ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-मल्हार एरी यह नागर नन्दलाल कुंवर मोरन संगनाचें।। (यह पूरा पद पेज १०३ पर पढ़े।)

श्रीवृन्दावन भुवि कुन्दादिक युत मंदानिल रूचिरे।।ध्रु।। पुलिनोदित नवनलिनोदर मिल दलिनोदित रसगाने।। (यह पूरा पद पेज ७५ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय

राग-मल्हार फुल हिन्डोरना झुले वृषभान कुमारी।। ललितादिक सब फूल झुलावे देत हैं तन मन वारी।।१।। डांडी फूल खंभ फूलन के मरूवे

फूल बनाये। धरनी फूल पर रच्यों हिंडोरो फूलनी बादर छाये।।२।। सब आभूषन पहन फूलके श्रीराधा मन फूली।। प्रफुलित भ्रमर गुंजार करत है दामिनी दमकन भूली।।३।। गूंथे कच फूलनसों भोंह पर सीलफूल सिर राजे।। फूलन मांग झिबी झिबी फूलन फूल झालर अति छाजै।।४।। टीकी फूल फूलनकी बैसर फूलनी बारी सोहे।। माला फूल हार फूलनकी दुलरी फूलन मोहे।।५।। बाजुबंद फूलनके बांधे चूरी फूल सुहाई।। कंकन फूल रहे कर उपर फूल मुदरिया भाई।।६।। सारी फूल फूलनको लहेंगा अगिया फूल बिराजे।। बेनी फूल रही कटि उपर निरख अहिपति लाजे।।७।। जेहर फूल फूलनकी पायल फूल अनवट छबि भारी।। कमलफूल पद फूलनी बिछिया "सूरदास" बलिहारी।।८।।

राग–जयजयवंती माई फूल को हिन्डोरो बन्यो फुल रही यमुना।। (यह पूरा पद पेज ११९ पर पढ़े।)

राग–जयजयवंती माई आज तो हिन्डोरे झुले छैय्यां कदम की।। (यह पूरा पद पेज ११९ पर पढ़े।)

राग–जयजयवंती माई झुलत नवललाल झुलावत व्रजकी बाल कालिंदी के तीर माई रच्यों है हिन्डोरना।। (यह पूरा पद पेज ११८ पर पढ़े।)

हिन्डोरना (भोग में) राग–मारू निज सुख पुंज वितान कुंज हिन्डोरना, झूलत श्याम सुजान।। संग श्यामाजु परमप्रवीन, जाके सदा रसीक आधिन।।ध्रु.।। कंचन खंभ पेचवां बड़ेंडी जटित जराउ सगरी।। पन्ना खचित पिरोजा विचविच कनक कलश जगमगरी।।१।। गजमोतिन सों डांडी गूंथी चौकी चमक सुरंगी।। रमकत झमकत गहे गहे लटकत मोहन मदन त्रिभंगी।।२।। मरूवे बेलन ध्वजा झालरी द्युति गहरी विस्तरणी।। चोंकारत झोटनमें मानों कोकिल शब्द उच्चरणी।।३।। चहूंओर द्रुमवेली फूली लता सघन गंभीर।। रमकत दमकत घन दामिनी सी झलमल यमुना नीर।।४।। सारस हंस चकोर चातक पिक नेहधरे सब पेठे।। गुल्मलता द्रुमतनक न दीसत एसें जुरजुर बैठे।।५।। विजय सुभाव किये धन संपति उल्हर विपिन पर आए।। गरजत तरजत मधुर मधुर धुनी केकी शब्द

सुहाये।।६।। सहचरी गान करत ऊँचे स्वर श्रीवृन्दावन गाजे।। मधुरमंजीर गगन उघटत सम सुभट पखावज बाजे।।७।। निलाम्बर पहेरे नवनागरी लाल कंचुकी सोहें।। भींज गई श्रम जल सों उरजन प्रीतम को मन मोहे।।८।। लट सगमगी सलोल बदन पर शीश फूल उलटानों।। प्रीया की चोकी गिरिधर को चन्द्रहार अतिशोभित अरूझानो।।९।। दृगरसाल रसभरी भ्रोंहसों हंस हंस अर्थ जनावे।। दुरन मुरन में चित करषत है लालची मन ललचावे।।१०।। फैल रह्यो सौरभ सगरे सखि कुमकुम कृष्णागरको।। कहाँलो कहो मत्त भयो बरनों भाव "गदाधर" उरको।।११।।

राग-अडानों आज लाल झुलत रंग भरे हो।। (यह पूरा पद पेज ९९ पर पढ़े।)

राग-अडानों हिन्डोरोरी व्रज के आंगन माच्यो।। (यह पूरा पद पेज ११० पर पढ़े।)

राग-केदारों झुलत दोऊ कुंज कुटिर।। कंचन खंभ हिन्डोरें बिराजत तरणी तनयातीर।।१।। मुकुलित कुसुम मल्लिका प्रफुल्लित रूचि दायक तहां वहत समीर।। सारस हंस चकोर मोर खग बोलत कोकिला कीर।।२। मधुरे स्वर गावत केदारों वृषभान सुता बलवीर।। "गोविन्द" प्रभु गिरिराजधरन पिय सुरत सुभट रणधीर।।३।।

राग-केदारों सोतु राखलेरी झोटा तरण भये।। (यह पूरा पद पेज १०२ पर पढ़े।)

शयन में राग-बिहाग झुलेरी झुलेरी झूलें प्यारो लाल झूलें।। सुरंग हिंडोरे रोप्यों यमुनाके कूलें।।१।। तेसीये सुहाई लागे द्रुमलता फूलें।। "रसिक" प्रीतम देखें गई उर सूलें।।२।।

पोढ़वा में राग-मल्हार यह सुन वचन पिया पे आई।। (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े।)

श्रावण सुद ८

श्रृंगार – मुकुट कांछनीका।

वस्त्र – पिला निम्बु रंग के, रूपेरी कोरके, शुथन तथा कटिमें काछनी, बड़ा-पटका तथा श्रीमस्तक पर पिरोंजा के कामका मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई चित्राम की हिन्डोरा झूलनेकी लीला की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये।

विशेष – सांयकाल प्रभु मनोरथी सामग्री अरोगकर फूलके हिन्डोरा में झूले।

मंगला में राग-मल्हार लाल ओर ललनाजू बांह जोटी उठे प्रातः पवनलगत कमल लपटात।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल (बधाई) नन्दराय के नवनिधिआई।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-मल्हार माईरी श्याम घन तन दामनी दमकत पिताम्बर फरहरे।। (यह पूरा पद पेज ६४ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय

राग-जेजेवन्ती आज तो हिन्डोरे झुले छैय्या कदम्ब की।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

राग-कान्हरौ झुलत तेरे नैन हिन्डोरे।। (यह पूरा पद पेज ८५ पर पढ़े।)

राग-केदारो ओल्हर आई हो घन घटा हिन्डोरे झुलत है श्यामा श्याम।। (यह पूरा पद पेज १२१ पर पढ़े।)

राग-बिहाग झूलत दोउ लालन गिरवरधारी।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

शयन में राग-अडानो आज लाल झूलत रंग भरे हो।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-मल्हार दोऊ मील पोढ़े ऊँची अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

श्रावण सुद ९

ति. श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत सात स्वरूप का उत्सव

श्रृंगार – गऊकर्ण घेराकों।

वस्त्र – केसरिया रूपहरी कोरके सुथन तथा कटि में गोल काछनि तथा श्रीमस्तक पर गऊकर्ण गुलाबी रंग का, घेरा सोनेरी बादला रंग का रूपेरी ठेकड़ाको, वेणीश्याम हीरा मोतीकी धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र वादलीरंग का तथा पिछवाई सातों स्वरूप तथा सातों बालकों की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार भारी श्रृंगार धराया गया।

विशेष – आज प्रभु केशरिया साटन के झूलें में बिराजे। आज सातो स्वरूप के उत्सव पर (१) श्री मथुराधिशजी (कोटा) (२) श्री विट्ठलनाथजी (नाथद्वारा) (३) श्री द्वारकाधिश (कांकरोली) (४) श्री गोकुलनाथजी (गोकुल) (५) श्री गोकुल चंद्रमाजी (कामवन) (६) श्री मुकुन्दरायजी (काशी) (७) श्री मदनमोहनजी (कामवन) की पिछवाई धराई गई है।

मंगला में राग–देवगंधार यह सुख देखौ री तुम माई।। (यह पूरा पद पेज ९८ पर पढ़े।)

श्रृंगार में, राग–मल्हार पावस नट नटयो अखारो वृंदावन अवनी रंग।। (यह पूरा पद पेज ५५ पर पढ़े।)

राजभोग में (बधाई) राग–सारंग विहरत सातों रूप धरें।। सदा प्रकट श्रीवल्लभनंदन, द्विजकुल भक्ति वरें।।१।। श्रीगिरिधर राजाधिराज, व्रजराज उद्योत करें।। श्रीगोविन्द इन्दु जग किरणन, सींचत सुधा धरें।।२।। श्री बालकृष्ण लोचन विशाल, देख मन्मथ कोटि डरें।। गुण लावण्य दयाल करूणानिधि गोकुलनाथ भरें।।३।। श्री रघुपति यदुपति

श्रावण शुक्ला अष्टमी श्री सात स्वरूप का उत्सव

पं. भोलेशंकर बटुकनाथ चौबे मथुरा का दण्डवत व जयश्री कृष्ण

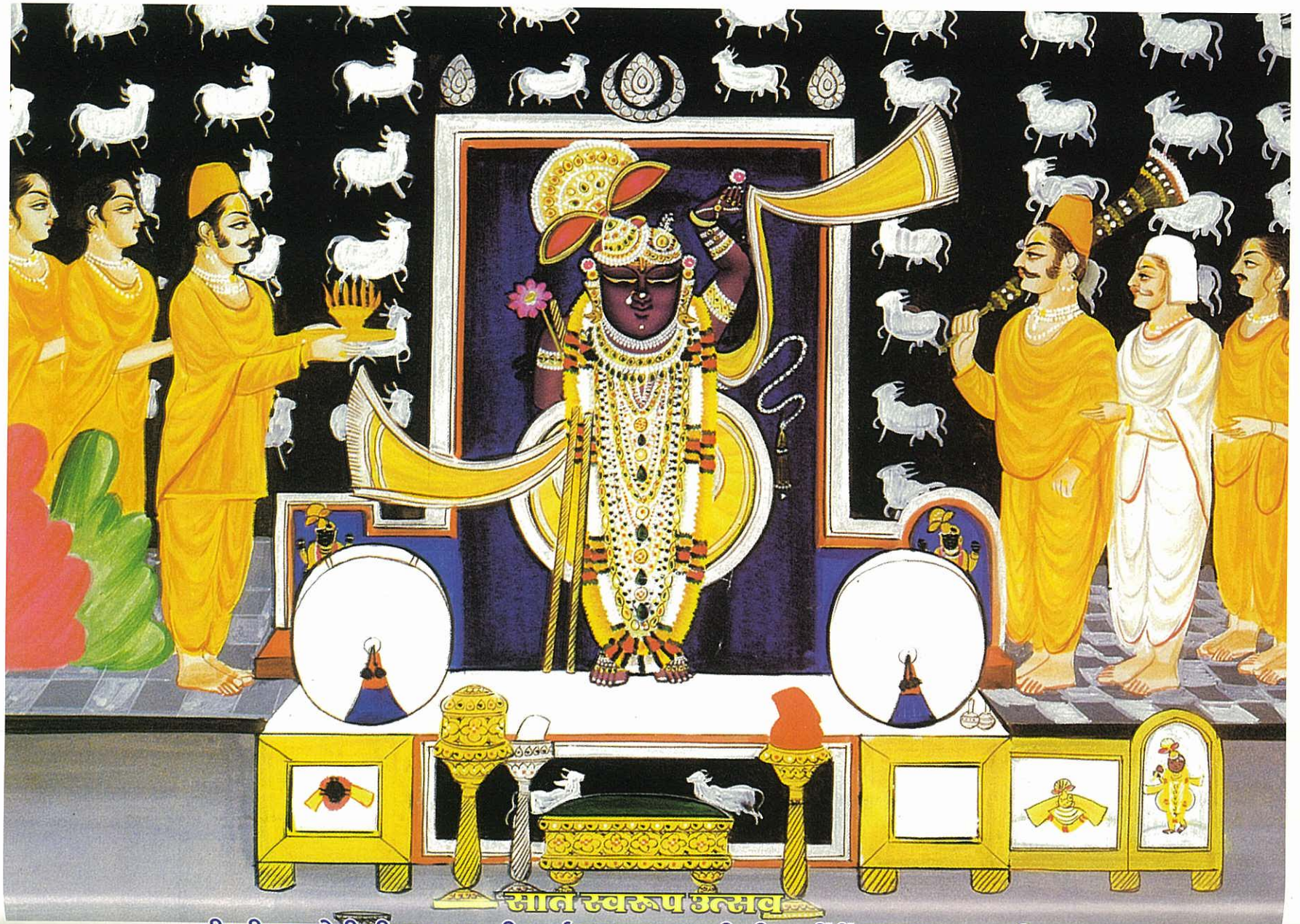

श्रीमती सूरजदेवी श्री दाऊलालजी शर्मा नाथद्वारा का श्री जी चरणों में दण्डवत व जय श्री कृष्ण

घनसांवल मुनिजन शरण परें।। "छीतस्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल जिहिं भज अखिलतरें।।४।।

हिन्डोरा झूलते समय (राग-मल्हार)

झुले माई नटवर सुरंग हिन्डोरे।। (यह पूरा पद पेज ९० पर पढ़े।)

थेई थेई नृत्य करे टिपारो हि सिरधरे मल्लकाछ सोभा देत झूलत पिय प्यारी।। (यह पूरा पद पेज १०८ पर पढ़े।)

हिन्डोरे माई झुलत गिरिवरधारी।। (यह पूरा पद पेज ९० पर पढ़े।)

गोकुलचंद हिन्डोरें झुलत नटवर भेष किये।। शोभित तीन चंद्रका माथे मुरली करही लिये।।१।। कुसुंभी पाग सुरंग पिछोरा मुक्तामाल हिये।। रमकी रमकी झूलत राधा संग व्रजजन सुखही दिये।।२।। निरखी निरखी झूलति व्रज सुन्दरी यह सुख नैन पिये।। श्री विट्ठलगिरिधरन लाल की यह छबी देख जिये।।३।।

शयन में राग-नायकी आनन्द बधावनों नन्द महरजु के धाम।। बड़ भागिन जसुमति जायों है कमलनयन घनश्याम।।१।। बजत निशान मृदंग ढोल रव मंगल गावत वाम।। देतदान कंचनमणी भूषण धेनु वसन ले ले नाम।।२।। देत असीस सकल गोपीजन व्रजजन मन अभिराम।। "हरि नारायण स्यामदासके" प्रभु माई प्रगटे हैं पूरनकाम।।३।।

पोढ़वा में-राग-मल्हार दोउ मिल पोढे ऊँची अटा हो।। (यह पूरा पद पेज ४५ पर पढ़े।)

श्रावण शुक्ला १०

श्रृंगार – पाग चन्द्रिका का।

वस्त्र – लाल सोनेरी कोर के, कटि में धोती उसपर पटका, श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोर की सादी चन्द्रिका धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र पिला रंग के तथा पिछवाई लाल सोनेरी कोरकी धराई गई। राजभोग में सोने का बंगला धराया गया।

आभरण – नित्यानुसार रीत के धराये गये।

विशेष – आज प्रभु सोने के हिन्डोरना में झूले।

मंगला में राग–मल्हार आईजू स्याम जलद घटा, ओल्हर चहूंदिशतें घनघोर।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग–मल्हार नीके लाल लागत आज सुहाये।। श्रीवृषभान नंदिनी रचि रूचि आभूषन पहिराये।।१।। पाग कसुंभी सीस बिराजत मधि लटकन लटकाये।। हीरा लाल रतन निरमोलक रूचि रचि पेच बंधाये।।२।। अलक तिलक लखि आनन की छबि कोटिक चंद लजाये। सिंहद्वार ठाढ़े पिय मोहन निरखत मो मन भाये।।३।। बलि बलि जाऊं मुखारविन्दकी दरसन ताप नसाये।। "श्री विट्ठल गिरिधरन" छेलछबीलों निरखी नैन सचुपाये।।४।।

राजभोग में (बधाई) राग–धनाश्री जसोदा रानी जायों है सुत निको।। आनन्द बढ्यो सकल गोकुल में, गोपवधू लाई टीको।।१।। अक्षत दुब रोचन बंदन नंदे तिलक दहीको।। अंचल वारि वारि मुख निरखत कमल नेंन प्यारो जीको।।२।। अपने अपने भवनतें निकसी पहरे चीर कसुंभीको।। "यादवेन्द्र" व्रजकुल प्रतिपालक कंसकाल भयभीको।।३।।

हिन्डोरा झूलते समय (राग–पूर्वी)

आई आई सकल व्रजनारी झूलन हरिके हिन्डोरना।। नवसत साज कुरंग नयनी आभूषण तन आछे सुंरग वसन अमोलना।।१।। कंचन खंभ

आछे जटित माणिक मरूवे मणिवेलन शुभ अतोलना।। "कुंभनदास" प्रभु गोवर्धनधारीलाल मधुर मधुर देत झोलना।।२।।

कमल नैन प्यारे झूलो सुरंग हिंड़ोरे झुलाऊ।। (यह पूरा पद पेज १०१ पर पढ़े।)

हिंडोरे झूलत है भामिनी।। (यह पूरा पद पेज १०२ पर पढ़े।)

गोपाललाल झूलत सुरंग हिन्डोरे।। कंचनखंभ सुढ़ार बनाये, डांडी लाल चहुं ओरे।।१।। आस पास सब व्रजजन ठाडी गरज घटा घनघोरे।। "व्रजपति" श्रीगिरिधरन छबि निरख निरख तृन तोरे।।२।।

शयन में राग–कान्हरों गावत गोपी मधु मृदु बानी। जाके भवन बसत त्रिभुवनपति राजा नंद यशोदारानी।।१।। गावत वेद भारती गावत नारदादि मुनिज्ञानी।। गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुल नाथ महातम जानी।।२।। गावत चतुरानन जगनायक गावत शेष सहस्त्र मुखरास।। मन क्रम वचन प्रीति पद अंबुज अब गावत "परमानंददास"।।३।।

पोढ़वा में राग–बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संगले।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े।)

श्रावण शुक्ला ११

(पवित्रा एकादशी देहरी बन्दनमाल तथा अभ्यंग)

श्रृंगार – कुल्है जोड़ का।

वस्त्र – सफेद केसरकी कोर के, कटिमें पिछोड़ा तथा श्रीमस्तक पर सफेद कुल्है रूपहरी किनारी की कोर के उसपर मोर की चन्द्रिका का जोड़ सादा धराया गया है। पिछवाई सफेद सोनेरी कोर की धोराकी तथा ठाड़ा वस्त्र लाल रंग के धराये गये हैं।

आभरण – नित्यानुसारी भारी रीत के अनुसार धराये गये है।

विशेष – पवित्रा को अधिवासन किये जाकर मुहरत के अनुसार प्रातः (श्रृंगार) या सांयकाल (भोग-आरती) के दर्शन के समय श्रीजी को दण्डवत करके प्रथम सूत का पवित्रा घराया गया बाद में दूसरें पवित्रा धराये गये। टेरा आने के बाद पवित्रा भोग आरोगाये गये इसमें मिश्री, मेवाबाटी, बुन्दी सकरपारा तथा फलों का मेवा भोग आये। सांयकाल प्रभु चांदी के हीन्डोरना में झूलें श्रीजी के पास पधारने पर नित्यानुसार आरती की गई। हिन्डोरना पर भी पवित्रा घराये गये। सम्बत २०२३ में आज के दिन तिलकायत श्री गोविन्दलालजी महाराज द्वारा सातों स्वरूप को पवित्रा धराऐ गये।

बड़ी बधाई – आज से नित्य शयन तक कीर्तन समाज द्वारा बधाई के कीर्तन गाये जाते है। बड़ी बधाई बैठती है।

मंगला में राग-भैरव **आज बड़ो दरबार देख्यों नन्दराय तेरो।। भयो सुख सब भांत दुःख गयो मेरो।।१।। बाजत निशान ढोल ढाढ़िनी जगायो।। सोवे है कहा कंत जसोमति सुत जायो।।२।। तेई देखलिये जात कीरती तिहारी।। गायन के ठाट बंटत भीर भई भारी।।३।। सुफल फूलन फूली, जसोमति रानी।। जाके सर्वस दियो वसुधा अघानी।।४।। मांगन जो लिये जात भीख जो तिहारी।। तिहं लोक सून्यो जस भयो है**

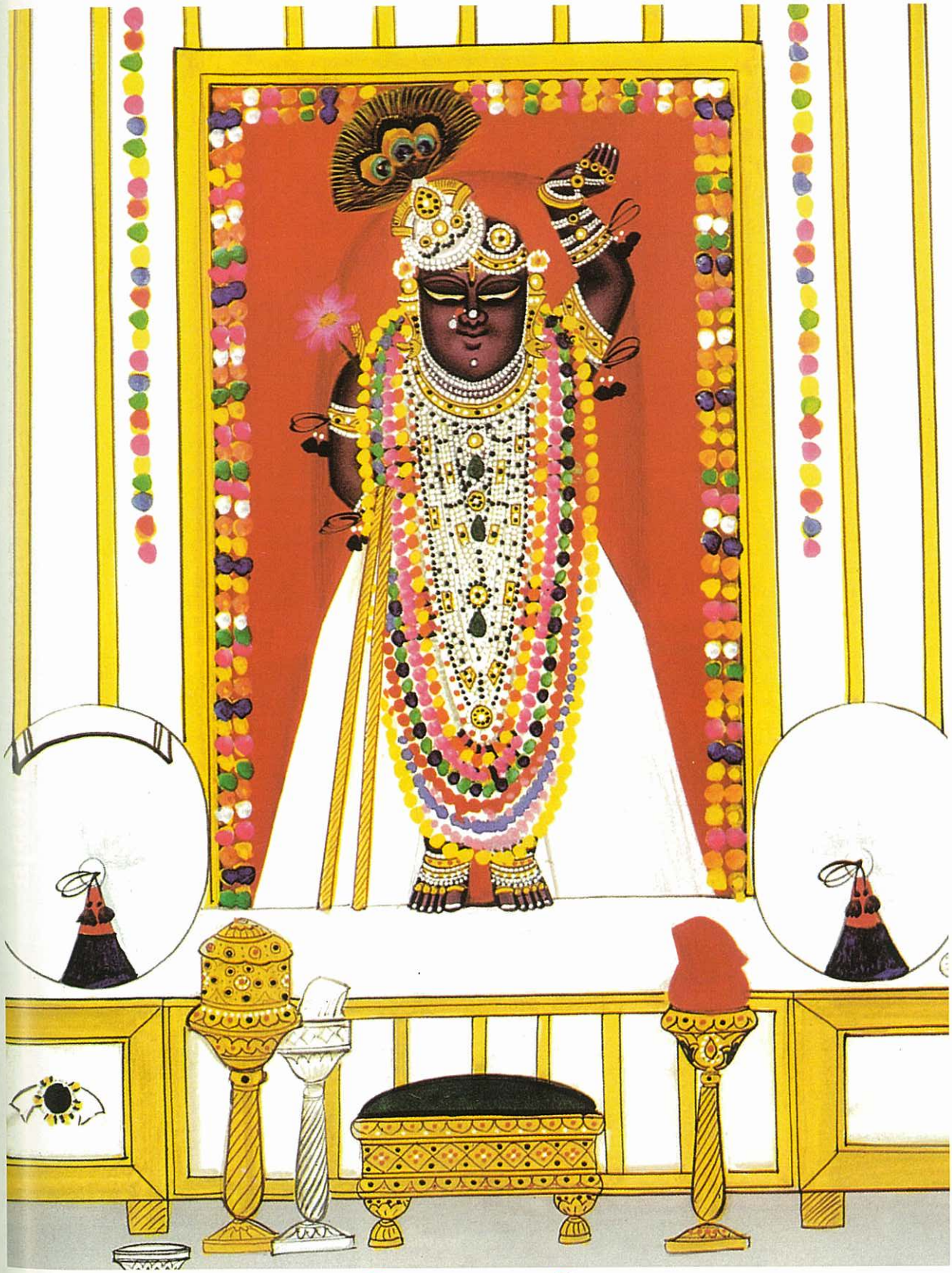

पवित्रा एकादशी

श्री मुकेश पारीख श्री नवनीतलाल जी गोठी जे.के.सीमेन्ट, अहमदाबाद/उदयपुर का दण्डवत व जय श्री कृष्ण

पवित्रा एकादशी प्रथम मिलन

स्व श्री शान्तिप्रशाद जी श्री किशोर व्यास, श्रीनाथ सेल्स, लिंक रोड़ उदयपुर का दण्डवत व जय श्री कृष्ण

अति भारी।।५।। अब लग मैं नेम लियो रहो बरसाने।। लेहों हों भीख जब पूत व्है है महराने।।६।। अबके महर मोही मांगनो न कीजे।। "सूरदास" कहत मोही दास पदवी दीजे।।७।।

श्रृंगार में राग–बिलावल आनन्द आज नन्दजु के द्वार।। दासअनन्य भजन रस कारण प्रगटे श्याम मनोहर ग्वार।।१।। चंदन सकल धेनु तन मंडित कुसुमदास शोभित आगार।। पूरण कुम्भ बने कंचन के बीच बीच रूचिर पीपर की डार।।२।। जुवती जूथ प्रति गोपी बिराजत बाजत पणव मृदंग सुढार।। "हित हरिवंश" अजिर पुरवीथन हरद दूध दधि घृत मधु खार।।३।।

पवित्रा धरावे तब राग–सारंग पवित्रा पहरत राजकुमार।। तीनों लोक पवित्र किये है श्री विट्ठल गिरिधार।।१।। अतिही पवित्र पियाबहु विलसत निरख मगन भयो।। "परमानंद" पवित्र की माला गोकुल की व्रजनार।।२।।

राजभोग में राग–सारंग आज नन्दराय के आनन्द भयों।। नाचत गोपी करत कुलाहल मंगल चार ठयो।।१।। राती पीरी चोली पहरे नोतन झूमक सारी।। चोवा चन्दन अंग लगाये सेंदुर मांग संवारी।।२।। माखन दूध दह्यों भरी भाजन सकल ग्वाल ले आये।। बाजत बेन पखावज महुवर गावत गीत सुहायो।।३।। हरद दुब अक्षत दधि कुमकुम आंगन बाढ़ी कीच। हसत परस्पर प्रेम मुदित मन लागलाग भुज बीच।।४।। चहुं वेद धुनि करत महामुनि पंचशब्द ढमढोल।। "परमानन्द" बढ़यो गोकुल में आनंद हृदे कलोल।।५।।

हिन्डोलना झूलते समय (राग–मल्हार)

झुलन आई व्रजनारी गिरीधरन लालजु के सुरंग हिन्डोरना।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

तेसोई व्रिंदाबन तेसीये हरित भूमि तेसिये वीर वधू लगत सुहाई माई।। (यह पूरा पद पेज ७७ पर पढ़े।)

झुलत सुंरग हिन्डोरे राधा मोहन।। (यह पूरा पद पेज ७७ पर पढ़े।)

रंग मच्चों सिंघद्वार हिन्डोरे झुलना।। (यह पूरा पद पेज ७८ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरौ यह धन धर्म हि तें पायो।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

पोढ़वे में राग-कान्हरौ धन्य रानी यशोमत ग्रह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

श्रावण सुद १२

(आज गुरूजी को पवित्रा धरावने, देहरी वन्दनमाल)

श्रृंगार – पाग–पिछोड़ा को।

वस्त्र – गुलाबी रंग के सोनेरी कोरके कटिमें पिछोड़ा, श्रीमस्तक पर गुलाबी पाग पर सोनेरी वादला की गोल चन्द्रिका व लुमक धराई गई है। पिछवाई चित्राम की सातों स्वरूप तथा सातों ग्रहाधिशों की धराई गई है। सारे श्रृंगार होने के बाद नित्य राखी तक पवित्रा धराये जाते है।

आभरण – नित्यानुसार धराये जाते है।

विशेष – हिन्डोरा पर पवित्रा धराये जाते है। आज श्री गुरूजी को भी पवित्रा धराये गये।

मंगला में राग–रामकली (पलना की अष्टपदि) प्रेंख पर्यंक शयनूं–चिर विरह तापहर मति रूचिर मीक्षणं प्रकट प्रेमायनम्।।ध्रु।। तनुतर द्विज पंक्ति ललितानि हंसितानि तववीक्ष्य गायकीनां। ईयदवधि परमेतदाश्या सम भवज्जीविंत तावकीनां।।१।। तोकता वपुषि तव राजते द्दशितु मद माननी मानहरण। अग्रिमें वयसि किमु भावि कामेऽपि निज गोपिका भावकरणं।।२।। व्रज युवति हृद्य कनकाचला नारोढु मुत्सुकं तव चरण युगलं।। तेनु महुरून्नमन मभ्यास मिवनाथ ते सपदि कुरूते मृदुल–मृदुलं।।३।। अधिगोरोचना तिलकमल कोद् ग्रथित विविध मणि मुक्ताफल विरचितं।। भूषणं राजते मुग्धता मृतभरस्यंदि वदनेंदु रसितं।।४।। भ्रुतटे मातृरचितांजन बिंदु रतिशयति शोभया दृग्दोषमपनयन्।। स्मरधनुषि मधुपिवनलिरज इव राजते प्रणयि सुखमुपनयन्।।५।। वचन रचनोदार हास सहज स्मितामृतं चयै रार्ति भर मुपनयन्।। पालय सदास्म्मान स्मदीय श्री विट्ठले निजदास्य मुपनयन्।।६।।

श्रृंगार में राग–आशावरी माईरी कमल नैन श्याम सुन्दर झुलत है पलना।। बाललीला गावत सब गोकुलकी ललना।।१।। लालके अरून तरून चरणकमल नखमणि शशि जोति।। कुंचित कच भमराकृत लर

लटकत गज मोती।।२।। लाल अंगूठा गहि कमल पाणि मेलत मुखमाहीं।। अपनों प्रतिबिंब देखी पुनि पुनि मुसिकाई।।३।। रानी जसुमति के पुन्य पुंज वार वार लाले।। "परमानन्द स्वामी" गोपाल सुत सनेह पाले।।४।।

राजभोग आवता में-बधाई के कीर्तन गाये जाते है।

राजभोग में राग-सारंग सब ग्वाल नाचें गोपि गावें, प्रेम मगन कछु कहत न आवे।।१।। हमारे राय घर ढोटा जायो, सुनि सब लोक बधाये आयो।।२।। दूध दही घृत कावर ढ़ोरी।। तंदूल दूब अलंकृत रोरी।।३।। हरद दुध दधि छिरकत अंगा।। लसत पीत पट वसन सुरंगा।। ४।। ताल पखावज दुंदुभी ढोला।। हसत परस्पर करत कलोला।।५।। अजिर पंक गुलफन चढ़ि आये।। रपटत फिरत पग न ठहराये।।६।। वारि वारि पट भूषन दिन्हे।। लटकत फिरत महारस भीने।।७।। सुधि न परे को काकी नारी।। हंसि हंसि देत परस्पर तारी।।८।। सुर विमान सब कोतिक भूले।। मुदित त्रिलोक विमोहित फूले।।९।।

हिन्डोरा झूलते समय (राग-नट)

झुलत नवरंग संग राधिका गिरधरन संग चंद सहेचरी सब ठाड़ी आनंद भर गावे।। (यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े।)

सुरंग हिन्डोरना हो माई झुलत रंग भरें।। (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

छबीले लालके संग ललना झूलत नवल हिंडोरें।। तेसीये पिय प्यारी पहेरें पीयरोपट कसुंभी सारी जटित माणिक मणि पटली बैठे एक जोरें।।१।। तेसीये हरित भूमि तेसीये थोरी थोरी बूंदे तेसेई गावत पिक चातक मधुर-मधुर घोरें।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिवरधर तेसीये सुखरासि राधा पिय प्यारी अद्भूत छबि रतिपति चित चोरें।।२।।

पावस ऋतु कुंज सदन यमुना तट वृन्दावन झुलत वृजराज कुंवर नव हिन्डोरनां।। कनक खंभ सरल बीच डांडी चार अति सुहाई झूमक नवरंग पटुली अति अमोलना।।१।। बैठे बनि गुपाल लाल संग ब्रज की नवल बाल चहूँ दिस राजें रसाल गोपी टोलनां।। गावत नट नारायण राग नाचत मंद मुदित नारि झोटा देत विहंसी विहंसी रस अतोलनां।।२।। बांजे बांसुरी बखांन ठांव बन्यों मधुर साज छायो गान गगन मगन जुवती ढोलना।। मच्यों नवरंग विलास निरखि हरखि "कृष्णदास' ले बलाय कहे गुनी गिरिवरधर लोलनां।।३।।

शयन में राग–नायकी आनन्द बधावनों नन्द महेरजू के धाम।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–कान्हरौं धन्य रानी यशोमती ग्रह आवत गोपिजन।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

श्रावण शुक्ल १३

(श्री चतुरानागा को उत्सव)

श्रृंगार – मुकुट कांछनी का।

वस्त्र – केसरिया रंग के रूपहरी कोर के, कटिमें कांछनी, शुथन व मोटो पटको तथा श्रीमस्तक पर केशरिया पाग पर पन्ना जड़े मुकुट धराया गया है। ढाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई चित्राम की इसमें श्री महाप्रभुजी, श्री गुंसाईजी तथा सातों लालजी हाथ में पवित्रा लेकर श्रीजी को धराने हेतु खड़े है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये।

विशेष – आज रीत से श्रीजी किंकोड़ा को साक तथा सीरा आरोगते है। चांदी के हिन्डोरना में प्रभु झूले तथा नित्यानुसार आरती की गई।

मंगला में राग–खट यह नित नेम यशोदाजू मेरे तिहारे ही लाड लडावन को।। प्रातः समय उठ पलना झुलाऊं सकट भंजन यश गावन को।।१।। नाचत कृष्ण नचावत गोपी कर कठताल बजावन को।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर निरख वदन सचु पावन को।।२।।

श्रृंगार में (राग–बिलावल) नन्दराय के नवनिधि आई।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राजभोग आवता में बधाई के कीर्तन गाया जाता है।

राजभोग में (राग–सारंग) आज महा मंगल मेहरानो।। पंच शब्द धुनि भीर बधाई घर घर वेद बखाने।।१।। ग्वाल भरे कावरि गोरसकी वधू सिंगारत वाने।। गोपी गोप परस्पर छिरकत दधि के माट ढ़राने।। २।। नामकरन जब कियो गर्गमुनि नन्द देत बहु दाने।। पावन जस गावत "कटहरिया" जाहि परमेश्वर माने।।३।।

हिन्डोरा झूलते समय

राग–सोरठ झुलत सांवरे संग गौरी।। अमित–रूप गुण सहज माधुरी शोभा सिंधु झकोरी।।१।। इत शिरमोर मुकुटकी लटकन उत बेंदी

शिररोरी।। कुंडल लोल कपोलन झलकत उतही बनी कचडोरी।।२।। इत उत वेसरीके मुक्तासों चोंप बढ़ी अति जोरी।। "रसिक" प्रितम वल्लभ कटाक्ष छबि हाव भाव चितचोरी।।३।।

राग–मल्हार हिन्डोरे माई झुलत गिरीधर लाल।। (यह पूरा पद पेज १०४ पर पढ़े।)

राग–रायसो झुलत राधा मोहन कालिन्दि के कुल।। सघन लता सुहावनी चहुंदिश फूले फूल।।१।। सखी जुरी चहुंदितते कमल नयन की ओर।। बोलत वचन अमृतमय "नंददास" चित चोर।।२।।

राग–बिहाग झूलत नागरी नागरलाल।। मंदमंद सब सखी झुलावत गावत गीत रसाल।।१।। फरहरात पट नील पीत की अंचल चंचल चाल।। मानो परस्पर उमगि ध्यान छबि प्रगट भये तिहिंकाल।।२।। सलसलात अति पियके सीसपर लटकन बेनीलाल।। मानों मुकुट बरूहा विरही भये बोली बाक बेहाल।।३।। मोतिन माल प्रियाके उरकी पीय तुलसीदल माल।। मानो सुरषरी मिली जमुनातट मानो विहंग मराल।।४।। सांवल गौर परस्पर अति छबि शोभा विशद विशाल।। निरखी "गदाधर" कुंवर कुंवरि छबि मानों भर्यो रसजाल।।५।।

शयन में (राग–कान्हरौ) हेरी बाजे मुंदिलरा महावन।। नंदराय गृह पुत्र भयौ है हरखि देत बहुधन।।१।। नाचत गावत ग्वालिनी मिलि बोलत मधुरे वचन।। हरदी दूध दही लपटावत उमगे प्रेममगन मन।।२।। नवसत साजि सिंगार नारि मिलि मंगल गावतमुनि जन।। "श्री विट्ठल" गिरिधारी कृपानिधि नाम यशोदा नंदन।।३।।

पोढ़वा में (राग–कान्हरौ) धन्य रानी यशोमत ग्रह आवत गोपिजन।। (यह पूरा पद पेज ९७ पर पढ़े।)

श्रावण शुक्ला १४

गोस्वामी तिलकायत श्री विट्ठलेशरायजी महाराज का उत्सव।

(देहरी बन्दनमाल)

श्रृंगार – श्रृंगार कुल्है व सुनहरी घेरा को।

वस्त्र – पीला रूपहरी कोर के, कटि में पिछोड़ा, श्रीमस्तक पर कुल्है पर सुनहरी बादला का घेरा धराया गया है। वेणी श्याम माणक मोती की धराई गई है। (ठाडावस्त्र-लाल)

आभरण – भारी श्रृंगार नित्यानुसार हीरा-माणक-मोती व सोने का धराया गया है।

विशेष – श्री ठाकुरजी आज सोने के हिन्डोरा में झूलें। अधकी सामग्री आरोगाई गई।

मंगला में राग आशावरी वारी मेरे लटकन पग धरों छतियां।। कमल नैन बलिजाऊं बदन की सोभित न्हेनी-न्हेनी दूधकी द्वै दतियां।।१।। ये मेरी ये तेरी ये बाबा नंदकी येह ताकी जो झूलावे तेरो पलना।। यहां ते चली खरखात पीवत जल परिहरो रूदन हँसो मेरे ललना।।२।। रूनक झुनक पांय बाजे पेंजनीयां अलबल कलबल बोलो मधुबनियां।। "परमानन्द" प्रभु त्रिभुवन को ठाकुर ताहि खिलावे बाबा नन्दजू की रनियां।।३।।

श्रृंगार में राग-आसावरी तुम व्रजरानीकें लाला।। अहो दधि मथति सुहाई के लाला।। ध्रु.।। दिव्य कनककौ पालनों लाल रतन जटित नगहीर।। गजमोतिनके झूमिका लाल ऊपर दक्खिन चीर।।१।। घुटुरूवन चलत सुहावने लाल पग नूपुरकौ नाद।। कटि किंकिनी रूनुझूनु करें लाल सुनत जननी आल्हाद।।२।। आधे आधे बचन सुहावने लाल सुनत जननी मन मोद।। मुख चुंबत स्तनपान दै लाल लै बैठारति गोद।।३।। कुल्हे सुरँग सिर ताफताकी लाल झगुली पीत सुदेश।। कंठ बघना कर पोहोंचियाँ लाल शोभित सुंदर वेश।।४।। तिलक खुल्यौ गोरोचना लाल घूँघरवारे केस।। न्हेनी न्हेनी दतियाँ द्वै दूधकी लाल देखियत हँसत

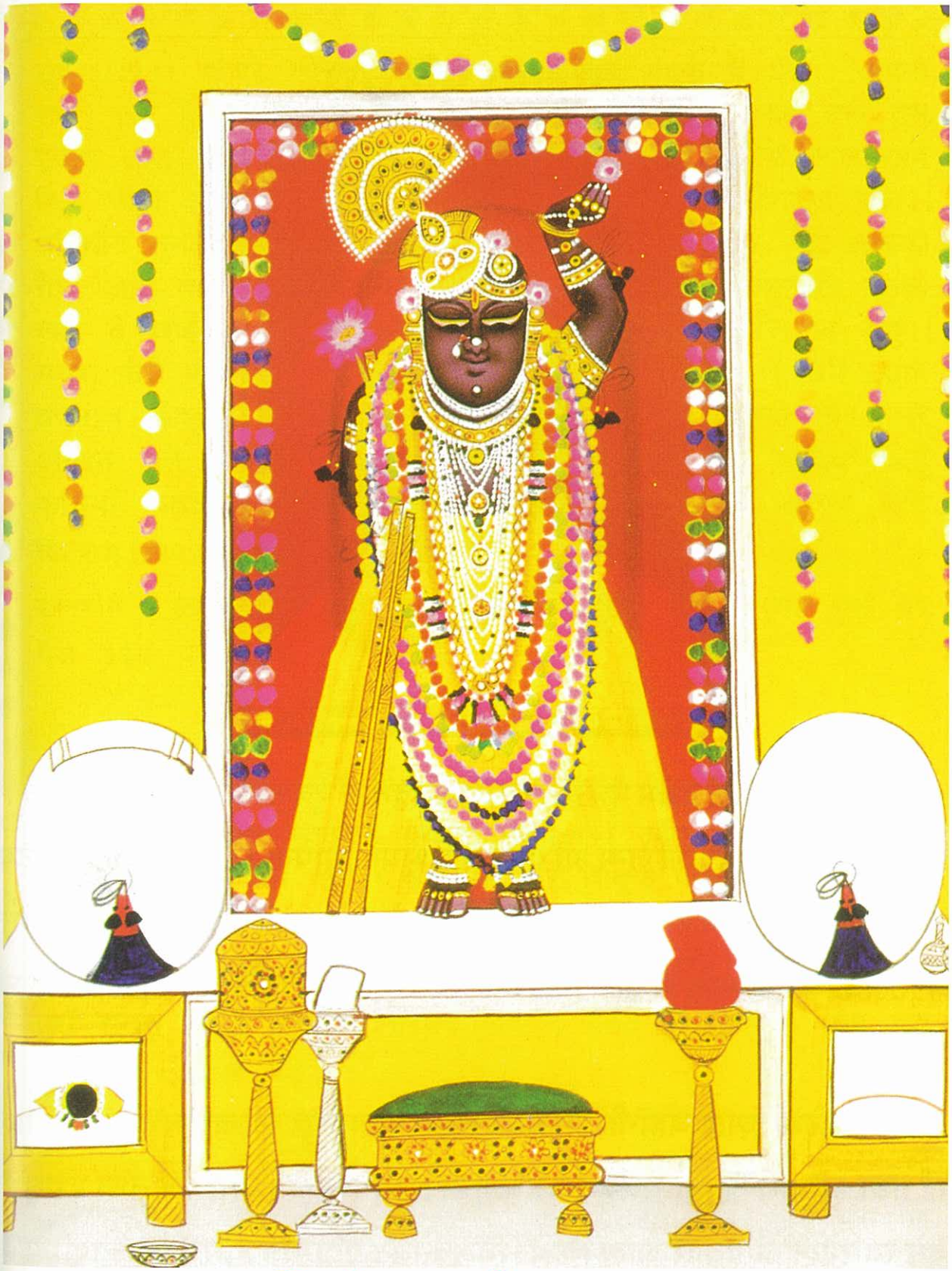

विट्ठलेशराय जी का उत्सव

स्व.श्रीमती चन्द्रललना श्री राधेश्याम जी मेहता का दण्डवत व जय श्री कृष्णा

गो. ति. श्री विट्ठलेशराय जी महाराज का

संक्षिप्त परिचय

आप गुसांई जी के प्रथम पुत्र गिरधरजी के द्वितीय पुत्र दामोदर जी के पुत्र हते। सं. 1657 आज के दिन आपको जन्म श्री गोकुल में भयो। आपके श्रीहस्त सों श्रीजी टिपारा धरावते तासों आप टिपारावारे विट्ठलेशजी कहे गये। आप ही समस्त गोस्वामिन में प्रथम तिलकायत श्रीनाथजी द्वारा निश्चित भये। साठ दिन के श्रृंगार टीके तन के चालू भये।

आपने ही बादशाह जहाँगीर सों गोकुल एवं गोपालपुर की जमीन लेकर गौशालाएं बढ़ाई तथा श्रीनाथजी को सर्वप्रथम दूध पूड़ी (झाग पूड़ी) अरोगाई तथा दूधघर की विविध सामग्रीन के प्रकार चालू किये। तिलकायत पदासीन होयवे पर आपने प्रभु के अनेक मनोरथ कीने वा समय के पातसाहन हू कों आपने चमत्कार सों प्रभावित किये।

सुदेश।।५।। काजर लोचन आँजिकैं लाल भौंह मटुक दै ईठ।। अपनौ लाल काहू देखन न दैहों जिन कोऊ लागो दीठ।।६।। प्रथम हनी तुम पूतना लाल शकट भंजन त्रन मारि।। यमला अर्जुन तारिकें लाल अब किन छाँडौ आरि।।७।। मेरे लालकी मैया व्रजनारी बाप गोपकुल राज।। धनिधनि तुमारे बलभद्र भैया करत सकल सुख काज।।८।। मेरे लालकी गैया अति बाढ़ी चरन वृंदावन जाँई।। पान्यौ पीवें नदी यमुनाकौ अंजन खरि वे खाँई।।९।। मेरेलाल हो प्यारे लाल तुम कंस मारि गढ़ लेहु।। मथुरा फेरौ व्रजराज दुहाई लाल गोप सखन सुख देहु।।१०।। लिये उठाय व्रजराज गोदकरि दै उगार हृदें लाय।। बहोरि लिये जननी गोद करि अस्तन चले हैं चुचाय।।११।। कहत यशोदा सुनौ मेरे "गोविंद" लेहुँ कनियाँ चढ़ाय।। जों झूलौ तो पालनें झुलाऊँ नातर आँगन बैठि खिलाय।।१२।।

राजभोग में (राग–सारंग) सब ग्वाल नाचे गोपि गावे।। (यह पूरा पद पेज १३६ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय (राग–मालव)

विट्ठलराय लाल गिरिधरन झुलावत सुरंग हिन्डोरे।। सुन्दर वदन निहारत फिर फिर चितवन नयना जोरें।।१।। अति शोभित सिर पाग संवारी केसर के रंग बोरें।। कर्णफूल और चिबुक वदनपर झलकत थोरें थोरें।।२।। तेसीये संग राधिका रानी छबि लागत तन गोरे।। "श्री विट्ठलगिरीधर" जब झुलत युवतिन के चित्त चोरें।।१३।।

झूलत सुभग हिन्डोरें गिरिधर गोवर्धन पर्वत के ऊपर।। (यह पूरा पद पेज ८१ पर पढ़े।)

गृह गृहतें आईं व्रज सुन्दरि झुलत सुंरग हिण्डोरे हो।। (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

झूलत हैं राधा सुन्दर वर सावन सरस हिन्डोरे हो।। (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

शयन में (राग-कान्हरो) हेरी हेरी रे भैय्या हेरी हेरीरे। ।।ध्रु।। हेरीदै किन गावही भलौ बन्यौ हे काज।। रानी जसुमति ढोटा जायौ आयौं व्रजमें राज।।१।। पट पीरौ प्यौसारकौ रानी जसुमति पहिरै ताहि।। दामिनी के भोरें गयौ मोमन धौखौ आहि।।२।। नेतिनेति जासौ कहै ध्यान न आवै रूप।। सो या बाबा नंदके परयो देखियत सूप।।३।। फूले फिरत गुवालिया विप्रन बूझत धाई।। कहा कुंवरको नाम हैं हमसौं कहौं सुनाई।।४।। नामनकी गिनती नहीं सबहिनकें सिरताज।। पहलौ तो सुनिलेहु भैया जाको नाम गरीब निवाज।।५।। बूढ़ी बाँझ सबै स्त्रवें क्षीर प्रवाह बढ़ायौ।। चाटत चरण गोपाल के मानौ इन्हींकौ जायौ।।६।। सब ग्वालन मिलिमतौ मत्यौं हो मनमें अति आनंद।। आवौ पकरी नचावहूं व्रजपति बाबानंद।।७।। ऊंचे मणिकौ चोंतरा हो जहाँ बैठयो परम उदार।। देखत गोरोसो लग्यौ भौरों चित्त उदार।।८।। लघु भैया पाँयन परे अख सकुचे व्रजराज।। उठिकिन बाबा नाचहूँ एहो पुत्र पुत्र भये ते आज।।९।। बाबानंद नचावही हो संग लिये सब ग्वाल।। नाचत थोंदा हालियों हो देखी व्रजबाल।।१०।। सुबल कहें मधुमंगला चलि बंदीसुर जाहीं।। जसुमति जु के हाथकी मांगि खुरचनी खांहीं।।१।। एक ओर सब ग्वारिया एक और सब पोंनी।। पहरावत मधु मंगले या व्रजकी महतोंनी।।१२।। फूली कहयौ वृषभानजू हो पूरब पुन्य सहाई।। किरती कन्या हैं जनी देंहों कुँवर कन्हाई।।१३।। मैया मैया कह टेरहीं कहा बड़े कहा छोट।। ठकुराई तिहूँ लोककी होउरी अहिरन ओंर।।१४।। यह पद गायौ हेतसों हो ग्वाल सुख पाय।। रोम रोम रसना करों मोपै तोउ न बरन्यो जाय।।१५।।

पोढ़वा में (राग कान्हरो) धन्य रानि यशुमति गृह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

श्रावण शुक्ला १५

(रक्षा बन्धन)

श्री गुसांई के ज्येष्ठ पुत्र श्री गिरधर जी के पुत्र श्री दामोदर जी का उत्सव

श्रृंगार – पाग चंद्रिका का

वस्त्र – लाल रूपेरी कीनारी के पिछोड़ा कटि में, श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोरकी चंद्रिका, सादा ठाड़ी लड़ मोती का सिरपेच

श्रृंगार – शीश फूल कर्ण फूल सभी हीरा पन्ना के माणक के अलंकार कमलाक्ष, नकवेशर माणक मोतीका भारी चरणारवृंद तक श्रृंगार हीरा पन्ना, माणक, मोती सबका शामील। गुंजा माला। पवित्रा की माला ठाड़ा वस्त्र पीला पिछवाई लाल रूपेरी कोरकी। आज मुहूर्त अनुसार श्रृंगार अथवा भोग आरती में पहिले तिलक अक्षत करके दोनो श्री हस्त में राखी धराते है फिर आरती होकर भोग आते है

विशेष – गोलपापड़ी। आज से जन्माष्टमी की बड़ी बधाई बैठती है।

मंगला में (राग भेरों) **सोहिलरा नंदमहर गृह आज बाजे बाजे मंदिलरा अनुपम गति।। नरनारी मिलि मंगल गावै ऋषि मुनि वेद पढ़त ब्रह्मा शिव सुर फूलै सुरपति।।१।। भयौ आनन्द तिहूँ पुर घरघर भक्त अभय कीने दान अति। "जगन्नाथ" प्रभु प्रकट भये है, कूखि सिरानी रानी जसुमति।।२।।**

श्रृंगार में (राग बिलावल) **आनन्द आज नन्दजु के द्वार।।** (यह पूरा पद पेज १३३ पर पढ़े।)

रक्षाबंधन मुहरतपर (राग–सारंग) (श्रृंगार, ग्वाल या उत्थापन में रक्षा बन्धन धराने के अवसर पर) **बहन सुभद्रा राखि बांधत बल और श्री गोपाल के।। कनक थार अच्छत कुकुंम तिलक दियों नन्दलाल के।।१।। आरति करत रोहनी जननी अन्तर बाढ्यों अनुराग के।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर प्रेम पुज ब्रज बालके।।२।।**

राजभोग में (राग–सारंग) **आज नन्दरायकें आनंद भयौ।।** (यह पूरा पद पेज ९६ पर पढ़े।)

हिन्डोरा झूलते समय (राग-अडाना)

सावन की पुन्यों मन भावन, हरिआये घर झुलोंगी, पंचरंगी डोरी बांध हिन्डोरे।। पहरोगी सुरंग सारी, कंचुकी कस बांधों कारी, हीरा के आभूषण सोहे तन गोरें।। धरि हो उर कुसुमहार, निरखोंगी वारंवार, नयन निहार नंद लाल, कछुक वेष थोरें।। "रसिक" प्रीतम संग सुखद, पावस ऋतु विलसोंगी, भेटोंगी आनन्द भर कंठ भुजा जोरें।।

सुघर रावरे की गोप कुंमारी गोकुल की राखी बांधे, हरि राधा हिन्डोरे झूलनि नन्दसदन आई।। प्रफुल्लित मुख सोभित अलक चपल नैना पट भूषन जगमग तन चटक मटक जसुमति मन भाई।।१।। कोऊ मृदंग बजावे गावे, बीन सरस सुर मिलावे, पिक रिझावे लजावे, मोरनि कूक मचाई।। "व्रजाधीस" केलि करत फूले बन हरित भूमि बडभागिनि पून्यो यह सावन सुखदाई।।२।।

राधेजू झूलत रमक-रमक।। (यह पूरा पद पेज ९९ पर पढ़े।)

झूलत अरूझी वनमाल गरें ग्रीव गांठ गहि जोरी।। हँसत झूलत जो झूलावन हारी कहो केसें कर छोरी।।१।। जो छोड़ोतो अधिक सयाने तो न वदों जो झटक गहितोरी।। "कल्याणके" प्रभु गिरिधरन रसिक तुम काहेकों भ्रोह मरोरी।।२।।

शयन में राग-बिहाग श्रवण सुनि सजनी वाजे मंदिलरा आज निश लागत परम सुहाई।। अति आवेश होत तन मनमें श्रीगोकुल बजत बधाई।।१।। दे दे कान सुनत अरू फूलत रावलके नरनारी।। नंदरानी ढोटा जायो हे होत कुलाहल भारी।।२।। अति उंचे चढ़ि टेर सुनावत पसरि उठे जे ग्वाल।। गैया बगदावोरे भैया भयो नन्दके लाल।।३।। आनन्दभरी अकुलाय चली सब सहज सुन्दर गोपी।। प्रादुर्भाव जसोदा सुतको तामें तन मन ओपी।।४।। चंचल साज सिंगार चंद्रमुखी चंचल कुंडल हारा।। हाथन कंचन थार बिराजत पग नूपुर झनकारा।।५।। बरखत कच कुसुमन शोभित गली दरस चोंप जीय भाई।। गावत गीत

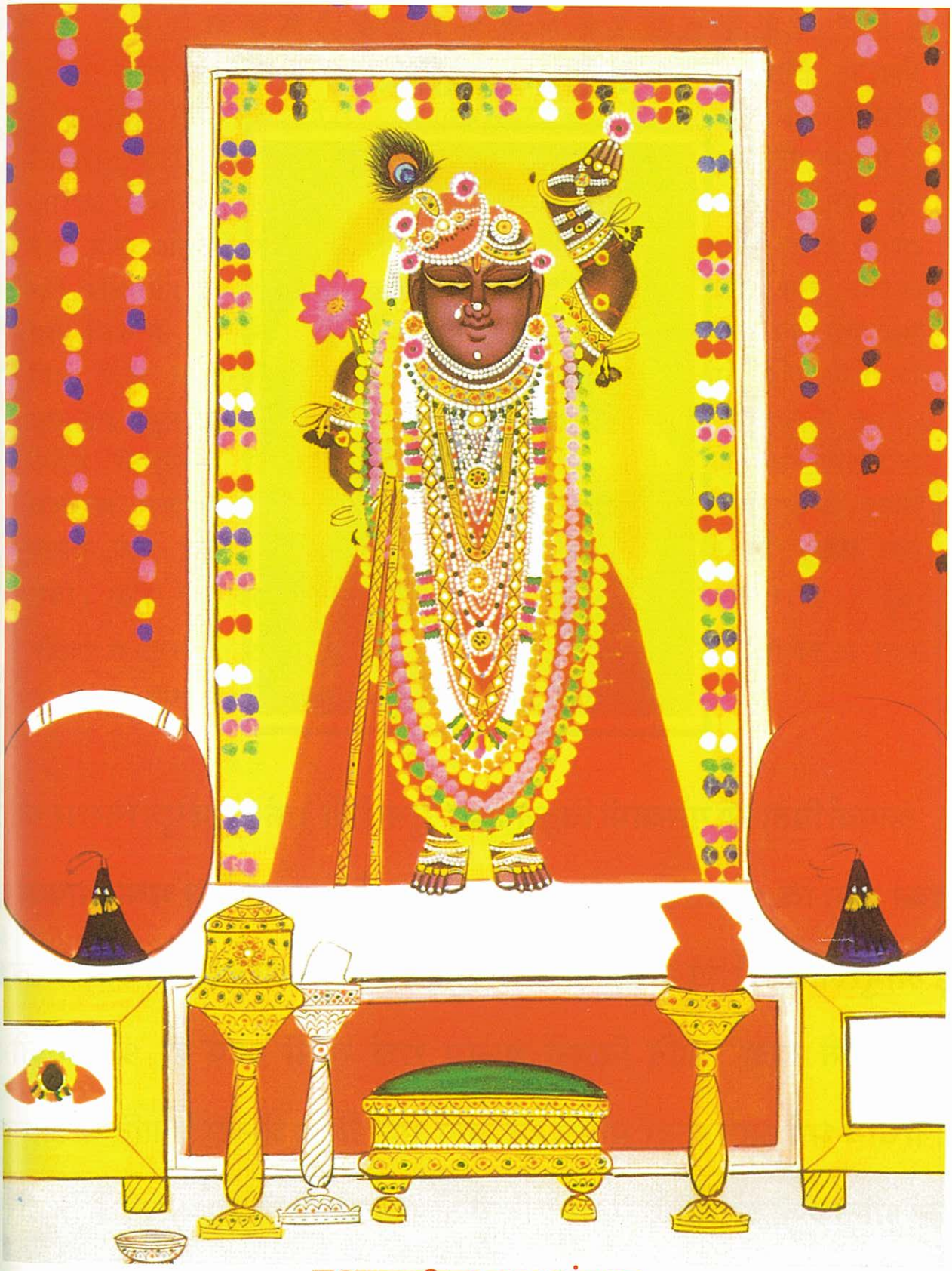

रक्षाबन्धन का श्रृंगार

श्री किशनलाल, पुरूषोत्तम एवं गिरिराज औदिच्य का सपरिवार श्री जी चरणों में दण्डवत व वैष्णवों को जय श्री कृष्ण

गो. ति. श्री दामोदरलाल जी महाराज का

संक्षिप्त परिचय

आपके पिता श्री गोस्वामी विट्ठलनाथ (गुसांईजी) के प्रथम पुत्र गिरधर जी हते आपको जन्म वि. 1632 श्रावण शुक्ला पूर्णिमा में आज के दिन भयो आपके बड़े भाई श्रीमुरलीधरजी जो पातसाह को अंगीकृत करिवे तथा वो आप श्री के स्वरूप को 'मारफते खुदा' मानि दिल्ली बुलाय राखे तासों आप ही श्रीनाथजी के प्रधानाचार्य भये आप सुन्दर मन्त्रज्ञ हुते आप अष्ट विधि प्रस्तार घनादि के ज्ञाताहुते आपने श्रीनाथजी के विविध मनोरथ किये तामें फूलन के पलना फूलन के हिंडोरादि विशेष किये।

पुनित करत जग जसुमति मंदिर आई।।६।। धनिधनि यह राति आजकी धनि-धनि यह सब गोरी।। श्यामसुन्दर चंद निरखत मानों अखियां त्रिषित चकोरी।।७।। शोभायुत आई कीरति अपने गृहमानी बधाये।। जाचक जनधन घन ज्यों बरखत भान गोप तहां आये।।८।। आय जुरे सब गोप ओपसों भयो जो मनको भायो।। पंचामृत सीसनतें ढारत नाचत नंद नचायो।।९।। नाचत ग्वाल बाल रस भीने हरद दही भरि राजे।। इत निशान उत मेरी दुंदुभी हरखि परस्पर बाजे।।१०।। खग मृग द्रुम दिश दिश भवननमें देखियत हें सरसाने।। प्राननके आये इंद्रि ज्यों यों ब्रजजन हुलसाने।।११।। ध्वजा वन्दनमाल अलंकृत नंदभवनमें सोहे। व्योम विमानन भीर भई लखि अमरनको मनमोहे।।१२।। महाराज व्रजराज नन्दपे जो मांग्यों सो पायो।। जाके एसो पूत भयो ताको न्याय जगत जस छायो।।१३।। जिनको सुख सुमरत ब्रह्मादिक यों हुलसे व्रज गेही। कहि "भगवान हित रामराय प्रभु" प्रगटे प्रान सनेही।।१४।।

पोढ़वा में राग कान्हरों धन्य रानि यशोमत गृह आवत गोपिजन।। (यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्णा १

पू. गो. श्री गोवर्धनलालजी महाराज श्री का उत्सव

देहरी बन्दनमाल तथा सोना का हिन्डोरना

श्रृंगार – मुकुट कांछनी का

वस्त्र – केसरिया रूपेरी कोर के, शुथन कांछनी। श्रीकण्ठ में गाती का पटका रूपेरी झालर का। श्रीमस्तक पर केसरी पाग पर हीरा का जड़ाऊ मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद, कन्दरा पर जड़ाऊ चोखटा तथा पिछवाई चित्राम की धराई, जिसमें समस्त गोस्वामी बालक सखी वेश में खड़े है।

आभरण – श्रीमस्तक पर ठाड़ी लर मोती की, शीशफूल, कुण्डल हीरा के। श्रीमुखारवृन्द पर तिलक माणक का, अलंकार, कमलाक्ष तथा नकवेशर माणक मोती की। चिबुक हीराको। श्रीअंग में भारी श्रृंगार वनमाला को, हांस, हार सभी हीरा पन्ना के तथा माणक-मोती के। गुंजामाला तथा फूल की माला। श्रीहस्त मे नखावली, मुद्रिका हीरा की, हस्तपान, पोंची, बाजूबन्द सभी हीरा-मोती के। श्रीचरण कमल में नखावली मुद्रिका हीरा की, अनवट बिछिया, पगपान, पायल, पेंजनी सभी हीरा-मोती के जडाऊ तथा नुंपुर सोना के धराये गये है। वेणुवेत्र हीरा से जड़ी हुई, फूल की छड़ी आदि धराये गये है।

विशेष – श्रीजी आज राजभोग से संध्या तक सोना के बंगला में बीराजे तथा सायंकाल श्रीनवनीत प्रियाजी अपने मंदिर में सोना के हिन्डोरा में झूलकर अपने समाज के साथ श्रीजी के मंदिर पधारें तथा श्रीजी से परस्पर मिलने के बाद श्रीजी तथा श्री नवनीत प्रियाजी को हिन्डोरा में भोग आये। भोग सरने के बाद हिन्डोरा में श्रीजी के वेणुजी झूलें। बादमें श्रीमदन मोहनजी व श्रीनवनीत प्रियाजी साथमें झूलें तथा झूलने के बाद श्रीजी के पास पधारकर बिराजे तथा संध्या आरती हुई। श्रीनवनीत प्रियाजी वापस अपने मंदिर में पधारें।

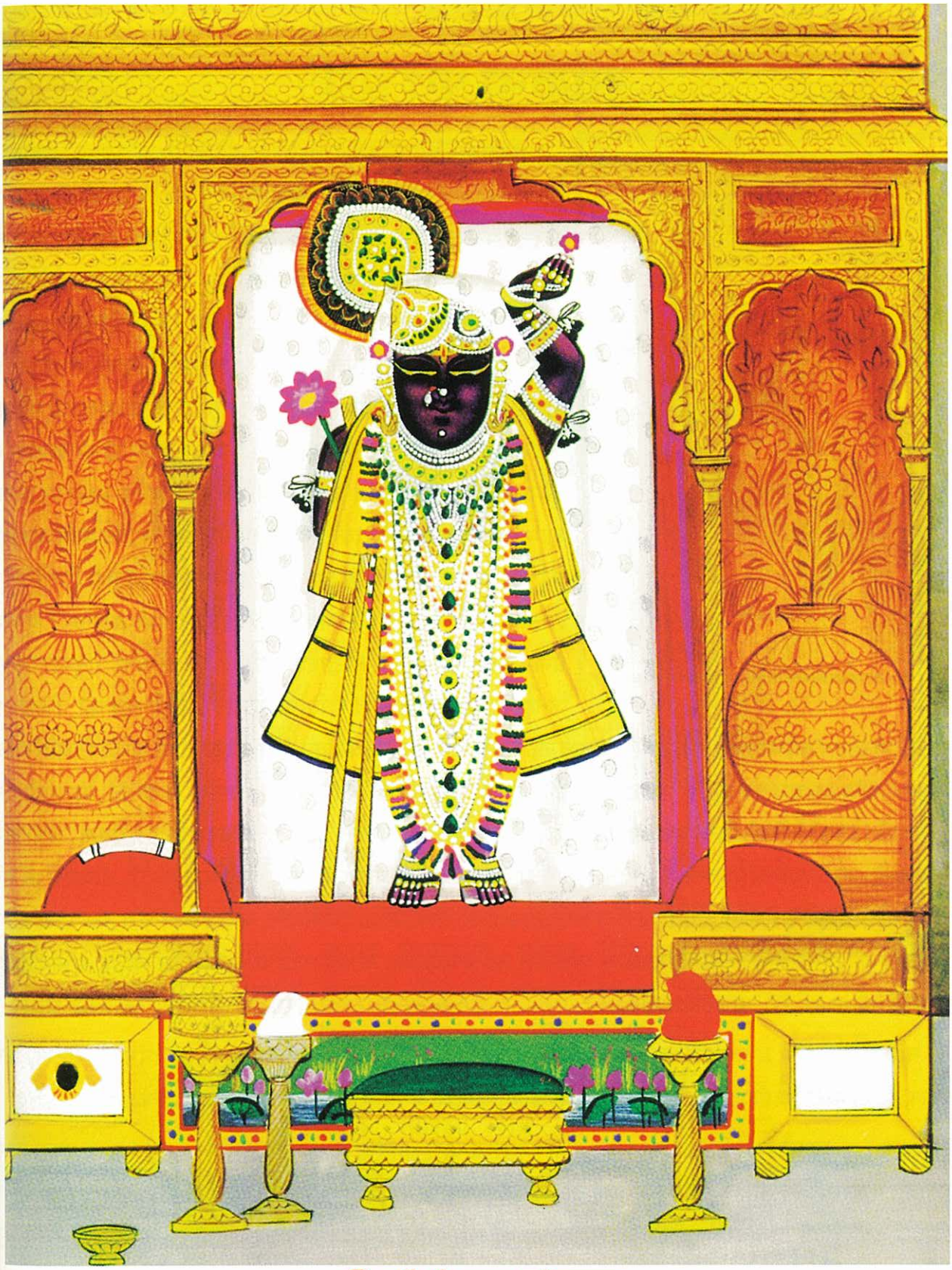

श्री सोने का बंगला

श्री गिरिराज-मुरलीधर जी साकगरिया का दण्डवत व जय श्री कृष्ण

गो. ति. श्री गोवर्धनलालजी महाराज का

संक्षिप्त परिचय

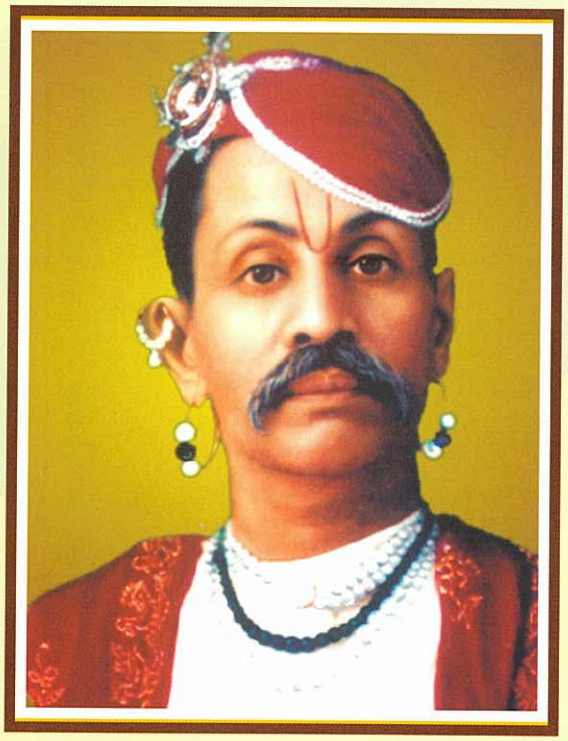

आप वीरवर श्री गो.ति. गिरधारी जी के यहाँ वि.सं. 1918 भाद्रपद 1 के दिन प्रकटे। आप उदीयमान चमक्रत स्वरूप होवे सूं श्रीजी ने आपकी सेवा लेवे हेतु कई राजकीय घटना पैदा करी। पिता श्री गिरधारीजी के मंदिर जिर्णोद्वारार्थ एवं अर्थ सेवा हेतु व्रज निवास होवे पर श्री गोवर्धनलाल जी वि.सं. 1932 आषाढ़ कृष्णा 1 को तिलकार्य 14 वर्ष की उम्र में पदासीन भये। आपको गायन सो बहुत प्रिति हती आपने गोवध न होय सो हम एक लाख गायन को पालेंगे। ऐसी घोषणा करवादी एवं प्रयत्न कर व्रज सों गौ हत्या बंद करवाई। याहि कारण आप जो गौ वल्लभ भये। गोमाता को थुली चारों प्याऊ आदि भी व्यवस्था अनेक स्थल पर करवाई। आपने चार स्वरूप पधराकर लालबाग में उत्सव किये। सर्वप्रथम सारंगी को श्रीनाथजी की सेवा में चालू की। कीर्तन प्रणालिका निर्धारित की। शीतकाल चारों द्वादशी को मंगला में विशेष सामग्री अरोगाई। श्रृंगार की प्रणालिका बांधी। आपने द्वादश निकुंज की भावना अनुसार चार की जगह 12 घटा शीतकाल में निर्मित करी। पाछली रात को, पितांबर को चोलना को चन्द्रोदय की घटा को तथा दामोदरलाल जी महाराज के जन्म दिवस को हीरा की टोपी के श्रृंगार निर्धारित किये। उष्णकाल में पांच अभ्यंग एवं श्रृंगार सामग्री निर्धारित किये। कंसुभी छठ की पिछवाई, अनेक बिछायत, आभूषण, वस्त्र सिद्ध करवाये। आप श्री ने श्रीजी के सुखार्थ सोना के पलना, हिंडोलना, बंगला, जड़ाऊ चोखटा, जड़ाऊ मुकुट, जड़ाऊ साज सिद्ध करवाये। आपने लीला भावनात्मक दीवालगिरी बहुत कारीगरी एवं कलात्मकता सों सिद्ध कराई, दीवाली के बंगला कांच के बंगला श्रीजी एवं नवनीतप्रियाजी में बनाये। सामग्री की नियमितता एवं बंधान, बनावे की विधि तथा सेवा की रीति सब निर्धारित की। परचारगी श्रृंगार व सेवा के अधिकार की प्रणालिका चलाई। पदों के आधार पर चौदह श्रृंगार किये जो आज तक होय हैं। तासों ही ''गो वल्लभ गोवर्धन वल्लभ एवं गोकुल सों रति गोवर्धन सों प्रीति निभाई'' यह सिद्ध भयो।

नाथद्वारा नगर में बनास को पुल बनवायो। गोवर्धन हाई स्कूल, गोवर्धन कन्याशाला, गोवर्धन हॉस्पीटल, जनाना हॉस्पीटल, विद्या मंदिर, धर्मशालाएं, औषधालय, मण्डाण, बगीचा बनवाएं एवं कई नवनिर्माण कराये।

आपने श्री जगदीश में बैठक प्रकट कर सेवा व्यवस्था करी। अनेक सभा में सभापति पद सों भाषण देकर वल्लभ यश पताका फहराय जन मोहित किये। आपके दो बेटीजी एवं एक लालजी उदीयमान धीर, गंभीर, सुंदर, सुडोल, वीर, सहासी एवं दयालु श्री दामोदरलाल जी श्री गुंसाई जी के स्वरूपवत प्रकटे। आपकी अनेक लीला है तथा सेवा श्रृंगार राजनीति काल कौशल में सर्वोत्तम आचार्य तिलकायत भये, तांसो ही आपको स्वर्णयुग दाता कहे गये। आपको प्रशासन बहुत ही चुस्त दुरस्त हतो। अन्त में आपने शिमला में सं. 1990 आश्विन शुक्ला 2 को लीला प्रवेश कर्यो।

सामग्री – श्रीगोपीवल्लभ भोग में जलेबी, राजभोग में जलेबी, राजभोग में पांच भात, अमरस भात आदि आरोगाये गये तथा हिन्ड़ोरा में विशेष सामग्री बूंदी मोहनथाल, मगद, केसरी-चन्द्रिका जलेबी, बासुंदी, बरफी, पूड़ी, गुंजा, कचोरी, दहीबड़ा, फिका चना आदि आरोगाये गये।

मंगला में राग – देवगंधार येह सुख देखौरी तुम माई।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े)

राग आसावरी

प्रथमहि भादो मास अष्टमी रोहिनी बुधवारी।
प्रगटे कूखि महरि जसोदा के लाडिले गिरधारी।।१।।
सुनी ब्रज युवती अपने श्रवणन जहां तहांतें धाई।
मंगल थार धरैं हाथन पर गावती गावती आई।।२।।
मंडित द्वारे धरत साथिये रोपति बन्दनमाला।
पायन परत कहत रानिसों भले जने तुम लाला।।४।।
बाजत थारी और मृदंगा और बाजत है ताला।
हरद दहीकी कांवरी लेलै आये गोप गुवाला।।५।।
बैठे फूल तबे नंद अतिही सबहिन देत बधाई।
हरी-हरी दुब विप्र भाटन लै रायजुंके सीस धराई।।३।।
विनती करत कहत रायजूसों धन्य जन्म विधि कियौ।
ऐसौं सुत प्रगट्यौं तुम्हारे गृह सुफल है जीयो।।७।।
नाचत गावत करत कुलाहल मगन भये रस भारी।
फिरिफिरि पहरि हुलसी दैवेको भूषन वसन उतारी।।८।।
दीनेदान विप्र भाटनकों माला मुदरी चिरा।
रतनजड़ित कुन्डल पहराये मोती झलकत हीरा।।९।।
आनंद रस उच्छाह भावसों सब व्रज उमग्यौं आज।
फूले डोलें यह मुख बोलैं पुत्र भयो व्रजराज।।१०।।
तब नन्दरानी अपनी सखिनसों आनंद राय बुलाये।
पूरन भाग चुंबत रस आनन विहंसत भीतर आये।।११।।

हंसी करी बोली जच्चा सुहागिन आओ पियमन भाये।
बैठी मतों करिये विलसन कों हम घर लालन आये।।१२।।
चरूवा चढ़ावनकों पिय मेरी पहले सास बुलावौ।
रतनजटित गादी मूढ़ापर आनि के बैठावौ।।१३।।
चरूवा चढ़ावनकों नखसिखलौ आभूषन पहरावौ।
भांतिभांति के चीर पाटम्बर इतनी बेर मंगावौ।।१४।।
साथियें धरनकों ननद हमारी तुम बोलि लै आवौ।
रतनजटित अपने सिंघासन आनिके बैठावौ।।१५।।
साथिये धरनकों नेग बहोत है सोदीजे मनभायों।
तातें कहत सुनों पिय तुमसों यह दिन क्योहूँ न पायौ।।१६।।
हंसी व्रजराज कहत रानी सो याते, चौगनो देहैं।
ऐसौ सुत तुम जाय दिखाये देतहूँ न अघैहे।।१७।।
चन्द्रावली व्रजमंगल राधे करिकरि लाड बुलावौ।
उनहीं के भागि दियौं फल हमकूँ उनही पै मँडवावो।।१८।।
हमही तुमही लालन लेकें उनकी गोद बैठावो।
उनको चीत्यो भयो हमारें लालै तुमहि खिलावो।।१९।।
और पिय मेरी ध्योरानी जिठानी आदर दै बोली लावौ।
भाँतिभाँति सारी आभूषण सबहीकों पहिरावौ।।२०।।
थैला भरी भरी दाम मँगावो देहु रोंहिणी हाथा।
हँसी हँसी खरचै रानी रोंहिनी जाकी सिरानी गाथा।।२१।।
गाड़ा भरिभरि सोंजपंजिरी इतनी बैर मंगावौ।
गुड़, घी, दाख खुरेरी मेली पंजिरी बहोत सनावौ।।२२।।
भरिभरि मेरी ध्योरानी जिठानी हँसिहँसि करके लैहै।
यह दिन हमकों दियो विधाता देखिदेखि सुख पैहें।।२३।।
हँसि व्रजरायजू बाहिर आये माय बदनि बोलि लाये।
सगरी सोज़ धरी लै आगें खुब करौ मन भायो।।२४।।
सास नवलदे चरूवा चढ़ावे आछे चीति बनाये।
झांकि झांकि देखत नन्दरानी चरूवा बहोत मन भाये।।२५।।

सोना मोती हीरा के सब आभूषण पहराये।
हँसिहँसि पहरे नवलदे केऊक जोरी मंगाये।।२६।।
बेटी श्यामदे धरत साथिये आछे मोरि संभारे।
मोतिनके अक्षत कुमकुम लै चीत किये उजियारे।।२७।।
गुड़ घी पूजि सात सींकनसों दुहुँ ओर चिपकाये।
सथियनकौ उद्योग देखिके रानीजू बहोत सिहाये।।२८।।
देत भतीजेको झगुली कुलही और हाथनकों चूरा।
खगवरिया कठुला लटकन और पाँयन को पनसूरा।।२९।
इतनौ दैकरि मानदे श्यामदे रामदे झगरो ठान्यौं।
तुमरो देन सुनों वीर मेरे एकौ नहीं मान्यौ।।३०।।
हँसी व्रजराज कहत बहिनसों कहो कहा अरू दीजे।
बांह पकरिके कहत रामदे कह्यों बीर मेरो कीजे।।३१।।
लैहैं भाभीजू की पायल दै पायल ते हैं अति बहु मोली।
रानीजूको बंटा लाय आय रायजू खोली।।३२।।
तुमारी ननद हठीली छबीली ते क्योंहूँ नहीं माने।
बोली लई पास भाभीजू दै करिकें मुसकाने।।३३।।
भाँति भाँति सारी आभूषण तुम हम सब पहरायौं।
मोहों माँग्यौं सो दीयौं बधाई जो हमरे मन भायो।।३४।।
तुम्हरे धुरसारको अलभ बछेरा सो छोरी हों लैहों।
बहुत ठाठ गाय भैंसनिके इतनो लैं घर जैहों।।३५।।
दीने ठाठ गाय भैंसनिके अरू दीने रथ जोरे।
घोड़ाघोड़ी बछेरा बछेरी बहु दीने खोली डोरे।।३६।।
गाड़ा भरिभरि सौनों दीनो दीने मोती हीरा।
कै लख गाम दिये अनगिनती ऐसे रायंजू बीरा।।३७।।
मुरि करि बेटी श्याम दे एक होंस वीर मेरें।
रत्नजटित सुखपाल मंगावो जैहे आछी तेरे।।३८।।
इतनी सुनि आनन्द रायजू दियो सुखपाल मंगाई।
तामें बैठी बेटी शयाम दे भतीजे को नेग चुकाई।।३९।।

इतनौं लै करि चली श्याम दे मुरिमुरि देत असीस।
आनंदरायजू कुँवर बलि गिरिधर जीवो कोटि बरिस।।४०।।
बीरन मेरे जग उजियारे भाभी कुल उजियारी।
चित्र विचित्र कूखि यशोदाकी जिन जायो गिरिधारी।।४१।।
सोने कूखि मढ़ाय यशोदा प्रगट्यौ सुखदाई।
"श्रीविट्ठलगिरिधरनलाल" पर बार बार बलि जाई।।४२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल नन्दराय के नवनिधि आई।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

(छाक के पद)

राजभोग आवता राग-सारंग आज दधि मिठो मदनगोपाल।। भावत मोही तिहारों जूठों चंचल नैन विसाल।।१।। आने पात बनाये दोना, दिये सबन को बाँट।। जिन नहीं पायो सुनोरे भैया मेरी हथेली चाट।।२।। बहुत दिनन हम रहे कुमुदवन कृष्ण तिहारे साथ।। ऐसो स्वाद हम कबहु न चाख्यों सुन गोकुल के नाथ।।३।। आपुन खात खवावत ग्वालन मानस लीला रूप।। "परमानंद" प्रभु हम सब जानत तुम त्रिभुवन के भूप।।४।।

राजभोग में राग-सारंग आंगन नन्द के दधि कादो।। छिरकत गोपी ग्वाल परस्पर प्रगटे जगमें जादो।।१।। दूध लियो दधि लियो लियो घृत माखन माट संयुत।। घरघर ते सब गावत आवत भयो महर के पूत।।२।। बाजत तूर करत कोलाहल वारि वारिदें दान।। जियो यसोदा पूत तिहारों यह घर सदा कल्याण।।३।। छिरके लोक रंगीले दीसे हरदी पीत सुवास।। "मेहा" आनन्द पुंज सुमंगल यह व्रज सदा हुलास।।४।।

हिन्डोरा में राग-मल्हार हिन्डोरे माई झुलें गिरधर लाल।। संग झूलत वृषभान नंदिनी बोलत वचन रसाल।।१।। पिय शिरपाग कंसुभी शोभित तिलक बिराजत भाल।। प्यारी पहेरे कंसुभी चोली चंचल नयन विशाल।।२।। ताल मृदंग बाजे बहु बाजत आनंद उर न समात।। श्रीवल्लभ पदरज प्रतापतें निरख "रसिक" बलजात।।३।।

राग–अड़ानों (चौताल) मन मोहन रंग बोरे झूलन आई हिन्डोरें।। (यह पूरा पद पेज ९९ पर पढ़े।)

राग–अड़ानों आज लाल झुलत रंग भरे हो।। (यह पूरा पद पेज ९९ पर पढ़े।)

राग–जैजैवन्ति माई आजतो हिन्डोरें झूले छैयां कदमकी।। (यह पूरा पद पेज ११९ पर पढ़े।)

राग–कान्हरौ जमुना तट नव सघन कुंज में हिन्डोरना झुलन सब आई।। मधि राधा माधो दोउ बैठे आसपास जुवती मन भाई।।१।। सावन मास हरित घन बनमें रिमजिम रिमजिम बुंद सुहाई।। कछु भीजे पट अंग झलमले नवीन वन छबि बरनी नहीं जाई।।२।। बिविध भांत झुलत और फूलत रस प्रवाह उमगे न समाई।। गावत सांवन गीत मुदित मन संक न मानत निडुर सुभाई।।३।। अति रसमत भई जिय तबही श्याम सुंदर तब ले उर लाई।। चीर खसित अभिलाख ऐ सब अधर सुधा पीवत न अघाई।।४।। बीच बीच मुरली धुनि सुनियत कोकिला पीक चात्रक गये ठाई।। "चत्रर्भुजदास" वारने ले ले गिरधर पीय की कीरत गाई।।५।।

राग–बिहाग ये दोऊ झुलत बांहजोरे।। नवल कुंज के द्वारे देखो रमकतहें चहुंओरें।।१।। सप्त सुरन मिल मुरली बजावत बीच बीच तान लेत रस थोरें।। "हरिदासके" स्वामी श्यामा कुंजबिहारी छबि निरखत तृनतोरे।।२।।

राग–केदारों झुलत दोऊ कुंज कुटिर।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े।)

राग–केदारों सोतु राखलेरी झोटा तरण भये।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

शयन में राग–कान्हरों हरी जनमत ही आनन्द भयों।। नवनिधि प्रकट भई नन्दद्वारे सब दुख दूर गयो।।१।। वसुदेव देवकी मतो उपयों पलनामांझ लयों।। कमलाकंत दियों हूंकारों यमुना पार दयों।।२।। नंद जसोदाके मन आनन्द गर्ग बुलाय लयो।। "परमानंददासकों" ठाकुर गोकुल प्रगट भयो।।३।।

पोढ़वा में राग–कान्हरौ धन्य रानी यशोमत ग्रह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्णा २

श्रृंगार – दुमाला को।

वस्त्र – लाल एकदाली चुन्दड़ि रूपेरी कोरकी, कटिमें पिछोड़ा श्रीमस्तक पर लाल दुमाला पर सोनरी जरीके कामका भीमशाही कतरा-कलंगी धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र वादली रंग के तथा पिछवाई लाल एकदाली चुन्दड़ीकी, रूपेरी कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष – आज प्रभु मोती के काम के हिन्डोरे में झूलें। भीतर पधारने पर आरती की गई। अनोसर में बिछात की गई तथा मणीकोठा में सोनाकी सांकल का झूला बांधा गया। अनोसर की सभी तैयारियां की गई।

मंगला में राग-देव गंधार **नैन भर देखों नन्द कुमार।। जसुमति कूंख चन्द्रमा प्रकट्यों या ब्रजको उजियार।।१।। वन जिन जाउ आज कोउ गोसुत और गाय गुवार।। अपने अपने भेष सबे मिली लावों विविध श्रृंगार।।२।। हरद दुब अक्षत दधि कुमकुम मंडित करो दुवार।। पूरों चौक विविध मुक्ताफल गावो मंगलचार।।३।। चहूं वेद ध्वनी करत महामुनि होत नक्षत्र विचार।। उदयो पुन्य को पुंज सांवरो सकल सिद्धि दातार।।४।। गोकुल वधु निरखी आनंदित सुन्दरता को सार।। दास "चतुर्भुज" प्रभु सब सुख निधि गिरधिर प्राण आधार।।४।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल **धन्य गोकुल जहां गोविंद आये।। धन्य धन्य नंद सुमंगल निसदिन, धन्य जसुमति जिन गोद खिलाये।।१।। धन्य यह बालकेलि यमुनातट, धन्य वन सुरभी वृंद चराये।। धन्य यह समय धन्य यह लीला, धन्य यह बेनु अधर धरि गाये।।२।। धन्य यह चरण सदा सुखकारी, संत जननके हृदे रहाये।। धन्य "सूर" उखल धन्य गोपी, जाके हेत गोपाल बंधाये।।३।।**

राजभोग में राग–सारंग आज महा मंगल मेहेरानें।। (यह पूरा पद पेज १३८ पर पढ़े।)

प्रथम पद राग–केदार हों तों झूलीरी हिन्डोरे अपने प्यारे के संग।। तेसेई बादर ओलर आये आऐं सुहायो ऐकलों रहीरी दामन चमक चमक।।१।। कबहूँ बूँद नेन्ही नेन्हीं फूही डार तक रमक रमक।। "सुघरराय" के प्रभु रस बस करलिनों अब कहा करे काम तमक तमक।।२।।

द्वितीय पद राग–बिहाग लाल मुनीन के झूंड़न झूलन आईहो हिन्डोरें।। (यह पूरा पद पेज १०१ पर पढ़े।)

तीसरा पद राग–बिहाग नवल लालके संग झूलन आई एहों हिन्डोरें।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

चौथा पद राग–बिहाग झुलेरी झुलेरी प्यारो लाल झूलें।। (यह पूरा पद पेज १२८ पर पढ़े।)

शयन में राग–नायकी रंग बधावनो गोकुलराय के धाम।। मोहन मुरत पुरनकाम।।१।। नाचत गावत नेह जनावत आई सब मिल भाम।। "बिचित्र बिहारी" प्रभु नेनन देख्यों ब्रजसुन्दर घनश्याम।।२।।

पोढ़वा में राग–कान्हरो धन्य रानी यशोमति ग्रह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्ण ३

श्रृंगार – पाग पिछोड़ा को।

वस्त्र – लाल रंग के सोनेरी कोर के, कटिमें पिछोड़ों, श्रीमस्तक पर लाल रंग की पाग पर मोरकी सादी चन्द्रिका धराई गई है। मोती की लुमक तथा मोती का सीरपेच धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र पीला रंगके तथा पिछवाई लाल सोनेरी कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष – आज प्रभु चांदी के हिन्डोरना में झूलें बादमें मुखियाजी आदि तीन परिक्रमा करके प्रभुको श्रीजी के पास पधराये व आरती की गई। उसी वक्त हिन्डोरा विजय किया गया।

मंगला में राग–बिलावल सो गोविन्द तिहारें वृज बालक।। प्रगट भये घनश्याम मनोहर घरे रूप दनुज कुल कालक।।१।। कमलापति त्रिभुवनपति नायक भवन चतुर्दश नायक सोई।। उत्पति प्रलय कालको कर्त्ता जाके किये सबे कुछ होई ।।२।। सुनों नंद उपनंद कथा यह आयौ क्षीर समुद्रकौ वासी। वसुधा भार उतारन कारन प्रगट ब्रह्म वैकुठ निवासी।।३।। ब्रह्मा महादेव इंद्रादिक विनती करि यहाँ लाये।। "परमानंददासकौ" ठाकुर बहुत पुन्य तपके फलपायें।।३।।

श्रृंगार में राग–आजावरी माईरी कमलनैन श्याम सुन्दर झूलत है पलना।। बाललीला गावत सब गोकुलकी ललना।।१।। लालके अरून तरून चरनकमल नख मणि शशि जोती।। कुंचित कच भमराकृत लर लटकत गज मोती।।२।। लाल अंगूठा गहि कमल पाणी मेलत मुखमाहीं।। अपनो प्रतिबिंब देखी पुनि पुनि मुसिकाई।।३।। रानी जसुमति पुन्य पुंज वार वार लाले।। "परमानंदस्वामी" गोपाल सुत सनेह पाले।।४।।

राजभोग में राग–सारंग आंगन नन्द के दधि कादों।। (यह पूरा पद पेज १५० पर पढ़े।)

प्रथम पद राग–मल्हार झूलन आई व्रजनारी, गिरिधरनलालजु के सुरंग हिन्डोरना।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

द्वितीय पद राग–मल्हार तेसोई वृंदावन, तेसिये हरित भूमि, तेसीये वीरवधू, चलत सुहाई माई।। (यह पूरा पद पेज ७७ पर पढ़े।)

तीसरा पद राग–मल्हार राधा मोहन झूलत सुरंग हिन्डोरे।। वरण वरण तन चूनरी पहेरें व्रज वधू चहूंओरें।।१।। राग मल्हार अलापत सप्तसुरन तीन ग्रामजोरें।। मदन मोहनजुकी या छबि उपर "गोविन्द" बल तृण तोरे।।२।।

चौथा पद राग–मल्हार रंगमच्यो सिंघद्वार हिन्डोरे व झुलना।। (यह पूरा पद पेज ७८ पर पढ़े।)

राग–कान्हरौ भादोकी रेनि अंधियारी।। द्वार कपाट वाट भट रोके दिश दिश कंत कंस भय भारी।।१।। गरजत गगन महाडर लागत बीच बहत है यमुना कारी।। ताते यह सोच जिय आवत क्यों दुरिहे शशि वदन उजारी।।२।। तब पति बोली वचन करि राखी वर काहेन ताहि दीन मारी।। देखों धों एसो सुत बिछुरत कहो केसें जीवे महतारी।।३।। सुनी सुनी दीन वचन देवकीके दीन बन्धु भक्तन भयहारी।। कटि गये निगड़, उघड़ गये गोपुर, "सुर" सुमघवा वृष्टि निवारी।।४।।

पोढ़वा में राग–कान्हरौ धन्य रानी यशोमत ग्रह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्ण ४

श्रृंगार – पाग-गोलचन्द्रिका का।

वस्त्र – गुलाबी रंग के रूपहरी कोरके, कटि में धोती तथा पटका, श्रीमस्तक पर गुलाबी पाग पर रूपहरी जरी के काम की गोल चन्द्रिका तथा लुमक रूपहरी वादला की धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र लाल रंग के तथा पिछवाई गुलाबी रंग की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

मंगला में राग-रामकली सोहिलरा नन्दमहर गृह आज बाजे बाजे मंदिलरा अनुपम गति।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल सो गोविंद तिहारे वृजबालक।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग आज नन्दराय के आनंद भयौ।। (यह पूरा पद पेज ९६ पर पढ़े।)

भोग में राग-मारू श्रीगोपाल लाल गोकुल चले हों बलिबलि तिहिंकाल।। मोद भरे वसुदेव गोद लैं अखिल लोक प्रतिपाल।।१।। अरून उदय जैसें तम फूटत खुलि गये कुटिल कपाट।। महावेग बल छांडि आपनों दीनी श्रीयमुनावाट।।२।। भोर भयें जैसे कुमुदिनी मूँदत कंसादिक भये मोहे।। संत जननके मन अम्बुज वन फुले डहडहे सोहे।।३।। बारबार फुहीं फूल सी बरखत, अंबुद अंबर छायौ।। अपनों निज वपु शेष जानि तहँ, बूँद बचावन आयौ।।४।। परमधाम जगधाम श्याम अभिराम श्रीगोकुल आये।। "नंददास" आनंद भयौ व्रज हरखित मंगल गाये।।५।।

संध्या में राग-गौरि हेरी हेरी रे भैय्या हेरी हेरी रे।।।।ध्रु.।। सकल काज पूरन भये नैनन देखे आज।। (यह पूरा पद पेज १४२ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरौ ऐसौ पूत देवकी जायौ।। चारों भुजा चारि आयुध धरे कंस निकंदन आयौ।।१।। भरि भादों आधी राति अष्टमी देवकी कंत जगायौ।। देख्यो मुख वसुदेव कुँवर कौ फूल्यौ अंग न

समायौ।।२।। अब ले जाहु बोगि इहि गोकुल बहुत भाँति समझायौ।। हृदय लगाय चूमी हरिकौ मुख पलनामें पौढायौ।।३।। तब वसुदेव लियौ कर पलना अपने सीस चढ़ायौ।। तारे खुले पहरूवा सोये जाग्यो कोऊ न जगायौ।। ४।। आगे सिंघ शेष ता पाछें नीर नासिका आयौ।। हूँक देत बलि मारग दीनौ तब तरवन जल आयौ।।५।। नंद यशोदा सुनों विनती सुत जिनि जानि परायौ।। जसुमति कहै जाउघर अपने कन्या ले घर आयौ।।६।। प्रातः भयौ भगनीके मंदिर प्रोहित कंस पठायौ।। कन्या भई कूखि देवकीकें सखियन शब्द सुनायौ।।७।। कन्या नाम सुन्यों जब राजा पापी मन न पत्यायौ।। क्रोध उपाय कंस मन काँप्यो राजा बहोत रिस्यायो।।८।। कन्या मँगाय लई राजानें धोबी पटकन आयौ।। भुजा उखारि लै गई उरते राजा मन बिलखायौ।।९।। बेदहू कह्यौ स्मृति हू भाख्यौ सो डर मनमें आयौ।। "सूरदास" प्रभु गोकुल प्रगटे भयौ भक्तन मन भायौ।।१०।।

पोठवा में राग–कान्हरौं धन्यरानी यशोमत ग्रह आवत गोपीजन।।
(यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्ण ५

श्रृंगार – पाग-कतराको।

वस्त्र – लाल ऐक दाली चुन्दड़ी के रूपहरी कोरके। कटिमें पिछोड़ो, श्रीमस्तक पर पाग पर मोरपिछके कामका जमाव का कतरा धराया गया। ठाड़ा वस्त्र हरे रंगके तथा पिछवाई लाल ऐक दाली चुन्दड़ी की रूपहरी कोर की धराई गई है। आभरण-नित्यानुसार पन्ना के धराये गये है।

विशेष – आज जन्माष्ठमी के वस्त्र केशर में रंगाये गये है तथा छट्टि का चित्रण करने का काम चालु है। प्रतिदिन जन्माष्टमी की तैयारी होती रहती है।

मंगला में राग-बिलावल आज नन्दजू के द्वारे भीर।। गावत मंगल गीत सबे मिल प्रगटे हें बलवीर।।१।। एक आवत एक बिदा व्है, एक ठाड़े मंदिर के तीर।। एकनकुं गउदान देतहे एकनकुं पहरावत चीर।।२।। एकनकुं फूलमाल देतहे एकनकुं घसी चंदन नीर।। "सूरदास" तब नवविधि पाई, धन्य जसोदा पुण्य शरीर।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल नन्द नन्दन वृंदावन चन्द।। जदुकुल नभ तिथी दुतिय देवकी प्रगटे त्रिभुवन नन्द।।१।। जठर कुंहूते वृद्ध वारूणी दिस मधुपुरी सुछन्द।। वसुदेव शम्भु सीस धरी आन्ये गोकुल आनन्द कंद।।२।। व्रज प्राची जसोदा राकानिश शरद ऋतु नन्द।। उडुगन सहित सखा संकर्षण तम कुल दनुज निकंद।।३।। गोपीजन चकोर चित बांध्यों पल निवारी दुख द्वंद।। "सूरदास" कला षोडस परिपूरण परमानंद।।८।।

राजभोग में राग-सारंग सब ग्वाल नाचे गोपि गावे।। (यह पूरा पद पेज १३६ पर पढ़े।)

भोग में राग-जेजेवन्ति माई आजतो गोकुलगाम कैसो रह्यौं फूलकें।। गृह फूले दीखे जैसे संपति समूलके।।१।। फूली-फूली घटा आई घरघर

घूमकें।। फूली फूली बरखाहोत झर लायौ झूमकें।।२।। फूल्यौ फूल्यौ पुत्र देखि लियौ उर लूमिकें।। फूली है यशोदा माय ढोटा मुख चूमिकें।।३।। देवता आंगिन फूले घृत खाँड होमिकें।। फूल्यौ दीसै दधिकाँदो ऊपर सो भूमिकै।।४।। मालिन बाँधे बंदन माला घरघर डोलिकैं।। पाटंबर पहराय सब अधिकें अमोलकें।।५।। फूले है भंडार सब द्वार दीये खोलिकें।। नंदराय देत फूले "नंददास" बोलिके।।६।।

संध्या में राग–जैजैवन्ति माई आजतो बधाई बाजे मंदिर महरकें।। फूले फिरें गोप ग्वाल ठहर ठहरकें।। फूली धेनु फूले धाम, फूली गोपी अंग अंग, फूले तरवर मानों आनंद लहरके।।१।। फूले बंदी जनद्वारे, फूले बाँधे बंदनवारै, फूले जहाँ जोई सोई गोकुल शहरकें।। फूले फिरें जादोंकुल, आनंद समूल मूल, अंकुरित पुन्य पुंज पाछिले पहरके।।२।। यमुनाजल प्रफुलित कुंज पुंज गरजत कारे भारे यूथ जलधरके।। निर्तत मगन फूलि, फूलि रति अंग अंग, मनके मनोज फूले हलधर हरके।।३।। फूले द्विज संतवेद, मिटि गयौ कंस खेद, गावत बधाई "सूर" भीतर महरके।। फूली है यशोदारानी, सुत जायौ सारंग पानी, भूपति उदार फूले भार टार्यो धरिके।।४।।

शयन में राग–कान्हरौं भादों की रैनि आँधियारी।। (यह पूरा पद पेज १५५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–कान्हरौं धन्य रानी यशुमति ग्रह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्ण ६

श्रृंगार – पाग-कतराको।

वस्त्र – हरा सफेद लेहरिया के सोनेरी कोरके। कटिमें पिछोरा तथा पाग लहरिया की उसपर सोनेरी जरिके कामका जमाव का नागफणी का कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र लाल रंगके तथा पिछवाई हरा-सफेद लेहरिया के सोनेरी कोर की धराई गई है।

विशेष – आज गोपीवल्लभ भोग में मेवा बाटी आरोगाई गई।

मंगला में राग-बिलावल पूत भयोरी नंदमहरके नाचत गावत ग्वाल।। गिनत न काहू जगमें आली वारत हाटक लाल।।१।। हरद दूध दधि माखन छिरकत जब प्रगटे गोपाल।। "चतुर बिहारी" संतन हितकारी गोकुल आये परम कृपाल।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल यशुमति मुदित, मुदित सब गोकुल नन्द मुदित मन अधिक भावरी।। खग मृग मुदित, मुदित द्रुम वेली, महरी मुदित जहां धरत पांवरी।।१।। बालक मुदित भवन में खेलत हलधर मुदित अनुज सुभावरी।। जुवती मुदित भई छबि निरखत हमरे त्रियन कौ यह न्हावरी।।२।। यमुना मुदित भई तिहिं औसर मुदित भयौ तन परम चावरी।। "जन त्रिलोक" प्रभु काहे न मुदित व्है, उदित भयौ ब्रजकुलको रावरी।।३।।

राजभोग में राग-सारंग आज महामंगल मेहेराने।। (यह पूरा पद पेज १३८ पर पढ़े।)

भोग में राग-काफी हो वृजराज की ढाढ़िन वृज में आई हो।। रानी यशोमति जायो पूत सुधाम ते धाई हो।।१।। सुन्दर रूप अनूप सबे मन भाई हो।। मानो उर्वशी इन्द्र अखाडे तें आप पठाई हो।।२।। मंदिरमें लई बोल जहां नन्दरानी हों।। सीस नवाय असीस दे वंश बखानी हो।।३।। बाजत ताल मृदंग उपंग सु बांसुरी।। अंबुज नेन विशाल सु गावे गांसुरी।।४।। निर्तत ताथेइ ताथेइ लीये गति गोंहनी।। नन्दके मंदिरते निकसी मानो

मोहनी।।५।। रीझ जसोमति रानी सबे व्रजसुन्दरी।। दिये कनक कुंडल हार दई कर सुन्दरी।।६।। दीनी नई नकबेसर बेंदी जराय की।। दीनीहे कंचन जेहर पायल पायकी।।७।। दई सोंधे भीनी सारी कंचुकी नेहकी।। कीनी हे माल निहाले सो ढाढ़िन गेहकी।।८।। ढाढ़ी चल्यों लदि लाद सबे चित चाड़िलों।। चिरंजीयों "चतुर्भुजदासको" गिरिधर लाडिलों।।९।।

संध्या में राग–गोरी रानीजु जायोंहे मोहन पूत, बधावों श्री वृजराय के।।ध्रु.।। मास भादो द्योंस आठे रोहनी बुधवार।। जसोदा की कूंख जनमें हरी प्रभु लियो अवतार।।१।। एक बार सुहाग सुन्दर ऐक घोख कुंवार।। सजन प्रितम नाम ले ले देत परस्पर गार।।२।। पुत्र मानो भये घर घर नाचत ठाम ही ठाम।। नंद द्वारे भेट ले ले उमग्यो गोकुल गाम।।३।। साथीऐ श्यामा धरत द्वारे सात सीक बनाय।। एक युवती मुदित हे गहत जसोदा जू के पाय।।४।। ऐक मंगली मंगल गावे लीला गावे ग्वाल।। ऐक माखन दुध दधि ले छिरकत फिरत हैं बाल।।५।। ऐक हेरी दे दे नाचे ऐक भेटत धाय।। ऐक काहू बदत नाहिन ऐक खिलावत गाय।।६।। एक नार सुहाग सुन्दर ऐक जोबन जोर।। ऐक काहु बदत नाहिन ऐक हसत मुख मोर।।७।। सुदह भजन सु प्रेम सागर होय घोख विलास।। देख जिनकी संप्रदा जिन फूले है "माधोदास"।।८।।

शयन में राग–रायसों बधाइयाँ जसोदे! नंदरानी दे लाल उपनां सेस नहए सीज बाइयां।। साजन चंगा साँइ कीता असीफूली अंग न माइयाँ।।१।। पुत्र जायौ जग जीवनि तंडि लागि यॉ पर बड़ाइयां।। भाग सुलखननूँ असीस वे धोलि धुलाइयाँ।।२।। आज सहीये सुख वसदानूं व्रज मैना सब भूलाइयाँ।। आनंद भरी सोहनियाँ सब गोपी तो घर आइयाँ।।३।। बडभागी नंद बेठा देदा मोह माँगी ठकुराइयाँ।। दूध दही सिरपावै दै नाचे देवा राखे उपचाइयाँ।।४।। सुखी हुये सुरनर मुनिजन मानो रंक निधि पाइयाँ।। "रामराय" प्रभु प्रगटिया भगवान ललाँ मन भाइयाँ।।५।।

पोढवा में राग–कान्हरौं धन्य रानी यशोमत ग्रह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्णा ७

(आज छट्ठी का उत्सव, देहरी बन्दन माल)

श्रृंगार – पाग-चन्द्रिका का।

वस्त्र – लाल रूपहरी कोरके, कटि में पीछोडों, श्रीमस्तक पर लाल पाग पर सादी मोरकी चन्द्रिका। ठाड़ा वस्त्र पीले रंग की रूपहरी कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार हीरा मोती व सोनेके तथा लाल सफेद मीना के धराये गये है।

विशेष – आज शयन भोग के साथ प्रभु छट्ठी की विशेष सामग्री सीरा-पुडी, साग-भुजिया, दूध, बासुंदी आरोगाई गई भोग सरने के बाद यह भोग छट्ठी को धराये गये।

मंगला में राग-देवगन्धार यशोदा नाल न छेदन देहों।। मनिमय जटित हारग्रीवाको वह आज हों लेहों।।१।। ओरनके हें सकल गोप मेरे एक भवन तुम्हारो।। मिटि जो गयो संताप जनमको देख्यो नन्द दुलारो।।२।। बोहोत दिननकी आशा लागी झगरिन झगरों कीनों।। मनमें विहसत हें नन्दरानी हार हियेको दीनो।।३।। जाको नाल आदि ब्रह्मादिक सकल विश्व आधार।। "सूरदास" प्रभु गोकुल प्रगटे मेटनकों भूभार।।४।।

राग-देवगंधार झगरिन तें हों बोहेत खिजाई।। कंचनहार दिये नहीं मानत तुंही अनोखी दाई।।१।। वेगि तू नार छेदि बालककों जातहे वियार भराई।। सत संयम तीरथ व्रत कीने तब यह संतति पाई।।२।। दीजे विदा जाउं घर अपने कालि सांझकी आई।। "सूरदास" प्रभु गोकुल प्रगटे भक्तनके सुखदाई।।३।।

श्रृंगार में राग-देवगंधार जसुमति लटकत पाय धरे।। भलो मनेहों झगरिन तूं मति मनहीं डरे।।१।। दीनों हार ठार मनि कंचन मोतिन थार भरे।। "सूरदास" स्वामी प्रगटे हें ओसर पर झगरे।।२।।

राग–बिलावल जसुमति लटकत पाई परे।। तेरो भलो मनाई होंरी झगर बिनुतू जिनि मनहिं डरे।।१।। दिनों हार ढ़ार कर कंकन मोतियन थाल भरें।। "सूरदास" स्वामी प्रगटे हें ओसर पर झगरे।।२।।

राज भोग में राग–सारंग घर घर ग्वाल देत है हेरी।। बाजत ताल मृदंग बांसुरी ढोल दमामा भेरी।।१।। लूटत झपटत खात मिठाई कहि न सकत कोउ फेरी। उन्मद ग्वाल करत कोलाहल व्रज वनिता सब घेरी।।२।। ध्वजा पताका तोरन माला सबें सिंगारी सेरी।। जय जय कृष्ण कहत "परमानन्द" प्रगट्यो कंस को बेरी।।३।।

राग–सारंग आंगन नन्द के दधि कादो।। (यह पूरा पद पेज १५० पर पढ़े।)

राग–मल्हार बधाई री बाजत आज सुहाई श्रीगोकुलराज के धाम।। रानी जसोदा ढोटा जायो मोहन सुंदर स्याम।।१।। सुनि सब गोप घोख के बासी चले बर बसन बनाय।। तापुर की मंगल ब्रज बीथन भीर न निकस्यों जाय।।२।। आई सब गोप बधु मिल साथन हाथन कंचन थार।। कमलबदनी सब बनी कमलासी झलकत कूंडल हार।।३।। नाचत ग्वाल करत कुतूहल दधि घृत खोरें गात।। देत मंगाय बसन पट भूषन फूले अंग न मात।।४।। जो जाके मन हूती कामना सो दीनी नंदराय।। "नंददास" को दई कृपा करि अपने ललनकी बलाय।।४।।

संध्या में राग–कान्हरौ चलों मेरे लाडिले हो पायन पेजनी को चाय।। रतन जटित की घड़ाई, याही लालच कों पहराई, ठुमक ठुमक पगधरो मनमोहन बलाय।।१।। आजको दिन सुहावनो, बल जाऊँ लला, मेरे आंगन खेलीय धाय।। वारोंगी सरवस "नारायण" देहोंगी विप्रन गाय।।२।।

शयन भोग आये राग–कान्हरौ आज छट्टी जशुमति के सुत की चलों बधावन माई।। भुषन बसन साज मंगल ले सकल सिंगार बनाई।।१।। भली भांत बिध करीवे बड़ सुत पायो नंदराई।। पुन्य पूंज फूले ब्रजवासी घर घर होत बधाई।।२।। पुरन काम भये निजजन के जीवेंगें जस गाई।। "परमानंद" बात भई मनकी मुदित मरजाद पाई।।३।।

राग-कान्हरौ मंगल घोंष छट्टि को आयो।। आनन्दे व्रजराज जसोदा मन हूं अघन धन पायो।।१।। कुंवर न्हवाय जसोदा रानी कुलदेवी के पाय परायो।। बहु प्रकार व्यंजन धरि आगें सब विधि भलो मनायों।।२।। सब व्रजनारी बधावन आई सुतको तिलक करायो।। जय-जयकार होत गोकुल में "परमानन्द" जस गायो।।३।।

शयन में राग-बिहाग श्रवन सुनि सजनी बाजे मंदिलरा।। (यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

राग धनाश्री सबनसों कहति जसोदामाय जन्मदिन लालकौ फिरि आयौ।।ध्रु.।। जब बीते सब मास बहोरि आयौ पुनि भादों।। दिन आठें बुधवार होत गोकुल दधिकाँदौ।। बोलि लईं व्रजसुंदरि हिलिमिलि मंगल गाय।। बाँधति बंदनवार मनोहर मोतिन चौक पुराय।।१।। केसरि चंदन घोरि कान्ह बलि प्रथम न्हवाये।। नानावसन अनूप कनिक भूषन पहराये।। रौरी कौ टीकौ दियौ अंजन नैन लगाय।। देत नौछावरि रोहिनी फूली अंग न माय।।२।। बजत बधाई द्वार नगारे भेरी ढोला। व्रज कौतूहल होई उमग्यौ मानों सिंधु कलोला।। भई दुंदुभी की गरजना सुर विमान चढ़ि आये।। शिव विरंचि स्तुति करें सुर सुमनन बरखाय।।३।। गाम गामतें विप्र भाट गंधर्व जु आये।। जाकौ जेसौ चाउ दान तिन तैसो पाये।। भली भाँति पूजा करी नीके नंद जिमाय।। दै असीस घरको चले सोंधे सौ लपटाय।।४।। ऐसी लीला देखि फिरत फूले व्रजवासी।। फूली धेनु और बच्छ फूली द्रुम कंज पलाशी।। गोवर्द्धन फूल्यौ सदा फूली श्रीयमुना बहाई।। "रामदास" मन फूल भई श्रीगिरधरकौ जस गाई।।५।।

राग-कान्हरौ यह धन धर्महीते पायो।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

राग-नायकी आनन्द बधावनों नन्द महरजू के धाम।। (यह पूरा पद पेज १२९ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-कान्हरौ धन्य रानी यशुमत ग्रह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्ण ८

श्रीजन्माष्टमी

देहली वंदनमाल, हांडी, पंचामृत स्नान एवं अभ्यंग

श्रृंगार – मस्तक पर दोहरी लड की अलकावली, सीरपेच, शीश फूल सभी हीरा पन्ना के, त्रिवली एवं कुण्डल हीरा पन्ना मोती माणक के। वेणी श्याम रेशम की हीरा मोती की, माणक का तिलक एवं केसर की मरवट। अलंकार कमलाक्ष, नकवेशर माणक मोती के तथा हीरा की चिबुक एवं भारी श्रृंगार चरणारविंद तक हाँस तीन जोड़ी, हार हीरा पन्ना माणक मोती के, कस्तुरी की माला, मोहन माला एवं फूल की माला श्रीहस्त में बाजूबंद पोंहोची हथपान कड़ा सब हीरा पन्ना के श्रीचरण कमल में नखावली मुद्रिका हीरा की पगपान पायल पैंजनी जेहर अनपट बिछिया सर्वे हीरा पन्ना माणक मोती के नूपूर सोना के हीरा जड़ित।

वस्त्र – मलमल डोरीया केशर से रंगे हुऐ केसरी रंग के चाकदार वागा तथा सूथन लाल छापा की मस्तक पर केसरी कुल्हे पर पांच मोरपंख की चंद्रिका। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम। कंदरा पर हीरा जड़ा चोखटा। पिछवाई लाल रेशम की सोनेरी चौड़ा पट्टा की किनारी की।

सामग्री – आज सभी भोग में मनोहर के लाडू विशेषकर के आते हैं राजभोग में विशेष में खीर चार प्रकार की पांच भात, वड़ा, तीनकुड़ा, पापड, तिलपडी, भुजीना, रायता, शाक बूंदी, सकरपारा एवं नित्य की सामग्री आरोगाई जाती है महाभोग में सखड़ी, अनसखड़ी, दुधघर, खांडघर सभी प्रकार की कई सामग्री अरोगाई जाती है।

वन्दना **प्रातः समय उठ करिये श्री लक्ष्मण सुत गुणगान।। प्रकट भये श्री वल्लभ प्रभु देत भक्तिदान।।१।। श्री विट्ठलेश महाप्रभु रूप के निधान।। श्री गिरिधर गुणनिधान उदय भयो भान।।२।। श्री गोविंद आनंदकंद कहा बरणो गुणगान।। श्री बालकृष्ण बालकेली रूप ही**

सुहान।।३।। श्री गोकुलनाथ प्रकट कियो मारग बखान।। श्री रघुनाथ लाल देख मन्मथही लजान।।४।। श्री यदुनाथ महाप्रभु पूरण भगवान।। श्री घनश्याम पूरणकाम पोथी में ध्यान।।५।। पांडु रंग विट्ठलेश करत वेदगान।। "परमानंद" निरख लीला थके सुर विमान।।६।।

प्रभु के जगाने का राग-भैरव जागो जागो-जागों मेरे गिरीधर जगत उजियारे।। कोटि मदनवारों मुसकनी पर कमल नयन अंखियन के तारे।।१।। सुरभी वच्छ गोपाल निशंक ले यमुना के तीर जाओ मेरे प्यारे।। "परमानंद" कहत नंदरानी दूर जिन जाओ मेरे ब्रज रखवारे।।२।।

कलेवा का कीर्तन राग-विभास छगन मगन प्यारे लाल कीजिये कलेवा।। छींके ते सगरी दधि ऊखल चढ़ काढ़ लेहो, पहेन लेहो झगुली फेंटा बाँध लेहो मेवा।।१।। यमुनातट खेलन जावो, खेलन मिस भूख न लागे, कोन परी प्यारे लाल निस दिना की टेवा।। "सूरदास मदनमोहन" घर ही क्यों न खेलों लाल देहोंगी चकडोर बंकी, हंस मोर-परेवा।।२।।

मंगल भोग सरे तब (अष्टपदि) राग विभास मंगलं मंगलं वृजभुवी मंगल।। मंगलमिह श्री नन्द-यशोदा नाम स्वकीर्तन में तद्रूचिरोत्संग सुलालित पलित रूपम।।१।। श्री श्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नामस्वार्तजना शय तापापहमिति मंगलरावम्।। ब्रजसुन्दरी वयस्य सुरभीवृन्द मृगीगण निरूपम् भावाः मंगल सिंधु चयाय।।१२।। मंगल मीषत्स्मित युतमीक्षण भाषण मुन्नत नासापुट गत मुक्ताफल चलनम्।।२।। कोमल चलदंगुलिदल संगत वेणुनिनाद विमोहित वृन्दावन भुवि जाताः।।३।। मंगलऽखिलं गोपी शितुरिति मंथर गति विभ्रम् मोहित रासस्थित गानम्।। त्वं "जय" सततं गोवर्धनधर पालय निज दासान्।।४।।

मंगला दर्शन में

राग-देवगंधार नैन भरी देखो नन्द कुमार।। (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े।)

मंगला दर्शन राग-भैरव आज बड़ो दरबार देख्यो नंदराय तेरो।। (यह पूरा पद पेज १३२ पर पढ़े।)

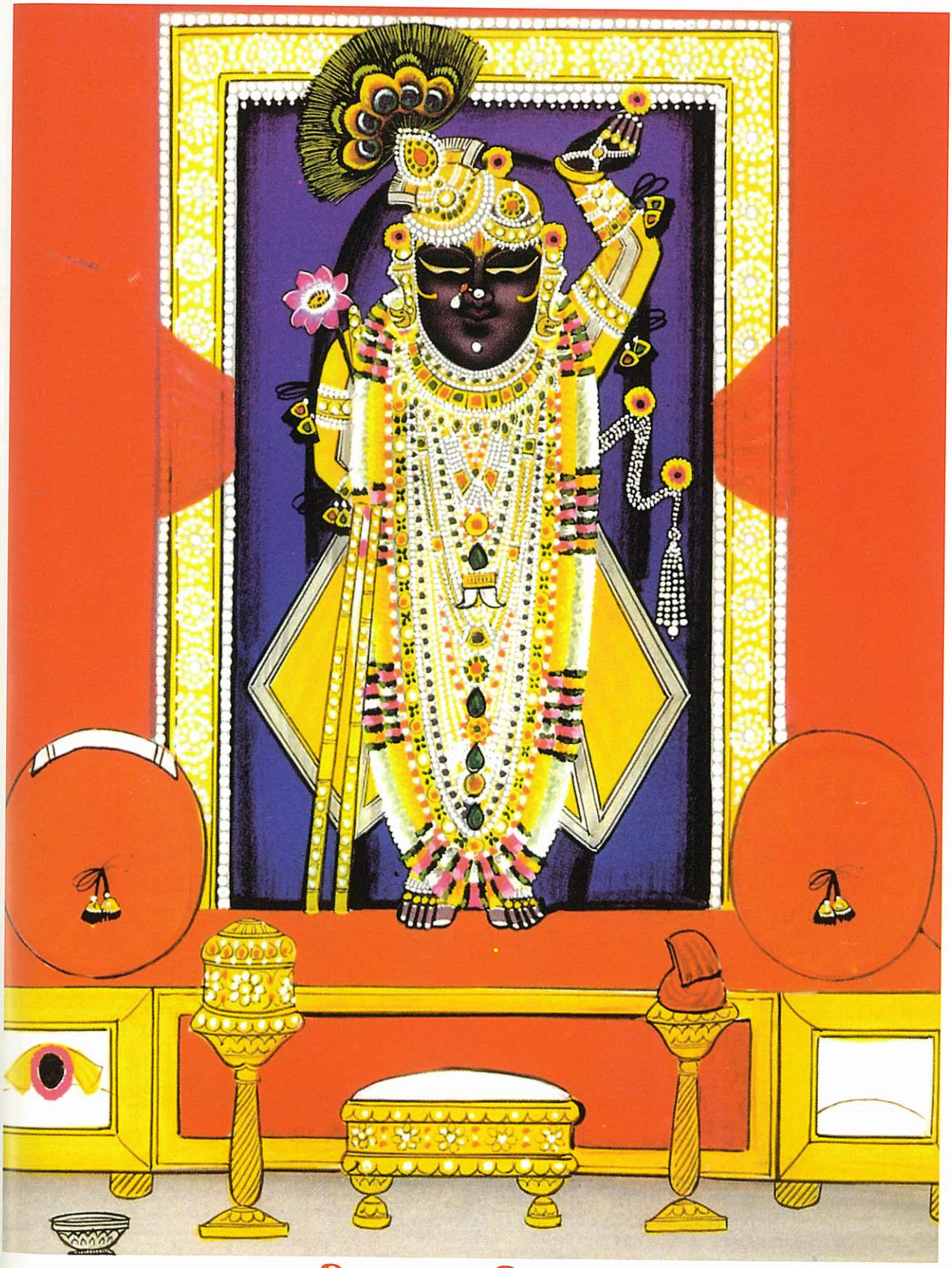

श्री जन्माष्ठमी -उत्सव

श्री विजय कुमार जी एडवोकेट-सपरिवार श्री जी चरणों में दण्डवत व जय श्री कृष्ण

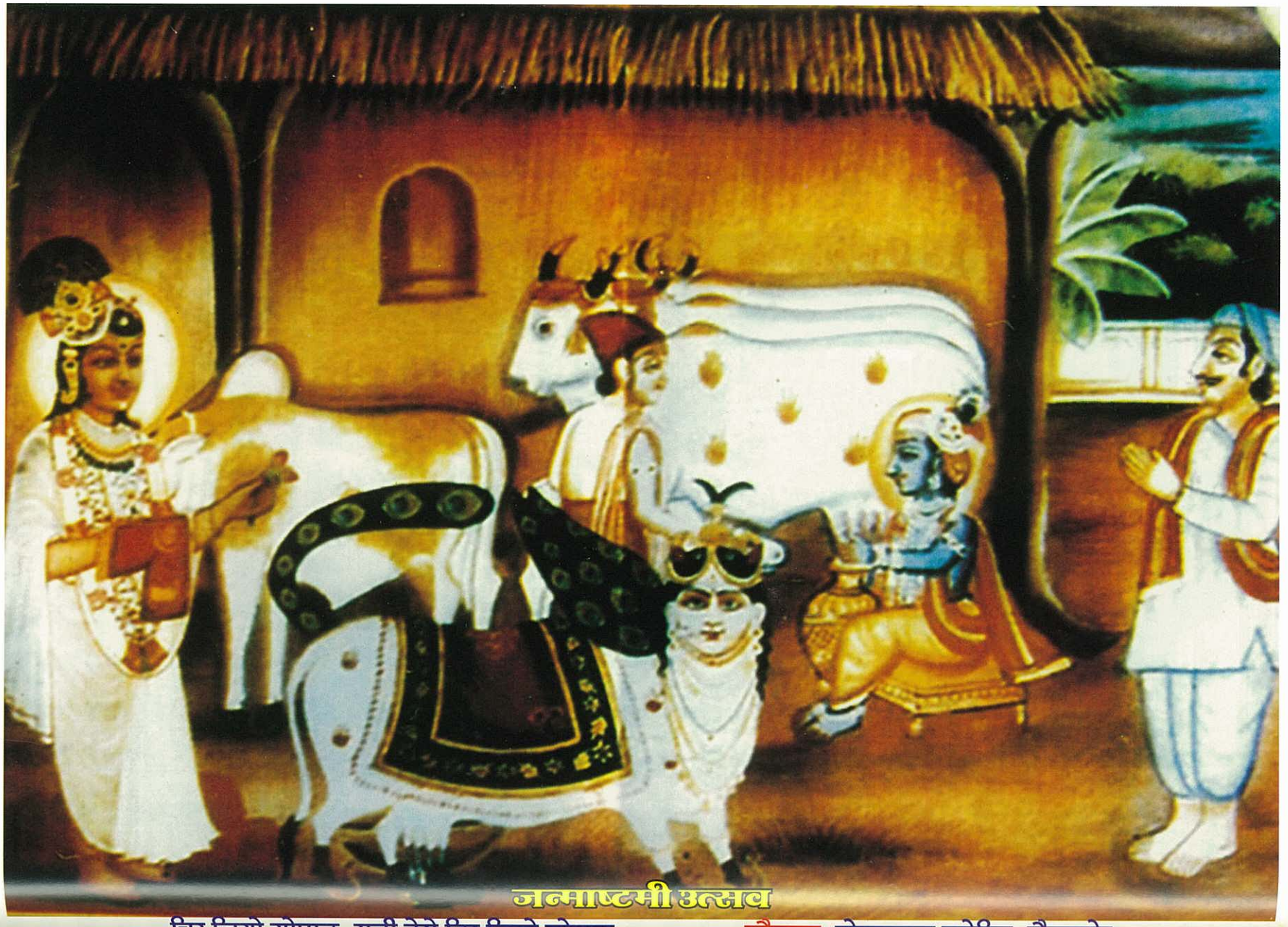

जन्माष्टमी उत्सव

चिर जियो गोपाल, रानी तेरो चिर जियो गोपाल

सौजन्य: मोहनलाल पुरोहित, जैसलमेर

राग देवगंधार आज बन कोऊ वह जिन जाय।। सब गायन बछरन समेत घर लावौ चित्र बनाय।।१।। ढोटा हो व्रज भयौ रायजूकें कहत सुनाय सुनाय।। चहुँ दिश घोष यही कोलाहल उर आनंद न समाय।।२।। कितही विलंब करत बिन काजैं वेगि चलौ उठि धाय।। अपने अपने मनके चीते नैनन देखौ आय।।३।। एक फिरत दधि दूब देत है एक रहत गहि पाय।। एक वसन पट देत बधाई एक उठत हँसि गाय।।४।। बाल विरध नर नारिनके मन भये चौगुने चाय।। "सूरदास" प्रमुदित ब्रजवासी गिनत न राजा राय।।५।।

मंगला में राग–देवगंधार आज अति बाढ्यो है अनुराग।। पूत भयौरी नंदमहरकैं बडीबैस बड़भाग।।१।। दई सुवच्छ लच्छ द्वै गैया नंद बढ़ायौ ताग।। गुनी गणक बंदीजन मागध पायौ अपनौ लाग।।२।। फूले ग्वाल मानों रण जीते आनंद फूले बाग।। हरद दूध दधि माखन छिरकैं मच्यो भदैया फाग।।३।। गोपी गोप ओप सबके मुख गावत मंगलराग।। "परमानंददास" भक्तनकौ अब भयो परम सुहाग।।४।।

राग रामकली सोहिलरा नंदमहर गृह आज बाजे बाजे मंदिलरा अनुपम गति माई।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े।)

राग–धनाश्री सोवन फुलन फुलीरी जसोदा रानी।। तुम्हारे पुत्र भयो कुल मंडन वासु देव समतूली।।१।। देत असीस विरध जे ग्वालिनि गामगामतें आंई। लेले भेट सबे मिलि निकसी मंगलचार बधाई।।२।। एसे दसन होंइ जो ओरे सबकोऊ सचुपावें।। बाढों वंश नन्दबावाको "परमानन्द" जिय भावें।।३।।

राग–धनाश्री यशोदा रानी जायों हे सुत नींको।। आनन्द भयो सकल गोकुल में गोप वधू लाई टीको।।१।। अक्षत दूब गोरोचने वंदन नंदे तिलक दहीकों।। अंचल वारि–वारि मुख निरखत कमल नैन प्यारो जीको।।२।। अपने–अपने भवनते निकसी पहरे चीर कसूंभीको।। "यादवेन्द्र" व्रजकुल प्रतिपालन कंस काल भय भीको।।३।।

राग-घनाश्री रानी तेरो चिरंजीवों गोपाल।। वेगि बड़ो बढ़ि होय विरध लट महरी मनोहर बाल।।१।। उपजिं पर्यो यह कूखि भाग्य बल समुद्र सीप जेसें लाल।। सब गोकुल के प्राण जीवन धन वेरिनके उरसाल।।२।। "सूर" कितों जीय सुखपावत हे देखत श्यामतमाल।। रज आरज लागो मेरी अँखियन रोग दोष जंजाल।।३।।

राग-धनाश्री नंद महोत्सव हों बड़ कीजे।। अपने लाल पर वारि नोछावरी सब काहूकों दीजे।।१।। विप्रन देहु गाय ओर सोनों भाटन रूपों दाम।। व्रजजुवतिन पाटम्बर भूषण पूजे मनके काम।।२।। नाचों गावों करो बधाई अजन जन्म हरि लीनों।। यह अवतार बाललीला रस "परमानन्दही" भीनों।।३।।

(अभ्यंग स्नान समय बधाई के उपरोक्त छहों कीर्तन वापस गाये जाते है।)

राग देव गंधार वृज भयों महरि कें पुत जब यह बात सुनी।। (यह पूरा पद पेज ६३ पर पढ़े।)

श्रवन सुन सजनी बाजे मंदिलरा, आज निश लागत परम सुहाई।। (यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

राग-देवगंधार आजु ग्रह नन्द महरके बधाई।। प्रात समें मोहन मुख निरखत कोटी चंद छबि छाई।।१।। मिली व्रजनागरी मंगल गावत नन्दभवन में आई।। देत असीस जीयो तेरो सुत कोटिक वरस कन्हाई।।२।। नित आनन्द बढ़त वृन्दावन उपमा कहिय न जाई।। "सूरदास" धनि धनि नन्दघरनी निरखत हियो सिराई।।३।।

राग-बिलावल गोकुल घर घर होत बधाई।। गावत मंगल नारि घोखकी वाजे विविध बजाई।।१।। देत नोछावर पट भूषण ले बंदीजन पहेराई।। "रामकृष्ण" जनमे गिरिधारी सब व्रज के सुखदाई।।२।।

दर्पण दिखाते समय राग-बिलावत आनंद आज नन्दजु के द्वार।। (यह पूरा पद पेज १३३ पर पढ़े।)

तिलक के समय राग–सारंग आज बधाई को दिन नीकों।। नन्द घरनी जसुमति जायो हे लाल भामतो जीको।।१।। पंच शब्द बाजे बाजत घर घरते आयो टीको।। मंगल कलश लिये व्रज सुंदरी ग्वाल बनावत छीको।।२।। देत असीस सकल गोपीजन चिरजीवों कोटि वरीसों।। "परमानंददास" को ठाकुर गोप भेष जगदीसों।।३।।

राजभोग आते समय ढ़ाढ़ी के पद गाये जाते है। राग–धनाश्री नंदजु मेरे मन आनन्द भयो सुनि गोवर्धनते आयों।। तुमारे पुत्र भयों हों सुनिके अति आतुर उठि धायों।।१।। बंदीजन ओर भिक्षुक सुनि सुनि देश देश तें आये।। एक पहेलेंहीं आसा लागी बहोत दिनन के छाये।।२।। तुम दीने कंचनमणि मुक्ता नाना वसन अनूप।। मोहि मिले मारगमें मानों जात कहुंके भूप।।३।। दीजे मोहि कृपा करि सोई जोहों आयों मांगन।। जसुमति सुत अपने पायन चलि खेलन आवे आंगन।।४।। कोटि देहु तो पर्यो रहुंगो विनु देखे नहीं जाउं।। नन्दराय सुनो विनति मेरी तबही विदा भले पाउं।।५।। तुम तो परम उदार नन्दजु जो माग्यों सो दीनों।। ऐसो ओर कोन त्रिभुवनमें तुम सरखो को कीनों।।६।। मदनमोहन मैया कहि बोले यह सुनिकें घर जाऊं।। हों तो तुम्हारे घरको ढ़ाढ़ी "सूरदास" मेरो नांऊं।।७।।

राग धनाश्री नंदजू तुमारे सुख दुःख गये सबनके देव पितर भलौ मान्यौ।। तुह्मारौ पुत्र प्रान सबहिनकौ भवन चतुर्दश जान्यौ।।१।। हों तौ वृद्ध पुरातन ढाढ़ी नाम सुनें सिरनाँऊँ।। गिरि गोवर्धन बास हमारौ गिरि तजि अनत न जाऊँ।।२।। ढाढ़िन मेरी झाँझ बजावै हों हूँ हुरक बजाऊँ।। मेरौ चीत्यौ भयौ तुमारें जो माँगों सो पाऊं।।३।। अब तुम मोकों करौ अजाची बहुर्यौ कर न पसारूँ।। द्वारें रहूँ देहु एक मंदिर स्याम स्वरूप निहारूँ।।४।। महाप्रसाद तुमारे घरकौ बिनुं मांगें जो पाऊँ।। जब जब जन्म धरों ढाढ़ीकौ तब जन्म कर्म गुन गाऊँ।।५।। लै ढाढ़ी कंचन मनि मुक्ता नाना वसन अनूप।। टोडर और पाटंबर अंबर पहरे दीखे भूप।।६।। हँसि बोली ढाढ़िन ढाढ़ीसों अब कछु बरनि बधाई।। ऐसौ दियौ न दैहै कोऊ जैसी जसुमति पहराई।।७।। हों पहरी पहरयौ मेरौ

ढाढ़ी दान मानकी अथाई।। नंद उदार भये पहरावत देत सबै बनि आई।।८।। बालक बली भयौ "नारायनदास" निरखि निधि पाई।। भक्ति करूँ पालनें झुलाऊँ यह मन अनत न जाई।।९।।

माला बोले तब सबनसों कहति जसोदामाय जन्मदिन लालकौ फिरि आयौ।।ध्रु.।। जब बीते सब मास बहोरि आयौ पुनि भादों।। (यह पूरा पद पेज १६४ पर पढ़े।)

राग-सारंग नंदगृह बाजत कहां बधाई। जुरी आई सब भीर आंगनमें जन्में कुंवर कन्हाई।।१।। सुनत चली सबे व्रजसुंदरी कर लिये कंचन थाल।। कुमकुम केसरी अक्षत श्रीफल चलत ललित गति चाल।।२।। आज यह भली भई है नंदजू तुम घर ढोटा जायो।। हृदो कमल फुल्यो जो हमारो सुनत बहुत सुख पायो।।३।। दान मान विप्रन बहु दिने सबकी लेत असीस।। पोहोप वृष्टि करत "परमानंद" सुरजु कोटी तेंतीस।।४।।

राग-मल्हार हों तो एक नई बात सुनि आई।। महरि यशोदा ढ़ोटा जायौ, आँगन बजत बधाई।।१।। कहिये कहा कहत नहीं आवै, रतन भूमि छबि छाई।। नाचत विरध तरून अरू बालिक, गोरस कीच मचाई।।२।। द्वारे भीर गोप ग्वालन की, बरनों कहा बडाई।। "सूरदास" प्रभु अंतरयामी, नंद सुवन सुखदाई।।३।।

राग-मल्हार बधाई री बाजत आज सुहाई श्री गोकुलराज के धाम।। (यह पूरा पद पेज १६३ पर पढ़े।)

राग-सारंग घर घर ग्वाल देत है हेरी।। (यह पूरा पद पेज १६५ पर पढ़े।)

हेरी हे आज नन्दराय के आनन्द भयो। नाचत गोपी करत कुलाहल मंगल चार ठयो।।१।। राती पीरी चोली पहले नौतन झूमक सारी।। चोवा चंदन अंग लगावे सेंदुर मांग समारी।।२।। माखन दूध दह्यों भरी भाजन सकल ग्वाल ले आये।। बाजत बेन पखावज महुवर गावत गीत सुहाये।।३।। हरद दूब अक्षत दधि कुमकुम आंगन बाढ़ी कीच।। हंसत परस्पर प्रेम मुदित मन लागलाग भुज बिच।।४।। चहुं वेद धुनि करत महा-मुनि पंच शब्द ढमढोल।। "परमानंद" बढ्यों गोकुल में आनंद हृदे कलोल।।५।।

राग–सारंग आज महा मंगल मेंहेरानें।। (यह पूरा पद पेज १३८ पर पढ़े।)

भोग में दशावतार की अष्टपदी राग–मालव (श्री जयदेव कृत) प्रलय पयोधिजले धृतवानसि वेदं।। विहितवहित्र चरित्रम खेदं।। केशव धृतमीन शरीर जय जगदीश हरे।।१।। क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे।। धरणिधरण किण चक्रगरिष्ठे।। केशवधृतकच्छपरूप जयजगदीशहरे।।२।। वसति दशन शिखरे धरणी तव लग्ना।। शशिनि कलंककलेव निमग्ना।। केशव धृत शूकर रूप जय जगदीश हरे।।३।। तव करकमलवरेनखमद्भुतश्रृंगं।। दलित हिरण्य कशिपुतनुभृंगं।। केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे।।४।। छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन।। पदनखनीर जनित जन पावन।। केशव धृत वामनरूप जय जगदीश हरे।।५।। क्षत्रियरूधिरमये जगदपगतपापं। स्नपयसि पयसि शमितभवतापं।। केशव धृत भृगुपतिरूप जय जगदीश हरे।।६।। वितरसि दिक्षु रणेदिक्पतिकमनियं। दशमुखमौलीबलि रमणियं।। केशव धृतरघुपतिरूप जय जगदीश हरे।।७।।

भोग के दर्शन में राग–मारू गोपाल लाल गोकुल चले हो बलिबलि तिहिकाल।। मोद भरे वसुदेव गोद लै अखिल लोक प्रतिपाल।।१।। अरून उदय जैसे तम फूटत खुलि गये कुटिल कपाट।। महावेग बलछांडि आपनों दीनी श्रीयमुना वाट।।२।। भोर भयें जैसे कुमुदिनी मूँदत कंसादिक भये मोहे।। संत जनन के मन अम्बुज वनफुले डहडहे सोहे।।३।। बार बार फुहीं फूलसी बरखत अंबुज अंबर छायौ।। अपनों निज वपु शेष जानि तहँ बूँद बचावन आयो।।४।। परमधाम जगधाम श्याम अभिराम श्री गोकुल आये।। "नंददास" आंनद भयौ व्रज हरखित मंगल गाये।।५।।

राग–मारू आज कहुं ते या गोकुल में अद्भुत वरखा आई हो।। मणिगण हेम हीर धाराकी व्रजपति अति झर लाई हो।।१।। बानी वेद पढ़त द्विज दादुर हिये हरखी हरियारे।। दधि घृत नीर क्षीर नाना रंग बहि चले खार पनारे।।२।। पटह निसान भेरी सहनाई महा गरजकी घोरें।।

मागघसूत वदत चातक पिक बोलत बंदी मोरे।।३।। भूषण वसन अमोल नन्दजु नरनारिन पहराये।। शाखा फल दल फूलन मानों उपवन झालर लाये।।४।। आनन्द भरी नाचत व्रजनारी पहरे रंग रंग की सारी।। वरन वरन बादरन लपेटी विद्युत न्यारी न्यारी।।५।। दरिद्र दावानल बुझे सबनके जाचक सरोवर पूरे।। बाढ़ी सुभग सुजसकी सरिता दुरित तीर तरू चूरे।।६।। उल्हयों ललित तमाल बाल एक भई सबन मन फूल।। छाया हित अकुलाय "गदाधर" तक्यों चरण को मूल।।७।।

संध्या में राग बिहाग यह धन धर्म ही ते पायो।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

शयन भोग आवे तब (ब्यारू के पद) राग-कान्हरों ब्यारू करत हे घनश्याम।। मधु मेवा पकवान मीठाई पिस्ता दाख बदाम।।१।। दूध भात खोवा बासोंधी ले आइ व्रज वाम।। "आसकरन" प्रभु मोहननागर अंग अंग अभिराम।।२।।

राग-कान्हरौ (बाल विनोद भावती लीला का पद) रानी जसूमत ग्रह आवत गोपीजन।। वासर ताप निवारन कारन बार बार कमल मुख निरखन।।१।। चाहत पकर देहरी उलंघन किलक किलक हूलसत मन ही मन।। राई लोंन उतार दूहूंकर वार फेर डारत तन मन धन।।२।। लीऐं उठाय चुचकार हीयो भर प्रेम बिबस लागे द्दग ढरकन।। ले चली पलना पोढ़ावन कों अरकसाय पोढ़े सुन्दर घन।।३।। देत असीस सकल गोपीजन चिरजीयों जोंलों गंगजमुन।। "परमानंददास" को ठाकुर भक्त वत्सल भक्तन मन रंजन।।४।।

(बाल विनोद भावती लीला का पद) राग राग-बिलावल सिखवत चलन जसोदा मैया।। अरबराय कर पान गहावत डगमगात धरनी धरे पैंया।।१।। कबहुक बलिकों टेर बुलावत यह आंगन खेलो दोउ भैया।। कबहुक कुलदेवता मनावत चिरजीवों मेरो कुंवर कन्हैया।।२।। कबहुक ठाडी वदन निहारत मनमोहन की लेत बलैया।। "सूरदास" प्रभु सब सुखदाता अति आनन्द विलसत नंदरैया।।३।।

रसोईयों बोले तब राग–कान्हरौ प्यारे हरि को विमल यश गावत गोपिंगना।। मनिमय आंगन नंदरायकें बालगुपाल करे जहां रिंगना।।१।। गिरि गिरि परत घूटरूवन टेकत जांनु पांणी मेरे छगनकौ मगना।। धूसर धूरि उठाय गोद लै मात यशोदा के प्रेम को भाग्यना।।२।। त्रिपद भूमि मापी न आलस भयो अब जो कठिन भयो देहरी उलंघना।।३।। "परमानंद" प्रभू भक्त वत्सल हरि रूचिर हार कंठ सोहे बघनखा।।४।।

शयन दर्शन में राग नायकी सुनी बड भागीन हो नंदरानी, गोद खिलावत लाले।। आनंद की निध मुख ललाकों ताहे निहारत निस और बासुर छबि नहीं परत बखानी।।१।। गुन अपार बुध विस्तार पचहार्‌यो निगम नेत नेत बानी।। "हरिनारायण" स्यामदास के प्रभु देखे जसुमति कूंख सिरानी।।२।।

पोढ़वा में राग–कान्हरौ रानी जसूमत ग्रह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज १७२ पर पढ़े।)

राग–मालव पद्‌मधर्यो जनताप निवारण।। चक्र सुदर्शन धर्यो कमलकर भक्तनकी रक्षाके कारन।।१।। शंख धर्यो रिपु उदर बिदारन, गदा धरी दुष्टन सिंहारन।। चार्यो भुजा चार आयुघ धरे नारायण भुव भार उतारन।।२।। दीनानाथ दयाल जगतगुरू आरति हरण भक्त चिंतामनि।। "परमानंददासको" ठाकुर यह ओसर ओसर छांडो जिनि।।३।।

राग–मालव मोहन नंद राय कुमार।। प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार।।१।। प्रथम चरण सरोजबंदो स्यामघन गोपाल।। ललित कुंडल गंडमंडित चारूनैन विसाल।।२।। बलराम सहित विनोद लीला शेष संकर देत।। दास "परमानंद" प्रभु हरि निगम बोलत नेत।।२।।

राग–मालव वन्दे धरणं गिरवर भूप।। राधिका मुख कमल लंपट मत्त मधुप–स्वरूप।।१।। बंदे रसिक वर संगीत सुखनिधि क्वणित वेणु अनुप।। कहि "कृष्णदास" अपार उरपर लोलमाल अनूप।।२।।

राग-कान्हरौ चरण कमल बन्दो जगदीश जे गोधन के संगधाये।। जे पद कमल धूर लपटाने कर गहि गोपिन के उर आये।।१।। जे पदकमल युधिष्टिर पूजत राजसूयमें चलि आये।। जे पदकमल पितामह भीष्म भारत देखन ते आये।।२।। जे पदकमल शंभू चतुरानन हृदय कमल के अंतर राखे।। जे पदकमल रमा उर भूषन वेद भागत भासे।।३।। जे पदकमल लोकत्रय पावन बलि राजाकी पीठ घरे।। ते पदकमल दास "परमानंद" गावत प्रेम पियूष भरे।।४।।

राग कान्हरो बधाई कीर्तन भादोकी रेनी अंधियारी।। (यह पूरा पद पेज १५५ पर पढ़े।)

हरि जन्मतही आनन्द भयो।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

जसुमति तिहारों घर सुवस वसो।। सुनरी जसोदा या ढ़ोटा को न्हात में जिन वार खसो।।१।। कोऊ करत वेदधुनि मंगल कोऊ अति आनन्द लसो।। निरखी-निरखी मुख कमलनयनको आनंद प्रेम हिये हुलसो।।२।। देत असीस सकल गोपीजन कोउ गावो कोउ अति विहसो।। "परमानन्द" नन्दघर आनन्द पुत्र जन्म भयो जगत जसो।।३।।

भई मेरे मनकी बात जो माई।। आज रेन सपनो भयो मोकों नन्दके घर चली आई।।१।। हरद दुब अक्षत दधि कुमकुम गोरस सो नहाई।। जसुमति मोकों बहु पहराई कहा वरनो जो बढ़ाई।।२।। एक पलनापर बेठ्यों बालक मोतिन झूमक लाई।। व्रजनारी घर घरतें आई लालकी लेत बलाई।।३।। घर घर चोक पूरत व्रजभामिन वंदनवार बंधाई।। ग्वाल बाल सब देत बधाई रतन भूमि छबि छाई।।४।। जागि परी चितयों महरानों कान्ह कुंवर दरसाई।। "रसिक" प्रीतम या सुख के कारन गोकुल आयो माई।।५।।

राग-नायकी जन्म लियौ शुभ लग्न विचार।। कृष्ण पक्ष भादों निशि आठें, नक्षत्र रोहिनी और बुधवार।।१।। शंख चक्र गदा पद्य बिराजत, कुंडल मनि उजियार।। मुदित भये वसुदेव देवकी, "परमानंददास" बलिहार।।२।।

राग-नायकी शुभ दिन मंगल आज नीकौ।। रानी जसोमती ढोटा जायौ सोहत श्रीव्रजकुल कौ टीकौ।।१।। मिलि व्रजनारी कहत चिरजियो

वल्लभ सुवन भावतौ जीकौ।। वृंदावन शशी को मुख निरखत सुख त्रिभुवन कौ लागत फीकौ।।२।।

राग बिलावल जन्मलियो जादौंकुलराय।। करि करूणा वसुदेव देवकी अद्भुत बालक दरस दिखाय।।१।। अंबुज नैन अमोल मुकुटमणि रतन जटित कुंडल झलकाय।। कोमल अलक श्याममुख ऊपर श्रीवत्स लक्ष्मी उर शोभाय।।२।। कौस्तुभमणि पीतांबर सोहै चारिभुजा शंखादिधराय।। कटिकिंकिनी करकंकन अंगद बनमाला पदकमल बनाय।।३।। कोटिचंद भानु उदय मानों सुमरि सुखद भुव तिमिर नसाय।। मात तात आश्वासन करिकें प्राकृत होई चले व्रज धाय।।४।। मात तात छुड़ाई बंधते गोपुर दिये किवार खुलाय।। शेष सहस्रफन बूंद निवारत जमुना चरन परसि भई थाय।।५।। लै वसुदेव गये श्रीगोकुल नंदघरनि की सेज सुवाय।। निज सामर्थ योगमाया लै मोहन मथुरा दई है पठाय।।६।। जागी महरि उठी जब जसुमति नंदमहरको लिये बुलाय।। जयजयकार भयौ गोकुलमें व्रजजन आनँद उर न समाय।।७।। गोपीग्वाल गोप सब व्रजजन श्रवन सुनतही रंक निधि पाई।। हरद दूब अक्षत रोरीसों कर कंचनके थार भराई।।८।। बाजत ताल पखावज आबज मुरली दुंदुभी शब्द सुहाय।। नंदमहर घर ढोटा जायौ दधि लै छिरकत करत बधाय।।९।। ध्वजा पताका तोरनमाला गृहगृह मंगल कलश धराय।। चित्रविचित्र किये प्रमुदित मन दधि माखनके माँट लुटाय।।१०।। तब व्रजराज गोपसों मतौ करि अति आदरसों विप्र बुलाय।। हेम गो रत्न भूमि दक्षना दै आशीरवचन विप्र पढ़ाय।।११।। यहि विधि भयौ महोत्सव व्रजमें सुर समाज कुसुमन वरषाय।। सचिपति देव मुनि चढि विमानन अंबर लियौ है छाय।।१२।। "गोविंदप्रभु" नंदनंदन देखत कोटिक मनमथ गये लजाय।। श्रीविट्ठलपद रज प्रतापबल यह लीला संपतिमें पाय।।१३।।

राग–बिहाग श्रवण सुन सजनी बाजे मंदिरला।। (यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

।।जन्माष्टमी बधाई।। राग देवगंधार व्रज भयो महरिकैं पूत जब यह बात सुनी।। (यह पूरा पद पेज ९३ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्ण ९

प्रात काल श्री नवनीत प्रियाजी श्रीजी में पधारें तब कीर्तन पलना में प्रथम आरती होती है तथा नंद महोत्सव होता है।

राग-सारंग (मणी कोठा में) हेरी है आज नंदराय के आनंद भयो।। (यह पूरा पद पेज १७० पर पढ़े।)

राग-धनाश्री नन्द महोत्सव हों बड़ कीजे।। (यह पूरा पद पेज १६८ पर पढ़े।)

सब ग्वाल नाचे गोपी गावे।। (यह पूरा पद पेज १३६ पर पढ़े।)

डोल तिबारी में नन्द महोत्सव के समय गाये जाने वाले कीर्तन

राग धनाश्री आपुन मंगल गावे हो रानीजु, आपून मंगल गावें।। आज लाल को जन्म द्योंस है मोतिन चौक पुरावे।।१।। गाम गामतै जाति आपनी गोपिन न्यौति बुलावें।। अन्वाचार्य मुनि गर्ग परासर तिनपै वेद पढ़ावें।।२।। हरद तेल सुगंध सुवासित लालें उबटि न्हवावें।। हरि तन ऊपर वारि न्यौछावरि जन "परमानंद" पावै।।

यशोदा रानी जायो हो सुत नींको।। (यह पूरा पद पेज १६७ पर पढ़े।)

सबै मिली मंगल गावो माई।। आज लालको जन्म द्योस हे बाजत रंग बधाई।।१।। आंगन लींपों चोक पुरावो विप्र पढ़न लागे वेद। करो श्रृंगार श्यामसुन्दरको चोवा चन्दन मेद।।२।। आनंदभरी नन्दजूकी रानी फूली अंग न समाई।। "परमानंददास" तिहिंओसर बोहोत नोछावरी पाई।।३।।

यशोदा रानी सोवन फूलन फूली।। तुम्हारे पुत्र भयो कुलमंडन वासुदेव समतूली।।१।। देत असीस विरध जे ग्वालिनि गाम गामते आई।। ले ले भेट सबे मिल निकसी मंगल चार बधाई।।२।। ऐसे दसक होई जो ओरें सब कोऊ सचुपावे।। बाढो वंश नन्दबाबाको "परमानंद" जिय भावै।।३।।

श्री वासुदेव पुरूषोतमदास भाटिया, मुम्बई का श्रीजी के चरणों में दण्ड्वत व जय श्री कृष्ण

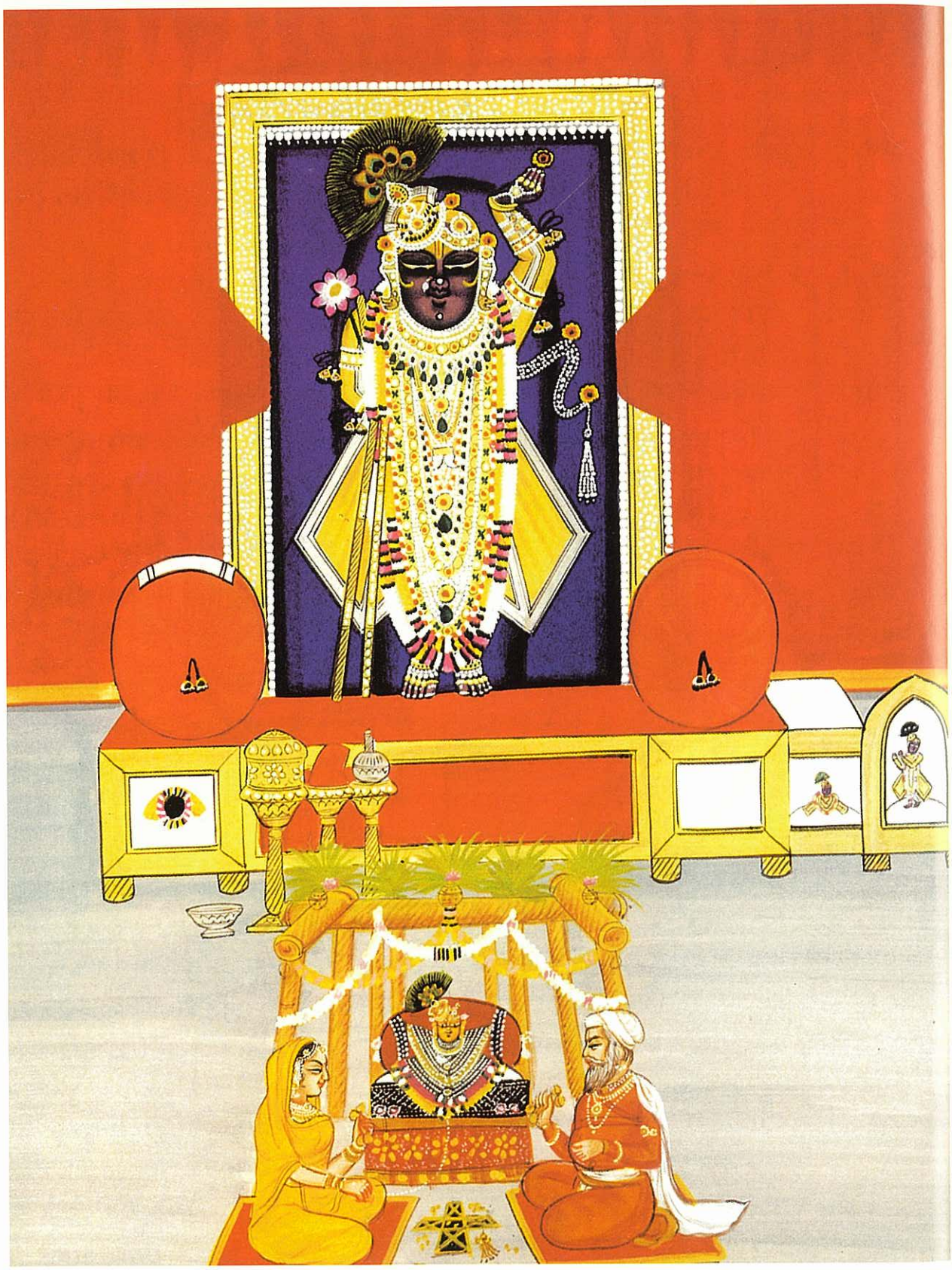

नंद महोत्सव

श्री प्रदीप भाई जिमित भाई मेहता मुम्बई का सपरिवार श्री जी चरणों में दण्डवत व जय श्री कृष्ण

(अब रतन चोक में नन्द महोत्सव होवे तब गाये जाने वाले कीर्तन)

राग–धनाश्री रानी तेरो चिरंजीवों गोपाल।। (यह पूरा पद पेज १६८ पर पढ़े।)

राग–सारंग आंगन नन्द के दधि–कादो।। (यह पूरा पद पेज १५० पर पढ़े।)

माई मेरे गोपाल लड़ाईयों।। अपनो काहू छुवन न देहो काहे को लोग बडायबो।।१।। मेरे धन गोरस बहोतेरों लेंन उधार न जायबो।। राँखोगी कंठ लगाय लालको पलना में सुलायबो।।२।। परम विचित्र पांये पेंजनियां कटि घुंघरूं बनायबो।। "परमानंद" नंदराय जु के आंगन ले ले नाम बुलायबो।।३।।

घर घर ग्वाल देत है हेरी।। (यह पूरा पद पेज १६३ पर पढ़े।)

नन्द महोत्सव पूरा होकर पलना में दूसरी आरती के समय किर्तन

प्रथम अष्टपदि प्रेंख पर्यंक शयनं चिरविरह तापहर मति रूचिर मीक्षणं प्रकटय प्रेमायनं।।ध्रु।। तनुत्तर द्विज पंक्ति ललितानि इंसितानि तव वीक्ष्य गायकीनां।। (यह पूरा पद पेज १३५ पर पढ़े।)

राग–बिलावल अपुनेरी बाल गोपाले रानीजु पालने झुलावे।। वारंवार निहारी कमलमुख प्रमुदित मंगल गावे।।१।। लटकन भाल भृकृटि मसि बिन्दुका कठुला कंठ बनावें।। सद्य माखन मधु सानि अधिक रूचि अगुरिन करके चटावे।।२।। कबहुकं सुरंग खिलोना लेले नाना भांति खिलावे।। देखी देखी मुसिकाय सांवरों द्वे दतियां दरसावें।।३।। सादर कुमुद चकोर चंद ज्यों रूप सुधारस प्यावें।। "चतुर्भुज प्रभु" गिरीधरन लालको हँसी हँसी कण्ठ लगावे।।४।।

राग–बिलावल झूलों पालनें गोविंद।। दधि मथों नवनीत काढों तुमको आनन्द कंद।।१।। कंठ कठुला ललित लटकन भृकुटी मनके फंद।। निरखी छबि छिन छिन बुलाऊं गाऊं लीला छन्द।।२।। द्वे दूध की दतियां

सुख निधियां हँसत जब कछु मन्द।। "चतुर्भुज प्रभु" जननीबलि गिरिधरन गोकुलचंद।।३।।

राग-रामकली नंद को लाल बृजपालने झूले।। कुटिल अलकावलि तिलक गोरोचना चरण अंगुष्ठ मुख किलकि फूले।।१।। नेन अंजन रेख भेख अभिराम सुठि कण्ठ केहरि किंकनी कटिमुले।। "नन्ददासनि" नाथ नन्दनन्दन कुंवर निरखि नागरि देह गेह भूले।।२।।

सांवरों सुत पलना झूलें।। निरखि निरखि जसुमति जियफूले।।१।। नेन विशाल भृकुटी मसि राजे।। निराखि वदन उडुपति जिय लाजे।।२।। कठुला कण्ठ रूचिर पोहोंची कर।। सुभग कपोल नाक बिंबाधर।।३।। भाल तिलक लर लटकन सोहे।। मंद हसन एसे मन मोहें।।४।। माखन मिश्री मेली चटावे।। वार वार प्रमुदित उर लावे।।५।। गिरिधर कुंवर जननी हुलरावे।। "चतुर्भुजदास" विमल जस गावे।।६।।

राग-बिलावल हालरो हुलरावेरी माता।। बलि बलि जाऊं घोष सुखदाता।।१।। अति लोहित कर चरण सरोजें।। जे ब्रह्मादिक मनसा खोजें।।२।। जसुमति अपनो पुन्य विचारे।। वारवार मुख कमल निहारे।।३।। अखिल भुवनपति गरूड़ागामी।। नंद सुवन "परमानंद" स्वामी।।४।।

राग-आसावरी माईरी कमल नेंन श्याम सुन्दर झुलत है पलना।। (यह पूरा पद पेज १३५ पर पढ़े।)

राग आसावरी तुम व्रजरानीके लाला।। (यह पूरा पद पेज १४० पर पढ़े।)

पद के बाद तीसरी आरती होती है तब वापस बधाईयां गाई जाती है।

राग-देवगंधार नैन भर देखों नन्द कुंमार।। (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े।)

आज बन कोऊ है जिन जाय।। (यह पूरा पद पेज १६७ पर पढ़े।)

राग बिलावल आज अति बाढ्यो है अनुराग।। (यह पूरा पद पेज १६७ पर पढ़े।)

आनंद आज नन्दजु के द्वार।। (यह पूरा पद पेज १३३ पर पढ़े।)

नंद नन्दन वृंदावन चन्द्र।। (यह पूरा पद पेज १५८ पर पढ़े।)

पलने में चौथी आरती के समय गाये जाने वाले किर्तन

राग–धनाश्री बधाई माई आज बधाई।। ।।ध्रु.।। आज बधाई सब व्रज छाई।। व्रज की नार सबे जुरि आई।।१।। सुन्दर नन्द महरजु के मंदर।। प्रकट्यों हे पूत सकल सुख कंदर।।२।। होतही ढ़ोटा व्रजकी शोभा।। देखी सखी कछु ओरहि ओभा।।३।। मालिन सी जहां लक्ष्मी बोले।। वंदन वार बांघती डोलें।।४।। बगर बुहारत फिरत अष्टसिधि।। कोरन सथिया चीतनी नवनिधि।।५।। ग्रह ग्रह ते गोपी गमनी जब।। रंगीली गलीन में भीर भई तब।।६।। बीथी प्रेम नदी छबी पावें।। नन्द सदन सागर कों धावें।।७।। हाथन कंचन थार रहे लसि।। कमलन चढ़ि आये मानों शशी।।८।। मंगल कलश जगमगे नगके।। भाजेहे सकल अमंगल जगके।।८।। फूले ग्वाल मानो रणजीते।। भये सबनके मनके चीते।।१०।। काम धेनुते नेक न हीनी।। द्वे लक्ष धेनु द्विजनकों दीनी।।११।। नन्दराय तहां अति रस भीने।। परवत सात तिलनके दीने।।१२।। नंदराय ग्रह मांगन आये।। ते बहोर्यो मांगन न कहाये।।१३।। घरके ठाकुर के सुत जायो।। "नन्ददास" तहां सब कछु पायो।।१४।।

अब पांचमी आरती होती है राग–कान्हरौ यशुमती तिहारो घर सुबस बसो।। सुनरी जसोदा या ढोटाको न्हात में जिन वार खसो।।१।। कोऊ करत वेदधुनि मंगल कोऊ अति आनन्द लसों।। निरखी निरखी मुख कमल नयन को आनन्द प्रेम हिये हुलसो।।२।। देत असीस सकल गोपीजन कोउ गावों कोउ अति प्रेम विहसो।। "परमानंद" नन्दघर आनंद पुत्र जन्म भयो जगत जसो।।३।।

माला बोले भोग सरे तब

राग-आशावरी भोजन कर उठे दोऊ भैया।। हस्त पखारी सुद्ध अचवन कर बीरी लेहुँ कन्हैया।।१।। मात जसोदा करत आरती पुनपुन लेत बलैया।। "परमानंददास" को ठाकुर ब्रजजन केली करैया।।२।।

राजभोग में राग-सारंग नंद बधाई दिजे ग्वालन।। तुमरे स्याम मनोहर आऐं गोकुल के प्रतिपालन।।१।। वधूवन बोहो विध भूखन दीनें विप्रन को गऊदान।। गोकुल महामहोत्सव कमल नैन घनश्याम।।२।। नाचें देव विमल गंधर्व मुनि गावें गीत रसाल।। "परमानंद" प्रभु तुम चिरजियो नंद गोप के लाल।।३।।

बीड़ी के पद पान खवावत कर कर बीरी।। इकटक हेरत मोहन मुख निरखत पलक न परत अधीरी।।१।। हंसत निहारत बदन श्याम को तनकी सुध विसरी री।। "रसिक" प्रीतम के अंग-अंग मिल छतियां भईं अति सीरी।।२।।

नंद जू तुमरे आयो पुत।। खोल भंडार जू देहो बधाई तूमरो भाग अद्भुत।।१।। ले ले दधि घृत देहरी पखारो तोरन माल बंधाई।। कंचन बसन अलंकृत रोरी बिप्रन धेंन दिवाई।।२।। विप्र सबे मिल करत बेद ध्वनि हरखत मंगल गाऐ।। सब दुख दुरगऐ "परमानंद" आनंद प्रेम बढाऐं।।३।।

भोग व संध्या के दर्शन शामिल हुऐ सो कीर्तन राग-गौरी आज बधाओ नंदराय कें गोपी गावे मंगलचार।। आईजु मंगल कलश धरि सिर डारें-फूलन मार।। अक्षत रोचन दुब ले चली बहू विध फल भरे थार।।१।। घर घर ते गावत चली व्रजवधू झूंडन अपार।। चली सब मिल नंदके घर देखन नंद कुंमार।।२।। देखी सब मिल आस पूजी सबे देत असीस।। नंद महरी के लाडिले तूम जीवो कोटी बरीस।।३।। महरि दान बहोत दिनों और दिनों नंदराय।। एसो सुख देखी सदा, जन "सूरदास" बलिजाय।।

आरती होने पर राग–कान्हरौ यह धन धर्म हींते पायो।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

शयन दर्शन में राग–नायकी सुनी बड़ भागिन हों नन्दरानी, गोद खिलावत लाले।। (यह पूरा पद पेज १७३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–कान्हरौं धन्यरानी यशोमत ग्रह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

अब श्री नन्दरायजी दण्डवत करके श्री महाप्रभुजी की बैठक में पधारते है तब पद राग–कान्हरौ अहो वे निकसी देत अशीश रूचि अपुनी अपनी तब घर घर भेरी मृदंग पटह निशान बजे।। वर बांधी वंदन माल अरू ध्वज कलश सजे।।१।। तब वा दिनतें वे लोग सुख सम्पति न तजे।। सुनि "सूर" सबनकी यह गति जे हरि चरन भजे।।२।।

श्री बैठकजी से जब कमल चोक पधारते है तब दाढ़ि का पद गाया जाता है। राग–धनाश्री नंदजु मेरे मन आनन्द भयो सुन गोवर्धनतें आयो।। (यह पूरा पद पेज १६९ पर पढ़े।)

श्री नवनीतप्रिया जी श्रीजी में पलना झुलकर अपने मंदिर में पधारते है, तब राग–आसावरी धन्य यशोदा भाग्य तिहारों जिन ऐसों सुत जायो हो।। (यह पूरा पद पेज ९४ पर पढ़े।)

आज श्रृंगार कल का ही रहता है तथा मंगला से शयन तक का क्रम होता है। प्रभु मंगल भोग अरोगते है। (जगावनों नहीं होता है।)

मंगल भोग सरे तब राग–भैरव मंगलं–मंगलं व्रजभुवि मंगलं।। (यह पूरा पद पेज १६६ पर पढ़े।)

मंगला में राग–भैरव आज बड़ो दरबार देख्यों नंदराय तेरो।। (यह पूरा पद पेज १३२ पर पढ़े।)

आज झांझ नहीं बजते है। मृदंग हारमोनियम बजती है।

श्रृंगार में राग बिलावल नन्द नन्दन वृन्दावन चन्द।। (यह पूरा पद पेज १५८ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल आनन्द आज नन्दजु के द्वार।। (यह पूरा पद पेज १३३ पर पढ़े।)

सो गोविंद तिहारे वृज-बालक।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

राजभोग आने पर राग-सारंग। तेरे पैयाँ लागुं गिरिधर भोजन कीजे।। (नित्य के पद में पृष्ठ X पर पढ़े।)

राग-धनाश्री लालको मीठी खीर जो भावे।। बेला भरके लावत यशोदा बूरो अधिक मिलावे।।१।। कनियां लिये यशोदा ठाड़ी रूचिकर कोर बनावे।। ग्वालबाल वनचरके आगे झूठे हाथ दिखावे।।२।। व्रज नारी जो चहुंधा चितवत तन मन मोद बढ़ावे।। "परमानन्द दासको" ठाकुर हँस हँस कंठ लगावे।।३।।

आसावरी हरी भोजन करत विनोदसों।। कर कर कौर मुखारविंद में देत जसोदा मोद सों।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई दूध दह्यो घृत ओद सों।। "परमानंद" प्रभु भोजन कीन्हों भोग लग्यों संखोद-सों।।२।।

मैय्या अपने सुतही जिमावत।। बुझत बात कहो कैसे खेले बन बन, मैया यों कहि कहि रूचि उपजावत।।१।। करत बियार अपुने अंचल सों पोंछत बदन मनमोद बढावत।। "रसिक प्रीतम" को ले ले नंदरानी जू हंसिहंसि कंठ लगावत।।२।।

भाद्रपद कृष्ण १०

श्रृंगार विवरणः- आज जन्माष्टमी का प्रति (प्रचारगी) श्रृंगार धराया गया है। मंगला में राग-बिलावल धन्य गोकुल जहां गोविंद आये।। (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल सो गोविंद तिहारे वृज-बालक।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

राजभोग आवे तब (ग्रह भोजन के पद) राग-आशावरी नंद बुलावत है गोपाल।। चल सुत बेग बलैया लेहों चंचल नयन विशाल।।१।। परोस्यों थार धरे मृग चितवत, सुन घनश्याम तमाल।। भात सिरात तात अति आतुर, बेग चलों प्यारे लाल।।२।। हों वारी न्हेने पायन पर, दौर दिखावों चाल।। छांड देहो मोहन अटपटी, वह गति मंद मराल।।३।। सोई राजा जो पहेले पहोंचे, "सूर" सुभवन उताल।। जो जेहें बलभद्र अगाऊ तो, हँस हैं संग के ग्वाल।।४।।

राज भोग में राग-बिलावल गृह सब गोपन मिलकें दीजे हमजू बधाई।। अखल भवनको जान महानिध सो तुमरे ग्रह आई।।१।। बाजत तूर होत जू कूलाहल मंगलचार सुहाई।। कंचूकि उपर कच लर लटकत यह छबि बरनी न जाई।।२।। देहो कनकपट बोहो विध भूषन बाबाकी जु दुहाई।। "परमानंद" के आंगन गोपीन महानिधि पाई।।३।।

भोग में (ढाढी लीला) राग-धनाश्री नन्दजु मेरे मन आनन्द भयो सुन गोवर्धन ते आयों।। (यह पूरा पद पेज १६९ पर पढ़े।)

संध्यामें राग नायकी सुनी बड़ भागीन हों नन्दरानी, गोद खिलावत लाल।। (यह पूरा पद पेज १७५ पर पढ़े।)

शयन दर्शन में राग-नायकी आछि नींकी सोहत हँसत द्वै द्वै दूधकी दतियां।। घुटरुन आंगन रेंगन मोहन खेलत आन आन भतीया।।१।। लर लटकन मटकन कर पोची बोलत तोतरी बतियां।। प्रेम मगन जसुमति बल "रघुजन" रहसल गावत छतिया।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग धन्य रानी यशोमत ग्रह आवत गोपीजन।। (यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्ण ११

(आज से बाल लीला प्रारंभ)

श्रृंगार – पाग-पिछोडे का।

वस्त्र – लाल रूपहरी कोर के, कटि में पिछोड़ा, श्रीकंठ में केशरिया रूपहरी कोरका गाती का पटका धराया गया है। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोर पिछके काम का कतरा घराया गया है। ठाडा वस्त्र हरा रंग के तथा पिछवाई चित्राम की इसमें नंद महोत्सव तथा छट्ठी पूजन हो रहा है, एवं प्रभु पलना में झूल रहे है।

आभरण्य – नित्यानुसार हीरा, मोती, सोना के धराये गये है।

विशेष – आज से श्रृंगार बाल लीला के तथा किर्तन भी सभी समय में बाललीला के गाये जाते है।

मंगला में राग-रामकली बल बल चरित्र गोकलराय।। दावानल को पान कियौ पीवत दुध सिराय।।१।। पुतना के प्राण शोषे रहे उर लपटाय।। कहत जननी दूध डारत खीजत कछुब न खाय।।२।। धरयौ गिरिवर दाहिने कर धरत बाँह पिराय।। शकट भंजन धरत कुच युग कठिन लागत पाय।।३।। तृणावर्त आकशतें पटक्यौ हन्यौ मुष्ट फिराय।। डरत ललना झूलत पलना खरे देत झूलाय।।४।। बकासुर की चोंच फारी सुदिस दृष्टि दिखाय।। कीर पिंजरा देत अँगुरी श्याम लेत भजाय।।५।। बिना दिपक भवन द्वारें श्याम धरत न पाय।। अद्यासुर मुख पैठि निकस्यो बच्छ बाल छुड़ाय।।६।। लिख्यो द्वारें नागकारौ स्याम देखि डराय।। सहस्त्र फन पर निर्त कीनों सप्त ताल बजाय।।७।। घोषनारी संग मोहन रच्यौ रास बनाय।। कहत जननी ब्याह की तब हँसत वदन दुराय।।८।। यमलार्जुन तोरि तारे हृदै प्रेम बढ़ाय।। कहत तात प्रकास पल्लव देह देत दिखाय।।९।। वृषभ भंजन हनत केशी हन्यौ पुच्छ फिराय।। डरत सखान समेत मोहन देखि ब्याई गाय।।१०।। हरे ब्रह्मा बाल बच्छ कृत हेत दोरी माय।। बच्छ ग्वाल समूह सब मिलि फिरि व्रज

रच्यौ है आय।।११।। कहा कहूँ जो एक रसना बुद्धि और उपाय।। "सूर" प्रभु हरि रसिक नागर अंगअंग नित भाय।।१२।।

श्रृंगार में राग–रामकली जादिन कन्हैया मोसों मैया कहि बोलेगों।। तादिन अति आनंद गीनोरी (माई) रूनक झुनक ब्रज गलिन में डोलेगो।।१।। प्रातही खिरक जाय दुहवे को गाय बंधन बछरवा के चटक दे खोलेगो।। "परमानंद" प्रभु नवल कुँवर मेरो ग्वालन के संग बन में कीलोलेगो।।२।।

राजभोग आवता (गृह भोजन के पद) राग–धनाश्री भोजनको बोलत महतारी। बल समेत आओ मेरे मोहन बेठेहे नन्द परोसी है थारी।।१।। खीर सिरात स्वाद नही आवत बेगी ग्रास तुम लेहो मुरारी। हितवत चित्त निके कर जेवों पाछे कीजे खेल बीहारी।।२।। अहो सुबल अहो श्रीदामा बेठों नेक करो मनुहारी।। "परमानन्ददासको" जीवन मुख व्यंजन दे जाउं बलिहारी।।३।।

राजभोग में राग–सारंग जब मेरों मोहन चलेगो घुटरूवन, तब हों करोंगी बधाई।। सर्वस्व वारि देहुंगी तिहिं छिन मैय्या कह्यों तुतराई।।१।। जसोदा वचन सुनत "केसो प्रभु" जननी प्रीत जानि अधिकाई।। नंद सुवन सुख दियो मातको अतिकृपाल मेरो नंद ललाई।।२।।

राग गोरी कौन सुकृत इन व्रजवासिनको बदत विरंचि शिव शेष।। श्रीहरि जिनके हेत प्रगटे मानुष वेष।।ध्रु.।। जोति रूप जगधाम जगतगुरू जगतपिता जगदीश।। योग यज्ञ जप तप व्रत दुर्लभ सो गृह गोकुल ईश।।१।। एक एक रोम कूप विराट सम अनंत कोटि ब्रह्मांड।। लिये उछंग वाहि तात यशोदा अपने निज भुजदंड।।२।। जाके उदर लोक त्रय जल थल पंच तत्व चहुँखान।। बालक होई झूलत व्रजपलना जसुमति भवन निधान।।३।। अनुदिन श्रवण सुधारस पंचम चिंतामणिसी धैन।। सो तजि जसुमतिकौ पय पीवत भक्तनकों सुखदैन।।४।। करन हरन प्रभु दाता भुक्ता विश्वंभर जगजानि।। ताहि लगाय माखनकी चोरी बाँध्यो है

नँदरानि।।५।। रवि शशि कोटि कला सम लोचन त्रिविध तिमिर मिटि जात।। अंजन देत हेत सुतके चक्षु लै कर काजर मात।।६।। कमला नायक बैकुंठ दायक दुख सुख जाके हाथ।। काँधे कामरी कर लकुट नग्न पद बन बछरनके साथ।।७।। वेद वेदांत उपनिषद षटरस अरपत भुक्तत नाँहि।। गोप ग्वालनकी मंडली मोहन हँसिहँसि जूठनि खाँहि।।८।। क्षिति नापी तृपद करूनामय बलि छल दियौ पतार।। देहरी उलंघ सकत नहीं सो प्रभु खेलत नंददुवार।।९।। बकी बकासुर शकट तृणावर्त अघ धेनुक वृषभास।। कंस केसी को यह गति दीनी राखे चरन निवास।।१०।। भक्तवत्सल प्रभु पतित उधारन रहे सकल भरपूर।। मारग रोकि परयौ हट द्वारें पतित सिरोमणि "सूर"।।११।।

संध्या में राग-गौरी तेरी लाल लागो मोय बलाय।। बाल गुपाल छगनुआँ मेरे चलों क्यों न अंगना धाय।।१।। लर लटकन कर पोंची सोहत नुपूर बाजत पांय।। चुटकी दे दे ग्वाल नचावत मुदत जसोदा माय।।२।। ठाड़ी हँसत नंदजू की रानी अंग-अंग अगनत भाय।। "परमानंद" नंद नंदन कों राखोगी उर लपटाय।।३।।

शयन में राग-अडानों चलो मेरे लाडिले हों पायन पेंजनी के चाय।। (यह पूरा पद पेज १६३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग आंगन में हरि सोय गयेरी।। हरें हरें दोउ जननी मिलि के सेज सहित तब भवन लहेरी।।१।। कहत रोहिणी इन्हे न जगावों खेलत डोलत हार गयेरी।। बारं बारं जृंभात सांवरों वदन देख विस्मित जु भयेरी।।२।। कहत नन्द ये कछू न जाने गायन के संग श्रमित भयेरी।। "सूरदास" बलराम श्याम तब व्रजरानी संग पोंढ़ रहेरी।।३।।

भाद्रपद कृष्णा १२

(ब्रज बारस)

श्रृंगार – गोल काछनी तथा हीरा की टोपी का। स्थायी श्रृंगार।

वस्त्र – लाल सफेद लहरियाके रूपहरी कोरके शुथन तथा कटि में गोल कांछनी तथा श्रीमस्तक पर हीरा जडि हुई टोपी धराई गई है तथा उस पर तीन कलंगी है। ठाडा वस्त्र श्याम, पिछवाई चित्राम की जिसमें श्री यशोदाजी नंदालय में बछडे वाली गौमाताजी का पूजन कर रही है।

बाल लीला चल रही है।

आभरण – नित्यानुसार हीरा-मोती व सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-खट जा दिन कन्हैया मोसों मैया कहि बोलेगो।। (यह पूरा पद पेज १८५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल शोभित कर नवनीत लिये।। घुटरूवन चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किये।।१।। चारू कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन को तिलक दिये।। लर लटकन मानों मत्त मधुप गन मादिक मधुहि पिये।।२।। कठुला कंठ वज्र केहरिनख राजतहें सखी रूचिर हिये।। धन्य "सूर" एको पल यह सुख कहा भयो शतकल्प जिये।।३।।

राजभोग आते समय (ग्रह भोजन के पद) राग-आसावरी हरि भोजन करत विनोद सों।। (यह पूरा पद पेज १८२ पर पढ़े।)

परोसत गोपी घुंघट मारे।। कनक लतासी सौभग सीमा आई है ज्यों नारें।।१।। झनक मनक आंगन में डोलत लावन्य मोर संवारे।। नन्दराय नन्दरानी ते दुरि लालें भलें निहारे।।२।। घरकी सौंज मिलाय थारमें आगे ले जबधारे।। मोहनजूकी परम मिलनियां हांसी मिस हुंकारे।।३।। रूचिर काछनी जटित कोंधनी जूरो बांह उधारे।। "परमानन्द" अवलोकन कारण भीर बहुत सिंहद्वारे।।४।।

राजभोग में राग-सारंग आंगन खेलीये झनक मनक।। लरिका यूथ संग मन मोहन बालक ननक ननक।।१।। पैयां लागो पर घर जावो छांडो खनक खनक।। "परमानन्द" कहत नन्दरानी बानिक तनक तनक।।२।।

भोग में राग-नट बल बल जाऊं छबिले लालकी।। धुसर धुर घुटरूवन टेकत बोलत वचन रसाल री।।१।। छिटक रहि चहूँ दिसतें जौट लटुरिया लर लटकन छबि भालकी।। मोतिन सहित नासिका नथुली कंठ बघना बनमालकी।।२।। कछुऐंक हाथन कछुक मुख माखन चितवन नैन बिसालकी।। "परमानंद" प्रभु प्रेम बिबस व्है ढ़िग न तजत ब्रजबाल की।।३।।

संध्या में राग-कल्याण मेरे छगन मगन खेलों आंगन यशुमती के बारे।। लटकन लटकत लिलाट धुर धुसरन भरें गात कहत मीठी तोतरी बात कूंतल घूंघर वारे।।१।। कंठ कठुला बिराजे केहरि नखहेरा छाजें पायन पेंजनी सोहे नंद के दुलारे।। "धोंधी" के प्रभू की बाल लीला कहत निगम नेत नेत ब्रह्म बेद हारे।।२।।

शयन दर्शन में राग-कान्हरौ रानी तेरो भाग्य सबन ते न्यारों।। (यह पूरा पद पेज १२३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सोवत नींद आय गई श्याम ही महरी उठ पोढाय दुहन को आपन लागी गृहकाम ही।।१।। बरजत है घरके लोगन को हरि ये लेले नामही।। गाढ़े बोल न पावत कोऊ डर मोहन बलरामही।।२।। शिव सनकादिक अंत नहि पावत ध्यावत हैं दिनयामही।। "सूरदास" प्रभु ब्रह्मसनातन सो सोवत नन्दधामही।।३।।

भाद्रपद कृष्ण १३

श्रृंगार – धोती उपरणा को।

वस्त्र – गुलाबी रूपहरी कोर के। कटि में धोवती व श्रीअंग में ऊपरणो श्रीमस्तक पर फेंटा पीला रंगको, उस पर कतरा कलंगी सुनहरी जरी के कामके। शीरपेच पन्नाको, शीशफूल हीरा के नित्यानुसार धराये गये है। नुपुर सोनाके तथ वेणुवेत्र मीना के ठाड़ावस्त्र लाल रंग का पिछवाई रूपहरी कोर तथा फूल छड़ी व मालाजी धराये गये हैं।

मंगला में राग–बिलावल बृज की रीत अनोखी री माई।। जो कोऊ नंदभवन में आवत ताको मन हरलेत कन्हाई।।१।। उर बघनां मुख माखन सोहे तनकी कहां कहु जो निकाई।। घुटुरूवन चलत छांह कोप करत किलकत हंसत खेलत अंगनाई।।२।। मात यशोदा लेत बलैया मनमें मोद बढ्यो न समाई।। "कल्याण" के प्रभु यह छबि निरखत पलककी ओटसों नहीं जाईं।।३।।

श्रृंगार में राग–बिलावल आज हरि पकरन पाये चोरी।। ले गयो चोर चोर मन माखन जो मेरो धन होरी।।१।। बांधोगी कंचन खंभ कलेवर उभय भुजा दृढ़ डोरी।। राखोंगी कठिन कठोर कुचन बिच, सके न कोऊ छोरी।।२१।। अधरदशन खंड्यों रस गोरस छुवे न काहुकोरी।। कामदंड दंड्यों परघरको नाम न लेहें बहोरी।।३।। तब कुल कान आन तिरछी मैं क्षमा अपराध किशोरी।। शिवपर हाथ धराय "सूरप्रभु" शोच मोच सबतोरी।।४।।

राजभोग आते समय (ग्रह भोजन के पद) राग–धनाश्री लालको मीठी खीर जो भावे।। (यह पूरा पद पेज १८२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग–सारंग रहरी ग्वालिन जोबन मदमाती।। मेरे छगन मगन से लाले कितब उछंग लगावत छाती।।१।। खीजत ते अबही राखे हें उठत नेन्ही नेन्ही दूध की दांति।। खेलन दे घर जाऊ आपुने कहा

डोले ऐतो ईतराती।।२।। उठ चली ग्वारी लाल लागे रोवन जसुमत बोल लई बोहों भांति।। "परमानंद" सयानी ग्वालन फिर आई नैनन मुसक्याति।।३।।

भोग में राग-नट दुहुंकर फोंदना मुख मेलत।। रामकृष्ण बैठे गोद जननी की कबहूक उतरी घुटुरवन खेलत।।१।। चाहि रहत खुनखुना सुनि सुनि हर्ष वसुधा पगसों पग ठेलत।। "रामदास" प्रभु शिशुता केशव अरबराय खिलोना सकेलत।।२।।

संध्या में राग-गौरी विमल यश वृंदावन के चंद को।। कहा प्रकाश सौम सूरजकौ सो मेरे गोविंदको।।१।। कहत यशोदा सखियन आगें वैभव आनंद कंदकौ।। खेलत फिरत गोप बालिक संग ठाकुर परमानंदकौ।।२।।

शयन दर्शनों में राग-कान्हरों सुनि बड़भागीन हों नन्दरानी।। (यह पूरा पद पेज १७५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग आंगनमें हरि सोय गयेरी।। (यह पूरा पद पेज १८६ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्ण १४

(श्री काका वल्लभजी को उत्सव)

श्रृंगार – कुल्है घेरा को।

वस्त्र – पिला रूपहरी कोरके, कटि में पिछोरा, श्रीमस्तक पर कुल्है लाल तथा उस पर रूपहरी वादलाको घेरो। श्री अंग पर चरणारवृंद तक भारी श्रृंगार – हीरा माणक मोती का। ठाड़ा वस्त्र वादली रंगके तथा पिछवाई पिला रंगकी रूपहरी कोर की। श्रृंगार नित्यानुसार तथा श्रीगोपी वल्लभ भोग में कुण्डवारा आरोगाया गया है।

मंगला में राग–रामकली मोहे दध मथन दे बल जई।। बलि बल जांउ कमल मुख उपर छांड मथानी रई।।१।। लाल तोहे देऊंगी नवनीत लौंदा आर कितको ठई।। सुत हित जान विलोक जसुमत प्रेम पुलकत भई।।२।। लाल तोह लेहों कंठ लगाय उरतें प्रान जीवन जई।। बालकेल गुपाल हरि की "आसकरन" नित नई।।३।।

मोहे दधि मथन दें गोविंद।। देंउ माखन दूध मेवा लेहु मेरे चंद।।१।। भऐ सीतल जलज मनिगन उडे सकल बिहंग।। कूमद सकूचे कमल बिकसे "सूर" मधुपन फंद।।२।।

श्रृंगार में राग–बिलावल बाल दिशा गोपाल की सब काहु भावे।। जाके भवनमें जात है सो गोद खिलावै।।१।। श्यामसुन्दर मुख निरिख के अबला सचुपावे।। लाल लाल कहि ग्वालिन हँसि कंठ लगावै।।२।। चुटकी दै दै मुदित व्है करताल बजावै।। "परमानंद" प्रभु नाचहीं शिशुताई जनावै।।३।।

राज भोग आते समय

राग–सारंग आज हमारे भोजन कीजे।। बहुत भाँत पकवान मिठाई षटरस व्यंजन लीजे।।१।। सद्य की खिचरी और खोवा स्याम सलोने

लीजे।। उर्द के बरा दही में बोरे कछु कोरे कछु भीजे।।२।। संग समान सखा बुलावहु बाँट सबन को दीजे।। "आसकरण" प्रभु मोहननागर पान्यों पछावर पीजे।।३।।

राग-धनाश्री सुतहि जिमावत यशोदा मैंया।। सानत कौर मधुर मृदु मीठो दे मुख लेत बलैया।।१।। खेलन को उठ उठ भाजत है, राखत है बोहोरैया।। आवो चिरैया आवो खुमरैया ग्वालिन लेत बलैया।।२।। तुम जेबो मिल संगलाल के बहुविध ख्याल खिलैया।। "श्रीविट्ठल गिरिधर" माता की प्रीति कही न जैया।।३।।

राग-धनाश्री गोद बैठाय जिमावत मैया।। सुओदन घृत सानी जसोदा श्री मुख मेलत कुँवर कन्हैया।।१।। आस-पास व्रज के सब लरिका संग के सखा बलभैया।। खेलत खात हँसत लाडीलो जसुमति लेत बलैया।।२।। रूचि अपनी सो भोजन कीनों, कछु पियो कर घैया।। "रसिक" सुहेत बीरी अरोगत जे पठाई नन्दरैया।।३।।

राग-धनाश्री जेंवत नन्द कान्ह एक ठोरें।। कछुक खात लपटात दुहूँ कर बालकेली रस भौंरे।।१।। वरा वदन में मेल्यों जबही मिरच दशन टक टोरें।। तीक्ष्ण लगे नयन भर आये, खीजत बाहिर दौरें।।२।। फूल कपोलन देत रोहिणी लिये लगाय अंकोरे।। "सूरस्याम" को मधुरे कोर दे कीने तात निहारें।।३।।

राजभोग में राग-सारंग ठाडी लिये खिलावत कनीयाँ।। प्रमुदित मन गावत जसोदा हरि लीला मोहनियाँ।।१।। काजर, तिलक पीत तन झगुली क्वणित पाँई पैंजनियाँ।। हँसुली हेम हमेल बिराजत लर लटकन मन मनियाँ।।२।। हुलरावति हँसी कंठ लगावत प्रीति रीति अति धनियाँ।। चुम्बत सुख "रघुनाथदास" बलि बडभागिन नंदरनियाँ।।३।।

भोग में राग-नट सोहत श्याम तन पीत झगुलियां।। कूलहे लाल लटकन छब बघना चलन सिखावत मैया।।१।। डगमगात पग धरत

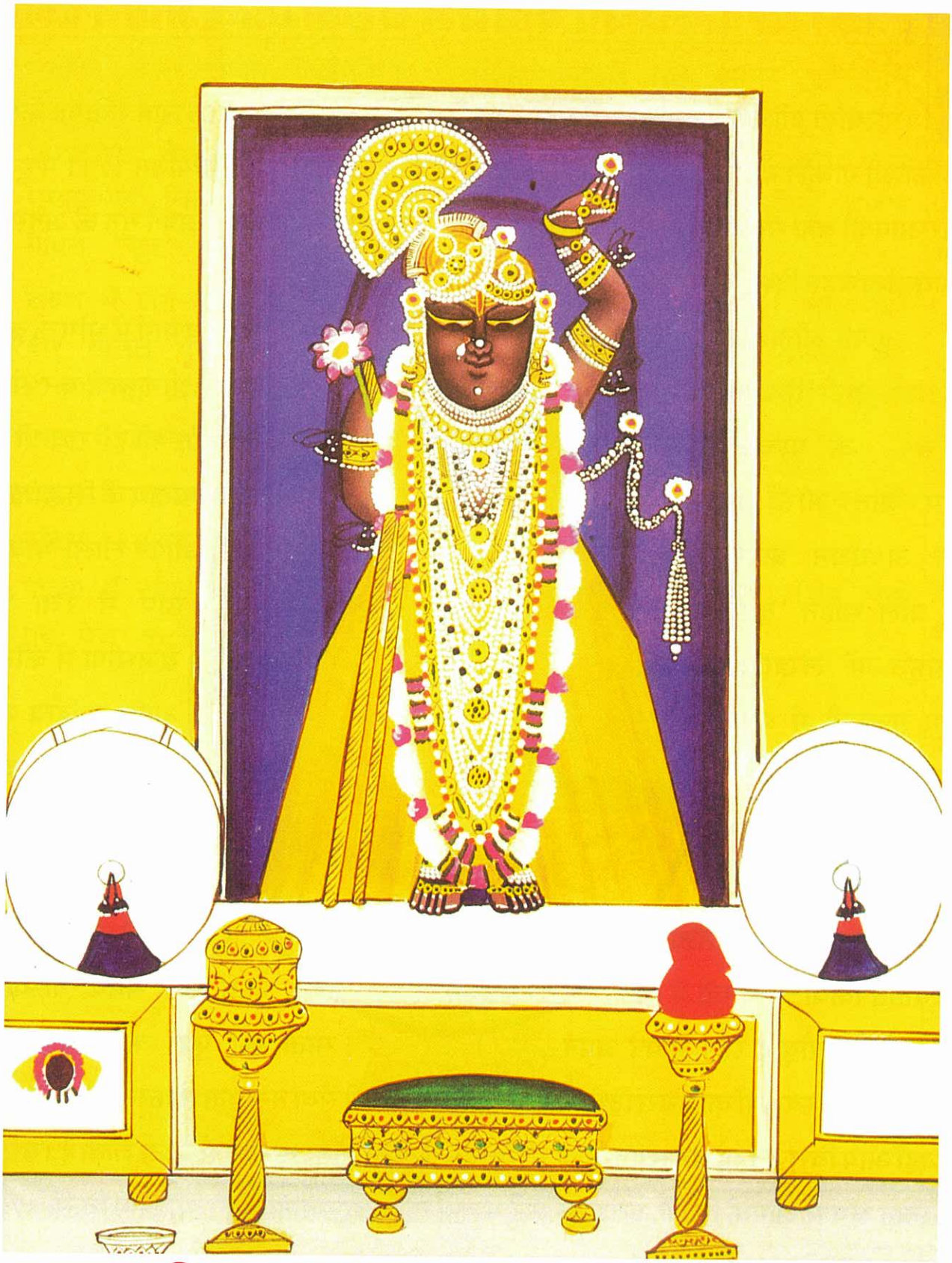

श्री काका वल्लभजी का उत्सव का श्रृंगार

श्री हरि सेवा संस्थान (रजि.) नाथद्वारा का श्री जी चरणों में दण्डवत व जय श्री कृष्ण

श्री काका श्री वल्लभजी महाराज श्री का दिव्य जीवन दर्शन

गोस्वामी श्री काका वल्लभ जी महाराज श्री का प्राकट्य वि.सं. 1703 माह भाद्रपद कृष्ण 14 को श्री गोकुल में श्री महाप्रभु जी की 6वीं पीढ़ी में हुआ। आपश्री का यज्ञोपवित 1711 में हुआ और आपको ब्रह्म संबंध की दीक्षा श्री हरिराय जी ने प्रदान की। अतः आपने अपने गुरु के अनुसार भगवत्सेवा बहुत निष्ठा के साथ और दीनता पूर्वक की।

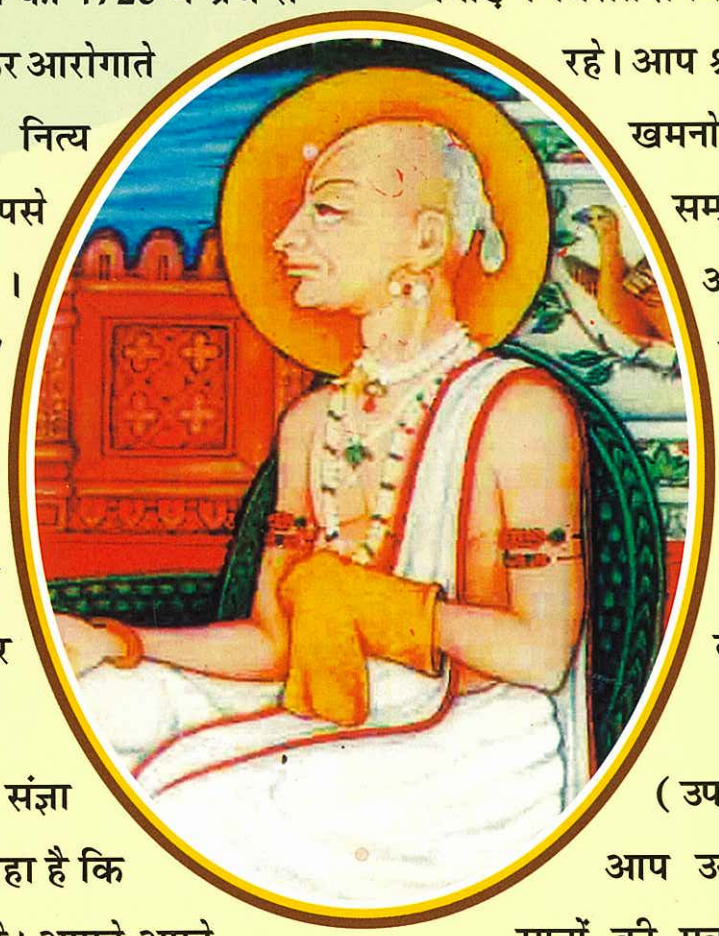

आपने श्रीनाथजी को 1726 में व्रज से मेवाड़ में पधराते समय मार्ग में भोग के क्रम में 'रोटी-लोटी' सिद्ध कर आरोगाते रहे। आप श्रीनाथजी कर सेवा पहुँचने के पश्चात् नित्य खमनोर श्री हरिराय जी के पास जाते और आपसे सम्प्रदाय के सिद्धांतादि का अध्ययन करते। आपने लीला भावना के धोल सहित 'दास' छाप से रचा है। संस्कृत में लेखादि, ब्रजभाषा में कीर्तन तथा गुजराती में धोल आदि साहित्य का निर्माण किया है। आपने व्रज भाषा दल भावना का ग्रंथ रचा और तदनुसार व्रजयात्रा वि.सं. 1762 में की।

आपको 'काका' संज्ञा (उपनाम) से इसलिए अभिहित किया जाता रहा है कि आप उस समय गोस्वामी बालकों में वयोवृद्ध रहे। आपने अपने सातों की पुत्रों को अपने माथे बिराजते विधि स्वरूपों को पधरा दिये थे, ताकि श्रीनाथजी की सेवा तन्मयता से करते रहे। नाथद्वारा में जहाँ आप बिराजते रहे वह स्थान आज भी वनमालीजी के मंदिर के नाम से जाना जाता है। यद्यपि निश्चित रूप से आपके नि.ली. प्रवेश के बारे में नहीं कहा जा सकता। फिर भी आप वि.सं. 1780 तक भूतल पर बिराजमान रहे। आपके 52 वचनामृत प्रसिद्ध है।

मनोहर अति राजत पेंजनियां।। जसुमति प्रफुलत मन आनंद पुनि-पुनि लेत बलैया।।२।। किलक किलक कर लेत खिलोना प्रेम मगन हूलसैया।। अरबराय देखत फिर पाछें घुटुरन चलत हें धैया।।३।। गोप वधु मुखकमल निहारत लालन सब सुखदैया।। ब्रजलीला ब्रह्मादिक दुर्लभ गावत "सूर" सदैया।।४।।

संध्या में राग-गौरी आवो मेरे गोविंद गोकुल के चंदा।। भई बडी वार खेलत यमुनातट, वदन दिखाय देउ आनंदा।।१।। गाय आवन भई है विरियां, दिनमणि किरण होत अतिमंदा।। आवो मेरे तात मात छतियां लाग, "गोविंद" प्रभु ब्रजजन सुखकंदा।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ आछि नीकी सोहत हँसत द्वै द्वै दूध की दतियां।। (यह पूरा पद पेज १८३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सोवत नींद आय गई श्याम ही।। (यह पूरा पद पेज १८८ पर पढ़े।)

भाद्रपद कृष्ण 30 (अमावस्या)

श्रृंगार – मल्लकांछ – टिपाराको।

वस्त्र – गुलाबी रूपहरी कोरके कटि मल्लकांछ, ऊपर दोनों तरफ पटका, श्रीमस्तक पर रूपहरी जरि के कामका टिपारा ठाडा वस्त्र लाल, पिछवाई चित्राम की जिसमें बालों के साथ माखण चोरी कर रहे है। श्रृंगार मध्य का हीरा मोती माणक के धराये गये है। माखण चोरी लिला चल रही है।

मंगला में राग–बिलावल आज हरी पकरन न पाये चोरी।। (यह पूरा पद पेज १८६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग–टोड़ी तें कहूं देख्योरी आली नंद को नंदन मटुकी झटक के पटक गयो री।। माखन चोर चोर चित हर लीनों कीनो न नेकहु डर नट जो उलट के पलट गयोरी।।१।। मारग रोक रहत खोरन में नेन सेन दे सटक गयोरी।। "तानसेन" के प्रभु तुम बहु नायक रस गोरस ले गटक गयोरी।।२।।

राग–आशावरी तेरे री लाल मेरौं माखन खायो।। भर दुपेहरी सब सूनो घर ढोर ढंढोर अब ही उठ धायौ।।१।। खोल किंवार अकेले मंदिर, दूध दह्यो सब लरकनि खायो।। छीकेतें काढ खाय, चढ़ी मोहन कछू खायौ कछू भू ढरकायौ।।२।। नित्यप्रति हानि कहाँलो सहिये यह ढोटा ऐसे ढंग लायौ।। "परमानंद" रानी तुम बरजौ पूत अनोखौ तेंही जायौ।।३।।

राजभोग आवता (ग्रह भोजन के चार पद) राग–आसावरी भोजन कीजे मोहनलाल।। भाँति भाँति के विंजन कीने रसिक रसीली बाल।।१।। परोसत ही अधिक छबि उपजत बोलत वचन रसाल।। चितवन में तन–मन–धन दीनो मोहन मदन गोपाल।।२।। अति ही सुख बिलसे बहु भाँतिनसों भावे परम रसाल।। "श्री बिट्ठल" गिरिधर मुख निरखत अँखियां भई निहाल।।३।।

राग–सारंग मैय्यारी तू मोहि बडौ कर लैरी।। दुध दही घृत माखन मेवा जो माँगों सो देरी।।१।। कछु दुराव राखे जिन मोंसों जोई जोई मोही रूचैरी।। रंग भूमि में कंस पछारों कहौ कथा सुखसोंरी।।२।। "सुरदास" स्वामी की लीला मथुरावास करोंरी।। सुंदर श्याम कहत जननी सों नंदबाबा की सोंह री।।३।।

राग–धनाश्री आज गोपाल पाहुने आये निरखे नयन अघायरी।। सुन्दर वदन कमल की शोभा मोमन रहयों लुभायरी।।१।। के निरखूँ के टहल करूँ एको नहीं बनत उपायरी।। जैसे लता पवन वश द्रुमसूँ छूटत फिर लपटायरी।।२।। मधु–मेवा–पकवान–मिठाई व्यंजन बहुत बनायरी।। रागरंग में चतुर "सूर" प्रभु कैसे सुख उपजायरी।।३।।

राग–धनाश्री जेंवत कान्ह नन्दजू की कनियाँ।। कछुक खात कछु धरणी गिरावत छबि निरखत नन्दरनियां।।१।। बरी बरा बेसन बहुं भाँतन व्यंजन विविध अगनियाँ।। आपन खात नन्दमुख लावत यह सुख कहत न बनियाँ।।२।। आपुन खात खवावत ग्वालन कर माखन दधि दुनियाँ।। सदमाखन मिश्री मिश्रित कर मुख नावत छवि धनियाँ।।३।। जो सुख महरी यशोदा बिलसत सो नहिं तीन भुवनियाँ।। भोजन कर अचवन जब कीनों माँगत "सूर" जुठनियाँ।।४।।

भोग में राग–नट तू नेक बरजरी जसोदा मैया अपने सांवरे कों।। घर घर दधि माखन हेरत फिरत, आँखन मांझ भरत रूप बावरे को।।१।। काहु को कछु रह न पावे उघम, मेंल्यो तनकसेने सगरे गांवरेको।। "नंददास" जसोदा ठाडी हंसत, कहा कहा नहिं कहत गोपी प्रेम थांवरे को।।२।।

शयन दर्शन में राग–ईमन मोहन माखन चोरी करत फिरत बरजों हों नन्दरानी जुं।। (यह पूरा पद पेज १५ पर पढ़े।)

संध्या में राग–चौतालो महर पुत तेरो केसे हूं बरज्यो न माने।। बल मोहन की जोरी और बालक संग लीयें, मरकट घेरे फिरत पाछें और लूटत घर मेरो।।१।। दूध दही माखन घृत तनक न उबरत, केसें के बस होय हमके रो।। "गोबिंद" प्रभुके बाल विनोद सुनत नंदरानी, मन–मन मुसिक्यानी सांची ऐ कहत अनेरो।।२।।

पोढ़वा में राग–यमन पौढ़े माई मदन मोहन स्याम।। अनन्य होय चरणारविंद भज सकल पूरणकाम।।१।। अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारें योग–भोग विश्राम।। उमापति शुकदेव, नारद रटत निसदिन नाम।।२।। सकल कला प्रवीण गिरीधर राधिका भुज वाम।। कहत "कृष्णा" सुवस बसिये श्रीनन्द गोकुल गामे।।३।।

भाद्रपद शुक्ला १

राधा अष्टमी की बधाई आजसे प्रारंभ, देहरी बन्दन माल।

श्रृंगार – धोती पटका पाग को।

वस्त्र – केसरिया रूपहरी कोरके, कटि में धोवती उसपर पटका धराया गया है। श्रीमस्तक पर पाग पर रूपेरी जरी के कामका दोहरा कतरा धराया गया है।

ठाड़ा वस्त्र वादली रंग का तथा पिछवाई केसरिया रूपहरी कोरकी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार भारी श्रृंगार माणक-मोती के धराये गये है।

विशेष – आज से राधा अष्ठमी की बधाई बैठती है। मंगला से श्रृंगार व संध्या आरती तक झांझ मृदंग से राधा अष्टमी की बधाई आठम तक गाई जाती है। आज गोपीवल्लभ भोग में कुण्डवारा आरोगाया जाता है।

मंगला में राग सारंग आज बधाई है बरसानें।। पंचशब्द बाजे सुनि सुरमुनि देखन मन तरसानें।।१।। कीरति कूखि चंद्रमा प्रगटी श्रीराधाजू पग दरसाने।। ललित "निकुंज बिहारिन" के उर रहे रूप सरसानें।।२।।

आज बधाई है बरसानें।। कुँवरी किशोरी जन्म लियौ है सब लोकन बजें निसानें।।१।। कहत नन्द वृषभानरायसों बहोत बात को जानें।। आज भैया हम सब ब्रजवासी तेरे हाथ बिकानें।।२।। या कन्या के आगें कोटिक बेटनको न माने।। तेरे भलें भलौ सबहिनकौ आनंद कौन बखाने।।३।। छैल छबीले गोप रंगीले हरद दही लपटानें।। पहरे बसन विविध अंग भूषण गिनत न राजाराने।।४।। नाचत गावत प्रेम मुदित नरनारी को पहचानें।। "व्यास" रसिक तनमन फूले अति निरख सबै खिसियानें।।५।।

राजभोग आने पर राग–आसावरी बरसानेतें दौरी नारि एक नंद भवन में आईजू।। आज सखी मंगलमें मंगल कीरति कन्या जाई।।१।। सुनि जसुमति मन हरख भयौ अति बोलिलई ब्रजबाला।। मुक्ता मणिमाला भूषण वर पठई साज रसाला।।२।। चलीं गज गामिनि साथन हाथन कंचन थार सुहाये।। कमलनकें ऊपर खेलत मानों अगनित चंदजु धाये।।३।। डहडहे मुख छबि छाजत राजत लाजित कोटिक मैना।। कंजन पर खेलत मानौ खंजन अंजन रंजित नैना।।४।। कुंडल मंडित बने अति राजत उपमा अधिक बिराजै।। हार सुढ़ार उरनपर सोहत निरखि शचि छबि लाजै।।५।। गावत गीत करत जगपावन भामिनि मंदिर आई।। नंदरायजू के आंगन में आनंद बजत बधाई।।६।। देखी मुदित वृषभान भये अति भेट रूचि सों लीनी।। गद्‌गद् कंठ सबन सों बोलत बीथनि पावन कीनी।।७।। कीरति ढिंग निरखी सुठि कन्या धन्या अधिक अपारा।। कौतिकमें कौतिक रस भीने बरखत शीशन धारा।।८।। सब जगधाम धाम पुनि जाकौ शेष धाम जिहि मानें।। "नन्ददास" सुखकौ सुख सागर प्रगटी है बरसानें।।८।।

श्रृंगार में राग आसावरी जन्म लियो वृषभान गोपके बैठे सब सिंह द्वारेरी।। लग्न घड़ी बलि नक्षत्र शोधके गुरूजन कियो विचाररी।।१।। कंचनमणि आंगन आगे रही बोलत द्विजवर बेनरी।। कबहुक सुध पावत सु भवनमें पुत्र जनमके चेनरी।।२।। इतने एक सखी आई धायके जहां बैठे ग्वालरी।। वेगी पुकार करयो मुख आली प्रगटी सुता लघु बालरी।।३।। तब हँसी तारी दे गुरूजनको देखे जनम विधानरी।। हमारे कोटि पुत्र की आसा पूरन करी भगवानरी।।४।। कर भाजन शृंगीजू गर्गमुनि लग्न नक्षत्र बल शोधरी।। भए अचरज ग्रह देखी परस्पर कहत सबन प्रतिबोधरी।।५।। सुद भादो मास अष्टमी अनुराधा के शोधरी।। प्रीति योग बल बालव करण लग्न धनुष वर बोधरी।।६।। प्रथम पहर दिन उदित दिवाकर सत्या सुखद सुजातरी।। नाम करन राधा रति रंजन रमा रसिक बहु भांतरी।।७।। सुन वृषभान सुता जिन मानों एसी रमा रति

लोलरी।। नाहिन ओर सुन्दर त्रिभुवन में श्रीराधा समतोलरी।।८।। नाहिन सची रमा गिरजा रति रोम रोम प्रति ठानेरी।। नवनिधि चार पदारथ को फल आयो सकल ग्रह तानेरी।।९।। जब व्याहन शुभ योग होयगो शोभा कहत न आवेरी।। दस और चार लोकको नायक सोई सुता वर पावेरी।।१०।। तब हंस कहयो दुर्वासा सबनसों सुनो श्रुति सकल गुवालरी।। मेरेहि चित्त आयो निश्चय नंदमहर घर बालरी।।११।। वृंदावन रस रास रसिक मणि दंपति संपति मानेरी।। संगत स्थल विहरत दोउ सोई सकल यह जानेरी।।१२।। युवती युथ मध्य रसिक शिरोमनि वल्लभ कुल नंदलालरी।। यह जोरी जुग जुगत होयगी श्री राधारमण गोपालरी।।१३।। शिव विरंची जाकी जूठन न पावत सोई ग्रास परस्पर देतरी।। कुंजन कुंजन क्रीडत अद्भुत अगमनिगम रस लेतरी।।१४।। यह विध कह्यो द्विजराज जुगलसों ग्वाल मंडली जानेरी।। जयजयकार करत सुरलोकन बाजत तूर निशानरी।।१५।। घरघरतें गोपी निकसी गावत मंगल बालरी।। पिकबेनी मृगनेनी सुंदर चलत सुचाल मरालरी।।१६।। जो रस नंदभवन में उमग्यो ताते दूनो होतरी।। हय गज धेनु और मणि दीनी बंदीजन द्विज बोहोतेरी।।१६।। वसन विचित्र सबन पहिराये सब शिशु देखन जायरी।। मुख अवलोकि कहत चिर जीयो पुलकित पुलकि सचु पायरी।।१८।। सुर मुनि नाग धरणि जंगमको आगम अति सुख देतरी।। शशि खंजन विद्रुम शुक केहरी इनको छिन बल लेतरी।।१९।। यह छबि निरख निरख सचु पावत पुनि डारत तृन तोररी।। "सूरदास" उर बसो निरंतर राधामाधव जोररी।।२०।।

राजभोग में राग-सारंग वरषाने वृषभान गोप कै आनन्द की निधि आई जू।। धन्य कूखि रानी कीरतिकी, कुंवरी सुलच्छन जाईजू।।१।। इन्द्रलोक रसातल, देखी सुनी नाहिं गाईजू।। सिंधु सुता गिरि सुता सची रति, येहि अब परत लजाई जू।।२।। आनन्द मगन जसोदा रानी लालकी करौ सगाई जू।। प्रभु "कल्याण" गिरिधर की जोरी, विधना भली बनाईजू।।३।।

भोग में राग–सारंग प्रकट्यौं सब वृज को श्रृंगार। कीरति कुँखी औतरी कन्या सुन्दरताकौ सार।।१।। नख शिख रूप कहाँलौ बरनौं कोटि मदन बलिहार।। "परमानंद" वृषभान नंदिनी जोरी नंददुलार।।२।।

संध्या में राग–गौरी मेरे मन आनन्द भयौ हों तो फूली अंग न मांऊं।।ध्रु.।। सात साखिको मेरो राजा जा घर बजत बधाई।। देव कुसुम बरषत हैं नीके रानी कीरति कन्या जाई।।१।। हय गज हीर चीर मणि माणिक भादों झरी लगाई।। कुँवरि वृषभान नृपति घर अष्ट महासिद्धि आई।।२।। बाजे बाजत रूचिसों नीके रानी जसुमति भली नचाई।। भाभीजूसों झगरौ कीजै आज भली बनि आई।।३।। चलौ सुवासिन सब मिलि साथिये कंचन थार सजाई।। "गरीबदासकों" सुबुद्धि दीजे बहोत पँजीरी पाई।।४।।

ब्यारू एवं दुध के पदों के समय बधाई के पद गाये जाते है

शयन में राग–ईमन कामकेली कनक बेली रंगरेल रसीक कुँवरी अति विचित्र गुण निधान सुभग नागरी।। प्रगटी प्रियके हेत प्रथम मन कर संकेत, रूपकेत सुखद हेत, निपुन आगरी।।१।। रीझे वृषभान दान देत बसन भूषणधाम, धरनी धन धेनु धान, अटल त्यागरी।। "रामदास" पूरी आस हास रास होगयो तब खेलेगी गिरिधर संग बड़े भाग्यरी।।२।।

पोढ़वा में राग–बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े।)

भाद्रपद शुक्ल २

श्रृंगार – दुमालाको।

वस्त्र – लाल पीला लहेरिया के रूपहरी कोरके। कटि में पिछोड़ा तथा श्रीमस्तक पर दुमालो उसपर रूपहरी जरीके कामकी भीमशाहि कलंगी धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र हरा तथा पिछवाई लाल-पीला लहेरिया की रूपहरी कोर की धराई गई।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये।

विशेष – आज श्रीजी मनोरथ से मोती के कामके बंगले में राजभोग से संध्या तक बिराजे तथा मनोरथ भोग आरोगे।

मंगला में राग-देवगंधार प्रगटि नागरी रूप निधान।। देखि देखि बूझत जो परस्पर नहीं त्रिभुवन में आन।।१।। उपमा कों जे जे कहियतहें ते जू भये निरमान।। "कुंभनदास" लाल गिरिधरकी जोरी सहज समान।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल जबतें राधिका भूतल प्रगटी तबतें विधि को मान हन्यौ।। मेरी तो यह सृष्टि न होई, अब कछु अद्‌भुत बान बन्यो।।१।। एक रूप एक वेष एक गुन बरन बिलक्ष ठन्यौ।। "कृष्णदास" प्रभु श्री गिरिधरतें केलिकला रस सरस बन्यो।।२।।

राजभोग आवे तब (राधाजी की बधाई) राग-सारंग आज राबल में जयजयकार।। प्रगट भई वृषभाग गोपकें श्रीराधा अवतार।।१।। भूषण वसन शोभित अंग अंग कंठ मनोहर हार।। हाटक तन वदनारविंद छबि चहुंदिस भयो उजियार।।२।। सब सखिगन मिल द्वारे आई गावत मंगलचार।। निर्मित जोरी मोहनकी "रामदास" बलिहार।।३।।

राजभोग में राग-सारंग धनि धनि प्रभावती जिन जाई ऐसी बेटी, धनि धनि हो वृषभान पिता।। गिरिधर नीकी मानी सो तो तीन लोक जानी उरझ परी मानों कनक लता।।१।। चरन पर गंगा ढ़ारो मुख पर

ससि वारो ऐसी त्रिभुवन में नाहिन वनिता।। "नंददास" प्रभु स्याम बस करन कों स्यामाजू के तोलों नावें सिन्धु सुता।।२।।

भोग में राग–गौरी मुदित निसान बजावही वृषभान नृपति दरबार हों।। भादो सुदी आठे उजियारी सुभ नक्षत्र गुण सार हो।। प्रगटी कूखि महर कीरति के श्रीराधा अवतार हो।।१।। गृह गृह ते गोपी बनि निकसीं गावत मंगलचार हो।। हरखत चली बधाये कुंवरि कर लिये कंचन थार हो।।२।। धन्य कूखि रानी की यों कहि हँसि हँसि लागत पाय हो।।३।। यह जोरी गिरिधर सम प्रगटी उपमा को नहीं आन हो।। "रामदास" विप्र भाटन कों देत राय बहु दान हो।।४।।

संध्या में राग–गौरी बजत बधाई वृषभान रायघर।। बर बरसाने सुख सरसाने नाचत महेर मिले नारीनर।।१।। दुब हरद रोरी मुख मांडत हँस हँस धरत फूल परस्पर।। गोपीग्वाल महारसमाते गाय जनम मंगल गदगदसुर।।२।। गरेबाहुधर लटकत डोलत महामुदित अतिराजत रंगभर।। भुखन बसन गिनत नहीं जानें "सुरदास" लाग्यो आनंद उर।।३।।

शयन में राग–कान्हरौं आठे भादों की उजियारी।। रावलमें वृषभान गोपके प्रगटी राधा प्यारी।।१।। श्रुति स्वरूप सब संग करलीने व्रजपति हेत विचारी।। "दास गोपाल" वल्लभ जूकी स्वामिनी वशकीने गिरिधारी।।२।।

पोढ़वा में राग–बिहाग पोढे माई ललन सेज सुखदाई।। रतन जटित झारी तहांरी बीरा देत बृखभान दुलारी।।१।। उसीर महल मघ कुसुम रावटी राजत तहां रूचिर चित्रसारी।। "सूरदास" प्रभु कोटि मदन छबि गुननिधि राधिका प्यारी।।२।।

भाद्रपद शुक्ल ३

श्रृंगार – पाग-पिछोड़ा का।

वस्त्र – पीला रंगके रूपहरी कोरके कटिमें पिछोड़ा तथा श्रीमस्तक पर पाग पर रूपहरी जरीके कामकी कलंगी तथा रूपहरी बादला की लुमक धराई गई हैं। वेणुवेत्र लेहरदार मीनाकी तथा फुल की छडि धराई गई है। ठाडा वस्त्र लाल रंगके तथा पिछवाई पीली रूपहरी कोरकी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार माणक मोती के धराये गये है।

विशेष – श्री राधाजी की बधाई चल रही है।

मंगला में राग-ललित वरषाने वर सरोवर प्रगट्यौ अद्भुत कमल (री माईं)।। वृषभान किरन प्रकाश पोष्यौं रहत प्रफुलित सदाई यह सरस सुंदर अमल।।१।। सखी चहूँ दिस केसरदल कर्णिका आकार राजत राधिका यश धवल।। "सूरदास" मदनमोहन पिय नव मकरंद हित सेवित सदा अति नलिन अलि।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल जबतें राधिका भूतल प्रगटी तबतें विधि को मान हन्यों।। (यह पूरा पद पेज २०० पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-सारंग (राधाजी की बधाई) राधेजु शोभा प्रगट भई।। वृंदावन गोकुल गलियनमें सुखकी लता छई।।१।। प्रति प्रति पद गोपुर कुंजनमें उपजी उपमा नई।। "कुंभनदास" गिरिधर आवेंगे आगे पठई दई।।२।।

राजभोग में राग-सारंग चलों वृषभान गोपके द्वारें।। जन्म लियो मोहन हित कारन आनंदकी निधि सुकुमारी।।१।। गावत जुवति मुदित मिली मंगल उंचे मधुर धुनि धार।। विविध कुसुम कोमल किसलययुत तोरन बंदनवार।।२।। मागध सूत बंदी चारन जस कहत कछु अनुसार।। हाटकहार चीर पाटंबर देत संभार संभार।।३।। धेनु सकल सिंगार वच्छ

ले चले ग्वाल सिंगार।। "हित हरिवंश" दूध दधि छिरकत मांझ हरिद्रा डार।।४।।

भोग में (ढाढ़ी) राग–मारू ढाढ़िन नंदीसुरतें आई।। अपने पति को संग लिये है अति आतुर उठिधाई।।१।। उदै देखि व्रज वल्लभकुल को फूली अंग न समाई।। नाचत गावत प्रमुदित व्है कें टेरि असीस सुनाई।।२।। महाभाग्य कीरति आदर दै भीतर भवन बुलाई।। कंचन बहु भूषन पाटंबर नखशिखते पहिराई।।३।। रतनभान रतननकी पोहोंची ढाढ़िन हाथ गहाई।। उदैभान सोने के टोडर देत बहुत सुख पाई।।४।। दिये खास अगनित धानन के ललित भान लुटाई।। अष्टभान और कुंतभानजू गोधन ठाठ बताई।।५।। महाराज वृषभान बहुत करि मनकी आस पुजाई।। "किशोरीदासको" बाँह पकरिकें बरसाने जो बसाई।।६।।

संध्या में राग–बिलावल आज बधाई माई वृषभान राय के दरबार।। व्रजजन मिलि मंगल गावें सजि चली–कंचनथार।।१।। ध्वजा पताका कदली रोप्यौ द्वारन बंदनवार।। सबही सयानी धरौ साथिये कीरति परम उदार।।२।। कंचन रसिक रूप अति राजत मोती लगे सुढ़ार।। कमल मुखी प्रफुलित भये मानों दिनकर किरन पसार।।३।। कुँवरिहिं देखत अति सुख उपजत वारति मुक्ताहार।। "गरीबदासकों" दई पंजीरी बोलि कुटुंबपरिवार।।४।।

रावल गामतें दोर आनन्द भर आई है गोकुल नारी।। नंद गोप घर आन सुनायो मगन भई सुकूमारी।।१।। सुनत महर जसुमत प्रफुल्लित भई अचवत जल मोहन पर वारी।। श्रीराधा कृष्ण जुगल प्रमुदित भऐ जन "गोविंद" बलिहारी।।२।।

पोढ़वा में राग बिहाग पोढिये लाल लाडली संगलें।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े।)

भाद्रपद शुक्ल ४
(गणेश चतुर्थी)

श्रृंगार – शुथन पटका को।

वस्त्र – लाल चुंदड़ी के रूपहरी कोरके धोराके, कटि में शुथन पटका धराया गया है। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर सुनहरी जरी के काम का कतरा धराया गया है। ठाडा वस्त्र हरा तथा पिछवाई चित्राम की जिसमें प्रभु छोटे छोटे बालकों के साथ डांडीयां श्रीहस्त में लेकर खेल रहे है।

आभरण – नित्यानुसार हीरा-मोती सोना के घराये गये हैं।

मंगला में राग-बिलावल श्री वृषभानरायजु के आँगन बाजत आज बधाई।। भादों सुदी आठें उजियारी आनँद की निधि आई।।१।। रस की रासी रूपकी सीमा अँग अँग सुन्दरताइ।। कोटी मदन बारों मुसिकन पर मुखछबि बरनी न जाई।।२।। पूरन सुख पायौ व्रजवासी नैनन निरखि सिराई।। "कृष्णदास" स्वामिनि व्रज प्रगटी श्री गिरिधर सुखदाई।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल भई वृषभान के सुता।। रूपरास अंग अंग माधुरी मानहु कनक लता।।१।। सब अंग निपुन बनी अति मृग छबी कंचन हुतें गोरी।। "आसकरन" ब्रजराज नंदसुत बनी अनुपम जोरी।।२।।

राजभोग आते समय बधाई के पद

राग-कान्हरौ आज बधाई बाजत रावल।। श्री वृषभानराय घर प्रगटी श्यामा श्याम सुखावल।।१।। गृह गृहतें गोपी बनि आई आनंदित नंदावली।। मानो कनक कंज मकरंदहि पीवत जीवत मधुपावलि।।२।। नाचत गावत वेनु बजावत हेरी देत गोपावलि।। दधि कादो भादो झर लायो प्रेम मुदित "व्यासावलि"।।३।।

राग–कान्हरौ रावल आज कुलाहल माई।। बाजत बाजत भवनन गाजत प्रगटी सबन सुखदाई।।१।। धरत साथिये वंदनवारे रोपी द्वार सुहाई।। गावत गीत अली गोकुलकी जे जुरी न्योंते आई।।२।। वृषभानके आंगन रानीजू बैठी देति बधाई।। "श्री विट्ठल गिरिधरन" कुंवरिकी बरसगांठि मन भाई।।२।।

राज भोग में राग–सारंग तुं देख सुता वृषभान की।। मृगनैंनी सुंदर शोभानिधि अंग अंग अद्भुत ठानकी।।१।। गौर बरन बहुकांति बदन की शरद चंद उनमानकी।। विश्व मोंहनी बालदशा में कटि केहरि सुबँधानकी।।२।। विधिकी सृष्टि न होई मानों यह बानिक और बानकी।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरधर लायक व्रज प्रगटी जोट समान की।।३।।

राग–सारंग मैं देखि सुता वृषभान की।। जननी संग आई व्रज रावरि शोभा रूप निधान की।।१।। नेंक सुभायते भृकुटी टेढ़ी बैनी सरस कमानकी।। नैंन कटाक्ष रहत चितवतही चित्तवनि निपट अयान की।।२।। पग जेहरि कंचन रोचनसी तनकसी पोहोंची पानकी।। खगवारी गलें द्वेलर मोती तनक तरूवनी कानकी।।३।। लै बैठी हँसि गोद जसोदा मनमें ऐसी बानकी।। "सूरदास" प्रभु मदनमोहन हित जोरी सहज समान की।।४।।

भोग में (ढ़ाढ़ीं) राग–मारू ढाढ़ी भान द्वार व्हे आयो।। सूरज वंश राजनके राजा ताको यश मैं गायौ।।१।। वृषभान नृपतिके सुन्यों बधावो अति आतुर व्है धायौ।। प्रगटी है श्री कुँवरि लाड़िली भयौ मनको भायौ।।२।। लोक चतुर्दश दुंदुभी बाजे गगन विमानन छायौ।। वृंदावन की राधारानी नारद भेद बतायौ ।।३।। जाको ध्यान धरत हैं मुनिजन अंत न काहू पायौ।। जाके हित प्रगटे त्रिभुवनपति निगमन सुजस सुनायौ।।४।। ऐसे बचन सुनत ढाढ़ी के आगे हेरि बुलायौ।। व्यासवंश की जानि आनि ये "गरीबदास" पहरायौ।।५।।

संध्या में राग-मारू ढाढ़िन नंदी सुरतें आई।। (यह पूरा पद पेज २०३ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरौ आठें भादो की उजियारी।। रावलमें ब्रखभान गोपके प्रगटी श्री राधाप्यारी।।१।। सुरत सरूप सब संग लीने ब्रज-पति हेत बिहारी।। "दास गुपाल" बल्लभजु की स्वामीन बस कीने गिरधारी।।२।।

पोढ़वा में राग-विहाग कुंज महल में पोढ़े रसिक पीय प्यारी।। सखी अति चित्र विचित्र बनी हैं पहरें बिबिध रंग सारी।।१।। हँसित परस्पर बात रस बरखत आनंद उपज्यो भारी।। सूरत रंग के रसमें भीजे "नंददास" बलिहारी।।२।।

भाद्रपद शुक्ल ५
(श्री चन्द्रावली जी का उत्सव)

श्रृंगार – निल–पीत पगा को। देहरी बंदनमाल किया गया।

वस्त्र – पीला सोनेरी कोर के, कटिमें पिछोरा। श्रीमस्तक पर नीलपीत का पगा वादली व पीला वस्त्र के कामका तथा सोनेरी कामका टिपारा धराया गया है। ठाडा वस्त्र लाल व पिछवाई पीली वादली हांसिया की सोनेरी कोर की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार धराये गये है।

मंगला में राग–बिलावल श्री वृषभानरायजूके आँगन बाजत आज बधाई।। (यह पूरा पद पेज २०४ पर पढ़े।)

राग–बिलावल श्री राधाजू शोभा प्रकट भई।। वृंदावन गोकुल गलियन में सुखकी लता छई।।१।। प्रति प्रति पद गोपुर कुंजन में उपजी उपमा नई।। "कुंभनदास" गिरिधर आवेगे आगें पठई दई।।२।।

राजभोग आते समय राग–सारंग चंद्रभानके नव निधि आई।। सुखमा कूखि अवतरी कन्या घर–घर बजत बधाई।।१।। नाम धरयौ चंद्रावलि सुखनिधि कोटिक चंद्र लजाने।। भादों सुदि पाँचे शुभवासर अरून हृदय रस माने।।२।। सुनि वृषभान नंद मन हरखे देखि अनूपम शोभा।। "कृष्णदास" गिरिधर की जोरी देखत रति पति लोभा।।३।।

बधाई राग–सारंग भादौ सुदी पंचमी प्रकट भई सबहिनकी सुखदाई जु।। श्री चन्द्रभान गोप गृह निधि सुखमा कूख सुहाई जू।।१।। गाम रिठोरा घरन घरन प्रति मोतिन चौक पुराई जु।। गोप गोवर्धन भये जु परमसुख सबहिन देत बधाई जु।।२।। देत दान विप्र भाटनको माला मुंदरी चीरा जु।। "चत्रभुज" प्रभु भूतल पर गोपराज बल बीरा जु।।३।।

राजभोग में राग–सारंग आज सखि सुखमां कन्या जाई।। भादों सुदि पाँचे शुभ लग्न चन्द्रभान गृहआई।।१।। नामकरनकों गर्ग पराशर

नारददि सब आये।। चंद्रावली नाम सुखसागर कोटिक चन्द्र लजाये।।२।। सुनि वृषभान नंद मिलि आये कीरति जसोदा आई।। मंगल कलश सुवासिन शिरधरि मोतिन चौक पुराई।।३।। देत दान और धरत साथिये गोपी सब हरखानी।। निगमसार जोरी गिरधर की "व्रजपतिके" मनमानी।।४।।

भोग में राग-मारू हों वृजवासिन को मगा।। वलभराज गोप कुल मंडन ईन द्वे घर को जगा।।१।। नंदराय ऐक दियो पिछोरा तामें कनकतगा।। श्री ब्रखभान दिये कर टोडर हीरा जटित नगा।।२।। कीरत दई कुंवरि की झगुली जसुमति सुत को झगा।। "किसोरिदास" कों ले पहरायो नील पीत को पगा।।३।।

शयन में राग-ईमन प्रकट भई शोभा त्रिभुवन की श्री वृषभान गोप के आई।। अद्भुत रूपदेखि व्रजबनिता रीझि रीझि कें लेत बलाई।।१।। नहिं कमला नहिं सची रति रंभा उपमा उर न समाई।। जाते प्रगट भये व्रजभूषण धन्य विलोकनि माई।।२।। युगयुग राजकरौ दोऊ जन इत तुम उत नंदराई।। उतसे मदनमोहन इत राधा "सूरदास" बलिजाई।।३।।

पोढवा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। नोतन सेज बनी अति सुंदर बीच बीच सौंधे की पुट दे।।१।। हों करहों चरनन की सेवा मेरे हिये नेनन ही सुख व्है।। "गोपीनाथ" या रंग महल में जोरी राज करो अचल व्है।।२।।

भाद्रपद शुक्ला ६

(श्री ललिता जी का उत्सव)

भाद्रपद शुक्ला 6 गो. ति. श्री विट्ठलेशराय जी महाराज का उत्सव

श्रृंगार – पाग चंद्रिका को। देहरी बंदनमाल

वस्त्र – पंचरंगी लहरीयाके, रूपहरी कोरके। कटि में पिछोरा श्रीमस्तक पर पाग पर मोर की चंद्रिका धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र सफेद व पिछवाई पंचरंगी लहरिया की धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार भारी श्रृंगार वेणुवेत्र लहरदार मीना के धरायें गये है।

मंगला में राग–देवगंधार आज बरसानें बजत बधाई।। श्रीवृषभानरायजूकी रानी कुँवरी अनुपम जाई।।१।। घर घरतें सब चली बेग है नाचत गावत धाई।। गोपीन सहित चली नँदरानी नंदीसुरतें आई।।२।। ताल पखावज ढोल दमामा बिच बिच भेरि सुहाई।। यह विधिसों नँदरानी पोहोंची मुख निरखत सुख पाई।।३।। हरद और दधि छिरकी परस्पर धरनी कीच मचाई।। युवती चहूँ दिश करत कुलाहल तनकी सुधि बिसराई।।४।। भीर भई जित तिततें रावल अति व्रज शोभा छाई।। "श्यामदास" यह लीला लखिकें गोकुल आनि सुनाई।।५।।

श्रृंगार में राग–आसावरी नंदि सुरते वरषानें में दूनी बटत बधाईजू।। भये मनोरथ सबके मनके कीरत कन्या जाई जू।।१।। परम उदार नंदजूकी रानी हंसुली झगुली लाई जू।। बाढ्यो हैं मोद गोद मैयाकी किलकत कुंवर कन्हाई जू।।२।। कीरतिरानी और नंदरानी दोऊ समधन बतराई जू।। यह सगाईकी बात चलाई "हित अनूप" बलि जाई जू।।३।।

राजभोग आते समय राग–आसावरी की बधाई जन्म लीयों वृषभान गोपके बेठे सब सींघद्वाररी।। (यह पूरा पद पेज १९७ पर पढ़े।)

राजभोग में राग–सारंग भई वृषभान के सुता।। (यह पूरा पद पेज २०४ पर पढ़े।)

भोग में राग-मारू यदुवंशी जिजमान तिहारो ढाढ़ी आयो हो।। कुंवरी जन्म सुनिकें हों आयौ राखि हमारौ मानहो।।१।। एक बार हों पहलें आयौ देन बधाई ताकी।। नंदीसुर व्रजराज धरनिधर कूँखि सिरानी जाकी।।२।। अबतो मेरे मनको भायौ दोऊ नेग चुकावौ।। नँदरानी कीरतिदे रानी ढ़ाढ़िनकों पहिरावौ।।३।। बोहोत भाँति ढ़ाढ़िन पहराई गोपराय बड़दानी।। "किशोरीदास" को निरभय करिकें व्रज राख्यौ व्रजरानी।।४।।

संध्या में राग-कान्हरो आठैं भादौं की उजियारी।। (यह पूरा पद पेज २०१ पर पढ़े।)

नोटः- ये बधाई के पद प्रातःकाल राग बिलावल में तथा सांयकाल राग कान्हरो में गाये जाते है।

शयन में राग-कान्हरो श्री वृषभान रायजू के आंगन बाजत आज बधाई।। (यह पूरा पद पेज २०४ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े प्यारी राधिका के गेह।। नवलधाम नवल सय्या नवल बाढ़्यों नेह।।१।। नवल सुन्दर नवल जोबन नवल बरषत मेह।। "कृष्णदास" त्रैलोक नागर नवल स्याम सनेह।।२।।

भाद्रपद शुक्ला ७

श्रृंगार – पाग चन्द्रिका कों

वस्त्र – लाल रंग के सोनेरी कोरके कटिमें पिछोरो श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोर पिछ की चन्द्रिका धराई गई है। नुंपुर सोना के तथा वेणुवैत्र हरे रंग मीणा की धराई गई है। ठाडा वस्त्र पिला रंगके तथा पिछवाई लाल रंग की सोनेरी कोरकी धराई गई है।

आभरण – नित्यानुसार मध्य के धराये गये है।

विशेष – श्री राधाजी की बधाई की चल रही है।

मंगला में राग–देवगंधार प्रगटी नागरि रूप निधान।। (यह पूरा पद पेज २०० पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग–बिलावल लाडली सुरंग पालने झूले।। कीरति बेठी झुलावत गावत अति आनन्द मन फूले।।१।। सुरंग खिलोना भांतिभांति के प्रमुदित गोद खिलावे।। देखि देखि मुस्क्यात सलोनी द्वे दतियां दरसावें।।२।। प्रमुदित गावे अति हरखावे उपमाको नहिं आन।। रूप अंग सब विधि "व्रजपतिकी" जोरी परम सुजान।।३।।

राजभोग आते समय (बधाई) राग–देवगंधार आज बरसाने बजत बधाई।। (यह पूरा पद पेज २०६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग–सारंग धनि धनि प्रभावती जिन जाई ऐसी बेटी, धनि धनि हों वृषभान पिता।। (यह पूरा पद पेज २०० पर पढ़े।)

शयन में राग–कान्हरौ राधाजु शोभा प्रकट भई।। (यह पूरा पद पेज २०२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–बिहाग पोढ़े माई ललन सेज सुखकारी।। रतनजटित झारी तहाँरी बीरी देत बृषभान दुलारी।।१।। उसीर महल मधि कुसुम रावटी राजत तहाँ रूचिर चित्रसारी।। "सूरदास" प्रभु कोटि मदन छबि गुण निधान श्रीराधे प्यारी।।२।।

भाद्रपद शुक्ला ८

(श्री राधाष्टमी उत्सव)

देहरी वंदनमाल तथा अभ्यंग

श्रृंगार – कुल्है जोड़का।

वस्त्र – केसरिया जामदानी के रूपहरी कोर के, शुथन लाल शाटन की, सोनेरी छापाकी, वागाचाकदार तथा मस्तक पर कुल्है केसरिया, उसपर मोर पिछ का जोड़, ठाडीलर-दोहरा मोती की गोटी पन्नाकी, पान हीरा तथा से जड़ाहुवा, शीरपेच, शीशफूल हीरा पन्ना व मोती के कुंडल हीरा जड़े हुवे तथा दोनों तरफ श्याम रेशम की अलक धराई गई। वेणी श्याम-हीरा मोती की श्रीमुखारविंद पर तिलक माणक का, अलंकार कटाक्ष, नखवेशर माणक मोतीके, चिबुक हीरा का श्रीअंगमें श्रृंगार भारी वनमालाको, हांस, हार, हीरा पन्ना माणक मोतीके सामिल, कस्तुरी की माला तथा माणक का टोडर धराया गया है। श्रृंगार आज दो जोड़का, गुंजामाला तथा फूलकी माला, श्रीहस्तमें नखावली, मुद्रिका हीराकी पगपान, पायल, पेंजनी, जेहर, अनवट सभी हीरा पन्ना माणक के जड़ांऊ, नुंपुर सोनाके, वेणु वेत्र हीराके, फूलकी छड़ी, ठाडा वस्त्र वादली रंगके, कन्दरा पर हीरा का चोखटा, पिछवाई लाल दरीयाई की, सोनेरी चोखटा की, धराई गई।

विशेष – राजभोग आते समय श्रीजीको राधाअष्टमी का तिलक किया गया। शायंकाल भोग के दर्शन में ढाढ़ि व ढाढन द्वारा श्रीजी के सम्मुख नाच-गान किया गया। भोग-संध्या के दर्शन एक साथ हुवें।

मंगला में राग-देवगंधार आज बरसाने बजत बधाई।। (यह पूरा पद पेज २०६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल रावल राधाजु प्रकट भई।। अब व्रजबसि सुख लेहु सखीरी प्रगटि कुँवरि रसमई।।१।। या निधिकों सब विधि

चाहत हैं सो कीरति तुम ही दई।। "रामदास" सुनि गोकुल आयौ जसुमतिपै बधाई लई।।२।।

अभ्यंग स्नान के समय राग–आसावरी वरषगांठि वृषभानकुँवरिकी कीरति गीत गवायेजु।। चंदन अगर लिपाई अरगजा मोतिन चौक पुराये जू।।१।। नंदीसुरतें नंद जसोदा ससुत न्योंति बुलाये।। गोपी गोप गाय गोसुत लै चलि बरसाने आये।।२।। तब वृषभान बड़ें आदरसों निज मंदिर पधारये।। भीतर भवन जसोदा कीरति मिलत परम सुख पाये।।३।। जसुमति की कनियाँतें लालन लै कीरति गोद खिलाये।। व्रजरानी लई कुँवरि गोद व्रजनारिन मंगल गाये।।४।। विविध सुगंध फुलेल उबटनों कुँवरि कुँवर उबटाये।। तातें नीर न्हवाय पौंछि पट भूषण तन पहराये।।५।। तब वृषभान बोलि लये भीतर कीरति मंत्र सुनाये।। निश्चय करि यह निजव्रत लीजे कान्ह कुँवरि वर पाये।।६।। तब वृषभान बाहिर आये नंदराय पहराये।।। कुल प्रोहित मुनि गर्ग बोली कह्यौ परम पदारथ पाये।।७।। नंदराय वृषभान परस्पर अद्भुत नाच नचाये।। जसुमतिजूसों कर्‌यौ समधौरो ब्याह के गीत गवाये।।८।। तब ब्रजराज मुदित मन मुनि ऋषिकुल प्रोहित पहराये।। अगनित गाय दईं विधि करके पटह निसान बजाये।।९।। प्रमुदित बोहोरि चली नंदारानी गावत सरस बधाये।। नंदगोप बलि मोहन लैके नंदगाम फिरि आये।।१०।। बंदी मागध सूत बोहोत करि दे सनमान पठाये।। रहसे फूले व्रजनन डोलें मानों रंक निधि पाये।।११।।

राजभोग आवता राग–सारंग आज वृषभान के घर फूल।। प्रगटी कुँवरि राधिका जातें मिटे सबनके शूल।।१।। लोक लोकते टीकौं आयौ बिबिध रतन पटकूल।। "सूरदास" समता कौ पावै जाके भाग्य अतूल।।२।।

तिलक का पद राग–सारंग राधा रावल प्रगट भई।। विधिना यह भागि निज जनकौ रसकी सिंधु दई।।१।। कीरति श्रीवृषभान मान दै सब जाति बुलाय लई।। अति आनंद सबके मनकी आरिति निबरी गई।।२।।

देखन नंद चले लै सुतकों तबहि बात जतई।। भुषण बसन जन्मदिनके सजि सब विधि वहै छई।।३।। कहयों नंद जसुमति कीरतिसों देहु बधाई नई।। सुता तिहारी पूत हमारौ जोरी सरस ठई।४।। भीतर बोलि पटा बैठाये दोऊ सहज एकही।। पगिया बाँधि उतारि आरती सब बितई।।५।। ता दिनतें सगरे या व्रजमें सुखकी बात भई।। लीला सुमिरत भई "रसिकनकी" मति आनंद मई।।६।।

तथा राग-आशावरी बरसानेतें दोरि नारि एक नंद भवन में आईजू।। (यह पूरा पद पेज १९७ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग आज वृषभान के आनन्द।। वदन प्रभासी लागत मानो प्रगटयों पूरन चंद।।१।। एक जो दूब बंधावत गावत एक सुनावत टेर।। सुनि सब नारि बधावन आई अपने अपने मेर।।२।। जो आवत सो करत न्योछावर त्रन तोरत बलि जात।। परमभाग्य दंपतिके यह कहि फूली अंग न समात।।३।। अपने अपने मनको भायो करत सकल व्रजलोग।। "सूरदास" प्रगटी भुव उपर भक्तनके हितजोग।।४।।

भोग में (ढाढ़ि गावे) दोहा राग-मारू सिंघपौर ब्रजराज को ढ़ाढ़ी पहोच्यों आय।। मिंदर रतन जटत के देखत रहयो लुभाय।।१।। हंसी बोले ब्रखभान जु ढाढी निकट बुलाय।। मन भायो तोहि देहुंगो नेक गोपिन को जस गाय।।२।। हों जाचक जदुबंसको कर न पसारो आन।। के जांच्यो ब्रजराजकों के जाच्यों ब्रखभान।।३।। कीरत जुके ब्याहमें हो आयो एक बार।। उदेभान मोहे जानके खोलदऐ भंडार।।४।। तब मोसों हंसी हेत लो कहे ढ़ाढ़ी तुलेह।। मैं अपने मन पन कियो ढाढीन हुंको देह।।५।।

भोग में (नाचे तब) राग-मारू यदुवंसी जिजमान तिहारो ढाढी आयो हो।। (यह पूरा पद पेज २१० पर पढ़े।)

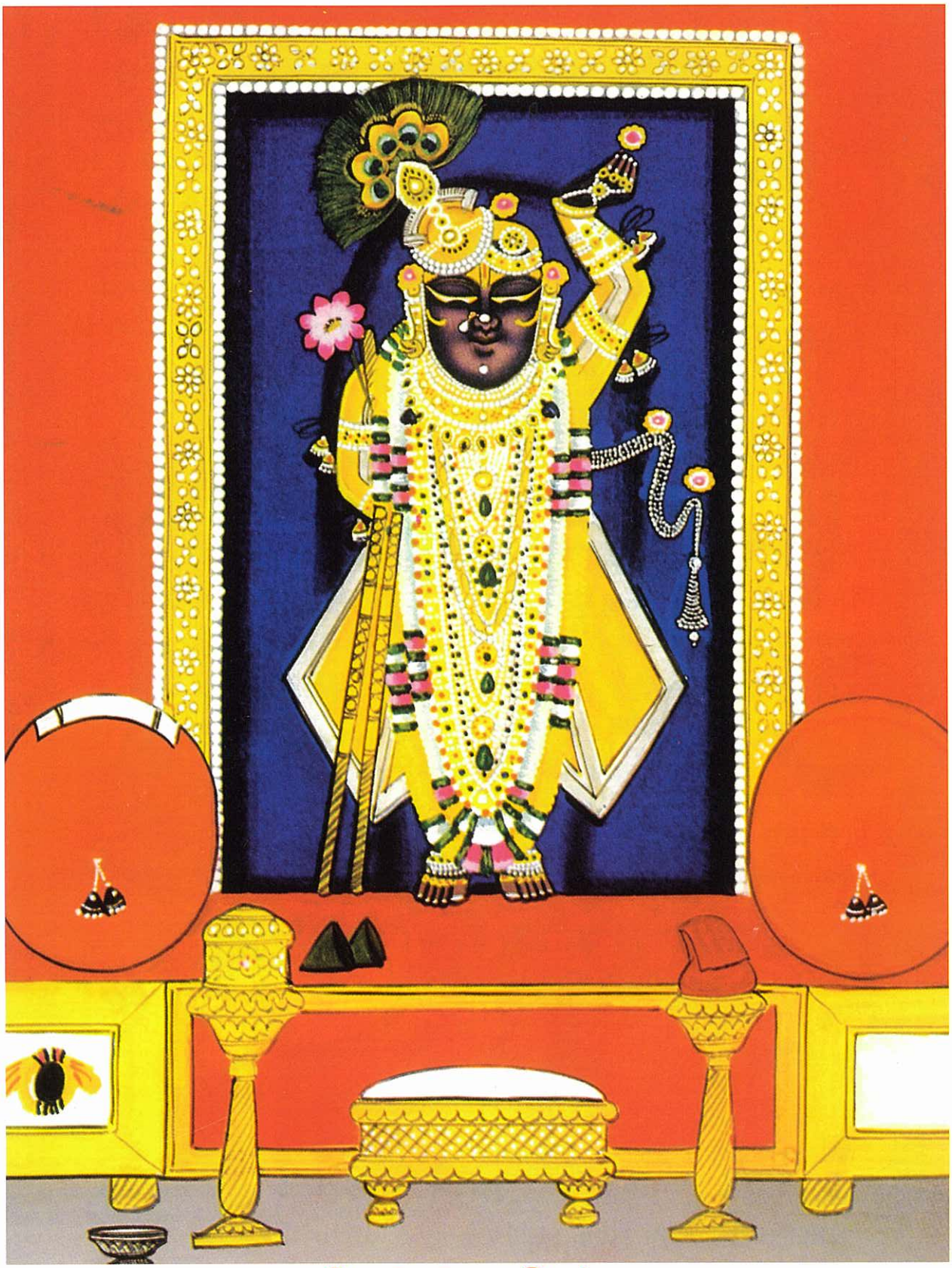

श्री राधा अष्ठमी श्रृंगार

श्रीमती करूणा पारीख –रमणलाल पारीख का श्री जी के चरणों में सदैन्य दण्डवत

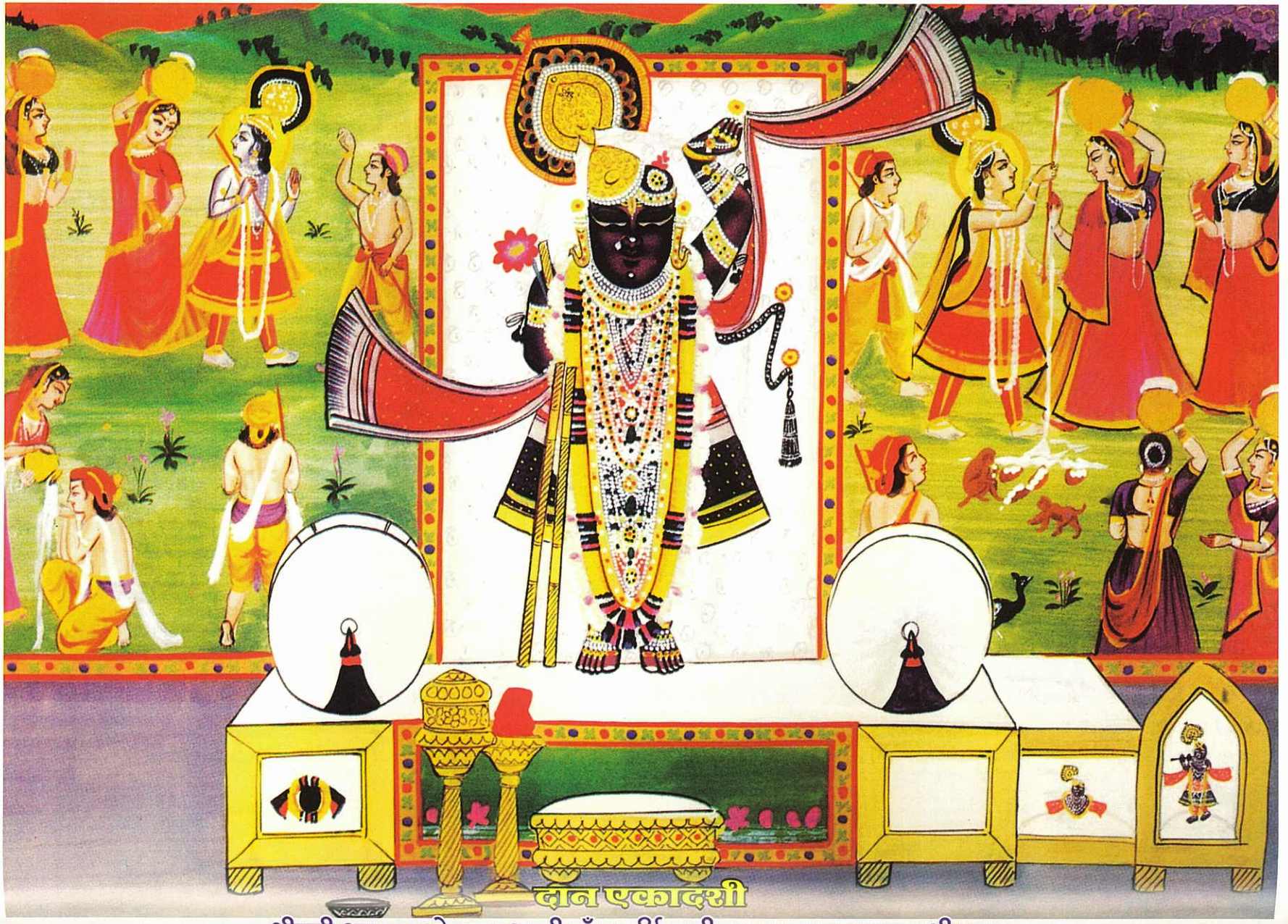

श्रीमती शारदा-ओमप्रकाश जी टाँक घुर्विका हीना का दण्डवत व जय श्री कृष्ण

संख्या आरती उतरे तब राग–कान्हरौ श्री वृषभान रायजु के आंगन बाजत आज बधाई।। (यह पूरा पद पेज २०४ पर पढ़े।)

शयन में राग–कान्हरौ आठें भादों की उजियारी।। (यह पूरा पद पेज २०६ पर पढ़े।)

महारस पुरण प्रकट्यों आंनि।। अति फूली घरघर व्रजनारी श्रीराधा प्रगटीं जानि।।१।। धाई–मंगल सजि सब ले महा महोत्सव मानि।। आई घर वृषभान गोपके श्रीफल सोहत पानि।।२।। कीरति बदन सुधा–निधि देख्यो सुन्दर रूप बखान।। नाचत गावत दे कर तारी होत हरख अघान।।३।। देत असीस सीस चरनन घर सदा रहो सुखदानि।। रसकी निधि व्रज रसिक रायसों करो सकल दुख हानि।।४।।

मान में राग–केदारों आज बनी कुंजेश्वर रानी।। चारूचिकर सिर सिथिल सगवगी बिबिध कुसूम वेणी बानी।।१।। नेंन सुंरग गिरधर रसमाते, कमल खंजन सोभा लखानी।। "गोविंद" प्रभु को तूँ न्यायनबस करनी।। धन–धनरी विधाता आपुनी सकल चतुराई तोमें आनी।।२।।

पोढ़वा में राग–केदारों राय गिरधरन संग राधीका रानी।। निबिड़ नवकुंज नवकंज सय्यारची, नवरंग पियसंग बोलत पिक बानी।।१।। नील सारी लाल कंचुकी गौर तन मांग मोतिन खचित सुन्दर सुठानी।। अर्ध घूँघट ललन वदन निरखत रसिक दंपति परस्पर प्रेम हृदयसानी।।२।। लाल तनसुख पाग ढ़रक भ्रूपर रहीं, कुल्हें चंपक भरी सेहरों सुवानी।। पाणिसों पाणि गहि उरसों लावत ललन "गोविंदप्रभू" ब्रज नृपति सुरत सुखदानी।।३।।

भाद्रपद शुक्ल ९

श्रृंगार-राधा अष्ठमी का ही धराया गया है कुल्हे जोड़ का श्रृंगार।

विशेष – आज श्रीजी की कंदरा पर चोखटा नहीं धराया गया है। आज कीर्तन में झांझ नहीं बजाई गई है। आज सभी दर्शनों में बधाई के कीर्तन गाये गये हैं। तम्बुरा से बधाई गाई जाती है।

मंगला में राग-बिलावल (चोखड़ा) श्रीनवनागरी प्यारी तू वृन्दावन की रानी।। प्यारी तेरी कीरति बखानी।।चाल.।। जगत में जगमग रयौ यश बिन कृपा क्यों बूझही।। अभिमान अंध लोग करमठ ताहि कछुवन सुझहीं।। करो कृपा परम उदार ये मोहि बारबार सुहावहीं।।१।। श्रीनवनागरी प्यारी तेरी मोतिन माँग सँवारी।। बिहारन लाडली तैसी पहिरै झूमकसारी।।चा.।। सारी जो भीजि फुलेल में रही प्रगट बेनी देखियै।। घसी सीस सुमेरतें मानों भ्रमर पाँति विसेखियै।। ललित कटि पर लाल लहेंगा नीलकंचुकी कसि तनी।। प्रथम जोबन जोत तनकी क्यों बनै कवि पै भनी।।२।। श्रीनवनागरी प्यारी तू चंद बदन मृगनयनी।। बिहारन लाडिली तैसी है चंपक तन पिकबैनी।।चा.।। बेनीजु पिक शुक नासिका सम अधरबिंब विलासनी।। कनक कुंडल अलक झलकें कपोलमें मृदुहासिनी।। ललित मुख में पान सोहैं नासिका मुक्ता धरें।। चिबुक साँवल बिंदुकी छबि कौन त्रियसरवर करें।।३।। श्रीनवनागरी प्यारी तेरी बेंदी जगमगताई।। बिहारन लाडिली यह छबि कबि पै वरनी न जाई।।चा.।। वरनी न यह छबि जाय कबि पें निरखी श्याम सिहाइयौ।। दसन दामिनी अधर रातें लाल अति सुखपाइयौ।। गौर भाल विशाल लोचन वक्रअति छबि राजहीं।। भ्रोंह काम कमान मानों बाण मनमथ साजहीं।।४।। श्रीनवनागरी प्यारी तेरी छोटी लर गजमोती।। विहारन लाड़िली तैसी जंगाली पोती।।चा.।। पोती जो पुंज जड़ाव चौकी रही उरपर जगमगैं।। अंस पर मखतूल फोंदा दृष्टि जिन गुरूजन लगै।। बरा कंकन बाजू पोहोंची चुरी चारू बिराजहीं।। रतनजटित अमोल मुंदरी सुंदरि अंगुरिन छबि छाजहिं।।५।। श्रीनव

नागरी प्यारी तेरे पग नूपुर झनकार।। विहारन लाडिली तैसी है मंथर चरन बिहार।।चा.।। मंथर चरन बिहार यह गति राजहंसन अर्पही।। जघंन सघन उरोज भारी देखी सिंघ कटि डरपही।। पृथु नितंबनि किंकिनी सम निपटही नीवी बनी।। झबा झलकें देख दोऊ रीझि रहे साँवल धनी।।६।। श्रीनवनागरी प्यारी तू पिय तन मुरि मुसिकानी।। बिहारनलाडिली तब उनबंसी गिरत न जानी।।चा.।। जानी न बंसी गिरत करतें पीत पट खस भू परयौ।। रहे इकटक चित्र जैसे पग न भूमितें टरयौ।। झुकि जात कछुवन गातकी सुधि अंगअंग शिथिल भये।। परत जात सुजान सुन्दर भुजा भरि भामिनि लये।।७।। श्रीनवनागरी प्यारी तेरे रसवस हैं जु कन्हाई।। बिहारन लाडिली लालन रहे अंगअंग लुभाई।।चा.।। अंगअंग लाल लुभाय राखे रसिक शिर मुकुट मनी।। गुन रूपशील सुहाग सुंदरि अरू त्रियान कवन गिनी।। व्रजराज नवलकिशोर के कोऊ और चित्त न आवहीं।। बलजाऊँ वृषभान नंदिनी तो हित वेणु बजावहीं।।८।। श्रीनवनागरी प्यारी तू श्याम मनोहर बोली।। बिहारन लाडिली प्यारी तू उठि चल नवल किशोरी।।चा.।। उठि चलि नवल किशोरी राधे नवललाल बुलावहीं।। सुंदर श्याम सुजान सखीरी बारबार कहावहीं।। छाँडि मान सँभारी प्यारी कहाँलों तोही बुलावहीं।। बलिजाउँ श्रीवृषभान नंदिनी तो हित मोहि पठावहीं।।९।। श्रीनवनागरी प्यारी यश तुम्हारौ मोहि भावै।। बिहारन लाडिली यह यश आपही श्रीमुख गावै।।चा।। गावैजु श्री मुख सुयश तुह्मरौ तुही तनमन रमरही।। तुही धन तूही प्रान-जीवन सपथ दै मोसों कही।। करौ विविध बिहार भामिनी एतौ गहरू न कीजियै।। बलि "विष्णुदास" विचित्र जोरी लोचनन सुख दीजियै।।१०।।

राग-बिलावल प्रगटी नागरी रूप निधान।। (यह पूरा पद पेज २०० पर पढ़े।)

राग-बिलावल राधेजु शोभा प्रगट भई।। (यह पूरा पद पेज २०२ पर पढ़े।)

राजभोग आवता (बधाई) श्रीवृषभान रायजूके आंगन बाजत आज बधाई।। (यह पूरा पद पेज २०४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग–सारंग तू देखि सुता वृषभानकी।। (यह पूरा पद पेज २०५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग–सारंग मैं देखी सुता वृषभानकी।। (यह पूरा पद पेज २०६ पर पढ़े।)

भोग में राग–गौड़ी मेरे मन आनन्द भयौ हो तो फूली अंग न समाऊं।।ध्रु।। सात साखिको मेरो राजा जा घर बजत बधाई।। (यह पूरा पद पेज १९९ पर पढ़े।)

संध्या में राग–ईमन कामकेल कनक बेल रंगरेल रसिक कुँवरी अति विचित्र गुण निधान शुभग नागरी।। (यह पूरा पद पेज १९९ पर पढ़े।)

शयन में राग–कान्हरौ श्री वृषभान रायजु के आंगन बाजत आज बधाई।। (यह पूरा पद पेज २०४ पर पढ़े।)

मान में राग–केदारो राधिका आज आनंद में डोले।। साँवरे चंद गोविन्द के रस भरी, दूसरी कोकिला मधुर स्वर बोले।।१।। पहरेतन नीलपट कनक हारावली, हाथ ले आरसी रूप को तोलें।। कहत "श्री भट्ट" ब्रजनारी नागर बनी, कृष्ण के सील की ग्रन्थिका खोले।।२।।

पोढ़वा में राग–केदारो राय गिरधरन संग राधिका रानी।। (यह पूरा पद पेज २१५ पर पढ़े।)

भाद्रपद शुक्ल १०

श्रृंगार – पाग चन्द्रिका का।

वस्त्र – लाल सुनहरी कोरके, कटि में पिछोड़ा। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोरकी सादी चन्द्रिका धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र पीला रंग के तथा पिछवाई लाल धराई गई है।

आभरण – भारी श्रृंगार मध्य का नित्यानुसार धराया गया है।

मंगला में राग–बिलावल (चोखड़ा) अहो मेरी प्राणपियारी।। भोरही खेलन कहांजो सिधारी।। कुंकुम भालतिलक किनकीनो।। किन मृगमद को बेंदादीनो।। ढाल।। बेंदाजु मृगमद दीयो मस्तक निरख शशि संशय पर्यो।। शरद निशाको कला पूरण मेंन नृपको मद हर्यो।। बिहसिकें मुख कहत जननी अलक बेनी किनगुही।। सूरके प्रभु मोहिबेको रची मनमथही तुही।।१।। ढाल।। नंद महरकी तरूणी यशोहे।। मेरो वदन फिरफिरकें जोहे।। खेलत डोलत ढिंग बैठारी।। कछु मनमें आनंद कियो भारी।।ढाल।। आनंद मनमें कियो भारी निरख सुत विह्वल भई।। बावाजुको नाम लेले तोहि हँसगारी दई।। पाटीजु पार संवार भूषण गोद में मेवाभरी।। सूरके प्रभु निरख मनमें विधिनासों बिनतीकरी।।२।। चाल।। सुन यह बात कीरति मुसिकानी।। में व्रजरानीके जियकी जानी।। मेरी सुता है रूपकी रासी।। वहतो कान्ह बनवासी उपसी।।ढाल।। कान्ह बनवासी उपासी रंग ढंग ये क्योंबने।। मेरे ढिंगतो रत्न अमोलक काच कंचन क्यों सनें।। ललिता विशाखासों कह्यो तुम लली त्यज कित कूं रहीं।। सूरके प्रभु भवनबाहिर जानदीजो मत कहीं।।३।।चाल।। दिन दसपांच अटक जबकीनी।। सुंदरश्याम दिखाई दीनी।। मुरझपरी तब सुधि न संभारे।। प्यारी डसी भुजंगम कारे।।ढाल।। कारे भुजंगम डसी प्यारी गारूडी हारेसबे।। नंदनंदन मंत्र बिन सखी यह विषक्योंहुं दबे।। मनुहार कर मोहनकों लाईं सकल विष देखत हने।। सूरकेप्रभु जोरी अविचल जीवों जुगजुग दोउजने।।४।। चाल।। उठ बैठी तब बदन संभारे।। कछु मोहन तन हसत निहारे।। मुर बैठी मन भयो हुलास।। कीरति गई पति अपनेजु पास।। ढाल।। अपनेजु पति पेंगई कीरति प्रीत रीत विचारहीं।। मंत्रकीयो ब्याहको सब सखी मंगलगावहीं।। वृन्दाजु बनमें रच्यों स्वयवंवर पुष्प मंडप छाइयो।।

सूरके प्रभु स्यामदूल्हे श्रीराधिका वर पाइयो।।५।। बिधना विधि सबकीनी।। मंडपकरकें भांवरदीनी।। विविध कुसुम बरसाये।। तहां मानिनी मिल मंगलगाये।छंद।। गावेंजु मानिनी मिलकें मंगल कहत कंकण छोरीयो।। नहीं होय यह गिरि उचकलेवो लला हँस मुख मोरीयो।। छोर्यो न छूटे डोरना यह प्रीति रीति ग्रन्थी कही।। "सूरके" प्रभु युवतिजन मिल गारी मन मानी दई।।

श्रृंगार में राग-बिलावल कुँवरि राधिका तु सकल सौभाग्य सीमा या बदन पर कोटिशत चंद बारौं।। खंजन कुंरग शतकोटी नैंनन पर बारनें करत जीयमें न विचारौं।।१।। कदली शतकोटी जंघन ऊपर सिंध कोटि कटि पर न्यौछावर उतारौं।। मत्त गज कोटिशत चाल पर कुंभ शतकोटि इन कुचन पर बारडारों।।२।। कीर शतकोटि नासा ऊपर कुंद शतकोटि दसनन ऊपर कहि न पारों।। पक्व कंदूर बंधूक शतकोटि अधरन ऊपर बारि रूचि गर्व टारों।।३।। नाग शतकोटि बेंनी ऊपर कपोत शतकोटि ग्रीवा पर बारि दूर सारों।। कमल शतकोटि कर जुगल पर बारनें नाहिन कोऊ लोक उपमा जो धारौ।।४।। दास कुंभन स्वामिनी सुन नख सिख अंग अद्भूत सुठान सुं कहाँ लगि सँम्हारों।। "लालगिरिधरन" कहत मोहि तोहिलों सुख जोलों वह रूप छिन छिन निहारों।।५।।

राजभोग आवता राग-धनाश्री (ग्रह भोजन के चार पद गाये जाते है) लालको मीठी खीर जो भावे।। (यह पूरा पद पेज १८२ पर पढ़े।)

राग-असावरी हरि भोजन करत विनोदसों।। (यह पूरा पद पेज १८२ पर पढ़े।)

राग-धनाश्री जेंवत नन्द कान्ह बलभैया।। कनकथार खटरस बहु व्यंजन माखन दूध मिठैया।।१।। उठ भाजत सुत केलिचाल लख प्रफुलित यशुमति मैया।। "व्रजाधीश" प्रभु सुख व्रजजनकें दृगन सुधा बरखैया।।२।।

राग-धनाश्री दोउ मिल जेंवत कंचन थारी।। मधुमेवा पकवान मिठाई परोसत हे ललितारी।।१।। भोजन करत छहो रससों मिल सुन वृषभान दूलारी।। अचवनको यमुनाजल सीतल कनकरत्न की झारी।।२।।

अति सुगंध कपूर लोंग युत प्रीतसों रूचिर संवारी।। हँस मुसकाय दशन खंडितबीरी "सूरदास" बलिहारी।।३।।

राजभोग में राग–सारंग श्री राधे हरि तेरों वदन सिरायों।। बार बार सुन सारंग नेंनी यह ध्यान अब आयो।।१।। ले दर्पन अपनो मुख निरखत बदन मोर मुसकायो।। बाबाकी सौं यह जानत हों तेरे ही हाथ बिकायो।।२।। बार बार हरि करत प्रसंसा मोहुते अतिनीकी।। "परमानंददास" की जीवन परम भांवती जीकी।।३।।

भोग में राग–नट सखिरी तेरे तन की सुन्दरता।। नख–शिख अंग अंग अवलोकत चकृत भयो करता।।१।। अति अनूप कृष कटि अनूप उर अनुपम सुन्दरता। छवि अनूप उपजत छिन–छिन अनूपम उज्वलता।।२।। परमत करत विचार विविध चित नांहिन रहवो समता।। "कुंभनदास" स्वामिनी तोहि बस गोवरधन धरता।।३।।

संध्या में राग–गौरी श्री राधाजु कें बदन की बल जैहों।। कोटि मदन बसंत रवि ससि कर नोछावर देहों।।१।। ललित लोल कपोल कूंडल श्रवनन खुभी खुटला चार।। अलिक झलकत कलमली अति नील सिर परसार।।२।। हँसति दसनन लसति दांमिन अधर बिंब रसाल।। नासका सुक मुक्ता फल छबि तिलक मृग मद भाल।।३।। भ्रकुटी भंग अनंग जीते चिबुक सावल बिंद।। "व्यास स्वामिन" नैन सेंनन बस कीये गोविंद।।४।।

शयन में राग–बिहाग धन–धन लाड़िली जु के चरण।। अतहि मृदुल सुगंध सीतल कमल के से बरन।।१।। नखचंद चारू अनुप राजत जोत जगमग करन।। नूंपुर कंज बिहरत परम कोतिक कला करन।।२।। नंदसुत मनमोदकारी सुरत सागर तरन।। दास "परमानंद" छिनछिन स्याम ताकी सरन।।३।।

शयन में राग–केदारो आज बनी कुंजेश्वर रानी।। (यह पूरा पद पेज २१५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–विहाग चांपत चरण मोहनलाल।। (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

भाद्रपद शुक्ल ११
(श्रीदान ऐकादशी)

श्रृंगार – मुकुट कांछनी का।

वस्त्र – केसरिया रूपहरी कोर के तथा लाल सुनहरी कोरके कटि में कांछनी के ऊपर का घेर केसरी रंग का तथा निचे का घेर लाल तथा पीतांबर बड़ा धराया गया है।

आभरण – दान ऐकादशी का भारी श्रृंगार। श्री गोकुलनाथजी द्वारा सिद्ध कराया मुकुट, हीरा माणक-मोती व सोना के आभरण धराये गये है।

विशेष – ठाडा वस्त्र सफेद पिछवाई चित्राम की जिसमें दान लीला की। गोपीवल्लभ में दही-दूध की मटकी आई है।

मंगला में राग-देव गंधार हमारो दान देहों गुजरेटी।। बहुत दिनन चोरी दधि बेच्यों आज अचानक भेटी।।१।। अति सतरात कहाधों करेगी, बड़े गोपकी बेटी।। "कुंभनदास" प्रभु गोवर्धनधर भुज ओढ़नी लपेटी।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल तुम नंदमेहेरके लाल मोहन जान दै।। रानी जसुमति प्रान आधार।। मोहन जान दे।।धृ.।। श्रीगोवर्धनकी शिखरतें मोहन दीनी टेर।। अंतरंगसों कहत हैं सब ग्वालिनि राखौ घेर।। नागरि दान दै।।१।। ग्वालिन रोकी ना रहें ग्वाल रहे पचहार।। अहो गिरिधारी दौरियो सो कह्यौ न मानत ग्वार।।२।। चली जात गोरस मदमाती मानों सुनत नहीं कान।। दौरि आये मनभामते सो रोकी अंचलतान।।३।। एक भुजा कंकन गहैं एक भुजा गहि चीर।। दान लैन ठाढ़े भये गहबर कुंज कुटीर।।४।। बहुत दिना तुम बचि गई हो दान हमारौ मार।। आज हों लैहों आपनौ दिन दिनकौ दान सँभार।।५।। रसनिधान नवनागरी निरख बचन मृदु बोल।। क्यों मुरि ठाढ़ी होत है घूँघटपट मुखखोल।।६।। हरख हियें हरि करखिकें मुखतें नील निचोल।। पूरन प्रगटयौ देखियै मानो चंद घटाकी ओल।।७।। ललित बचन समुदित भये नेति नेति यह

बैन।। उर आनंद अतिही बढ़यौ सो सुफल भये मिलि नैन।।९।। यह मारग हम नित गईं कबहूँ सुन्यौ नहीं कान।। आज नई यह होत है सो माँगत गोरसदान।। मोहनजानदै।।९।। तुम नवीन नवनागरी नूतन भूषण अंग। नयौ दान हम माँगनौ सो नयौ बन्यौ यह रंग ।।१०।। चंचल नयन निहारियै अति चंचल मृदुबैन।।कर नहीं चंचल कीजियै तजि अंचल चंचल नैन।।११।। सुंदरता सब अंगकी बसनन राखी गोय।। निरखि निरखि छबि लाड़िली मेरौ मन आकर्षित होय।।१२।। लै लकुटी ठाढ़े रहे जानि साँकरीखोर।। मुसकि ठगौरी लायकें मोसौं सकत न लई रति जोर।।१३।। नेंक दूरि ठाढ़े रहौ कछू और सकुचाय।। कहा कियौ मन भांवते मेरे अंचल पीक लगाय।।१४।। कहा भयौ अंचल लगी पीक हमारी जाय।। याके बदलें ग्वालिनी मेरे नयनन पीक लगाय।।१५।। सूधे बचनन माँगिये लालन गोरस दान।। मोंहन भेद जनायकैं सो कहत आनकी आन।।१६।। जैसें हम कछु कहत हैं ऐसी तुम कहि लेहु।। मनमाने सो कीजिये पर दान हमारौ देहु।।१७।। कहा भरें हम जात हैं दान जो माँगत लाल।। भई अवार घर जानदै सो छाँड अटपटी चाल।।१८।। भरें जातहौ श्रीफल कंचन कमल बसनसों ढाँक।। दान जो लागत ताही कौ तुम दैकर जाहु निशाँक।।१९।। इतनी विनती मानियै माँगत ओली ओड़।। गोरसकौ रस चाखियै लालन अंचल छोड़।।२०।। संग की सखी सब फिर गईं सुनिहै कीरति माय।। प्रीति हिये में राखिये सो प्रगट कियें रस जाय।।२१।। काल्ह बहोरि हम आइ हैं गोरस लै सब ग्वारि।। नीकी भाँति चखाइहों मेरे जीवन हों बलिहारि।।२२।। सुनि राधे नवनागरी हम न करें विश्वास।। करकौ अमृत छाँडिकैं को करै काल्हि की आस।।२३।। तेरौ गोरस चाखिवै मेरौ मन ललचाय।। पूरन शशि कर पायकें चकोरन धीर धराय।।२४।। मोहन कंचन कलशिका लीनी शीश उतार।। श्रमकन बदन निहारिकें सो ग्वालिनी अति सुकुमार।।२५।। नव विंजन गहि लालजु श्रीकर देत ढुराय।। श्रमित भई चलौं कुंज में नेंक पलोटूँ पाय।।२६।। जानत हों यह कौंन है ऐसी ढींठ्यो देत।। श्रीवृषभान कुमारी हे अरी तोहि बीच को लेत।।२७।। गोरे श्रीनंदरायजू गोरी

जसुमति माय।। तुम याहीतें साँमरे ऐसे लच्छिन पाय।।२८।। मन मेरौ तारन बसै और अंजन की रेख।। चोखी प्रीत हियें बसै याते साँवल भेख।।२१।। आप चालसो चालियै यहै बड़ेनकी रीत।। ऐसी कबहुँ न कीजिये हँसें लोग बिपरीत।।३०।। ठाले ठूले फिरत हौ और कछू नहिं काम।। बाट घाट रोकत फिरौ आन न मानत श्याम।।३१।। यही हमारौ राज है ब्रजमंडल सब ठौर।। तुम हमारी कुमुदिनी हम कमल बदन के भौंर।।३२।। ऐसे में कोऊ आइ है देखै अद्भुत रीति।। आज सबै नँदलालजू प्रगट होयगी प्रीति।।३३।। ब्रज वृंदावन गिरि नदी पशु पंछी सब संग।। इनसों कहा दुराइयै प्यारी राधा मेरौ अंग।।३४।। अंसभुजा धरि लै चले प्यारी चरन निहोर।। निरखत लीला "रसिकजू" जहाँ दान मान की ठोर।।३५।।

राजभोग आवे तब (छाक) राग–सारंग दानघाटी छाक आई, गोकुल तें कांवर भर।। रावल की रावरे ने राखी सब घेरी।।१।। जानतों जबही देहों नन्दजू की आन खैहों भोजन की रही न कछु चाखो एक वेरी।।२।। अति प्रवीन जान राय कनक बेला करमें लिये बांटत मेवा मन प्रसन्न हेर चहुँ फेरी।।३।। सकल पाक "परमानन्द" आरोगत परमानन्द टोंक करत सुबल टेरी टेरी।।४।।

राजभोग में राग–सारंग चलन न देत हों यह बटियां।। रोकत आय स्याम घन सुंदर जब निकसत गिरि घटियां।।१।। तोरत हार कंचुकी फारत मांग निहारत पटियां।। पकरत बाह मरोर नंद सुत गहि फोरत दधि चटियां।।२।। "कुंभनदास" प्रभु कब दान दीनो नई बात सब ठटियां।। गिरिधर पाये पूजिये तिहारे जानत हो सब घटियां।।३।।

राजभोग में राग–सारंग जमुनाघाट रोकी हो रसिक चंद्रावल।। हंस मुसक्याय कहत व्रज सुंदर छबीले छेल छांडो अंचल।।१।। दान निवेर लेहों व्रजसुन्दर छाडो अटपटी कत गहत अलकावल।। करसों कर गहि हिर्देसों लगाय लई गोविंद "प्रभु सों रास रंग मिल।।२।।

राग–गोरी श्रीवृषभान लड़ेती गाइयें कीरति कुल मंडनबाल हो।। सोनेकीसी बेलिहो प्यारी चंपेकीसी माल हो।।१।। हंसगमनी मृगलोचनी शोभित सहज सिंगार।। चमकत चंचल चीकने सिर सटकारे बार।।२।। घूँघरवारे बारन ऊपर शोभित सुंदर साल।। चंदके फंद परे अहिनंदन उरझे कंचन जाल।।३।। अतलसकौ लहेंगा कटि गाढ़ौ दरियाई की अँगिया पीत।। उरज सुभट कंचनकवच सजि आये रति रणजीत।।४।। कृश कटि केहरि देखिदुरै हरि जेहर तेहर पाय।। गजगमनी कमनी अवनी रवनी रति लेत बलाय।।५।। कर चूरौ ललकै झलकै पलकै न लगै छबि देख।। अँगूरिन मुँदरी पोंहौंची गजरा बाजूबंद विशेख।।६।। चंपकली चौकी चमकै दमकै दुलरी पिय पोति।। चितकों लेत चुराय चाहिकें बदन चंदकी जोति।।७।। अरूण अधर दमकत दशनावलि श्याम चपलता सार।। कमलकोशमें बैठी पंगति मानो भृंगकुमार।।८।। बेसर को मोती लटकै मटके खटके प्रिय प्रान।। श्रवन बनी रूचि मनी कनककी तनक तरकुली कान।।९।। पियदुखमोचन रतिरस रोचन चंचल लोचन नार।। कुँवर किशोर चकोर चेंहैं टुबा पढ़त चंद चटसार।।१०।। अलिकुल गंजन रतिरसरंजन नयनन अंजन दीन।। क्रीड़त सुधा सरोवर महियाँ मानो मनसिजके मीन।।११।। समर सहायक नवरस नायक सायक धायक नयन।। कुँवर कुरंग सुरंग कमल काननसों ठानत ठैन।।१२।। कारी झपकारी भारी बरूनी बरनें कवि कौन।। भ्रोंहें सुठि सोहें मोहैं मानो हावभाव के भौन।।१३।। शुभ बिरियाँ दुपेहेरियां के फूलनकी बेंदी दीनी भाल।। इंदुबधू मानों नवलचंदकों आय मिली ततकाल।।१४।। शीश फूल सोहै मोहै बनी तनक कनककी आड़।। चिबुक चारू मुसिकाय हँसत जब परत कपोलन गाड़।।१५।। यह विधि छबि अगाधा साधा राधाजू सखियन माँझ।। बिटियाँ बहुत जो गोपनकी संगखेलत सांझी सांझ।।१६।। गोधूलिकी बिरियाँ डलियाँ फूलनकी लै चलीं हाथ।। बीनत फूलन यमुना कूलन श्यामाजूके साथ।।१७।। एक लिये ओली चोली पर चाँप चिबुकतर चीर।। फूलन तोरत तनहिं मरोरत जहाँ भ्रमरनकी भीर।।१८।। एकन लै लावन्य ललित पटकी अटकी कटि छीन।। रमक झमक पल्लव नवाय

चढ़ बीनत फूल प्रवीन।।१९।। कुंदी कुंद करन कोमल निरवारत बाला बेलि।। ललित लवंग लता बनिता पर रहे झूमका झेलि।।२०।। जाई जुही केतकी निवारी चमेली रायबेल।। फूलन की कर गेंदुक बाला बनमें खेलत खेल।।२१।। बौरसरीके फूलनकी नकफुली बनावत एक।। श्यामा अभिरामा सुख धामा खेलत खेल अनेक।।२२।। तिहिं छिन कुंजबिहारीजू दुरि देखत कुंजनओट।। रहे हैं चित्र कैसेजु चितेरे लगी दृगनकी चोट।।२३।। कियौ सखीको रूप लालने भर गुलाबदल गोद।। त्रियारूप धर दरशन दीनों मनमें मानत मोद।।२४।। निरखि निरखि वृषभान नंदिनी बोली बचनरसाल।। सब सिंगार सोहै मोहै तू को हैरी नवबाल।।२५।। तू क्यों फिरत अकेली हेली यह बन यमुना कुल।। नंदगाम घर साँझी कौ हम बीनन आईं फूल।।२६।। उत्कंठित वृषभान नंदिनी कंठ भुजा उरमेल।। आज अबार भई साँझीकों तू संग हमारे खेल।।२७।। सखी लईं सब बोल बोल गौरंभन धुनि सुनि कान।। बड़ी बार घर जैहैं तो खीजैं बाबा वृषभान।।२८।। चंदा चंद्रभगा चंद्रावलि चंचलनयनी चली धाम।। बहुत फूल बीनै हैं भटू री पूजै मनके काम।।२१।। कमल फिरावत गीतजो गावत आवत घर व्रजबाल।। फूलनकी कर गेंद लकुटिया फूलनकी उरमाल।।३०।। माय धाय उर लाय लई कीरतिजू परमप्रवीन।। अरग बढ़ाय लई घर भीतर आप आरती कीन।।३१।। मृगमद चंदन केसरसों श्यामाजू लीपी भींत।। कामधेनु के गोबरसों रचि साँझी फूलन चीति।।३२।। धूप दीप धरि भोग अमृतरस आप आरतौ उतारि।। गावत गीत पुनीत किशोरी श्रीवृषभानकुमारि।।३३।। करब्यारू सब संग खेलि चली अपने अपने धाम।। श्यामाजू और नवल सखी सुख लूटयौ चारयौ जाम।।३४।। त्रिय बागौ ललिताहिं दीयौ श्यामापति सुघर सुजान।। रसिकरूप धर केलि करी सुखसागर प्रानन प्रान।।३५।। शरद निशा सुख यह विधि राधा माधौजूनित्यबिहार।। शोभापर बल जाय "श्यामघन" अवलोकत सुखसार।।३६।।

भोग में राग-नट आज मेरी वृंदावन में दधि लूटी।। कहां मेरो हार कहां नखवेसर कहां मोतियन लर टूटी।।१।। बरजो यसोदा अपने मोहनको झकझोरत में मटुकी फूटी।। "सूरदास" प्रभुके जु मिलन को सर्वस्व दे ग्वालिन छूटी।।२।।

दसदिगन्त विजयी श्री पुरुषोत्तम जी (सं. 1714)
भाद्रपद शुक्ल एकादशी

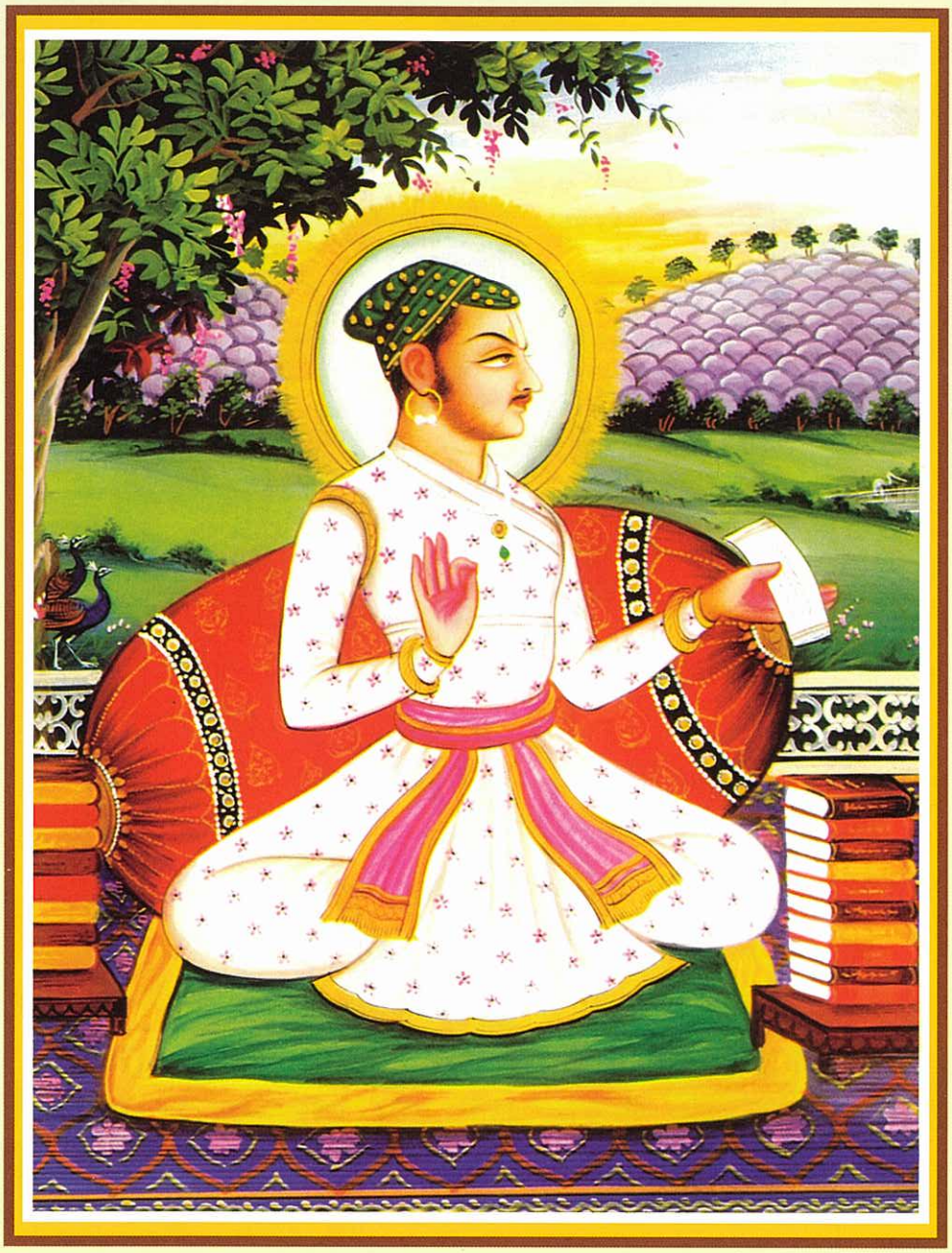

वि. सं. 1714 में आज के दिन की वियजी श्री पुरुषोत्तम जी महाराज को प्राकट्य उत्सव है। आप श्री पीताम्बर के लालजी सूरत वाले में माने जाते हैं। ये ही नवलक्ष ग्रन्थकर्त्ता कहे गये हैं। ये आचार्य महाप्रभु के अवतारांश तामस अवतार माने जाते हैं। आप श्री भाव्य आदि ग्रंथों के व्याख्याता तथा वेदशास्त्र के ज्ञाता थे।

''पुरुषोत्तम प्रकटे बहुरी, पीताम्बर गृह छन्द ।
भादव सुद ग्यारस सुधी वेद ब्रह्म मुनी चन्द ।।

श्री वामनद्वादशी श्रृंगार

श्री हेमन्त चौहान एवं समस्त चौहान परिवार का श्री जी के चरणों में दण्डवत व जय श्री कृष्ण

राग–कल्याण/ईमन भैय्या हो घेरो घेरो हो वृजनारी जान नहिं पावे।। चली ये जात उतर नहीं देत लेउ छिनाई मटुकिया सीसतें और ढीठ देखियत भारी।।१।। खरिक दुहाय गोरस लिये जात अपने अपने भवन ताको दान मागत जेसे काहू लादी हैं लोंग सुपारी।। "गोविन्द" प्रभु आये अनोखे दानी चलो बुलावत घर के लाल बिहारी।।२।।

दूध का पद राग–कान्हरौ दूध दह्यो लूटत वन बांटन पीजे लाल घरको ही लाई।। मीठो मिलाय दुहाय ताय के दान मानको लेऊ अघाई।।१।। गोपीजन जसुमती के आगें कहत रही कछु सकुचाई।। "कुभनदास" गिरिधर मुख देखत श्यामा द्वारही ते फिर जाई।।२।।

शयन में राग–कान्हरौं कापर ढोटा नयन नचावत, कोहे तिहारे बाबाकी चेरी।। गोरस बेचन जात मधुपुरी आये अचानक वनमें घेरी।।१।। सेननदे सब सखा बुलाये बात ही बात समस्या फेरी।। जाय पुकारों नन्दजुके आगे जिन कोउ छुवों मटुकिया मेरी।।२।। गोकुल वसि तुम ढीठ भये हो बहुते कान करत हों तेरी।। "परमानन्ददास को" ठाकुर बल बल जाउं श्यामघन केरी।।३।।

शयन में राग–कान्हरौ कब दान दीनो हो बृजराज राई।। यह मारग हम सदाही आवत जात अब कछु नई चलाई।।१।। जो पे जान न देहों तो चलरी उलट ग्रह इनतो सब फब कर तजो मनभाई।। "गोविंद" प्रभु के नेनन से नैना मिलत सकूच चली मुर मुसक्याई।।२।।

मान का पद राग–बिहाग नवल किशोर नवल मृगनयनी नवल नेह तेरौ लाग रह्यौरी।। चल चलरी तोय स्याम बुलावत काहे न करत तू मेरो कह्यौ री।।१।। सुन राधे एक बात छबिली आज माग्यौ हरि तैरो मह्यौरी।। छिन छिन विलम्ब करत काहेकों तेरौ विरह नहीं जात सह्यौ री।।२।। अधर बिंब राजत कर मुरली राधे राधे ऐसौ नाम लह्योरी।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर लेओ न प्रेम रस जात बह्योरी।।३।।

पोढ़ते समय राग विहाग पोढ़िये लाल लाडली संग ले।। (यह पूरा पद पेज ३४ पर पढ़े।)

दंपति पोढ़ेई पोढ़े रस बतियाँ करत नयना दोउ लाग गये।। (यह पूरा पद पेज २२ पर पढ़े।)

भाद्रपद शुक्ला १२

श्री वामन जयन्ति, देहरी बन्दनमाल तथा अभ्यंग।

श्रृंगार – धोवती पटका कीरीट का।

वस्त्र – केसरिया रूपहरी कोरके, कटि में धोवती, श्रीकंठ में गातिका पटका तथा श्रीमस्तक पर हीरा जड़े हुवे क्रीट (छोटा मुकुट) धराया गया है। ठाडा वस्त्र सफेद पिछवाई लाल रेशम की चौड़ा पटा की धराई गई है।

आभरण – उत्सव के कारण नित्यानुसार भारी श्रृंगार हीरा मोती-माणक व सोना के धराये गये है।

विशेष – राजभोग के दर्शन में श्री बालकृष्ण जी को पंचामृत स्नान कराया गया। बाद में श्रीजी को तिलक किया गया। उसके बाद उत्सव भोग आये। आज राजभोग के दो दर्शन खुले तथा आरती की गई।

मंगला में राग-बिलावल **गोविंद तिहारो स्वरूप निगम नेति नेति गावे।। भक्त के वश श्याम सुंदर देह धरी आवे।।१।। योगी मुनि ज्ञान ध्यान स्वप्ने नहीं पावे।। नंदघरनि बांधि ताहि कपि ज्यों नचावे।।२।। गोपीजन प्रेमआतुर संग लागी लोलें।। मुरली को नाद सुनत गृहतजि वन डोलें।।३।। वेद पुराण स्मृतिकथा कहत शुक बिचारी।। "परमानंद" प्रेमकथा सबहिन ते न्यारी।।४।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल **बलि वामन हो जग पावन करन।। कहि न परत सोभा नील मणिनकी सो शोभा गगन गयौ जब सुन्दर चरण।।१।। वन्यो हे भेद अति उततें गंगाकी धार धँसि है धरनि उज्जल बरण।। इततें पदकी जोति मानों कालिंदीकी धार चढ़ी है अमरपुर पापहरण।।२।। रहें है चकृत चाहि सुर नर मुनिवर दुहुँ दिसि नेह आन कीये बरण।। "नंददासप्रभु" जाके चरित्र दुरित दवन रंचक श्रवण मिटै जन्ममरण।।३।।**

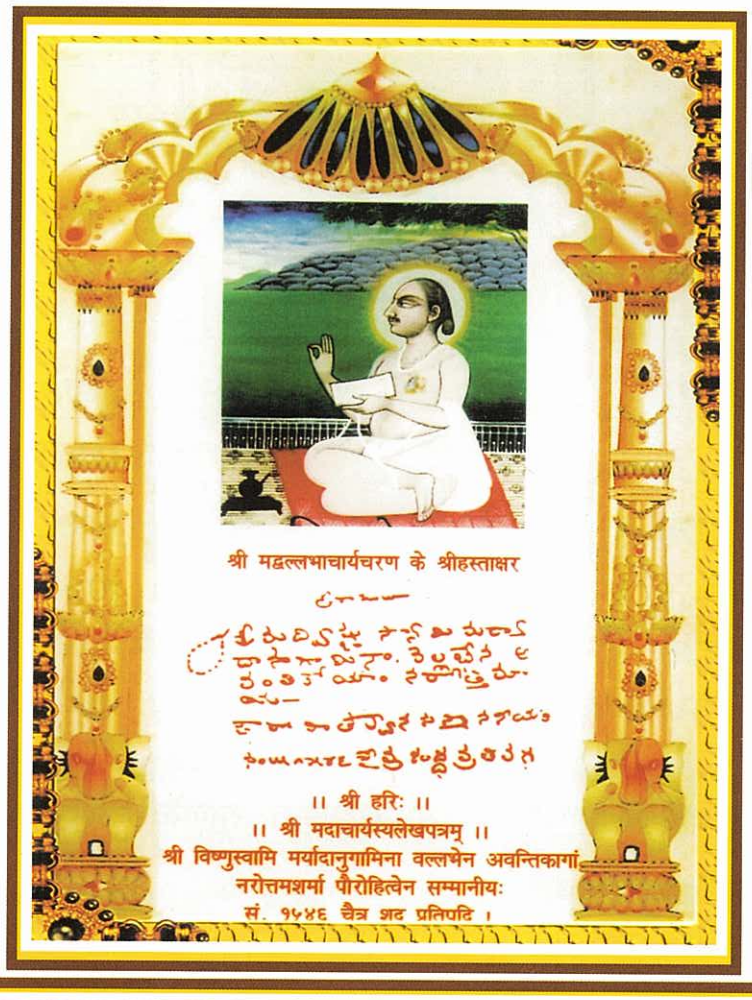

सोजन्य–श्री मोहन लाल जी पुरोहित जैसलमेर वाले

सेवा-सहयोग-मार्गदर्शन

जय श्री कृष्ण

- श्री परमपूज्य गोपालदास जी साकगरिया बाबा श्री, नाथद्वारा- रमणरेती श्रीमद् गोकुल (उ.प्र.)
- श्री जीतु भाई गांधी सपरिवार न्यू मुम्बई।
- श्री ब्रजयात्रा श्रीनाथजी सेवा मण्डल पं. भोलेशंकर बटुकनाथ चौबेजी (साढ़े आठ भाई) 45/13 बंगालीघाट मथुरा (उ.प्र.)
- मेवाड़जन मेदपाट, लोकजन सेवा संस्थान-उदयपुर एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिष्द्, उदयपुर, कार्यकारिणी के समस्त सदस्य।
- श्री हरिदास जी पारीख श्री द्वारकादास जी नाथद्वारा/उदयपुर (राज.)
- श्री पुरूषोत्तम जी पानेरी, अधिकारी, श्रीनाथ मंदिर उदयपुर नितीन पानेरी एवं पंकज पालीवाल, उदयपुर (राज.)
- श्री गोविन्द भाई श्री गोकुलदास जी पारीख, उदयपुर (राज.)
- श्रीमान् प. भ. वै. श्रीभंडारी जी सा. सपरिवार उदयपुर (राज.)
- श्री कांतीलाल जी दोशी, सलुम्बर हाउस, उदयपुर।
- स्व. श्रीमती चन्द्रललना धर्मपत्नी राधेश्याम मेहता, उदयपुर (राज.)
- श्रीमती कृष्णा श्री रामचन्द्र जी जोशी, उदयपुर/जयपुर।
- श्री ललितजी कुमावत, श्रीजी के कीर्तनकार, उदयपुर।

राजभोग आवे तब छाक के पद

राग–सारंग आगे आउरी छकहारी।। जब तुम टेरे तब मैं बोली सुनी न टेर तिहारी।।१।। मैया छाक सवारे पठई तूँ कित रही अवारी।। अहोगोपाल गैल हो भूली, मधुरे बोलन पर वारी।।२।। गोवर्धन उद्धरण धीरसों प्रीति बढ़ी अति भारी।। "जनभागवान" मगन भई ग्वालिनी तनकी दशा बिसारी।।३।।

राग–सारंग आई छाक बुलाये श्याम।। यह सुन सखा सबे जुर आये सुबल सुबाहु श्रीदाम।।१।। कमल पत्र दोना पलास के सबके आगे धर परोसत जात।। ग्वालमंडली मध्य श्यामघन सब मिल रूचिकर खात।।२।। ऐसी भूख माँझ यह भोजन पठाय दिये कर यशोदा मात।। "सूरश्याम" अबलों नहीं जेंवत ग्वालिन करते ले–ले खात।।३।।

अरी छकहारी चार पांच आवत मध्य ब्रजराज लला की।। बहू प्रकार व्यंजन परिपूरण पठवण बड़े डला की।।१।। ठठक ठठक टेरत श्री गोपालें चहूँधा द्रृष्टि करे।। बाजत वेणु ध्वनि सुन चली चपलगत परासोली के परे।।२।। "परमानंद" प्रभु प्रेम मुदित मन टेर लई कर उँची बांह।। हँस हँस कस कस फेंटा कटिनसों बांटत छाक बन ढाकन माह।।३।।

राग–सारंग। आज दधि मीठों मदन गोपाल।। (यह पूरा पद पेज १५० पर पढ़े।)

राजभोग में राग–धनाश्री (झांझ बजते है) प्रगटे वामन अवतार।। निरख अदिति मुख करत प्रशंसा जगजीवन आधार।।१।। तन घनश्याम पीतपट राजत शोभित भुज चार।। कुडल मुकुट कंठ कौस्तुभमणी ओर भृगुरेखा सार।।२।। देखी वदन आनंदित सुरमुनि जय जय करे निगम उच्चार।। "गोविन्द प्रभु" बलि वामन व्हैकें ठाडे बली के द्वार।।।३।।

राजा एक पंडित पोरि तिहारी। चारों वेद पढ़त मुख पाटी हे वामन वपुधारी।।१।। अपद द्विपद पशु भाषा जानत सूरज कोटी उजारी।। नगरन में नरनारी मोहे अवगति अलय अहारी।।२।। सुनधुनि बलिराजा उठिधाये आहुती यज्ञ विसारी।। सकल रूप देख्यों जु विप्रको कियो दंडोत जुहारी।।३।। चलीये विप्र जहां यज्ञवेदी बहुतकरी मनुहारी।। जो मागोसों देहु तुरतही हीरा रतन भंडारी।।४।। रहो रहो राजा अधिक न कहिये दोष लगत है भारी।। तीन पेंड़ वसुधा मोहि दीजें जहां रचों धर्मसारी।।५।। शुक्र कहे सुनिये बलीराजा भूमिको दान निवारी।। यह तो विप्र न होई आपुही आये छलन मुरारी।।६।। कीजे कहा जगतगुरू याचें आपुन भये भिखारी।। लेउदक संकल्प जोंकीनों वामन देह पसारी।।७।। जयजयकार भयो भूमापत द्वय पेंड़ भई सारी।। एक पेंड़ तुम देहुं तुरतही के वचनन सतहारी।।८।। सत नहीं छांड़ो सतगुरू मेरे नापों पीठ हमारी।। "सूरदास" प्रभु सर्वस्व दिनों पायो राज पतारी।।९।।

राजभोग के दूसरे दर्शन में

राग-सारंग अहो बलि द्वारे ठाड़े वामन।। चारयौं वेद पढ़त मुखपाठी अति सुमंद स्वर गावन।।१।। बानी सुनि बलि बूझन आये अहो देव कह्यौ आवन।। तीन पेंड़ वसुधा हम मागें परनकुटी एक छावन।।२।। अहो अहो विप्र कहा तुम मांग्यौ अनेक रतन दैहुं गामन।। "परमानंद" प्रभु चरन बढायौ लाग्यौं पींठ पग पावन।।३।।

राजा ऐक पंडित पोर तिहारी।। बल के द्वारे ठाड़े बावन।। श्रवन सुनतही आनंद उपज्यों कहो भीतरे आवन।।१।। चरन धोय चरोनोदक लीनो कहो विप्र मनभाववन।। तीन पेड़ धरती हों मांगो धर्म कूटी एक छावन।।२।। याको विप्र कहा तूम माग्यों हीरा रतन देहूँगामन।। "परमानंद" प्रभु वचनन पलटों लाग्यो पीठ में पावन।।३।।

भोग में (अष्टपदी) राग-मालव

दशावतार की अष्टपदी प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं। विहितवहित्रचरित्रमखेदं।। (यह पूरा पद पेज १७१ पर पढ़े।)

संध्या में राग-मालव पद्म धर्यो जन ताप निवारन।। (यह पूरा पद पेज १७३ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरौ चरन कमल बन्दो जगदीश जे गोधन के संग धाये।। (यह पूरा पद पेज १७४ पर पढ़े।)

मान का पद राग-विराग नंदनंदन दान निवेरत री।। राखै रोकी दधि समेत ग्वालिनी सखा वृंद प्रति टेरत।।१।। जब उठ चलत प्रबल गोपीजन, तब आगे उठि घेरत।। बांधि जठर पटपीत ललित गति कर लै लकूटी फेरत।।२।। काहूके कुच भुच अंचल गहि सबहिनकौ मन फेरत।। "परमानंद" प्रभु रसिक शिरोमणी मुसकत निरखत हेरत।।३।।

पोढ़ने में राग-बिराग पोढ़े माई मदन मोहन स्याम।। (यह पूरा पद पेज ८३ पर पढ़े।)

भाद्रपद शुक्ला १३

(दान लीला)

श्रृंगार – पाग पिछोड़ा को।

वस्त्र – श्याम चुन्दड़ी के रूपहरी कोरके कटि में पीछोड़ो श्रीमस्तक पर पाग तथा उस पर रूपहरी काम की गोल चन्द्रिका, ठाडीलड़ मोतीकी शीरपेच, शिशफूल तथा कर्णफूल आदि नित्यानुसार सभी गुलाबी मीना के। नुंपुर सोना के तथा वेणु वेत्र के तथा ठाडा वस्त्र लाल, पीछवाई श्याम चुन्दडी की सुनहरी कोर की।

मंगला में राग–विभास एसो को है जो छुवे मेरी मटुकी अछुती दहेंडी जमी।। बिनु मागे दियो न जाय मागे तो गारी खाय केतेई करो उपाय, डराये डरत नहीं मेरे तें गोरस की कहां धों कमी।।१।। और को दह्यों छिलछिलो लागत में ओट जमायो भर के तमी।। "नंददास" प्रभु बड़ेई खवैया मेरे तो गोरस में बहुत अमी।।२।।

श्रृंगार में राग–टोड़ी कहोजू दान लैहो कैसें हम तो देव गोवर्धन पूजन आँई।। कोऊ दह्यो कोऊ महयो माँखन जोरि जोरि आछो अछूतो लाँई।।१।। तुम्हें पहलें कैसें दीजें कान्हर जू तुमें तौ सबे फबि फरत मनभाई।। "नंददास" प्रभु तुमही परमेश्वर भये अब कछू नई ये चलाई।।२।।

राजभोग आवता राग–सारंग में छाक के पद घरही एक ग्वार बुलाई।। छाक सामग्री सबही जोरकें करदो तुरत पठाई।।१।। कह्यों जाय वृंदावन जेयों तू जानत सब प्रकृत कन्हाई।। प्रेम सहित ले चली छाक कहि हैं वे भूखें दोऊ भाई।।२।। तुरत जाय बृन्दाबन पहोंची ग्वालबाल कहुँ कोउ न बताई।। "सूरस्याम" को टेरत डोलत कितहो लाल छाक मैं लाई।।३।।

छाक लिये सिर श्याम बुलायत।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

राग–सारंग छाक ले आई ग्वालन गोरी।। (यह पूरा पद पेज ३३ पर पढ़े।)

राग–सारंग गिरि पर चढ़ गिरिवरधर टेरें।। अहो भैया सुबल श्रीदाम लाओ गाय खिरक के नेरें।१।। भई अवार जो छाक खायें कछुक घैया पियें सबेरें।। "परमानन्द" प्रभु बैठ सिलन पर भोजन करत ग्वाल रहे घेरें।।२।।

राजभोग में राग–सारंग गुजरिया तु बावरी भई कई बेर गई दान मार।। आज गहन पाई नंद की सों लेहों दिन दिन को निरबार।।१।। जो कबहूं आइ हैं यह मारग सपथ लीजे हो लालन नातर बूझिये जू मेरे संग की आगें जात ग्वारी।। सब सखियन में गहि सखी "गोविंद" प्रभु मन मनाई लीजे जान दीजे नारि पनार।।२।।

भोग में राग–नट ऐ कोंन प्रकत तिहारी ललना देखे सो कहा कहे या ठाड़ों इत उतको।। सकल ब्रजके डगरे गायनके बगरे में घेरि घेर राखी हम कहा धरावत तिहारो यह न्याव कितको।।१।। दान दान करि राख्यो झूठे ही गाल मारो कोंन लीयो कोंन दिये ऐसे कैसे भर्‌योरी माई ईनसों नित नितको।। चलोरी उलट भवन जोहि दान के मिस लुटत यों कहे जाय नंदजु सों पायो मतो "गोविन्द" प्रभु चितकों।।२।।

संध्या में राग–कल्याण अरे तुं कब तें भयो दधि दानी।। मटुकी फोरत बांह मरोरत यह बात कित ठानी।।१।। नंदराय की कांनि करत हों सुनिहो जसोदा रानी।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर गुन सागर अभिमानी।।२।।

शयन में राग–ईमन दधि न बेचीयें हमारे कूल तुमसों से बार कही नहींया।। जोंपे बेचन जात तो तुमते कोन ले वाहे सुनि बृजराज लाडले कतब गहत हों बैहीया।।१।। खरिक दुहाय गोरस लिये जात ताको बस कहा कहिये तुमसों सहीया।। "गोविंद" प्रभू सो कहत प्यारी की सखी चलोजु चलो तहां बैठी रानी जसु जहीया।।२।।

मान का पद राग–बिहाग नवल किशोर नवल मृगनयनी नवल नेह तेरो लाग लह्यौरी।। (यह पूरा पद पेज २२७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–बिहाग कुंज में पोढ़े रसिक पीय प्यारी।। सखी अति चित्र विचित्र बनीहें पहरें विविध रंग सारी।।१।। हसित परस्पर बात रस बरखत आनंद उपज्यो भारी।। सुरत रंग के रस में भीजे "नंददास" बलिहारी।।२।।

भाद्रपद शुक्ला १४

श्रृंगार – टिपाराको।

वस्त्र – गुलाबी रूपहरी कोर के कटि में मल्लकाछ धराया गया। दोनों तरफ पटका तथा श्रीमस्तक पर रूपहरी जरी के कामका टिपारा, ठाडा वस्त्र श्याम, पिछवाई गुलाबी रूपहरी कोर की धराई गई है। नुंपुर सोना के, वेणु वैत्र रूपा के तथा फूल की छड़ी धराई गई है।

मंगला में राग–बिलावल लेचलीरी गोरस बेचन को मिसकर छोटीसी मटुकी उर मधुर चाल।। अर बराय उठ चलीरी प्रातः बिथुरी अलक उर मरगजे बसनन गरें सोहत कुमलानी माल।।१।। कहत फिरत लेहो लेहो री दह्यो मह्यो ढुंढत फिर नंदलाल।। "रामदास" प्रभु को मन मोह्योरी ऐरी गति भेद सों ऐन मेंन मद गजकी चाल।।२।।

श्रृंगार में राग–टोडी ते कहु देख्योरी नंद को नंदन मटुकी झटक के पटक गयो।। (यह पूरा पद पेज १९४ पर पढ़े।)

राजभोग आवे तब छाक के चार पद

राग–सारंग जोरत छाक प्रेम सों मैया।। ग्वालन बोल लिये अध जेंवत उठ दौरे दोऊ भैया।।१।। तबहींते नहीं भोजन कीयो चाहत दियो पठाय।। भूखे भये आज दोऊ भैया आपही बोल मँगाय।।२।। सदमाखन साज्यों दधि मीठों मधु–मेवा–पकवान।। "सूरस्याम" को छाक पठावत कहत ग्वालिन सों जान।।३।।

राग–सारंग बिहारीलाल आवहू आई छाक।। गैया दूर गई है मोहन वगदाओं दे हाँक।।१।। अर्जुन भोज सुबल श्रीदामा मधुमंगल एक ताक।। खटरस खीर खाँड़ घृत भोजन बहुपकवान पराक।।२।। अपनी–अपनी पातर लेंके बैठ फैल फराक।। "सूरदास" प्रभु जेंवत रूचिसों प्रेम प्रीति के पाक।।३।।

राग–सारंग तुमको टेर–टेर मैं हारी।। (यह पूरा पद पेज ८ पर पढ़े।)

बांट–बांट सबहिन को देत।। (यह पूरा पद पेज ६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग–सारंग ग्वालिनी मीठी तेरी छाछि।। कहा दूध में मेलि जमायो सांची कहो किन बाछि।।१।। औरे भाँति चितेवो तेरो भ्रोंह चलत है आछि।। ऐसो टकझक कबहु न देख्यो तू जो रही कछि काछि।।२।। रहसि कान्ह कर कुच गही परसत तू जो परति हे पाछि।। "परमानद" गुपाल आलिंगी गोप वधू हरिनाछि।।३।।

भोग में राग नट ताल –आड चोताल आज मेरी वृंदाबन में दधि लूटी।। (यह पूरा पद पेज २२६ पर पढ़े।)

संध्या में राग–मालव ए तुम चले जाउ ढोटा अपुने मग कित रोकत व्रज वधून बाट।। कहत कहा सोई कहो जू दूर भये, जिन परसो गोरस के माट।।१।। दिन दिन को पेंडो री माई हम कैसें के आवें जाई इनसों परी आंट।। "गोविंद" प्रभु तुमें डर न काहूको व्रजराज कुंवर वर जाई चरावो गोधन के ठाट।।२।।

शयन में राग–अडानों अहो कान्ह घेरोरे घेरों, जाय कहुं जसोदा सों।। हों दधि बेचन जात गोकुल तें निपट निकट आवे मोहि नेरो।।१।। कापर इतनी करत ठकुराई, कापर होत है तातो सीरो।। "धोंधी" के प्रभु हों नीकें जानत आखर जात अहीरों।।२।।

मानमें राग–बिहाग नवल किशोर नवल नागरियां।। (यह पूरा पद पेज २७ पर पढ़े।)

पोढवा में राग–बिहाग पोढ़े प्रेम के पर्यंक।। (यह पूरा पद पेज १३ पर पढ़े।)

भाद्रपद शुक्ला १५

श्रृंगार – मुकुट कांछनी को।

वस्त्र – लाल व पीला लहेरीया के सोना की कोर धोरा के शुथन तथा कटि में काछनी, मोटा पटका श्रीमस्तक पर पाग हिरा जडा मोर मुकुट तथा हीरा के शीरपेच-शीशफूल तथा तिलक माणक का अलंकार-कमलाक्ष नखवेशर हीरा मोती के। ठाडा वस्त्र सफेद पिछवाई चित्राम की सांझी की धराई गई।

नोटः- किर्तन दान व सांझी के गाये जाते है। सायंकाल कमलचोक में सांझी मांडी गई है इसमें वृज परिक्रमा की लीला चल रही है। विश्राम घाट पर आरती करते माण्डा गया है।

मंगला में राग-देवगन्धार हमारौ दान देहों गुजरेटी।। (यह पूरा पद पेज २२२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग बिलावल तुम नंदमेहेरके लाल मोहन जान दै।। (यह पूरा पद पेज २२२ पर पढ़े।)

राज भोग आवता राग-सारंग दान घाटी छाक आई।। (यह पूरा पद पेज २२४ पर पढ़े।)

राग नूर सारंग आज दधि मिठो मदन गोपाल।। (यह पूरा पद पेज २४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग यमुना घाट रोकी हैं रसिक चन्द्रावली।। हँसि मुसिक्याय कहति व्रजसुंदरि छबिले छैल छाँड़ो अंचलि।।१।। दान निबेरि लैहों व्रजसुंदर छाँड़ो अटपटी कित गहत अलकावलि।। करसों कर गहि हृदयसों लगाय लई "गोविंद" प्रभुसौं तू रासरंग मिलि।।२।।

भोग व संध्या में राग गोरी कीरति कुल मंडन गाईयें वृषभान नृपतिकी बाल हो।। कंचन तन सोहै मोहै उर पहेरें मुक्तामालहो।।१।। सखी वृंद सब आय जुरीं वृषभान नृपति के द्वार।। बीनन फूल चलौ बन राधे नवसत साजसिंगार।।२।। यह सुन कीरतिजु हँसिकें प्यारीकौ कियौ हैं

सिंगार।। कबरी कुसुम गुही है मानौ उडुगणकी अनुहार।।३।। शीशफूल जिम चंद विराजत शोभा कही न जाय।। कोटि चंद वारों मुसिकन पर काम रह्यौ मुरझाय।।४।। बंक बिराज रहे भृकुटी तट खुटिला श्रवनन पास।। यों लपटाय रहे दोऊ जनु नयन दरशकी आस।।५।। करनफूल झूमक अरू बंदी लटकन बेंदि लिलार।। नकबेसर मोती अति सोहै लटकन परम सुढार।।६।। मुखही तमोल अधर अरूनाई दशन लसन अति सार।। चिबुक बिंदु मधुकर सुत मानौ बैठयौ आसन मार।।७।। अंजन ऊपर खंजन वारों नयन चपलता मीन।। कीरतिजू छबि निरखि निरखिकें दीठदिठौना दीन।।८।। चौकी चमक तिमनियाँ दुलरी चंपकली उपहार।। बाजूबंद पछेली चूरी कंकन गजरा चार।।९।। पोहोंची रत्न चौक और मुँदरी नखभूषण छबि देत।। श्रीकर कमल बिराजत मानो उडुगण चंदसमेत।।१०।। क्षुद्रघंटिका कटि तट राजत जेहरि नूपुर पाय।। अँगुरिन बिछिया अनवट सोहैं शोभा कही न जाय।।११।। हरे कसबकौ लेहेंगा सोहै कंचुकी केसरि अंग।। सारी सुही रँगी है मानों गुलाबाँसके रंग।।१२।। कर सिंगार कह्यौ कीरतजू जाउ लड़ैती।। होत दुहुनकी राधा श्यामा संग।।१३।। एक सेज पौढ़े तब दोऊ उठे प्रात अरसाय।। बेऊ सब आँई तिहिं अवसर निरख सबै मुसिकाय।।१४।। साँझी डलिया में धर लीनी यावत सली सुभाय।। डलिया यमुनाजल पधराई सबै न्हात सुख पात।।१५।। लाल कह्यौ अब हम घर जैहैं मैया जानतनाय।। यों कहि आवत जसुमति देखी रूखे भये लजाय।।१६।। जसुमति पूछत रात कहाँ रहे लालन कही बनाय।। दौरी गाय गयौ ता पाछें गोवर्द्धन लियौ बुलाय।।१७।। आछे फल लै मोहि खवाये सोय रह्यौ ता पास।। "द्वारकेश" प्रभुकी बतियाँ सुन जसुमति आयौ हास।।१८।।

शयन भोग आवे तब राग–कान्हरौ ब्यारू करत जननी पै मोहनराधे जू गोपीजन संग आई।। बरजत काहे न जसोमति सुतकों दूध दही की लूट मचाई।।१।। देखीसुनी न आजलों ऐसी भली अनूठी सीख सिखाई।। "कुंभनदास" गिरिधर लालकों नीकें दीजे अब समझाई।।२।।

राग–कान्हरौं दूध दह्यों लूटत बन बाँटन पीजै लाल घरही कौ ल्याई।। (यह पूरा पद पेज २२७ पर पढ़े।)

मान में राग–बिलावल नंदनंदन दान निवेतरी।। (यह पूरा पद पेज २३१ पर पढ़े।)

शयन में राग–कान्हरौ कब दान दिनों हों वृजराज राई।। (यह पूरा पद पेज २२७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग–बिहाग दंपति पोढ़ेई पोढ़े रसबतियां करन लागे दोऊ नयना लाग गये।। (यह पूरा पद पेज २२ पर पढ़े।)

श्रृंगार के आभूषण

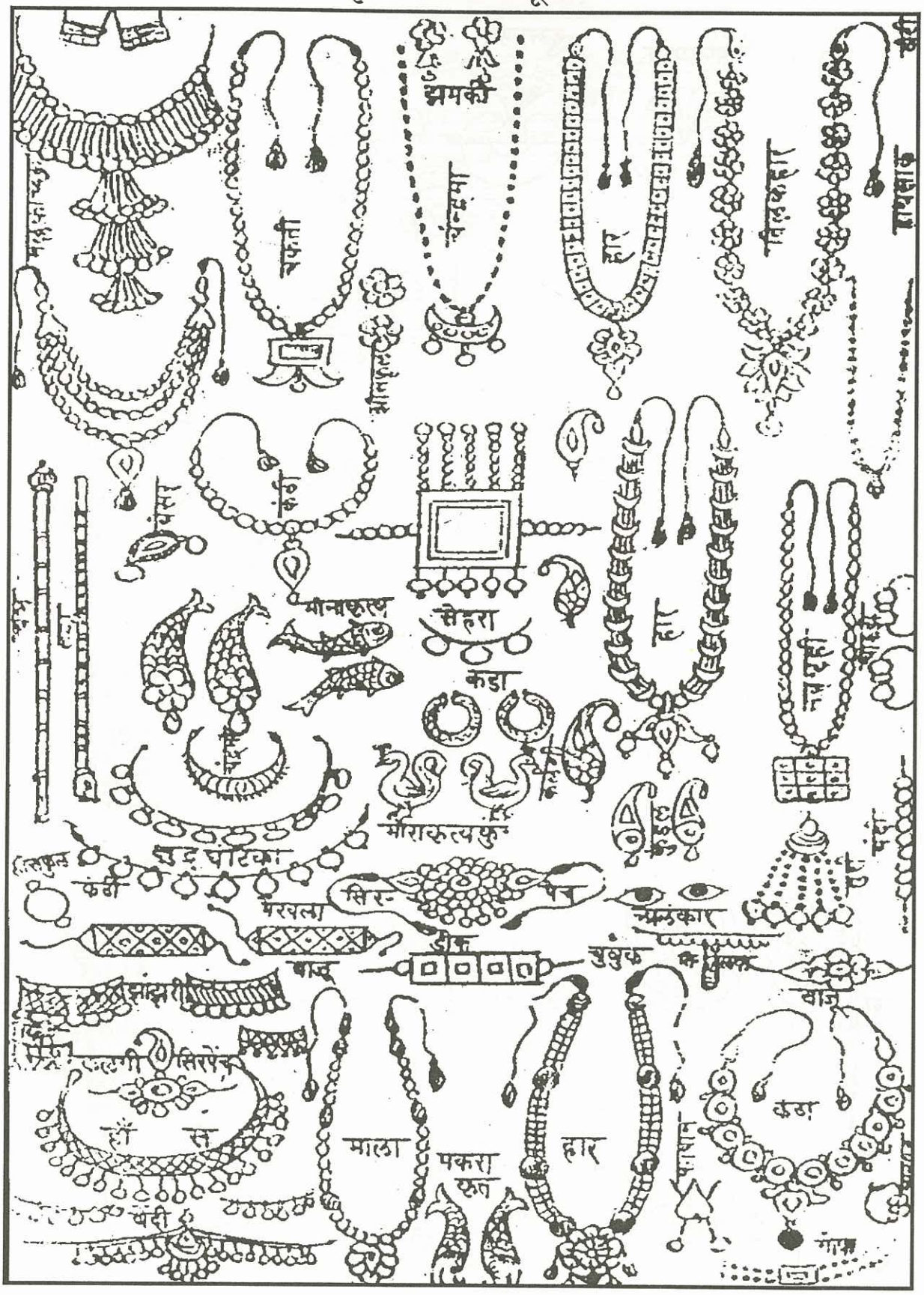
झमकी
चन्द्रमा
हार
सेहरा
कड़ा
हार
मोराकृत्य
चूड़ चोटिका
कंठी
सिर-
पेच
अलंकार
डोक
चुंबक
बाजू
कड़ा
माला
पकरा
हार
बंदी

चंद्रिका पागादिक का आकार

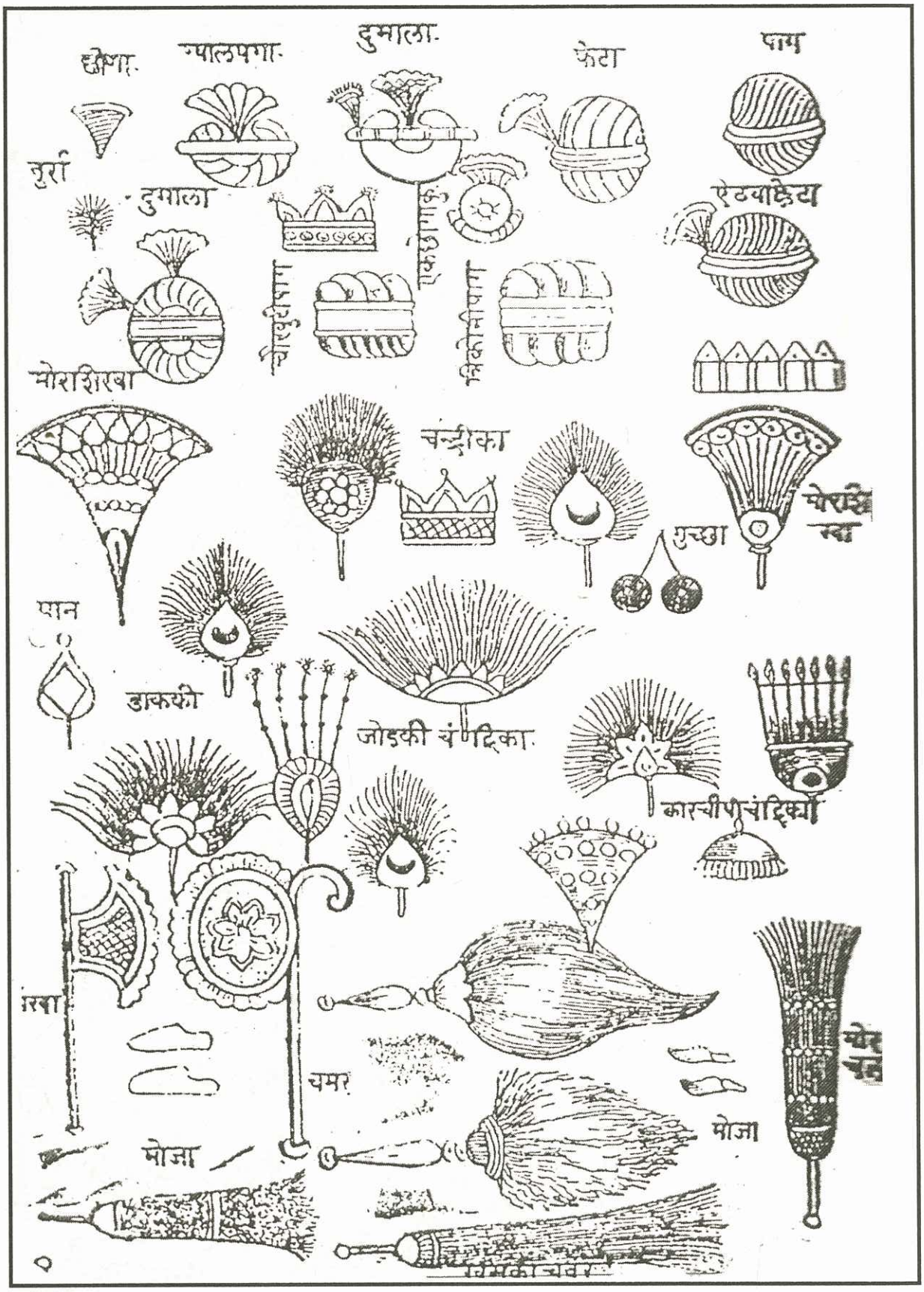

सेवा-साहित्य वस्तु

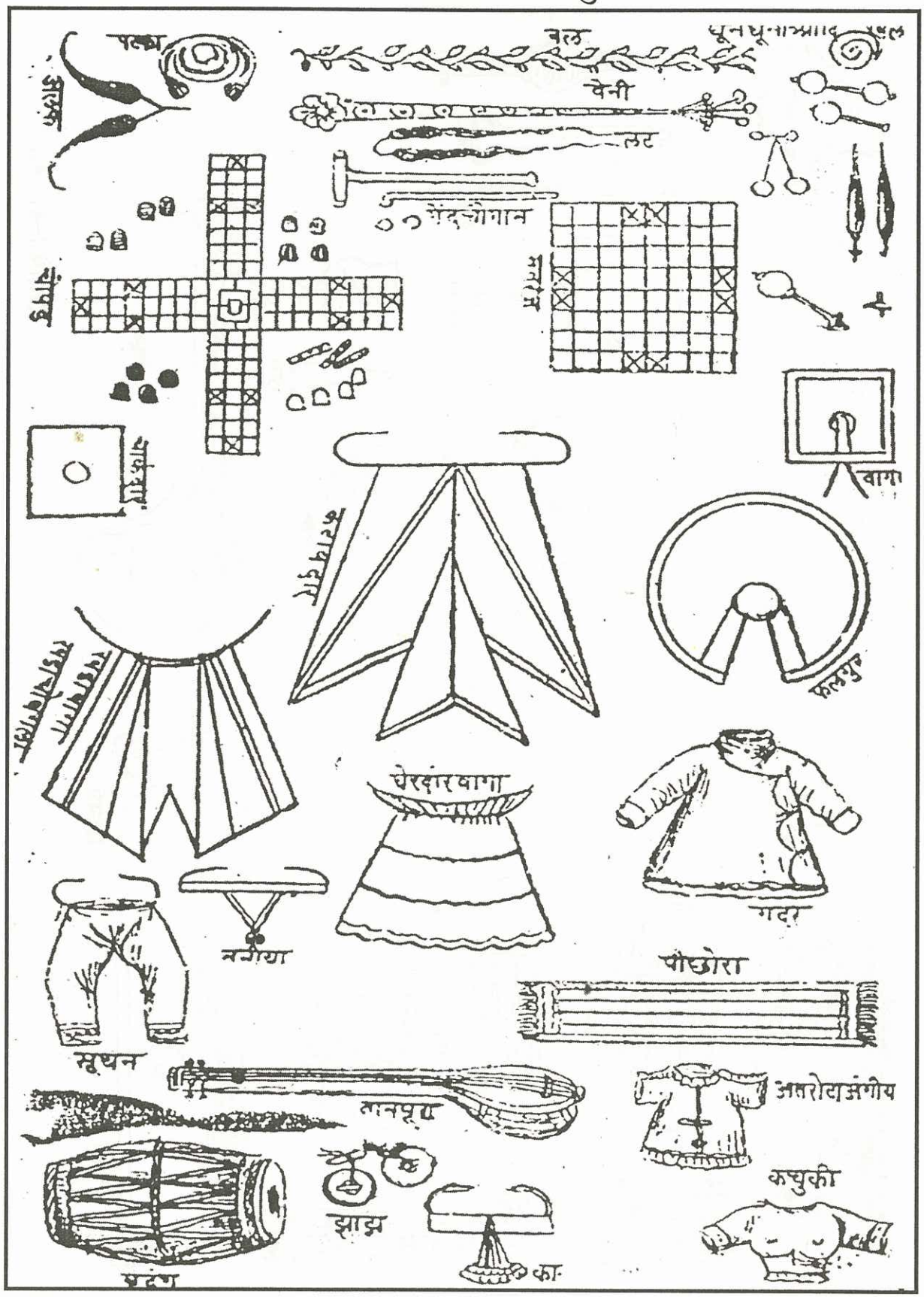

पदों में उल्लिखित विविध वाद्यों के रेखांकन

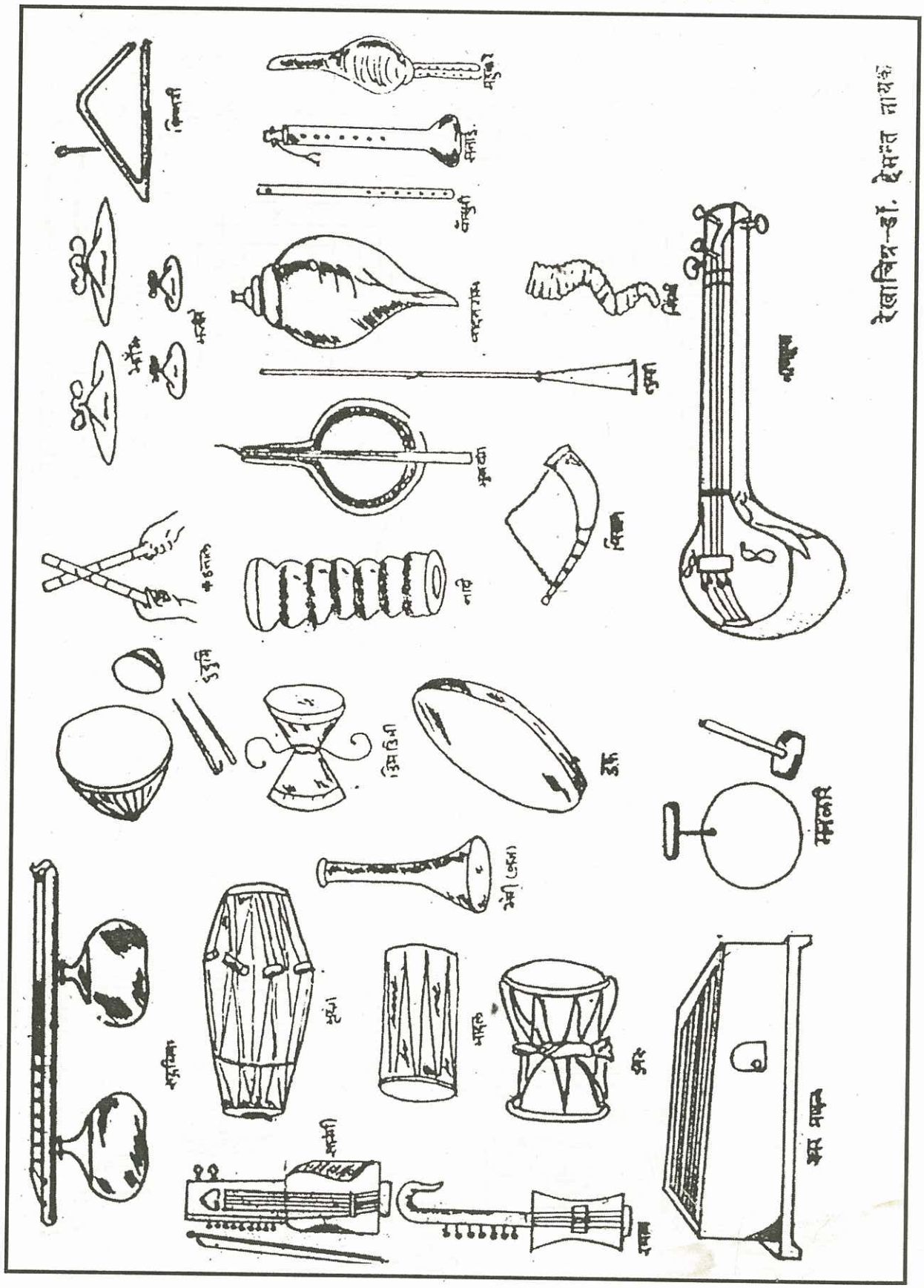

श्री युगल-स्वरूप

श्री प्रदीप भाई- जीमित भाई मेहता, मुम्बई का सपरिवार श्रीजी के चरणों में दण्ड्वत व जय श्री कृष्ण

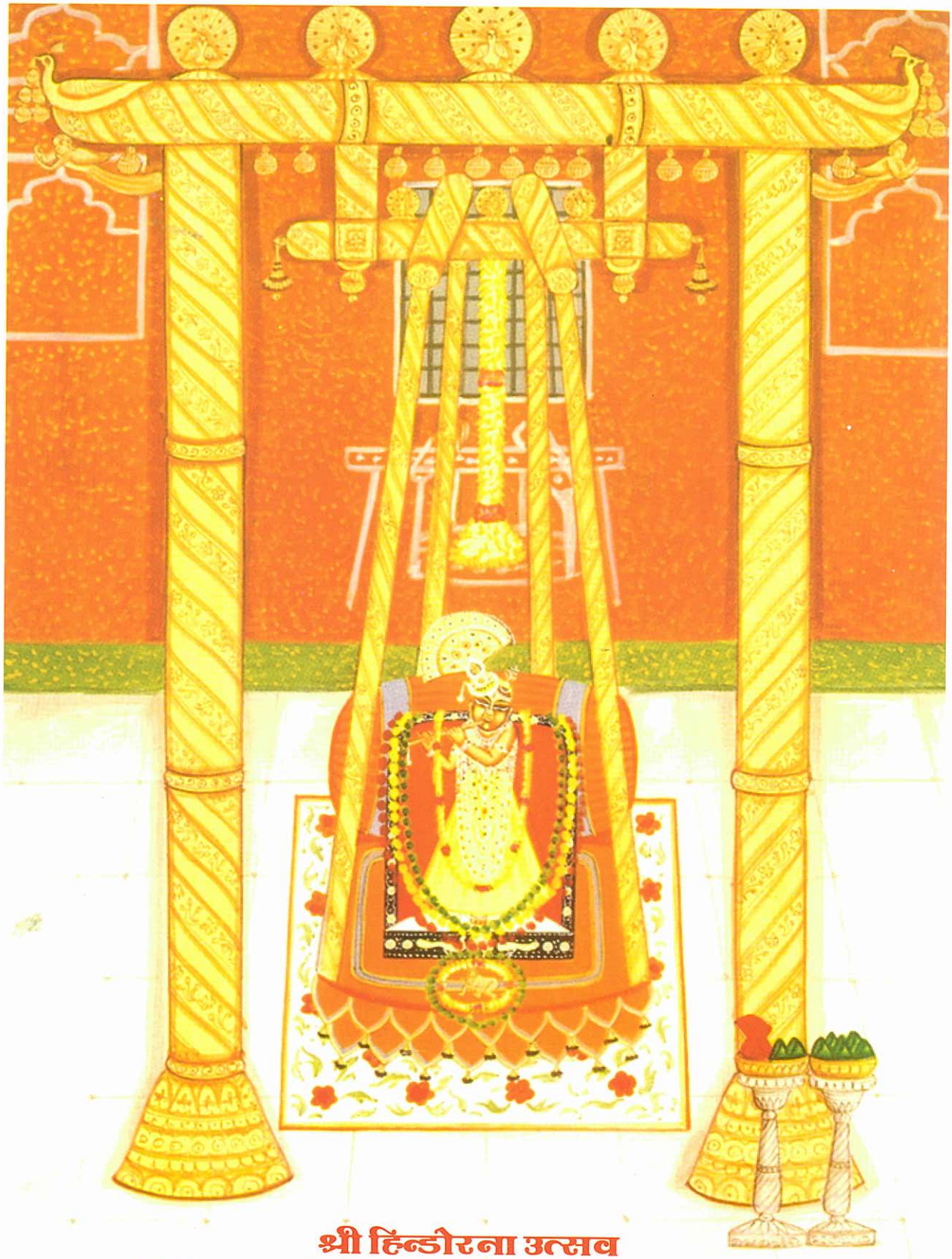

श्री हिन्डोरना उत्सव

श्री गोविन्दराज – विजयराज पुत्र स्व. श्री लक्ष्मी नारायण जी नाथद्वारा
का श्री जी चरणों में दण्डवत व जय श्रीकृष्ण

श्री हिंडोरना उत्सव

पीयुष भानू शर्मा (मो. 9799778059) अदिती एण्ड एसोसिएट्स आनंद नगर-कोठारिया रोड़,
नाथद्वारा का श्री जी चरणों में दण्डवत व जय श्रीकृष्ण

परिचय

इस ग्रंथ के प्रकाशनकर्ता मदनलाल शर्मा का श्रीनाथजी की नगरी नाथद्वारा में सम्वत् 1996 कार्तिक कृष्ण नवमी को श्री हरिशंकर जी हाड़ा (गुर्जर गौड़ ब्राह्मण) के पुत्र के रुप में जन्म हुआ। आपने एम.ए., बी.एड. तक की शिक्षा ग्रहण की एवं साहित्य रत्न की उपाधि भी प्राप्त की। आपने राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत उच्च प्राथमिक विद्यालय नाथद्वारा में प्रधानाध्यापक के पद पर कई कार्य किये।

आपके उत्कृष्ट कार्यों की वजह से राज्य स्तरीय पुरस्कार वर्ष 1993 में ''उत्कृष्ट शिक्षक की भूमिका एवं श्लाघनीय जन-सेवा'' के कारण सार्वजनिक अभिनन्दन प्रदान किया।

आपकी रूचि बाल्यकाल से ही पुष्टिमार्ग में रही। आपका ब्रह्म संबंध वर्तमान तिलकायत श्री १०८ श्री इन्द्रदमनेजी महाराज (श्री राकेश जी) द्वारा हुआ। इस कार्य के प्रेरणादायक श्री मदनलाल जी पारिख (खाण्डवाला) एवं श्री गोपालदास जी साकघरिया बाबा रहे। आपको पुष्टिमार्ग की कुछ सेवा करने का विचार मन में बार-बार आता था। अचानक ''निकुंज नायक श्रीनाथजी'' नामक गुजराती ग्रंथ श्री हरसानी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित देखने को प्राप्त हुई। उसी से प्रेरणा मिली कि इसी प्रकार की प्रतिदिन सेवा श्रृंगार व कीर्तनों की बारह महिनों की पुस्तक श्रीनाथजी की प्रणालिका के अनुसार हिन्दी भाषा में हो।

इसी प्ररेणा के फलस्वरुप कीर्तन संकलन प्रणालिका के अनुसार प्रारंभ किया एवं इसका प्रथम पुष्प (माह चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ) का प्रकाशन चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सं. 2065 को किया। इस ग्रंथ की वैष्णवों में बहुत उपयोगिता हुई अतः अब यह द्वितीय पुष्प (माह आषाढ़, श्रावण एवं भाद्रपद) का प्रकाशन कर आप सभी वैष्णवजनों को समर्पित है।

यह कार्य प्रभु श्रीनाथजी की कृपा एवं तिलकायित गोस्वामि श्री १०८ श्री राकेश जी महाराज के शुभाशीर्वाद से ही सम्पन्न हो सका है। आशा है वैष्णव जन इससे लाभान्वित होंगे।

निवेदक

यदुनन्दन त्रिपाठी

विद्याविभागाध्यक्ष

मंदिर मण्डल, नाथद्वारा (राज.)

COPL/6356